हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर-सीरीज़

शतरंजका खेल

[स्टीफ़न ज़्वाइग की पाँच कहानियाँ]

अनुवादकर्त्ता

शोभाचन्द्र जोशी बी० ए०

प्रकाशक

स्वर्गीया जननीको

दो शब्द

मूल लेखकका परिचय—

दूसरे महायुद्धमें संसारके तीन महान् कलाकार हमने खो दिये। रवीन्द्रनाथ ठाकुर, रोम्याँ रोलाँ और स्टीफन ज़्वाइग। रवीन्द्रनाथ और रोम्याँ रोलाँके स्वर्ग-प्रयाणका सीधा कारण युद्ध तो नहीं था। फिर भी मनुष्यताके प्रति उनके कल्याणकृत् सिद्धान्तोंको युद्धके कारण एक बड़ी चोट पहुँची, और अन्तिम क्षण तक जीवनपर निराशाकी छाया पड़ती रही। रोम्याँ रोलाँ तो फ्रांसपर हिटलरके अधिकार होनेके समयसे युद्धकी समाप्ति तक नज़रबन्द रहे थे। बीसवीं शताब्दीके पहले और दूसरे चरणमें पाशविकताकी जो बाढ़ यूरोपमें उमड़ चली थी, उसके विरुद्ध रोम्याँ रोलाँ और स्टीफन ज़्वाइगने सबसे ऊँची आवाज़ उठाई। किन्तु मनुष्यताके इन पुजारियोंका दृढ़, किन्तु क्षीण, स्वर महानाश भी दूतोंने नहीं सुना। रोम्याँ रोलाँ बन्दी किये गये और ज़्वाइगका स्वदेश-निर्वास हुआ। अपनी जन्म-भूमि और स्वप्नोंके देश आस्ट्रियासे निकाले जानेपर, फ्रांस, इँगलैण्ड और अमरीका होते हुए ज़्वाइग ब्राज़ील पहुँचे। वहाँ पेट्रोपोलिसमें २२ फरवरी, १९४२ ई० को उन्होंने सपत्नीक आत्म-घात कर लिया। उनका अन्तिम सन्देश यह थाः—

"अपनी ही स्वतंत्र इच्छा और सम्यक् विचार-शक्तिके साथ आज मैं जीवनसे विदा ले रहा हूँ। किन्तु जानेसे पूर्व एक अन्तिम आभार प्रकट करनेकी प्रेरणा मुझे हुई है। ब्राजीलकी इस आश्चर्यमय वसुन्धराको, जिसने मुझे और मेरी कृतियोंको ऐसी कृपा-पूर्ण तथा आतिथ्यमय शरण दी, मैं हार्दिक धन्यवाद देना चाहता हूँ। इस देशके प्रति मेरा प्रेम दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही गया, और अपना एक नया ही अस्तित्व खड़ा करनेके लिए मुझे दूसरा स्थान नहीं मिल सका। मेरे लिए तो मेरी मातृभाषाका संसार तिरोहित हो चुका है, और मेरा आध्यात्मिक घर, यूरोप, अपने ही हाथों नष्ट हो रहा है।

"साठ वर्षकी आयुके उपरान्त सर्वथा नये प्रारम्भके लिए व्यक्तिको असाधारण शक्तिकी आवश्यकता होती है। मुझमें जो कुछ शक्ति थी, वह आश्रयहीन इधर-उधर भटकनेमें ही व्यय हो चुकी है। इसलिए आवश्यक समझता हूँ कि समय रहते-रहते जब तक सिर ऊँचा उठाकर मैं चल सकता हूँ, उस जीवनको मुझे समाप्त ही कर देना चाहिए, जिसमें कभी मुझे बौद्धिक परिश्रम ही परम आनन्द और व्यक्तिगत स्वातन्त्र्य ही पृथ्वीपर सर्वोच्च कल्याण प्रतीत होता था।

"मैं अपने सभी बन्धुओंको प्रणाम करता हूँ। ईश्वर करे, इस लम्बी रात्रिके अन्तमें अरुणोदयका दर्शन करना उन्हें बदा हो! मैं तो अत्यन्त अधीर हूँ—उनसे पहले ही चला जाता हूँ।" —स्टीफन .ज्वाइग।

आत्म-हत्याके नामसे कुछ लोग चौंकेंगे। नवयुवकोंका रक्त अधिक उष्ण होता है। मानसिक उत्तेजनाके वश यदि वे ऐसा करें तो किसी अंश तक वह स्वाभाविक समझा जा सकता है। किन्तु साठ वर्षका एक वृद्ध, जिसके बाल पक चुके थे, संसारमें कई बड़े-बड़े उत्थान-पतन जो देख चुका था, जिसे दुनिया-प्रत्येक साहित्यमें श्रेष्ठ कलाकार मान लिया गया था, ऐसा व्यक्ति आत्मघात ... तो विस्मय अवश्य होता है। परन्तु परिस्थितियाँ कुछ ऐसी थीं कि .ज्वाइगने उनसे मुक्ति पानेके लिए, आत्म-हत्या कर ली।

सन् १८८१ ईसवीमें उन्होंने एक सम्भ्रान्त यहूदी परिवारमें जन्म लिया था। उनके पिता वियानाके करोड़पति व्यापारी थे। स्टीफन सबसे कनिष्ठ पुत्र थे; इसलिए, यहूदी परम्पराके अनुसार उनके माता-पिताकी इच्छा थी कि वह व्यापारके मार्गमें न जाकर उच्च-शिक्षा प्राप्त करें और विद्वान् बनें। बचपनसे ही स्टीफन .ज्वाइगको साहित्यमें, मुख्यतया कविताके प्रति, विशेष रुचि थी। स्कूलकी नीरस पढ़ाईसे जो-कुछ भी अवकाश मिलता, उसमें वह कविता, उपन्यास, कहानियाँ और प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक नीत्शेके ग्रन्थोंको पढ़ा करते। .ज्वाइगको उन दिनों अमरीकन कवि 'वाल्ट ह्विटमैन' बहुत पसन्द था। सत्रह वर्षकी अवस्थामें ही उन्हें ह्विटमैनकी अधिकांश कविताएँ कण्ठस्थ हो गई थीं।

वियाना उन दिनों आस्ट्रियन साम्राज्यकी राजधानी था। हैब्स-बर्ग खानदानके लोग शताब्दियोंसे उसपर शासन करते आ रहे थे। दो हज़ार वर्षोंसे

निरन्तर अटूट चली आती हुई सांस्कृतिक परम्परा ज़्वाइगको मिली। अपनी आत्म-कथा 'दि वर्ल्ड आफ यस्टरडे' में उन्होंने बड़ी भक्ति भावनाके साथ उन दिनोंका वर्णन किया है। बीसवीं सदीके प्रारम्भिक दस वर्षोंमें, यद्यपि राजनीतिक विस्फोटके लक्षण अन्दर-ही-अन्दर पनप रहे थे, फिर भी वियानाके निवासी, कई पीढ़ियोंसे शान्तिमय वातावरणमें रहनेके कारण, यह विश्वास ही नहीं कर सकते थे कि महायुद्ध जैसी कोई भीषण घटना सम्भव हो सकती है। समझते थे कि मानव-सभ्यताकी जड़ें पाताल पहुँच चुकी हैं और उन्हें अब कोई नहीं उखाड़ सकता। जीवनके अन्तिम दिनोंमें, सिगमण्ड फ्रायडके प्रभावमें आकर और अपने चारों ओर पशुता तथा बर्बर हिंसाका प्रसार देखकर स्टीफन ज़्वाइग यह मानने लगे थे कि मनुष्यकी बाह्य सांस्कृतिक सभ्यतासे कहीं अधिक शक्तिशाली उसका आन्तर पशुत्व है। लोग फ्रायडको निराशावादी कहा करते थे। किन्तु उनके इस कटु-सत्य सिद्धान्तका कोई भी खण्डन नहीं कर सका कि—'मनुष्यके मनमें जो प्राकृतिक विनाशोन्मुख प्रवृत्ति है, वह नष्ट नहीं हो सकती। संस्कृति और सभ्यताके आवरणसे उसे ढका नहीं जा सकता।' इस सत्यका प्रत्यक्ष उदाहरण १९१४ का महायुद्ध और बादमें हिटलरी पशुताका ताण्डव नृत्य था। आज भी फ्रायडके इन शब्दोंका खण्डन करनेके कोई भी उत्साहप्रद लक्षण दिखाई नहीं देते।

पहला विश्वयुद्ध और उसकी प्रतिक्रिया—

सन् १९०१ में ज़्वाइगकी पहली कविता-पुस्तक प्रकाशित हुई। १९१४ का युद्ध प्रारम्भ हुआ तो आस्ट्रियामें सैनिक सेवा अनिवार्य कर दी गई। ज़्वाइगको भी सेनासे सम्बन्धित किसी कार्यमें योग देना पड़ा। आत्म-कथामें उन्होंने लोगोंकी युद्धकालीन भावुक मनोवृत्तिका चित्र खींचा है। किस प्रकार हज़ारों-लाखों नवयुवक धड़ाधड़ सेनामें भरती होते और राष्ट्रका गौरव अक्षुण्ण रखनेके लिए अपने सिर कटानेको उद्यत हो जाते थे! उन्होंने लिखा है कि आस्ट्रियासे बाहर जानेवाली रेलगाड़ियाँ इन उत्साही सैनिकोंसे मुखरित रहती थीं। किन्तु युद्ध-स्थलसे लौटते समय ये ही गाड़ियाँ घायलों और मृत सैनिकोंसे लदी हुई आती थीं। जर्मनोंकी हार होने लगी तो घायलोंके लिए मरहम-पट्टी मिलना भी दूभर हो गया। रेलगाड़ियोंमें घायलों और मरे हुए सैनिकोंके बीच कोई अन्तर न होता।

जीवित-शरीर और सड़ी-गली लाशें एक ही डिब्बेमें ठूँस दी जातीं। .ज्वाइगके भाव-प्रवण हृदयपर युद्धके इन दृश्योंका बड़ा असर पड़ा। उन्होंने सोचा कि प्रत्येक कलाकार, लेखक, कवि और सांस्कृतिक कार्यकर्त्ताका यह प्रथम कर्त्तव्य है कि वह पाशविक शक्तियोंका घोर विरोध करे। कला और संस्कृतिके स्रोतको राजनीति और शक्ति-लोलुपताकी मरुभूमिमें खो नहीं जाना चाहिए। बल्कि रेगिस्तानको फिरसे हराभरा करने और नई पौधें उगानेका सतत प्रयत्न करना चाहिए। .ज्वाइगके इन विचारोंका क्रियात्मक समर्थन रोम्याँ रोलाँने किया। यूरोपके ये दोनों कलाकार अन्तिम साँस तक हिटलरी नादिरशाहीके विरोधमें और व्यक्तिगत स्वातन्त्र्यके समर्थनमें लिखते-बोलते रहे। जब कि अन्य अनेक लेखकोंने तो अपनी कला और संस्कृति नाजियोंके हाथ बेच दी थी।

साधना और सिद्धि—

स्टीफन .ज्वाइग चालीस वर्षों तक निरन्तर साहित्य निर्माण करते रहे। पचासवीं वर्षगाँठपर उनके स्थायी प्रकाशक 'इन्सेल बर्लेग' ने .ज्वाइगकी कृतियों और अनुवादोंकी सूची बनाकर भेजी तब उन्हें ज्ञात हुआ कि संसारकी अनेकों भाषाओंमें केवल उन्हींकी पुस्तकोंका सबसे अधिक अनुवाद हुआ है। एक वर्षमें पचास-पचास हज़ार तक प्रतियाँ छपीं और बिकीं। शायद ही किसी लेखककी महत्त्वाकांक्षाको इतना बृहत् साकार रूप मिला होगा। उन्होंने अपनी सफलताका रहस्य बतलाया है। वे लिखते हैं कि—"उपन्यास, जीवनी और आलोचनात्मक लेखोंमें मुझे यदि कहीं भी ऐसी बात मिलती है कि जो फालतू हो, केवल आलंकारिक प्रयोगमें लाई गई हो, अथवा जो अस्पष्ट हो, तो मुझे बड़ी झुँझलाहट होती है। केवल वही पुस्तक मुझे अच्छी लगती है, जिसमें आदिसे अन्त तक ऐसा धारा-प्रवाह हो कि पाठक एक साँसमें उसे पढ़ जायँ।" स्टीफन .ज्वाइगकी पुस्तकोंमें यही विशेषता है। वह पहली बार एक हज़ार पेज लिख डालते और काट-छाँट करते-करते उनमेंसे केवल दो-सौ रहने देते। पुस्तक छपते-छपते, अन्तिम प्रूफ़में भी वे इसी प्रयत्नमें रहते थे कि कहीं एकाध वाक्य, एक ही शब्द, फालतू मिल तो जाय !

यह एक साधना थी—कलाको सर्वांगसुन्दर बनानेकी। जीवन-भर वे इसीपर दृढ़व्रत होकर चलते रहे। कुछ लोग नाक-भौं सिकोड़कर कहते हैं कि

निरन्तर काट छाँट करते रहनेसे .ज्वाइगके साहित्यमें नैसर्गिकता (Spontaneity) नहीं आ सकी है। कलाकी वस्तुएँ गुलाब-सी ताज़ी और प्रकृत-सुन्दर होनी चाहिए। काट-छाँट करनेसे कृत्रिमता आ जाती है। कलाके प्रति ऐसा दृष्टिकोण इकतरफा है। जंगली गुलाबका सौन्दर्य तो निर्विवाद है। किन्तु शाहजहाँके ताजमहल और गुप्तकालकी प्रस्तर-मूर्तियोंको कोई असुन्दर नहीं कह सकता। एक मूर्तिकार अपने छोटे-से दरिद्र कमरेमें बैठा-बैठा अनगढ़ चट्टानपर टाँकियाँ पीटता है। कई दिन, कई महिने, कई वर्ष यही एक काम वह करता रहता है। उसके उपरान्त उस पत्थरसे वह एक सुन्दर मूर्ति बनाकर खड़ा कर देता है। वह कला है। मनुष्य है उसका निर्माता। कलाका सौन्दर्य दो प्रकारका होता है—नैसर्गिक और मूर्तिमत्—Spontaneous और Statuesque। एक जंगली गुलाबकी भाँति और दूसरा देवगढ़ और खजुराहोकी मूर्तियोंके समान। .ज्वाइगकी कलामें यह दूसरे प्रकारका सौन्दर्य है।

रोडिनका आदर्श—

इसी सम्बन्धमें स्टीफन .ज्वाइग और प्रसिद्ध मूर्तिकार रोडिनकी मुलाकातका विवरण उल्लेखनीय है। रोडिनका नाम उन्होंने बहुत दिनोंसे सुन रक्खा था। एक बार दोनोंकी मुलाकत हो गई। रोडिन .ज्वाइगको अपना स्टुडियो दिखाने ले गये। एक कोनेमें मिट्टीकी अधबनी मूर्ति रखी थी। दूसरी-दूसरी वस्तुएँ देखते-दिखाते दोनों वहाँ पहुँचे तो रोडिनने मूर्तिपर पड़ा हुआ गीला कपड़ा हटाया और एकाएक उन्हें लगा कि मूर्तिके कानके पास ठीक ठीक कटाव नहीं आया है। उन्होंने अपना लबादा उतारा, हाथमें रुखानी ली और थोड़ी-सी मिट्टी वहाँसे तराशकर निकाल ली। वे पीछे हटे और ध्यानसे मूर्तिको देखते रहे। फिर आगे बढ़े और पुनः थोड़ी-सी मिट्टी दूसरी ओरसे काट ली। वह बार-बार आगे बढ़ते ओर उतनी ही बार थोड़ी-थोड़ी मिट्टी मूर्तिके किसी-न-किसी अंगसे काटते जाते। आध घण्टे तक यही चलता रहा। रोडिन भूल गये कि उनके साथ एक सम्भ्रान्त अतिथि विद्यमान है। ऐसी एकाग्रता, ऐसी तत्परता उनमें आ गई थी। स्टीफन .ज्वाइग मंत्रमुग्धसे देखते रहे। अन्तमें जब काट-छाँट समाप्त हुई तब वह लबादा पहनकर बाहर जाने लगे। .ज्वाइगको वे कतई भूल गये थे। दरवाजेके पास जाकर मुड़े तो उन्होंने अपने अतिथिको देखा। पहचान

न सके और झुँझलाकर मनमें सोचने लगे—"कौन है यह?" फिर एकाएक उन्हें स्मरण हुआ तो वह लज्जित होकर क्षमा-याचना करने लगे।

इसी एकाग्रता और तत्परताके साधक थे—स्टीफन ज़्वाइग। वह अपनी साधनामें इतने डूबे रहते थे कि बाहरी समाजसे मिलना-जुलना, क्लबों और नाचघरोंमें जाना, संस्थाओंका सभापति बनना, यहाँ तक कि नाट्यगृहोंकी अगली सीटोंपर बैठना तक उन्हें नापसन्द था। कहा करते कि "जीवनके प्रत्येक पहलूमें यही अप्रसिद्धि मेरी आवश्यकता रही है।" एक बार आस्ट्रियन सरकार उन्हें अपना राजदूत बनाकर कहीं भेज रही थी। उन्होंने साफ इन्कार कर दिया। सरस्वतीके पवित्र मंदिरका पुजारी इतना नीचे भला कैसे उतरता कि राजनीतिक पद ग्रहण कर लेता?

नाज़ी पशुता और महाभिनिष्क्रमण—

जर्मनीमें जब नाज़ियोंका जोर बढ़ रहा था, स्टीफन ज़्वाइग उन दिनों साल्ज़बर्गमें रहते थे। पिछले महायुद्धके बाद वे समझते थे कि कम-से-कम एक शताब्दी तक दुबारा युद्ध नहीं होगा। किन्तु हिटलरका प्रभाव बढ़ता गया। राइनलैंड, झेकोस्लोवाकियाके बाद उसने आस्ट्रियापर अधिकार कर लिया। पोलैंडपर आक्रमण किया और दूसरा महायुद्ध प्रारम्भ हो गया। स्टीफन ज़्वाइगने देखा कि पैंतीस वर्षोंतक अथक परिश्रम करके जिस कला-भवनका उन्होंने निर्माण किया था, वह एक ही क्षणमें धूलिसात् हो गया। युरोपसे यहूदियोंका निष्कासन प्रारम्भ हुआ। ज़्वाइगपर हिटलरका विशेष कोप था। जर्मनी और आस्ट्रियामें उनकी पुस्तकोंपर रोक लगा दी गई। नाज़ी पार्टीके उन्मत्त युवक उनकी पुस्तकें इकट्ठी कर करके बीच बाज़ारमें ढेर लगाकर होली जलाने लगे। कोई व्यक्ति कैसा हो महान् साहित्यिक, दार्शनिक, कलाकार और वैज्ञानिक क्यों न हो, यदि वह यहूदी था तो उसे कठोरसे कठोर मानसिक यंत्रणा देनेमें वे कोई कसर नहीं रखते थे। इस युगके सबसे बड़े वैज्ञानिक आइन्स्टीनको भागकर अमरीका जाना पड़ा। सबसे बड़े मनोवैज्ञानिक सिगमण्ड फ्रायड बुढ़ापेमें, छियासी वर्षकी अवस्थामें इँगलैंड जाकर रहने लगे। सत्यके इस महान् पुजारीकी वहीं मृत्यु हुई। वहीं विदेशी भूमिमें वे दफनाए

गये। स्टीफन ज्वाइग तब इँगलैंडमें ही थे। इन घटनाओंसे उनके मनपर जो असर पड़ा, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। इँगलैंडसे वे फ्रांस आये, और वहाँसे अमरीकाके लिए रवाना हो गये। डनकर्कके बन्दरगाहपर एक लोमहर्षण दृश्य उपस्थित था। हजारों लाखोंकी संख्यामें यहूदी लोग वहाँ इकट्ठे हो गये थे। पोलैण्ड, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया, रूमानियाँ, हंगरी, बल्गेरिया, युगोस्लाविया आदि भिन्न भिन्न देशोंसे भाग-भागकर वे लोग आये थे। जो जिस देशसे आया था, वहींकी बोली बोलता और वहींकी वेशभूषा पहने था। कई पीढ़ियोंसे ये लोग उन देशोंमें रहते आये थे। वहाँकी संस्कृति, वहाँकी जल-वायु, मिट्टी इनकी आत्मामें बस चुकी थी। ये लोग भूल चुके थे कि वे यहूदी हैं। आज अकस्मात् इस भीषण सत्यका, अपने यहूदी होनेका, उन्हें ज्ञान हुआ। वे लोग जंगली हिरणोंकी भाँति डरे हुए वहाँपर इकट्ठे हो रहे थे। वे ऐसे देशोंकी ओर जा रहे थे, जिन्हें उन्होंने स्वप्नमें भी नहीं देखा था। वहाँ उनका कैसा स्वागत सत्कार होगा, कैसी आव-भगत होगी, इसका अनुमान कर करके वे सिहर उठते थे।

उन्हींके साथ बैठकर आस्ट्रियाका यह महान् यहूदी कलाकार, स्टीफन ज्वाइग, अपनी मातृभूमि छोड़कर हजारों मील दूर अमरीकाकी ओर चल दिया। उसके स्वप्नोंका संसार नष्ट हो चुका था। यूरोप जिसकी आध्यात्मिक महत्तापर वह कभी विश्वास करता था, आज पशुताके पैरोंतले रोंदा जा रहा था। अपनी भाषामें उसने जो कुछ लिखा, वह चुन-चुनकर जला दिया गया था। कोई भी मनुष्य उसके दुःखकी गम्भीरता नाप नहीं सकता था।

कलाका लक्ष्य अमरत्व-प्राप्ति —

कलाकार स्रष्टा है। वह प्रजापति है। उसकी पुस्तकें, वाक्य और शब्द उसकी प्रजा हैं। भाषा उसका क्षेत्र है। उसमें अपनी कृतियोंको वह जन्म देता है। उनके नष्ट होनेसे उसे वही दुःख होगा, जो एक पिताको अपनी सन्तानके मरनेपर।

मनुष्य जानता है कि एक दिन उसे मरना है। मृत्युसे उसे कोई शक्ति नहीं बचा सकती। वह प्रयत्न करता है कि उसका नश्वर शरीर भले ही नष्ट हो

जाय, किन्तु अपने पीछे वह कुछ छोड़ जाय, ताकि उसका यशःशरीर अमर रहे। शेक्सपिअरने सैंतीस नाटक इसी उद्देश्यसे लिखे; तुर्गनेव, दोस्तोवस्की, और टाल्स्टायने इसी इरादेसे उपन्यास रचे; कालिदासके काव्य इसी महत्त्वाकांक्षासे उत्पन्न हुए; मिश्रके राजाओंने गगनचुम्बी पिरामिड बनवाये; प्रियदर्शी सम्राट् अशोकने देशके कोने-कोनेमें बड़ी-बड़ी शिलाओंपर धर्म सन्देश खुदवाये; दिल्लीमें कुतुब-मीनार खड़ी हुई; ताजमहल बना। इन सबके पीछे मनुष्यकी वही आदिम भावना काम कर रही थी—मृत्युपर विजय पाना—यमराजके हाथोंसे छुड़ाकर अपनी कीर्तिको यहीं छोड़ जाना।

ऋषि-पत्नी मैत्रेयी और नचिकेताकी भाँति स्टीफन .ज्वाइगने भी सोचा होगा 'येनाहं नामृतः स्याम् तेनाहं किं कुर्याम्?' क्षुद्र स्वार्थोंकी रंगभूमि यह जगत् संस्कृति और सभ्यताकी जड़पर कुठाराघात करनेवाले अनेकों राजनीतिक प्रवाद, हिंसा, बर्बरता, संघर्ष, अभाव, दारिद्र्य —ये वस्तुएँ ऐसी तो नहीं थीं कि इनके लिए जिया जा सके। लोग सोचते हैं, और उनका सोचना स्वाभाविक भी है कि .ज्वाइगकी मृत्यु कम शोकप्रद होती तो अच्छा होता। किन्तु उन जैसे व्यक्तियोंके, विशेषकर दिवंगत महापुरुषोंके, कार्योंपर आलोचना करनेका सहज अधिकार प्रत्येक मनुष्यको नहीं है। उनकी जो कुछ देन है, संसारको उसीका कृतज्ञ होना चाहिए। जब तक कला और संस्कृतिके प्रेमी इस भूमिमें विद्यमान हैं, स्टीफन .ज्वाइगका नाम सदैव सम्मानके साथ स्मरण किया जायगा।

श्रद्धाञ्जलि—

सन् १९३१ ईसवीमें स्टीफन .ज्वाइगने अपनी पचासवीं वर्षगाँठ मनाई थी। तब तक संसारकी जिन अनेक भाषाओंमें उनकी कृतियोंके अनुवाद हो चुके थे उन्हें गिनाते हुए 'मराठी' भाषाका भी उल्लेख उन्होंने किया है। हिन्दीमें, और कदाचित् भारतवर्षकी किसी दूसरी भाषामें, अब तक .ज्वाइगकी रचनाओंका अनुवाद नहीं हुआ था। यह देश तब पराधीन था। अपनी ही उलझनों और परतंत्रताके पाशको छिन्न-भिन्न करनेमें ही उसकी सारी शक्ति लगी हुई थी। फिर भी हमारी वाणी सर्वथा मौन नहीं रही। मराठी

अनुवादके रूपमें स्टीफन .ज्वाइगकी अभ्यर्थना भारतवर्ष यथासमय कर ही चुका था। उसके उपरान्त स्वतंत्रता-प्राप्तिके पहले ही वर्ष उनकी दो रचनाओंके हिन्दी अनुवाद बम्बईसे प्रकाशित हुए। आज इन कहानियोंके रूपमें हम पुनः अपनी विनम्र श्रद्धांजलि उन्हें भेंट कर रहे हैं।

प्रस्तुत संग्रहमें—

स्टीफन ज्वाइगकी पाँच कहानियोंका हिन्दी अनुवाद दिया जा रहा है। पहली कहानी 'शतरंजका खेल' .ज्वाइगकी अन्तिम कृति है। उसके प्रकाशनके कुछ ही समय पश्चात् उन्होंने आत्म-हत्या कर ली थी। शेष चार कहानियाँ अन्यान्य संग्रहोंसे संकलित की गई हैं। अन्तिम 'विक्षिप्त' संसारकी सर्वश्रेष्ठ कहानियोंमेंसे एक मान ली गई है। किन्तु तिथि-क्रमानुसार बहुत पुरानी होनेके कारण इस संग्रहमें उसे पहला स्थान नहीं प्राप्त हो सका।

शतरंजका खेल—

एक शुद्ध मनोवैज्ञानिक कहानी होनेपर भी किसी सीमा तक लेखकके जीवनसे सम्बद्ध अनुभूतियोंका भी चित्रण करती है। यह कहानी उस समय लिखी गई थी जब यहूदियोंपर हिटलरका अमानुषिक अत्याचार चरम सीमाको प्राप्त हो चुका था। नाजी सम्प्रदाय किस प्रकार अपने कोप-भाजनोंको मानसिक यंत्रणाएँ दिया करता था, उसीका एक प्रोज्ज्वल दृष्टान्त इस कहानीके रूपमें उपस्थित किया गया है। कथा-नायककी जिस असाधारण मानसिक विकृतिका इसमें वर्णन है, सम्भव है कि स्वयं लेखककी मनःस्थिति भी करीब-करीब वैसी ही रही हो। आत्महत्याके पूर्व उनके अन्तिम पत्रमें जो मनोभाव लक्षित हैं, करीब-करीब वही भाव डाक्टर बी० में दिखलाई पड़ते हैं, जब वह शतरंजका बोर्ड छोड़कर सदाके लिए बिदा माँगकर चला जाता है।

गवर्नेस—

एक छोटी-सी सुन्दर मनोवैज्ञानिक कहानी है। दो लड़कियाँ हैं जो वयः सन्धिकालसे होकर गुज़र रही हैं। शैशवका अज्ञान और भोलापन उनमें है, और यौवनकी रत्न-शलाका कई बार उनके हृदयोंको छू-छूकर अनुरंजित

करती जा रही है। संसारको स्वप्नलोक समझकर वे मुग्धाएँ धड़कते हृदयसे रोमान्सकी प्रतीक्षा कर रही हैं। इसी समय जीवनका वास्तविक विद्रूप अपने भीषणतम रूपमें उन्हें दिखाई देता है। स्वप्नोंकी दुनिया राख हो जाती है। असमयमें ही उनके किशोर हृदयोंमें निराशाका अन्धकार घर जमा लेता है। वे संसारके प्रति विद्रोह कर उठती हैं।

अपरिचिता—

कहानीके रूपमें एक लम्बा पत्र है, जिसे एक विपथगा युवती माताने सद्योमृत शिशुके पास बैठकर अपने प्रियतमको लिखा है। वह शिशु उसके प्रथम यौवनका प्रसाद है। कुन्तीके कर्णके समान यौवनकी पहली भूल अथवा मूर्खताके परिणाम-स्वरूप वह उसे मिला है। जिस पुरुषको उसने आत्मसमर्पण किया वह एक फैशनेबिल उपन्यासकार है, और स्त्रियोंको केवल भोग-विलासकी वस्तुओं, हेयर आइल, पोयेड, स्नो, फेसपाउडरके ही समान उपयोजनीय समझता है। उपभुक्ताको दुबारा पहिचानना वह वैसा ही अनावश्यक समझता है, जैसा पी चुकनेके बाद शराबी यह देखनेका प्रयत्न नहीं करता कि शराबकी बोतल कैसी थी, किस रंगका लेबिल उसपर लगा था, किस प्रकारकी विशेष चित्रकारी उसपर की गई थी। इसके विपरीत यदि वह बोतल संयोगवश उसके मार्गमें पड़ गई तो ठोकर मारकर उसे चूर-चूर करनेमें भी वह नहीं चूकता। ऐसे विलासी चरित्रहीन साहित्यकारकी ओर वह स्त्री किशोरावस्थामें ही आकर्षित हो जाती है। कलाकार मनुष्य है और मनुष्य अन्ततोगत्वा पशु ही है, इस तथ्यका ज्ञान उसे नहीं है। किशोरावस्था पार कर लेनेपर यौवनकी उत्तप्त आतुरतासे प्रेरित होकर वह बह जाती है। उसे लज्जा नहीं है, क्योंकि सच्चा प्रेम आत्मसमर्पण करना जानता है—औपचारिक आनाकानी और नाज़ो अन्दाज़ दिखाना नहीं जानता। इस आत्मसमर्पणके बदले वह केवल यही चाहती है कि वह पुरुष उसे एक ही बार पहिचान ले।...किन्तु ऐसा नहीं होता। दूसरी कहानियोंकी भाँति इसमें भी लेखकने कल्पनाशील भावुकताके विरुद्ध यथार्थका संघर्ष दिखाया है। साहित्य, संस्कृति, कला इत्यादि केवल ऊपरी आवरण मात्र हैं। इन सबपर मनुष्यका आन्तर पशुत्व विजय प्राप्त करता रहता है। फ्रायडकी इस विचारधाराका स्टीफन ज़्वाइगपर पूर्ण प्रभाव पड़ा है।

अदृश्य संग्रह—

करुण-रस-प्रधान मनोवैज्ञानिक कहानी है। टाइम्स आफ इण्डिया प्रेस, बम्बईसे संसारकी श्रेष्ठ कहानियोंका जो एक संग्रह निकला था, उसमें स्टीफन .ज्वाइगकी यही एक कहानी सम्मिलित की गई है। हानिकी अनुभूति ही दुःख है और उसका अज्ञान सुख—इस मनोवैज्ञानिक लक्ष्यका एक सुन्दर विश्लेषण इस कहानीमें किया गया है।

विक्षिप्त—

इस संग्रहकी अन्तिम और सर्वोत्तम कहानी है। फ्रायडके जिस सिद्धान्तका उपर्युक्त पंक्तियोंमें दो बार प्रसंग आ चुका है, उसीका एक विवेचनात्मक दृष्टान्त इस कहानीमें दिखाया गया है। कथा-नायक एक डाक्टर है—अपने विषयका विशेषज्ञ—खूब पढ़ा-लिखा, सुसंस्कृत, नव-युवक। 'अपरिचिता' के उपन्यासकारकी भाँति इस डाक्टरका भी ऊपरी आवरण विज्ञान और संस्कृतिसे ऐसा ढँक गया है कि उसका सतत-जागरूक अन्तर्लीन पशुत्व संसारको दिखाई नहीं देता। उसकी यौन-भावना अत्यन्त तीव्र विषकी भाँति मनपर अधिकार किये हुए है। तब एक स्त्री आती है जो चारित्र्यके राजमार्गसे फिसल पड़ी है। डाक्टरकी सहायताकी उसे अपेक्षा है। डाक्टर सहायताके बदलेमें अपने बुभुक्षित पशुत्वकी तृप्ति माँगता है।—सम्पूर्ण कहानी इस एक क्षणिक पाप और उससे उत्पन्न पश्चात्तापके विश्लेषणसे भरी हुई है। वह डाक्टर—वह वैज्ञानिक—संस्कृतिका वह पुजारी—अन्तमें नंगे पागल कुत्ते-सा अपने ही पापोंकी छायाके पीछे-पीछे दौड़ता फिरता है।

लगता है कि आशाकी ज्योति बुझ गई। एक बार जागृत होनेपर पशुपर विजय पाना मनुष्यताके लिए सम्भव नहीं।

निराशावाद—

इस प्रकार .ज्वाइगकी उपयुक्त पाँच प्रतिनिधि कहानियोंको लेकर पाठक इस निष्कर्षपर पहुँचता है कि इनका लेखक निराशावादी है। उसे मनुष्यसे प्रेम है, दया है। उसके सुखसे प्रफुल्लित और दुःखसे वह भी पीड़ित है। किन्तु मनुष्यताके उज्ज्वल भविष्यपर उसे विश्वास

नहीं है। साहित्य, संस्कृति और विज्ञानको वह केवल आवरणमात्र समझता है। मुर्गीके चूज़ेकी भाँति किसी भी समय ऊपरकी पर्तको तोड़कर मनुष्यका यथार्थ पशुरूप प्रकट हो सकता है।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है स्टीफन .ज्वाइग सिगमण्ड फ्रायडके अनन्य मित्रोंमेंसे एक थे। फ्रायडके सिद्धान्तोंका प्रभाव उनपर पड़ना स्वाभाविक था। दूसरे निराशावादी कलाकारोंकी भाँति .ज्वाइग 'भाग्य' या 'दैव' पर विश्वास नहीं करते। आत्मा और आध्यात्मिक तत्त्वोंपर उन्हें श्रद्धा अवश्य है। मेस्मरेज़िमकी ओर उन्हें आकर्षण है और इसीसे प्रेरित होकर मेस्मर साहबकी जीवनी उन्होंने लिखी। किन्तु मानव-जीवनमें जो दुःख है, पीड़ा है, उसका कारण वह किसी बाहरी अतिपार्थिव शक्तिको नहीं मानते। जीवनमें जो संघर्ष है वह मनुष्यके पशुत्वकी छटपटाहट है, जिसे सभ्यता और संस्कृतिकी नश्वर बेड़ियोंसे जकड़ दिया गया है और जो प्रतिक्षण उन्हें तोड़ कर अपने पूर्वरूपमें आ जानेका प्रयत्न करता रहता है।

अभिजात-वर्गका कलाकार—

बीसवीं शताब्दीके दूसरे चरणमें यूरोपके एक अन्य कलाकारने भी अमर कीर्ति प्राप्त की थी और उसकी प्रसिद्धि स्टीफन .ज्वाइगसे कहीं अधिक विस्तृत और लोकप्रिय हुई। वह कलाकार थे—मैक्सिम गोर्की। स्टीफ़न .ज्वाइगकी रचनाओंका अनुवाद रशियनमें हुआ तो उसका सम्पादन और भूमिका-लेखन गोर्कीने किया था। इससे स्पष्ट है कि गोर्की ज्वाइगकी रचनाओंका आदर करते थे। फिर भी इन दो महान् कलाकारोंमें आकाश-पातालका-सा अन्तर है। मैक्सिम गोर्की जन्मसे और स्वभावसे जनताके, मजदूरों किसानों और पीड़ितोंके प्रतिनिधि थे। किन्तु स्टीफन .ज्वाइग जन्मसे और स्वभावसे अभिजात-वर्गके कलाकार थे। गोर्कीने 'मदर' जैसा क्रान्तिकारी उपन्यास लिखकर अमरता प्राप्त की, और .ज्वाइगने 'मेरी क्वीन आव् स्काट्स्' और 'मारी आन्तोयेनेत' की जीवनियाँ लिख कर। स्काटलैण्डकी रानी मेरी धार्मिक प्रतिक्रियावादियोंके पैरोंतले इंगलैण्डकी स्वातंत्र्य-भावनाको कुचलना चाहती थी। किन्तु उसे समयकी शक्तियोंको प्राणोंकी आहुति देकर तृप्त करना पड़ा। मारी आन्तोयेनेत फ्रांसीसी एकतंत्रीय राजसत्ताकी निर्वाणोन्मुख प्रदीप थीं। जनताकी दुर्दम क्रान्ति-

भावनाके चरणोंपर उसे अपना सुन्दर शीश बलि चढ़ाना पड़ा। स्टीफन .ज्वाइग एक हूक, एक कसकके साथ इन दोनों रानियोंका वर्णन करते हैं। उन्हें मोह है सत्ताके इन चमकीले नक्षत्रोंसे। उन्हें टूटते और कालकी अनन्त नीलिमामें लुप्त होते देख उन्हें पीड़ा होती है।

स्टीफन .ज्वाइगको उन लोगोंसे प्रेम नहीं है जो निम्न सामाजिक स्तरसे अकारण ऊपर उठकर प्रसिद्धि पा लेते हैं। ऐसे लोगोंको अभिजातवर्गके द्वारा पराजित होते देख उन्हें सुख होता है। 'शतरंजका खेल' में शेण्टोविखका चैम्पियन बनना उन्हें अच्छा न लगा। उसे अभिजातवर्गीय डाक्टर बी० से पराजित कराके छोड़ा। हिटलरसे उन्हें इसलिए घृणा है कि वह एकतंत्रीय डिक्टेटर था, और जनताकी आज़ादीका सबसे बड़ा दुश्मन था। बल्कि इस लिए कि वह भी एक साधारण-से कारपोरलसे उठकर महासत्ताका अवतार बन गया—इसलिए कि उसके कारण सदियोंसे प्रतिष्ठित आस्ट्रियाके हैप्सवर्ग वंशका अन्तिम सम्राट् एक दिन एक साधारण नागरिककी भाँति आस्ट्रियासे निकाल दिया गया।

स्टीफन .ज्वाइग रूस गये तो मज़दूरोंके उस राजमें उन्हें सर्वत्र सन्देह और षड्यंत्र ही दिखाई दिये। हाँ, एक वस्तु उन्हें आकर्षक लगी। वह थी 'काउण्ट' लियो टाल्स्टायकी निर्जन समाधि। महात्मा टाल्स्टायके निजी सिद्धान्त चाहे जो कुछ रहे हों, परन्तु वह थे तो अभिजातवर्गके ही प्रतिनिधि।

इस भावनाके पीछे एक महान सत्य है जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। स्टीफनज़्वाइगका जीवन-काल बड़ी-बड़ी क्रान्तियोंका युग था। संसारकी मानवतामें दो स्पष्ट दल-बन्दियाँ हो गई थीं—जनताके श्रमका शोषण करनेवाले पूँजीपतियों और सामन्तों, तथा हँसिया-हथौड़ा चलाकर संसारको अन्न-वस्त्र देनेवाले किसानों और मज़दूरोंकी। इतिहासका यह क्रम एक निर्दिष्ट प्रणालीपर चल रहा था। कोई भी शक्ति उसे उलटे नहीं चला सकती थी। वह प्रणाली थी, पूँजीपतियों और राजाओंसे जनतामें सत्ताका हस्तान्तरण। .ज्वाइगने क्रान्तिके इस रूपका कहीं भी विरोध नहीं किया। किन्तु उनकी जो अस्पष्ट शिकायत है, वह जनताके नए शासकोंमें आभिजात्य-गुणके न होनेपर है। शोषकत्व और आभिजात्य दो विभिन्न वस्तुएँ हैं। एकका अन्त होना उतना ही वांछनीय है जितना दूसरेका बने रहना। वह समाज और व्यक्तिकी

शोभा है। शासनकी कोई भी प्रणाली क्यों न हो, शासकका होना अनिवार्य है। आराजक-वादका वह युग तो अभी बहुत दूर है जब किसी भी प्रकारकी गवर्नमेण्टका अस्तित्व संसारमें नहीं रह जायेगा। तब-तक जनता और उसके शासकोंके बीच टकराहट न होने देनेके लिए इस गुणकी उतनी ही आवश्यकता है, जितनी मशीनके विभिन्न पुर्जोंमें मोबिल आयलकी।

उपर्युक्त आलोचनाका यह अर्थ कदापि नहीं है कि स्टीफन .ज्वाइग हमारे आदरके पात्र नहीं हैं। कवि-कुल-गुरु कालिदासके काव्योंको यदि हम यह कहकर नहीं पढ़ें कि वह तो एक चक्रवर्तित्वके, 'आसमुद्रक्षितीश' 'आनाकरथवर्त्मा' राजाओंका स्वप्न देखते थे, तो हमारी इस उपेक्षासे कालिदासकी महत्ता रत्तीभर भी कम नहीं होगी। उलटे संकुचितता और मूर्खताके कारण हम उपहासके पात्र बनेंगे।

विशुद्ध कला और टेकनीककी दृष्टिसे स्टीफन .ज्वाइगका अध्ययन प्रत्येक नये लेखकके लिए लाभप्रद होगा। इन पाँच कहानियोंका हिन्दीमें रूपान्तर करनेके पीछे भी अनुवादकको यही प्रेरणा मिली थी। क्योंकि अधकचरी असुन्दर मौलिक रचनाओंको प्रकाशित करनेसे कहीं अच्छा है कि किसी महान् लेखककी कृतियोंका अनुवाद किया जाय। इससे दो लाभ होते हैं। एक तो अनुवाद करनेमें मूल लेखककी शैलीका रहस्य समझमें आ जाता है; दूसरे, साहित्यके क्षेत्रमें जो प्रातःस्मरणीय हैं उनका श्राद्ध-कर्म करके आत्मा प्रसादको प्राप्त होती है।

कुछ आशंकाएँ—

अनुवाद कैसा हो सका है—हिन्दीके पाठकोंको यह रुचेगा अथवा नहीं—अनुवादकके मनमें ऐसी कई आशंकाएँ घर बना बैठी हैं। क्यों कि मौलिक लेखनकी अपेक्षा अनुवाद-कार्य कहीं अधिक दुष्कर होता है, विशेषतया स्टीफन .ज्वाइग जैसे टेकनीशियनका जो मनोविश्लेषणको अपना विषय बना कर लिखता है। दूसरे इन कहानियोंका हिन्दीमें यह रूपान्तर होना एक घटना है—प्रयास नहीं। अनुवादक स्टीफन .ज्वाइगकी टेकनीकका अध्ययन करना चाहता था। अनुवादमें उसे सूक्ष्मतासे अध्ययन हो सकनेकी सम्भावना प्रतीत हुई। जिसे लेकर हिन्दीमें दूसरे अनुवाद हुआ करते हैं वह सामान्य दृष्टिकोण उसके सम्मुख नहीं था।—इसलिए यह तो निश्चित है कि पुस्तकमें अनन्त त्रुटियाँ होंगी। किन्तु अनुवादकको पूर्ण आशा है कि सहिष्णु पाठक उसे क्षमा करेंगे।

क्षमाका विषय—

सम्भव है कि इस संग्रहकी दो-एक कहानियोंका अनुवाद हिन्दीमें पहले ही प्रकाशित हो चुका हो। 'अपरिचित स्त्रीके पत्र' शीर्षक कहानी कहींसे छोटी-सी पुस्तिकाके रूपमें प्रकाशित भी हुई है। उसी कहानीको दुबारा अनुवाद करके इस संग्रहमें सम्मिलित करना अवश्य ही अनुवादककी धृष्टता अथवा स्पर्द्धा प्रतीत होगी। किन्तु 'मणौ वज्र-समुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः' कहकर, अपनी लघुता और अपदार्थताका अनुभव करता हुआ अनुवादक उन सभी 'पूर्वसूरियों'से क्षमा-याचना करता है, जिन्हें इस महान् कलाकारका अनुवाद-श्राद्ध करनेका पूर्व-सौभाग्य मिल चुका है।

दो आभार—

यह कार्य प्रारम्भसे ही पं० बनारसीदासजी चतुर्वेदीकी प्रेरणा और आदेशसे होता रहा। साहित्य-मार्गमें अपने उन प्रदर्शकके प्रति थोड़े-से आभारसूचक शब्दोंका प्रयोग करके ही निष्कृति पा जाना अनुवादक नहीं चाहता। किन्तु इस प्रकाशन-मुहूर्त्तमें उनके नामका पुण्य-स्मरण कर लेना वह अपना अनिवार्य धर्म समझता है।

पुस्तकके आवरण-पृष्ठपर श्री श्रीकृष्ण देवसरेद्वारा चित्रित डिज़ाइन है। अनुवादक अपने इस कलाकार बन्धुको परिष्वजन-पुरःसर धन्यवाद देता है।

इत्यलम्।

रीवाँ
१ जनवरी, १९४९

शोभाचन्द्र जोशी

एक प्रश्न और उसका उत्तर

वर्तमान युगमें सजीव तथा स्वाधीन-चेता साहित्य-स्रष्टाओंके सम्मुख सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है :

क्या हम किसी पार्टीका लेबिल लगाये बिना जिन्दा रह सकते हैं ? और ज्यों ज्यों राजनैतिक दलोंके संघर्ष तीव्रतर होते जायँगे और भिन्न भिन्न दलोंके सिद्धान्तों तथा विश्वासोंकी मुठभेड़की ध्वनि साहित्यकाशमें ध्वनित होती जायगी, यह प्रश्न निरन्तर उग्रतररूप धारण करता चला जायगा, इसी लिए आज इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करनेकी आवश्यकता है ।

अमुक लेखक बुर्जुआ वर्गमें पैदा हुआ था, इस लिए उसके अन्तःकरणमें अपने वर्गकी भावना काम करती रही होगी । वह स्वभावतः निम्नकोटिके पददलित आदमियोंका चरित्र-चित्रण करनेमें असमर्थ है । साहित्यिकोंके गलेमें भिन्न भिन्न वादोंकी कण्ठी बाँध देनेकी यह निन्दनीय प्रवृत्ति जिन कठमुल्लोंके हृदयमें उत्पन्न होती है वे किसी एक राजनीतिक दलमें ही नहीं, सभी पार्टियोंमें पाये जाते हैं । सवाल यह है कि क्या कोई भी जिन्दादिल साहित्यिक इस प्रकार संकीर्ण शिकंजोंमें फँसना पसन्द करेगा ?

निस्सन्देह उन लेखकोंका मार्ग कुछ सरल हो जाता है, जो किसी पार्टी विशेषका प्रचार करनेमें अपनी शक्तिका उपयोग करने लगते हैं । यद्यपि उग्र विचारोंके समर्थनमें उन्हें खतरेका सामना करना पड़ता है तथापि यह आशा तो उन्हें रहती ही है कि हमारी पार्टीके हाथमें ताकत आनेपर हमारे कार्योंका पारिश्रमिक हमें मिल ही जायगा । यह आशा कितनी निराधार है, यह बतलानेकी आवश्यकता नहीं ।

ऐसी स्थितिमें साहित्यसेवी क्या करे ? इस सवालका कोई बँधा बँधाया जवाब हो नहीं सकता। हाँ, एक व्यापक उत्तर अवश्य दिया जा सकता है कि अपनी अन्तरात्माकी ध्वनिके अनुसार जैसा वह समझे करे।

वर्तमान युगमें रोमाँ रोलाँ और स्टीफन् ज्विग इन दो मित्रोंने इस प्रश्नको दो भिन्न भिन्न ढंगोंपर सुलझाया और दोनोंने ही 'स्वधर्म' का पालन किया, ऐसा कहना अनुचित न होगा। मनुष्य भिन्न भिन्न प्रवृत्तियोंका समूह है। किसीमें एक प्रवृत्ति जोरदार होती है तो किसीमें दूसरी। रोमाँ रोलाँ जीवन-भर अपनी लेखनीद्वारा अन्यायों तथा अत्याचारोंका विरोध करते रहे। जुल्म चाहे इण्डो चाइनामें हुआ हो या भारतमें, अपनी बुलन्द आवाज़ उसके खिलाफ़ उठानेमें उन्होंने कभी संकोच नहीं किया। स्वयं कवीन्द्र श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुरको, जो सरस्वतीके अनन्य साधक थे, अनेक वार साम्राज्यवादियोंके खिलाफ कठोरसे कठोर भाषाका प्रयोग करना पड़ा। इनसे सर्वथा भिन्न उदाहरण स्टीफन ज्विगका है, जिन्होंने विवादग्रस्त राजनीतिसे सदा अपनेको पृथक् ही रखा, और जब तक हम उनकी विशेष परिस्थितियोंको भली भाँति समझ बूझ न लें तब तक उनके बारेमें किसी निर्णयपर पहुँचना उनके प्रति अन्याय ही होगा।

ज्विग आस्ट्रियन थे, यहूदी थे, सरस्वतीके एकान्त उपासक और शान्तवादी भी। इसका परिणाम यह हुआ कि घोरतम संघर्षमेंसे उन्हें गुजरना पड़ा। पिछले दोनों युद्धोंमें आस्ट्रियाकी जो दुर्दशा हुई, उसका वर्णन करना आसान नहीं और यहूदियोंपर जो जुल्म ढाए गये वे भी वर्णनातीत हैं। ज्विगको विवादग्रस्त राजनीतिमें कोई दिलचस्पी नही थी, पदोंके प्रति कोई मोह नहीं था। एक बार उन्हें आस्ट्रियन सरकारने अपना राजदूत बनाकर विदेश भेजनेकी बात सोची थी, पर ज्विगने उस प्रलोभनको अस्वीकार ही कर दिया, किसी पार्टी विशेषका प्रोपेगेण्डा करना उनकी रुचिके सर्वथा प्रतिकूल था और अपने सिद्धान्तोंकी विक्री करनेकी बात वे स्वप्नमें भी नहीं सोच सकते थे, कीर्ति या विज्ञापनकी उन्हें जरूरत नहीं थी। एक संस्कृत कविका कथन है कि कीर्तिरूपो कन्या सदा क्वाँरी ही रही है। जो उसे चाहते हैं उन्हें वह नहीं चाहती और जिसे वह चाहती है, वह पुरुष उसे (कीर्तिको) नहीं चाहता। जिस अमर-ग्रन्थकारके ग्रन्थोंका अनुवाद तीस भाषाओंमें हुआ हो, जिसके विषयमें राष्ट्र-

संघकी बौद्धिक सहयोग समितिका यह कथन हो कि वर्तमान युगमें संसारमें सबसे अधिक अनुवाद ज्विगकी ही रचनाओंके हुए हैं, भला उसे राजनीतिक नेताओंसे सर्टीफिकेट लेनेकी जरूरत ही क्या थी ? जो लोग ज्विगपर यह आक्षेप करते हैं कि उन्होंने राजनीतिक दलोंके अन्यायों तथा अत्याचारोंके खिलाफ आवाज़ क्यों नहीं उठाई, वे ज्विगके जीवन और मृत्युके रहस्यको ही भूल जाते हैं। ज्विगका आत्मघातसे एक दिन पहले २२ फर्वरी सन् १९४२ को लिखा हुआ पत्र एक ऐसा बम-गोला था, जिसकी ध्वनि युगयुगान्तर तक गूँजती रहेगी। उसके मुकाबलेमें भिन्न राजनीतिक दलोंके परचे और पाम्फलेट बिलकुल पटाखोंकी तरह बच्चोंके खेल मात्र हैं।

बौद्धिक परिश्रमको ही जो जीवनकी सबसे अधिक आनन्दप्रद वस्तु मानता हो और व्यक्तिगत स्वाधीनताको जिसने जगतकी अमूल्य निधि समझा हो, उससे यह उम्मीद करना कि वह किसी पार्टीकी कण्ठी गलेमें बाँध लेगा, महज हिमाकत है। स्वाधीनताकी बलिवेदीपर अपने उत्कृष्ट जीवनकी ही बलि जिसने दे दी उससे आप और किस उत्तमतर बलिदानकी आशा रख सकते हैं ?

चंचला राजनीतिके चंगुलमें फँसे हुए नेता जब अमर साहित्यकी रचना करनेवाले साहित्य सृष्टाओंको अपना पिछ-लग्गू बनानेका प्रयत्न करने लगते हैं तो वे शेरको बिल्ली समझनेकी भूल करते हैं। ज्विग निरन्तर जागरूक रहे और ऐसे पिंजड़ोंमें फँसनेकी गलती उन्होंने कभी नहीं की। महीने दो महीने रूसमें बिताकर उसके पक्ष या विपक्षमें पुस्तक लिख देनेवाले ग्रन्थकार संसारके अनेक देशोंमें पाये जाते हैं, पर ज्विगने इस 'काता और ले दौड़े' वाली नीतिका अनुगमन नहीं किया। राजनीतिक दाव-पेच द्वारा पदप्रतिष्ठा और शक्तिको हथियानेके प्रयत्नमें जो लोग लगे हुए हैं वे यदि अमर साहित्य-सृष्टाओंको न समझ सकें तो इसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। वारवधु-ओंने सतीत्वको कब समझा है ?

ज्विगका साधनामय जीवन और असाधारण मृत्यु दोनोंका ही हमारे लिए आज विशेष महत्त्व है। वह दिन दूर नहीं है बल्कि यों कहना चाहिए कि वह घड़ी आ पहुँची है जब कि प्रत्येक सजीव साहित्यिकको अपने जीवनके मुख्य ध्येयके विषयमें अंतिम निर्णय करना होगा।

कौन कहता है कि अन्याय और अन्याचारका विरोध न किया जाय ? किया जाय और जरूर किया जाय, पर उसका तरीका यह नही है कि सबको एक लाठीसे हाँका जाय अथवा सबके माथेपर भिन्न भिन्न सम्प्रदायोंके लेबिल लगा दिये जायँ । जिन्हें सामूहिक रूपसे विरोध करनेमें सुविधा हो, वे वैसा करें, और जो व्यक्तिगत तरीके पर ही संग्राम करना चाहें उन्हें इसकी छूट रहनी ही चाहिए ।

सबसे मुख्य सवाल हमारे लिए यह है कि हम अपनी अन्तरात्माकी आवाज़के प्रति वफादार किस प्रकार रहें ?

संसार वैचित्र्यमय है, और वैचित्र्य ही जीवन है । एक राजनीतिक दल, एक नेता और एक ही कार्यक्रमकी आवाज़ जो लोग लगाते है वे किसी न किसी दिन अपनेको भेड़के रूपमे पावेंगे, और राम-कृपासे उन्हें अपनी रुचिका गड़रिया मिल ही जायगा—' जो इच्छा करिहो मनमाहीं, रामकृपा कछु दुर्लभ नाहीं, ' पर यह पथ एकाकी चलनेवाले साहित्यकोंका नहीं है ।

हर लेखक कवि अथवा पत्रकारको आजके महत्वपूर्ण प्रश्नका उत्तर स्वयं ही देना है । ' स्वधर्मे निधनं श्रेयः ' ही हम लोगोंके लिए आदर्श वाक्य है । याज्ञवल्क्यने जब अपनी पत्नीको आध्यात्मिक ज्ञानसे विरत करनेके लिए अनेक प्रलोभन दिये थे तब उन्होंने एक ही उत्तर दिया था—' येनाहम् नामृतास्याम् तेनाहं किं कुर्याम् । ' (जो चीज मुझे अमर नहीं बनाती उसे लेकर मैं क्या करूँगी ।) जो भारतीय लेखक क्षणिक पद-प्रतिष्ठाको तिलांजलि देकर अपने अन्तःकरणकी ध्वनिके अनुसार कार्य करेंगे वे ही उस प्रश्नका यथोचित उत्तर देंगे । अमर कलाकार स्टीफन ज्विगने यही किया था ।

उषा-कुंज, गांधी-भवन
टीकमगढ़, २३ फर्वरी १९४०. —बनारसीदास चतुर्वेदी

शतरंजका खेल

आधी रातका समय था। न्यूयार्कसे ब्यूनो एयरी जानेवाला एक बड़ा जहाज़ लंगर उठानेकी तैयारी कर रहा था। चारों ओर धमाचौकड़ी और कोलाहल मचा हुआ था। लोग अपने अपने मित्रों और जान-पहिचानवालोंकी बिदाईमें उतावले हो रहे थे। यात्रियोंकी सेवामें नियुक्त किये हुए कई लड़के साफ-सुथरी टोपियाँ लगाये जहाज़के कमरे कमरेमें घूम फिर कर लोगोंको पुकारते फिरते थे। यात्रियोंका सामान लादा जा रहा था। पार्सलोंका ढेर और फूलोंकी टोकरियाँ इधरसे उधर लगाई जा रही थीं। चुलबुले बच्चे जहाजकी सीढ़ियोंपर ऊपर नीचे फुदकते फिरते थे।

इस हंगामेंसे कुछ दूर, सबसे ऊपरी डेकपर मैं अपने एक परिचितसे बातें कर रहा था। उसी समय दो तीन बार एक तेज़ रोशनी हमारे आसपास चमक कर बिखर गई। जहाज़पर कोई सम्मान्य व्यक्ति यात्री होकर जा रहे थे। रातके अँधियारेमें उन्हींका फोटो लेनके लिए फ़्लैश लाइट जलाई जा रही थी। मेरे साथीने उस ओर देखा और वे मुस्करा कर बोले—"तुम्हारे इसी जहाज़से एक विचित्र व्यक्ति जा रहा है। शेन्टोविख़ नाम है उसका।"

जब उन्हें लगा कि इस सूचनासे प्रभावित होनेका कोई भी लक्षण मेरे चेहरेपर नहीं दिखाई दिया, तो वे समझा कर बोले—

"मर्को शेन्टोविख़ संसारमें शतरंजका सबसे बड़ा खिलाड़ी है। अभी अभी उसने तमाम अमरीकाको पछाड़ दी है। अब वह आर्जेन्टाइनापर शतरंजी विजय प्राप्त करने जा रहा है।"

जब मने यह ब्योरा सुना तो मुझे स्मरण हुआ कि मैं इस नवयुवक खिलाड़ीको जानता हूँ। धूमकेतुके समान उसका जीवन जो अकस्मात् प्रकाशित हो उठा था, उसकी थोड़ी बहुत घटनाएँ मैंने सुन रक्खी थीं। मेरे मित्र

मुझे शेन्टोविख़का हाल बताने लगे । वे समाचारपत्रोंपर मेरी अपेक्षा अधिक दृष्टि रखते थे। अतएव उन्होंने सिलसिलेवार सारी घटनाएँ मुझे बता दीं।

एक ही वर्ष पूर्व शेन्टोविख़ने अलेखिन, कैपेब्लांका, टार्टाकूवर, लैस्कर और बोगुलजूवफ़ जैसे शतरंजके महारथियोंसे होड़ लगाई और एक ही दाँवमें उन्हें चित कर दिया। सन् १९२२ में रेशेव्स्की नामक नौ वर्षका एक प्रतिभाशाली खिलाड़ी बालक न्यूयार्क आया था। तबसे आज तक, शेन्टोविख़के अतिरिक्त, कोई भी व्यक्ति इस प्रकार सार्वजनिक आकर्षणका पात्र नहीं बन पाया।

बुद्धिका जैसा कुछ अंश शेन्टोविख़ने पाया था, उसे देखकर, उसके बचपनमें यह नहीं कहा जा सकता था कि उसका भविष्य इतना उज्ज्वल होगा! एक और भी रहस्य मुझे ज्ञात हुआ, कि शेन्टोविख़ स्वयं इतना अपढ़ है कि किसी भी भाषामें एक भी शुद्ध वाक्य नहीं लिख सकता। उसीके एक साथीने एक बार क्रोधमें खीझकर कहा था कि सभ्यता और संस्कृतिकी प्रत्येक दिशामें शेन्टोविख़ समान रूपसे मूर्ख है।

उसका पिता युगोस्लावियाका निवासी था। अत्यन्त निर्धन। डेन्यूब नदीपर मल्लाही किया करता था। उसकी छोटी-सी नाव रातको गल्ला ढोनेवाले स्टीमरसे टकरा गई, और वह मर गया। अनाथ शेन्टोविख़ उस समय बारह वर्षका था। दयाके वशीभूत होकर गाँवके पादरीने उसे अपनी देखरेखमें ले लिया। बेचारे भले मानुसने कोई कसर नहीं उठा रखी कि यह आलसी, निर्वाक्, कुन्दज़ेहन लड़का कमसे कम घरपर उन बातोंको सीख ले, जिन्हें वह गाँवके स्कूलमें नहीं सीख सकता था।

किन्तु सारे प्रयत्न निष्फल हो गये। सौ सौ बार एक ही अक्षर लिखाये जाने पर भी शेन्टोविख़ उसी अक्षरको पढ़ नहीं पाता था। काठके मस्तिष्कमें सरलसे सरल विषयका भी प्रवेश नहीं हो पाता था। चौदह वर्षकी अवस्था तक वह गिनतीका काम अंगुलियोंसे करता। फिर भी यह तो नहीं कहा जा सकता कि शेन्टोविख़में पढ़ने लिखनेकी ओर लगन थी ही नहीं; या, आज्ञाओंका उल्लंघन करना ही उसका स्वभाव हो। नहीं। जो कुछ उसे करनेको दिया जाय, वह करता था। पानी भरकर लाता, लकड़ियाँ चीरता, खेतोंमें काम करता, चौका बर्तन करता। काम करनेमें विलंब भले ही हो जाय, किन्तु कोई भी कार्य विश्वासके साथ उसे सौंपा जा सकता था। दयालु पादरीको केवल

एक ही बातका दुःख था। इस वज्रमूर्खमें स्वयं ही कुछ काम कर दिखानेकी क्षमता नहीं थी। जब तक विशेष रूपसे न कहा जाय, न तो वह कुछ करता, न कुछ पूछता। वह दूसरे लड़कोंसे कभी नहीं खेलता था। अपनी इच्छासे कोई व्यापार ढूँढ़नेकी उसमें प्रवृत्ति भी नहीं थी। खाली हाथ वह बैठा ही रहता। उसकी आँखोंमें एक ऐसा शून्य भाव दीख पड़ता, जो कि तल्लीन होकर हरी हरी घास चरती हुई भेड़ोंकी आँखोंमें दिखाई देता है। आस पास क्या हो रहा है इसका उसे कुछ भी भान न होता। सायंकालके समय पादरी साहब हुक्केकी लंबी नली मुँहसे लगाये पुलिस-सर्जेन्टके साथ शतरंजकी तीन बाजियाँ खेला करते थे। उन्हींके पास वह मूर्ख भी पालथी मारे बैठा रहता। घनी घनी पलकोंके भीतरसे उसकी उनींदी, उपेक्षाभरी दृष्टि शतरंजकी कोठियोंपर लगी रहती।

जाड़ेके दिन। सायंकालका समय। दोनों जने नित्यप्रतिके अपने खेलमें तल्लीन थे। अचानक बाहरसे कई घंटियाँ झनझना उठीं। कोई स्लेज़गाड़ी तेज़ीसे उसी ओर आ रही थी। उसी समय बरफसे लदा टोप पहिने एक किसान अन्दर आ धमका। उसने सूचना दी कि पादरी साहबकी माता अंतिम साँसें गिन रही हैं, और उन्हें तुरन्त उनकी सेवामें पहुँच जाना चाहिए, ताकि अंतिम क्रिया करनेका उन्हें अवसर मिल जाय।

पादरी साहब तत्काल उसके साथ चल दिये। पुलिस सर्जेन्ट अभी तक वहीं बैठा बैठा अपनी बियर समाप्त करने लगा। जानेसे पूर्व उसने पाइप जलाया और वह जूते पहिनकर उठना ही चाहता था कि उसकी दृष्टि शेन्टोविख़पर पड़ी। वह उसी प्रकार निश्चल, निर्निमेष नेत्रोंसे शतरंजके बिखरे खेलकी ओर देख रहा था।

"कहो जी, इस अधूरे खेलको पूरा करना चाहते हो?"

सर्जेन्टने यह बात परिहासमें कही थी। क्यों कि उसे तो विश्वास था कि वह आलसी छोकरा, शतरंज खेलना तो दूर रहा, उसके एक भी मुहरेको चला नहीं सकता। लड़केने झेंपभरी आँखें ऊपर उठाईं। प्रश्नके उत्तरमें उसने सिर हिलाकर स्वीकृति दी और उठकर पादरी साहबके स्थानपर बैठ गया। चौदह चालोंके बाद सर्जेन्ट हार गया। उसे स्वीकार करना पड़ा कि अपनी पराजयका कारण वह लापरवाही नहीं बता सकता। क्यों कि दूसरी बाजीका भी ठीक वही परिणाम हुआ, जो पहलीका।

पादरी साहबने लौटकर यह हाल देखा। मारे आश्चर्यके उनसे कुछ कहते ही न बन पड़ा। उन्हें बाइबिलकी एक कहानीका स्मरण हुआ कि दो हजार वर्ष पहले इसी प्रकार एक गूँगे मनुष्यको एकाएक महान् वाक्शक्ति प्राप्त हो गई थी। रात काफी बीत चुकी थी। फिर भी पादरी साहब उस अनपढ़ लड़केको शतरंजकी चुनौती देनेका लोभ संवरण न कर सके। शेन्टोविख़ने उन्हें भी आसानीसे हरा दिया। वह बहुत सोच समझकर दृढ़ता और लगनके साथ खेला करता था। शतरंजके तख्तेसे एक बार भी उसने अपना सिर ऊपर नहीं उठाया। वह ऐसे अडिग विश्वासके साथ शतरंज खेलता था कि उसके बाद पादरी साहब या पुलिस सर्जेन्ट एक भी बाजी नहीं जीत सके।

पादरी साहबको शेन्टोविख़की कमजोरियाँ भली भाँति मालूम थीं। अब वे यह जानना चाहते थे कि उसकी यह एकांगी प्रतिभा कहाँ तक खरी उतरती है। उन्होंने गाँवके नाईको बुलवाकर शेन्टोविख़के बाल छँटवाये। उसे इस योग्य बनाया कि लोगोंके बीच ले जाया जा सके। पासके कस्बेमें कुछ जान पहिचानके लोग थे जो पादरी साहबकी तुलनामें शतरंजके अच्छे खिलाड़ी माने जाते थे। स्लेजगाड़ीमें बिठाकर, पादरी साहब शेन्टोविख़को वहाँके एक होटलमें ले गये। शतरंजवालोंका वह अड्डा था। पादरी साहबको तो वे लोग जानते ही थे। किन्तु उनके आगे आगे शेन्टोविख़को प्रवेश करते देखकर उन लोगोंमें खलबली-सी मच गई। लड़केके बाल खाकी रंगके थे। भेड़की खालका जैकेट उसने पहिन रक्खा था। झेंपके मारे वह किसीसे आँखें नहीं मिला पा रहा था। शेन्टोविख़ तब तक चुपचाप एक ओर खड़ा रहा, जब तक कि लोगोंने उसे शतरंजकी मेज़पर नहीं बुला लिया।

शेन्टोविख़ पहली बाजी हार गया। क्योंकि उस तरहके मोरचेका उसने कभी सामना नहीं किया था। दूसरी बाजी सबसे अच्छे खिलाड़ीके साथ हुई। चौमुहरी हो गई। न हार हुई, न जीत। किन्तु तीसरी और चौथी, तथा फिर जितनी भी बाजियाँ खेली गईं, उन सबमें शेन्टोविख़ एकके बाद दूसरेको पछाड़ता गया।

युगोस्लावियाके उन छोटे कस्बोंमें इस प्रकारकी विस्मयकारिणी घटनाएँ बहुत कम हुआ करती थीं। अतएव वहाँके तमाम खिलाड़ियोंके बीच उस गँवार चैम्पियनको खेलते देख लोगोंमें एक प्रकारकी उत्तेजना-सी फैल गई।

सब लोगोंने यह निश्चय किया कि लड़का अभी उसी शहरमें रहे। उनके क्लबके समस्त सदस्य किसी दिन इकट्ठे हों। काउन्ट सिमज़िकके समक्ष, जो कि वहींके किलेमें रहते थे और शतरंजके बड़े प्रेमी थे, उसे खेलनेको कहा जाय। पादरी साहबको शेन्टोविखपर गर्व हो रहा था। किन्तु प्रति रविवारको होने-वाली अपने गाँवकी प्रार्थनाका भी उन्हें ध्यान था। अपने आनन्दपर उन्हें नियंत्रण करना पड़ा। वे लड़केको वहीं छोड़कर चले जानेपर राज़ी हो गये। लोगोंने शेन्टोविखको वहींके एक होटलमें ठहरा दिया।

रविवारको दोपहरके समय खेलका कमरा ठसाठस भरा हुआ था। मर्को शेन्टोविख चार घंटे तक बोर्डके सामने निश्चल होकर बैठा रहा। वह एक भी शब्द नहीं बोला। एक बार भी सिर उठाकर उसने इधर उधर नहीं देखा। एकके बाद दूसरा खिलाड़ी चित होता गया। अन्तमें लोगोंने एक ही साथ मिलकर उसके विरुद्ध खेलनेका प्रस्ताव किया। कई जनें शतरंज लेकर अलग अलग बैठ गये। इस प्रकारके खेलका उसे अभ्यास नहीं था। पहले दिक्कत हुई, किन्तु फिर सब कुछ सरल हो गया।

शेन्टोविख प्रत्येककी टेबिलपर जाकर चालें चलता था। कमरेमें कई घंटों तक केवल उसीके जूतोंकी चरमराहट सुनाई देती रही। अन्तको आठ बाजियोंमें-से सात शेन्टोविखने ही जीतीं।

अब तो लोग इस विषयपर गंभीरतासे विचार करने लगे। यह नया खिलाड़ी यद्यपि उस शहरका रहनेवाला नहीं था। किन्तु लोगोंके अन्दरका राष्ट्रीय स्वाभिमान हठात् सजग हो गया। यही अवसर था कि वह छोटा-सा शहर जिसके नामतकसे लोग परिचित नहीं थे, एक महान् व्यक्तिको बाहर भेजता, और उसके यशके द्वारा अपने अस्तित्वकी छाप संसारके मान-चित्रपर लगा देता। उसी शहरमें नटोंका एक एजेण्ट था—कोलर। स्थानीय फौजके मनो-विनोदकी सामग्री जुटाना उसका काम था। उसने शेन्टोविखको विआना ले जानेकी प्रतिज्ञा की। वहाँ उसका एक मित्र शतरंजका अच्छा जानकार था। उसके पास एक वर्ष तक विशेष शिक्षा पाकर शेन्टोविख अपनी रही सही कमीको भी पूरा कर लेता। काउण्ट सिमज़िकने भी प्रतिज्ञापत्रपर हस्ताक्षर कर दिये। अपने दीर्घ जीवनमें साठ वर्ष तक वे प्रतिदिन शतरंज खेलते रहे

थे। किन्तु आज तक उन्हें ऐसे प्रतियोगीसे पाला नहीं पड़ा था। बस, उसी दिन डेन्यूब नदीके मल्लाहके लड़केका आश्चर्यमय भविष्य प्रारम्भ हो गया।

शेन्टोविख़ने केवल छह महिनोंमें खेलके तमाम छिपे रहस्योंकी जानकारी प्राप्त कर ली। किन्तु एक बेतुकी कमी उसमें रह गई और उसीके कारण शेन्टोविख़ सदासे शतरंजके प्रेमियोंकी कटु आलोचनाका पात्र बना हुआ है। एक बार खेली हुई बाजीको वह दुबारा स्मरणमें नहीं ला सकता था। कल्पना-की आँखोंद्वारा खेलका नक्शा अपने मस्तिष्कमें खींच सकना उसके लिए असम्भव था। उसके सामने चौसठ काले-सफेद चौकोर खाने, और बत्तीस ठोस मुहरोंका होना आवश्यक है। अन्ताराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुकने-पर भी शेन्टोविख़ अपने साथ जेबी बोर्ड रक्खे रहता था कि आवश्यकता पड़ने पर किसी बाजीको प्रत्यक्ष रूपमें फिरसे लगा सके, अथवा शतरंजकी किसी समस्याका हल निकाल सके। उसकी दुर्बलता यद्यपि अपने आपमें इतनी महत्त्वपूर्ण नहीं है, फिर भी इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि शेन्टोविख़में कल्पना शक्तिका सर्वथा अभाव है। इसी बातको लेकर शतरंजके खिलाड़ियोंमें बहुधा गरमागरम बहस हुआ करती है।

दिमाग़ी प्रतिभामें जितने भी योरोपियन खिलाड़ी शेन्टोविख़से श्रेष्ठ समझे जाते थे, वे एक एक करके उससे हार गये। नेपोलियन और हैनीबाल संसारके दो महान् सेनापति माने जाते हैं। नेपोलियनको कुतुजोफ़ जैसे साधरण सिपाहीने हरा दिया। हैनिबालको फेबियस नामके एक रोमन डिक्टेटरके आगे पराजय स्वीकार करनी पड़ी। फेबियस युद्धकलाके अ, ब, स, भी नहीं जानता था। ठीक ऐसी ही बात शेन्टोविख़के संबंधमें भी हुई। शतरंजके खेलसे अच्छे अच्छे दार्शनिकों, गणितज्ञों, रचनात्मक तथा कल्पनाशील प्रतिभाशाली व्यक्तियोंका संबंध है। किन्तु उन्हें इस साधारण कुन्दज़ेहन किसानके लड़केने हरा दिया।

योरोपके कई पत्रकार शेन्टोविख़के पीछे पड़े रहते कि कभी एकाध वाक्य उसके मुँहसे सुनें तो अखबारोंमें प्रकाशित कर दें। किन्तु वह कम बोलता था। उसे डर था कि बोलनेपर उसके अज्ञानका भण्डाफोड़ हो जायेगा। चाहे जो हो; भले ही अखबारवालोंको वह दो चार चिकनी चुपड़ी बातें न कह सके, किन्तु उससे संबंधित झूठी-सच्ची कई किंवदन्तियाँ लोगोंमें प्रचलित हो चुकी थीं।

शतरंजके बोर्डके अतिरिक्त शेष संसारमें उसके व्यक्तित्वको अत्यन्त भोंड़ा और हास्यास्पद माना जाता था। वह फैशनेबिल कपड़े पहिनता, मोतीकी बनी टाइपिन लगाता, नाखूनोंको रंगता और पालिश करता। किन्तु उसके आचरण और व्यवहारसे लोगोंको उस वज्रमूर्ख छोकरेकी स्मृति अचानक आ जाती थी, जो कभी एक पादरीके घर चौका-बासन किया करता था।

शेन्टोविख़की प्रतिभा और ख्याति केवल रुपया कमानेका साधन बन गई। उसकी धनलोलुपता, नीचता और कमीनेपनकी सीमा पार कर चुकी थी। वह कस्बों कस्बोंमें घूमता फिरता। सस्तेसे सस्ते होटलोंमें ठहरता। जो क्लब उसे पैसे दे, उसीकी ओरसे शतरंजकी प्रतियोगिताओंमें भाग लिया करता। साबुनके रैपरोंपर अपना चित्र छपवानेके अधिकार उसने बेचे। किसी गरीब विद्यार्थीने 'फिलासफी आव् चेस' लिखी। शेन्टोविख़ने कुछ रुपये देकर अपना भी नाम पुस्तकपर छपवा लिया। यह केवल इस लिए कि लोग उसे भी एक पढ़ा-लिखा व्यक्ति समझें। शतरंजका चैम्पियन बनते ही वह अपने आपको संसारका सबसे बड़ा आदमी मानने लगा है। बड़े बड़े विद्वानों और बुद्धिवादियोंको उसने मात दे दी। इसी लिए उसकी जन्मजात मूढ़ता बड़े होनेपर पाखंड और दम्भमें परिवर्तित हो गई है।

मेरे मित्र, जो कि मुझे शेन्टोविख़का विवरण सुना रहे थे, बोले—

"भई, अब तुम्हीं बताओ कि किसी महामूर्खको इतनी जल्दी ऐसी ख्याति मिल जाय, तो उसका दिमाग़ क्या आसमानपर नहीं चढ़ेगा? अभी उसकी अवस्था बीस वर्षकी ही है। शतरंजके बोर्डपर लकड़ीके छोटे छोटे टुकड़ोंको केवल इधर-उधर खिसका कर, वह इतना धन कमा सकता है कि जितना तुम्हारा समूचा गाँव ज़मीन खोदकर, लकड़ी चीरकर, एक महिनेमें भी नहीं कमा सकता। इसके अतिरिक्त जो आदमी यह भी नहीं जानता कि इसी संसारमें कभी रेम्ब्रेन्ट, बीथोवन, दान्ते और नेपोलियन भी हो चुके हैं, यदि वह अपने आपको महत्तम व्यक्ति समझे तो आश्चर्य क्या है? उसके मस्तिष्कमें केवल एक धारणा है, कि जीवनमें वह एक भी बाजी नहीं हारा। उसे स्वप्नमें भी यह ज्ञात नहीं होता कि दुनियामें शतरंज और रुपयोंसे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण बातें भी हैं। यदि उसे दम्भ न हो तो, किसे होगा?"

इस सूचनासे मेरी उत्कंठा जाग उठी। इस प्रकारके एकांगी प्रतिभावाले व्यक्तियोंमें, जो कि सदा एक ही विचारमें डूबे रहते हैं, मेरी विशेष दिलचस्पी रही है। जो व्यक्ति अपने कार्यक्षेत्रकी मर्यादाको जितनी कठोर और नियंत्रित रखता है, उतनी ही स्पष्ट पूर्णता उसे प्राप्त होती है। इस प्रकारके मनुष्य हमारी दुनियासे अलग रह कर, अपना एक छोटा सा संसार निर्मित कर लेते हैं, और उसीमें दीमकोंकी भाँति काम करते रहते हैं। यही सोचकर कि अभी रियो पहुँचनेमें बारह दिन लगेंगे, मैंने निश्चय किया कि शेन्टोविख़के एकांगी मस्तिष्ककी बारीकसे बारीक जाँच कर लूँ।

मेरे अभिप्रायको सुनकर उन मित्र महाशयने मुझे चेतावनी दी, और कहा—"तुम्हें सफलता नहीं मिल सकती। जहाँ तक मैं जानता हूँ, शेन्टो-विख़से थोड़ी-सी भी मनोवैज्ञानिक सामग्री प्राप्त करनेमें कोई भी व्यक्ति सफल नहीं हुआ। उसकी कई दुर्बलताएँ हैं। किन्तु उन सबके नीचे उसका जन्म-जात काइयाँपन छिपा हुआ है। वह अपने आपको कभी आलोचकोंके फेरमें नहीं पड़ने देता। मूर्खों और अपढ़ व्यक्तियोंके समाजके अतिरिक्त और किसी भी मनुष्यसे वह बातें नहीं करता। यदि कोई सुसंस्कृत व्यक्ति आता दीखे तो वह किसी कोनेमें जा छिपता है। यही कारण है कि आज तक किसीने उसे अनर्गल प्रलाप करते नहीं सुना। कोई भी व्यक्ति यह दावा नहीं कर सकता कि उसने शेन्टोविख़के अज्ञानकी थाह पा ली है।"

जो कुछ मेरे मित्रने कहा वह अक्षरशः ठीक था। शेन्टोविख़के पास पहुँचनेके असफल प्रयासमें ही मेरी यात्राके पहले दो चार दिन व्यतीत हो गये। एक ही उपाय था। मैं हठात् उसके सन्मुख जा खड़ा होता। किन्तु ऐसी युक्तियाँ मुझे ना-पसन्द हैं। वह एकाध बार ऊपरी डेकपर टहलने आया दोनों हाथ अपने पीछेकी ओर बाँधे हुए। नेपोलियनके प्रसिद्ध चित्रकी भाँति। मानो गहरे विचारमें डूबा हुआ हो। उसी दिखावटी तल्लीनतामें वह इतनी तेजीसे टहलता था कि यदि कोई चाहे, उससे दो चार बातें करे, तो उस तक पहुँचनेके लिए एक छोटी मोटी दौड़ लगानी पड़े। जहाज़की बैठकमें, या बार-रूममें, या स्मोकिंग-रूममें वह कभी भी नहीं दिखाई देता था। जहाज़-के एक कर्मचारीसे मैंने एकान्तमें पूछताछ की तो मालूम हुआ कि शेन्टोविख़

दिन भर एक बड़ा-सा बोर्ड सामने रखकर अपने कमरेमें बैठा रहता है। बोर्ड-पर वह बाजियाँ लगाता या शतरंजकी नई पहेलियोंको सुलझाता रहता है।

तीन दिन बीत गये। मुझे तो क्रोध आने लगा। उसके पास पहुँचनके मेरे सभी उपायोंसे उसके बच निकलनेके साधन कहीं अधिक सफल हो रहे थे। शतरंजके किसी बड़े खिलाड़ीसे जान पहिचान होनेका अवसर मुझे आजसे पहले नहीं मिला था। मैं उस टाइपको जितना ही निकटसे जाँचना चाहता था, उसका व्यक्तित्व, जो कि चौंसठ काले-सफेद खानोंके ही इर्द-गिर्द भटकता रहता था, मेरे लिए उतना ही दुरूह और जटिल बनता गया।

मैं स्वयं अपने अनुभवसे जानता हूँ कि शतरंजके खेलमें कैसी रहस्यमयी आकर्षण शक्ति है। इसका आविष्कार किया तो मनुष्यने ही। किन्तु अपने आपमें यह खेल समयकी संहारकारिणी शक्तियोंको परास्त कर चुका है। इसमें अवसर या चांसकी कोई गुंजाइश नहीं। इसमें सफलताका सेहरा उसीके सिरपर बँधता है जिसे भगवानने बुद्धिका अधिकसे अधिक अंश दिया हो। क्या यह भी एक विज्ञान नहीं है? टेकनीक नहीं है? कला नहीं है? क्या इन तीनोंकी परिभाषा अलग अलग अथवा एक ही साथ शतरंजपर लागू नहीं हो सकती? यह खेल तमाम विरोधी विचारधाराओंका समन्वय है। पुरातन होनेपर भी नवीन—कार्यरूपमें तो यांत्रिक, किन्तु केवल कल्पनाशक्तिके द्वारा संचालित—ज्यामितिकी सीमाओंसे घिरा होनेपर भी विभिन्न योजनाओंके कारण असीमित—सर्वदा विकासशील किन्तु अनुत्पादक—ऐसा विचार कि जिसकी कहीं इति नहीं—ऐसा गणित कि जिसका कोई परिणाम नहीं—ऐसी कला कि जिसकी कोई कृति नहीं—ऐसा स्थापत्य कि जिसमें ईंट-चूना नहीं।

इतना होनेपर भी यह खेल चिरंजीवी बना रहा। जब कि बड़ी बड़ी साहित्यिक पुस्तकें और बड़े बड़े कार्य समयकी तरंगोंमें बह गये, डूब गये, यही एक मात्र खेल है जिसे संसारके सभी राष्ट्रोंने सभी समय खेला। इसके आविष्कारक उस दिव्य पुरुषका किसीको पता तक नहीं, जिसने संसारको वह वस्तु दी कि जिससे समयकी ऊब कट जाय, बुद्धि तेज हो, प्रतिभा चमक उठे। लोग इसके आदि और अन्तकी ही खोज करते रहते हैं। छोटे छोटे बच्चे भी इसके सरल नियमोंको सीख सकते हैं। मूर्खातिमूर्ख भी इसके आकर्षण

म बँध जाते हैं। किन्तु अपनी चौकोर कोठियोंमेंसे होकर यही खेल ऐसे व्यक्तित्वको भी जन्म दे सकता है कि जिसकी समता दूसरा न कर सके। बड़े बड़े गणितज्ञों और लेखकोंकी-सी प्रतिभा उसमें होती है। शरीरशास्त्रका जानने-वाला कोई भी व्यक्ति यह देखनेके लिए अपना सर्वोत्तम समय दे सकता है कि मस्तिष्कके भूरे अंशमें, कौन-सी पेशीसे अथवा किस गाँठसे शतरंजकी प्रतिभा विकसित होती है। शेन्टोविखके मस्तिष्ककी छान-बीन करने पर वह आश्चर्यसे देखता कि उसमें बुद्धि नामकी वस्तु कितनी न्यून है। जिस प्रकार किसी महाकाय चट्टानके टुकड़े टुकड़े करनेपर उसमें कहीं एक रत्ती सोना प्राप्त होता है, उसी प्रकार जड़ताकी असंख्यों परतोंके नीचे शेन्टो-विखकी वह एकांगी प्रतिभा छिपी हुई थी। ये सारी बातें तो मैं समझता। किन्तु यह मैं नहीं जान पाया कि ऐसा मनुष्य किस तत्त्वसे बनता होगा कि जो काले-सफेद चौकोर कोठोंकी उस संकीर्णतामें जीवन-भर दबा हुआ पड़ा रहे, जो बत्तीस पुतलोंको आगे-पीछे हिलाने डुलानेमें ही जीवनकी सर्वोत्तम कृतकृत्यता समझे। ऐसा व्यक्ति जो कि जीवनके दस, बीस, तीस, चालीस वर्षों तक लगातार इसी प्रयत्नमें रहे कि काठके बादशाहको काठके तख्तेपर किस प्रकार कैद किया जाय, और, इसपर भी वह पागल होनेसे बचा रहे!

जीवनमें पहली ही बार मेरा ऐसे मनुष्यसे साक्षात्कार हुआ। मैं उसे सृष्टिकी अदृष्टपूर्व कृति कहूँ, या जड़ताका सर्वोत्कृष्ट आदर्श? वह मेरे निकट केवल छह केबिनके फासलेपर था। मुझे इस प्रकारके मनोवैज्ञानिक विषयोंकी छानबीनमें रुचि थी। किन्तु सब कुछ होने पर भी मैं उससे भेंट नहीं कर पाता था। उसे फँसानेके लिए मैंने कई भद्दे उपाय सोचे। उससे कहूँ कि मैं एक प्रसिद्ध पत्रका संवाददाता हूँ। उससे भेंट करना चाहता हूँ। अथवा प्रदर्शनके रूपमें स्काटलैंडका भ्रमण करनेके लिए उकसाऊँ। अन्तमें मुझे सूझा कि जंगली मुर्गेको फँसानेका सबसे अच्छा फन्दा यह है कि उसकी बोलीकी नक़ल की जाय। शतरंजके इस महारथीको आकृष्ट करनेका यही मार्ग था कि मैं स्वयं शतरंज खेलना प्रारम्भ कर दूँ।

अपने जीवनमें मैंने शतरंजको गंभीरताका विषय नहीं माना। मनोरंजनके अतिरिक्त मेरे सम्मुख उसका कोई मूल्य नहीं। एक घंटेका समय उसमें व्यतीत करनेका अर्थ था कि थके हुए मस्तिष्कको थोड़ी-सी स्फूर्ति देना। उसे थका

डालनेका कोई भी उद्देश्य मेरी समझके बाहर था। प्रेमके नाटककी भाँति शतरंजका खेल भी अकेले नहीं खेला जाता। मैं तबतक यह नहीं जानता था कि जहाजपर मेरे ही समान दूसरे भी खिलाड़ी हैं। उन्हें अपनी ओर खींचनेके लिए मैंने एक सीधा सादा प्रपंच रचा। मैं अपनी श्रीमतीजीको लेकर स्मोकिंग-रूममें एक बोर्ड बिछाकर बैठ गया। कहनेको आवश्यकता नहीं कि वे मुझसे भी रद्दी खेलती हैं। हम लोगोंने कदाचित् छह चालें भी न चली होंगी कि उधरसे जाते जाते एक व्यक्ति हमारे पास आकर रुक गया। दूसरा आया और हमसे देखनेकी अनुमति माँगने लगा। थोड़ी ही देर बाद मुझे वह साथी भी मिल गया, कि जिस टाइपके व्यक्तिकी मुझे आवश्यकता थी।

मैक आइवर उसका नाम था। स्काटलैंडका एक इमारती इंजीनियर और कैलीफोर्नियामें तेलका धनी व्यापारी। हट्टा-कट्टा सबल व्यक्तित्व। चौड़े, पहलवानोंके-से कंधे। मुझे लगा कि मैक आइवर उन लोगोंमेंसे है, जो सफलता देवीके अनन्य पुजारी होते हैं। एक साधारण ताशके या शतरंजके खेलमें भी हार जाना ये लोग अपनी मानहानि समझते हैं। मैक आइवरका स्वभाव था कि वह जो चाहता, किसी न किसी तरह उसे पूरा करके छोड़ता था। आर्थिक सफलताओंसे उसमें इतनी अहंता आ गई थी कि किसी भी प्रकारके विरोधको वह अपमानके रूपमें देखता था। वह पहली बाजी हारा तो क्षुब्ध होकर कहने लगा कि एक ज़रा सी चूकसे उसकी पराजय हुई है, अन्यथा नहीं होती। तीसरी हारका कारण उसने पड़ोसी कमरेमें होनेवाला कोलाहल बताया। पहले तो मुझे उसके इस महत्वाकांक्षी भोंड़ेपनपर आश्चर्य हुआ। किन्तु कुछ देर बाद मैंने सोचा कि इतने दिनोंसे मैं जिस कामको करनेकी सोच रहा हूँ, उसमें इस व्यक्तिका संग अनिवार्य है। मैं शेन्टोविख़को अपनी आर आकर्षित करना चाहता था।

तीसरे दिन लगा कि मेरा फन्दा काम करने लगा है। शेन्टोविख़ने ऊपरी डेककी किसी खिड़कीसे हमें देखा हो, या अपनी उपस्थितिसे स्मोकिंग रूमको पवित्र करनेका उसका इरादा हो, या और कुछ हो, कमरेमें वह आया और उसीके व्यवसायके औजारोंसे हमें खेलते देख थोड़ी देर ठिठका। मैक आइवरकी चाल थी। वह चला और शेन्टोविख़ समझ गया कि हम लोगोंका खेल इस योग्य नहीं है कि उसे आकर्षित कर सके। वह तुरन्त ही कमरेसे बाहर

चला गया। पुस्तकालयमें यदि हमें कोई सस्ता जासूसी उपन्यास देखनेको मिले, तो उसके पृष्ठोंको विना उलटे ही जिस प्रकार उपेक्षासे हम लोग उसे एक ओर फेंक देते हैं—ठीक उसी प्रकारका भाव शेन्टोविखके चेहरे पर भी था। मुझे अच्छा नहीं लगा। मैंने मैक आइवरसे कहा—"महारथीजीपर तुम्हारी चालका अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा।"

"महारथी कौन ?"

मैंने उसे बताया कि वह व्यक्ति, जो हमें उपेक्षाके भावसे देखता हुआ चला गया है, अन्ताराष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त खिलाड़ी शेन्टोविख है। मान लिया कि हम उसकी बराबरी नहीं कर सकते। फिर भी, उसकी उपेक्षाके पात्र होनेपर भी, हम लोग शतरंज खेलते ही रहेंगे। चुल्लू-भर पानीमें डूब मरनेकी आवश्यकता हमें नहीं थी।

मेरे शब्दोंका मैक आइवरपर एक अपूर्व प्रभाव पड़ा। वह उत्तेजित होकर अपनी बाजीको तो भूल गया। उसकी महत्त्वाकांक्षा जागृत हो उठी। उसे स्वप्नमें भी आशा नहीं थी कि शेन्टोविख इसी जहाज़पर है।

"शेन्टोविख़से तुम्हारी निजी जान पहिचान है ?"

"नहीं।"

"क्या मैं उसे अपने पास बुलाऊँ ?"

मैंने कहा कि इस प्रकार बुलानेसे वह कभी नहीं आयेगा। मैं उसके स्वभावसे परिचित था कि नई जान-पहिचानवालोंसे वह कन्नियाँ काटता है। दूसरे हम जैसे फिसड्डियोंसे खेलनमें उस चैम्पियनको भला क्या आनन्द मिलता ?

मेरे शब्दोंसे मैक आइवरकी उत्तेजना घटनेके बजाय और भी अधिक बढ गई। वह खेलना छोड़ कर कुर्सीसे टिककर बैठ गया। बोला कि शेन्टोविख किसी सम्भ्रान्त व्यक्तिकी प्रार्थनाको ठुकरायेगा—ऐसा उसे विश्वास नहीं। कहता हुआ वह उठा और चैम्पियनकी खोजमें केबिनसे बाहर चला गया। मैक आइवर जैसे व्यक्तिको किसी कामसे रोक रखना मेरे बूतेके बाहर था।

मैं वहीं स्तब्ध होकर बैठा रहा। दस मिनट बीते और मैक आइवर आया। उसके मुखपर स्पष्ट झलकता था कि वह प्रसन्न नहीं है।

"क्या हुआ ?"--मैंने पूछा।

उसने कुछ झेंप कर उत्तर दिया, "तुम ठीक कहते थे। मैं उसके सम्मुख

गया। बताया कि मैं कौन हूँ। भले आदमीसे यह भी न बना कि उठकर हाथ मिलाता। मैंने उसे समझाया कि हम कई जनें यहीं जहाज़पर यह अभिलाषा कर रहे हैं कि वह हमारे साथ शतरंज खेलकर हमें अनुग्रहीत करे। लेकिन वह कमबख्त टससे मस भी तो नहीं हुआ। बोला कि अपने दलालसे वह प्रतिज्ञा-में बँधा हुआ है कि यात्रामें विना फीसके वह एक भी बाजी नहीं खेलेगा। उसकी कमसे कम फीस २५० डालर है।"

मुझे हँसी आ ही गई। मुझे इसका तो आभास भी न था कि कोई मनुष्य काले कोठोंसे सफेद कोठोंपर लकड़ीके टुकड़ोंको खिसकानेसे ही रुपये कमा सकता है।

मैंने पूछा,—"तो तुमने भी उतने ही विनयसे उसका विसर्जन किया होगा, जितनी नम्रतासे उसने तुम्हारी अभ्यर्थना की थी?"

मेरे कटाक्ष पर भी मैक आइवर गंभीर बना रहा। बोला—"कल तीन बजे दोपहरको बाजी ते रही। इसी स्मोकिंग रूममें खेल होगा। मुझे तो विश्वास है कि वह महारथियोंका चचा ही क्यों न हो, हमें कच्चा ही नहीं चबा सकता।"

"कहते क्या हो? तुमने २५० डालर देनेका वादा भी कर लिया?"

"तो हर्ज क्या हुआ? उसका यह व्यापार है। अभी यदि मेरे दाँतोंमें दर्द हो उठे। जहाज़पर दाँतोंका डाक्टर भी उपस्थित हो। तो, क्या विना फीसके ही मैं अपनी पीड़ा अच्छी कर सकता हूँ? शेन्टोविख़ने यदि मोटी रक़म माँगी तो अन्याय नहीं किया। तुम्हें मालूम तो है कि अच्छे निशानेबाज़ शिकारी ही उत्तम व्यवसायी होते हैं। मेरा जहाँ तक सम्बन्ध है, मैं उसी व्यापारको सर्वोत्तम मानता हूँ जिसमें कमसे कम उलझन हो। मैं तो नक़द दे देना ठीक समझता हूँ, बजाय इसके कि शेन्टोविख़का आभार अपने ऊपर लादूँ और झूठे धन्यवाद देकर बोझा हलका करनेका प्रदर्शन करूँ। वैसे कई बार क्लबोंमें मुझे ढाई सौ डालरसे कहीं अधिक खर्च करने पड़े हैं। किन्तु विश्वविख्यात खिलाड़ीसे खेलनेका अवकाश मुझे कभी प्राप्त नहीं हुआ। यों तो, एक फिसड्डीका शेन्टोविख़ द्वारा हराया जाना कोई बड़ा भारी अपमान नहीं है।"

फिसड्डी शब्दके प्रयोगसे मैक आइवरके हृदयको कैसी ठेस लगी है, यह सोचकर मैं विचारमें पड़ गया। खेलका सारा खर्च वह दे रहा था। मैं उसकी आहत आकांक्षाको और भी पीड़ित करना नहीं चाहता था। उसीके द्वारा मुझे अवसर मिला था कि मैं शेन्टोविखका मनोवैज्ञानिक अध्ययन कर सकूँ। हमने उसी समय और भी दो चार जनोंको आगामी मैचका समाचार दे दिया। स्मोकिंग रूमके सभी टेबिल्स हमने रिजर्व कर लिये ताकि खेलके समय अवांछनीय उपस्थितियोंसे कोई विघ्न न हो।

दूसरे दिन ठीक समयपर हम लोग स्मोकिंग रूममें पहुँचे। बीचकी कुर्सीपर मैक आइवर जाकर बैठ गया। उसीके सामने शेन्टोविखका स्थान था। मैक आइवर अत्यन्त विचलित दिखाई देता था। वह एकके बाद दूसरी सिगारेट धौंकता और बार-बार घड़ीकी ओर आँख उठाकर देखता था। पूरे दस मिनट तक हमें प्रतीक्षा करनी पड़ी। शेन्टोविखके विषयमे जैसा कुछ मैंने सुन रक्खा था, उसमें यह तो स्वाभाविक था कि हमें प्रतीक्षामें रखकर वह अपने प्रवेशको अधिक प्रभावोत्पादक बनाना चाहता है। वह बड़ी ही शान्ति और निर्भीकताके साथ टेबिल तक आया। किसी प्रकारकी अभ्यर्थना अथवा औप-चारिक झंझटोंकी उसे आवश्यकता नहीं थी। मानो उसकी अविनम्रता मूक स्वरमें कह रही हो—"तुम लोग मुझे जानते ही हो और तुम्हें जाननेकी मुझे अपेक्षा नहीं है।"

आते ही वह खेलकी शर्तें तै करने लगा। जहाजपर इतने बोर्ड नहीं थे कि हम सब लोग एक एक अपने सामने रख सकते। इस लिए यह निश्चय हुआ कि एक ही बोर्ड पर हम लोग इकट्ठे बैठें और सामूहिक मस्तिष्कसे उसे खेलें। प्रत्येक चालके बाद शेन्टोविख दूर चला जाता। ताकि हम लोग परस्पर परामर्श कर लें। अपनी चालका निर्णय कर लेनेपर गिलासपर चम्मच बजा कर हम लोग उसे बुलाते थे। उसने प्रस्ताव किया कि प्रत्येक चालपर सोचनेके लिए अधिकसे अधिक दस मिनट दिये जायँ। डरपोक विद्यार्थियोंकी भाँति हमने उसके सभी प्रस्ताव स्वीकृत कर लिये। शेन्टोविखने काले मुहरे पसन्द किये। पहली चाल चल कर वह कुछ दूरपर जाकर प्रतीतिपूर्वक खड़ा हो गया और एक सचित्र मासिक-पत्र देखनेमें लग गया।

खेलका विवरण देनेको कुछ भी नहीं है। अन्तमें वही हुआ जो होना था। ठीक चौबीसवीं चालपर हम लोग पूरी तरहसे हार गये। कहाँ वह विश्व-विख्यात खिलाड़ी और कहाँ अधकचरे रंगरूट हम। यदि इस प्रकार उसने बाँये हाथसे हमें पछाड़ भी दिया तो आश्चर्य ही क्या? किन्तु शेन्टोविख् स्वयं भी अपने हाव-भावसे यही जता दना चाहता था कि हमें पराजित करना उसके बाँयें हाथका खेल है। यही बात हमें बुरी लग रही थी। इस सत्यको हम स्वयं प्रतीत कर रहे थे, परन्तु उसकी ओरसे ऐसा प्रदर्शन हमें अच्छा नहीं लगा। वह जितनी बार टेबिलपर आता उतनी ही बार एक निरपेक्ष उपेक्षाभरी दृष्टिसे हमें देखता। मानो शतरंजके मुहरोंकी भाँति हम भी काठके निर्जीव पुतले हों। उसका यह दुर्दान्त व्यवहार ठीक उस व्यक्तिके समान था जो किसी खज्जे कुत्तेको एक टुकड़ा डाल कर यह भी देखनेका कष्ट नहीं करता कि उसने खाया अथवा नहीं। उसमें यदि सहृदयताका लेशमात्र भी होता तो वह आता, हमें हमारी त्रुटियाँ दिखाता आर दो चार हँसीकी बातें करके हमें भी प्रसन्न करनेका प्रयास करता।

खेल समाप्त होनेपर भी वह अमानव एक भी शब्द न बोला। केवल एक चुभती-सी 'मात' कह कर चुपचाप खड़ा हो गया, मानो, यह जानना चाहता हो कि हम दूसरी बाजी खेलेंगे या नहीं।

मैं तो कुर्सी छोड़कर उठ खड़ा हुआ था। जहाँ तक मेरा प्रश्न था, परिचय-की मेरी उत्कंठा अथवा प्रसन्नता समाप्त हो चुकी थी। किन्तु उसी समय मेरी बगलकी ओरसे मैक आइवर चीख् उठा—"रिवांश।" यानी, हम एक बाजी और खेलेंगे। अब तो मुझे क्रोध ही आ गया।

मैक आइवरकी चुनौतीसे मैं चौंक उठा था। नम्रताका उसमें थोड़ा बहुत जो अंश था, वह भी लुप्त हो चला। घूँसेबाजोंकी भाँति मानो घूँसोंसे ही बातें करना चाहता हो, शब्दोंसे नहीं। उसका चेहरा लाल हो गया। नथुने फूल गये। साँस तेजीसे चलने लगी। दाँतोंसे होंठ ऐसे दबा रखे थे कि रक्त चू पड़े। पलकोंका कम्पन देखते ही मैं समझ गया था कि उसका मनोवेग यों ही शान्त होनेवाला नहीं है। रोलट नामक जुआ खेलते हुए लोगोंको मैंने देखा है। हारते जाते हैं और दाँव दुगुना बढ़ाते जाते हैं। कई बार रुपया लगाने पर भी जब उनका दाँव नहीं आता तो उनकी दशा वही होती है जो अभी मैक आइवर-की हो रही थी। मैं समझ गया था कि यह अपने आग्रहमें सारी सम्पत्ति हार

जायेगा। बाजीपर बाजी खेलता जायेगा कि अन्तिम पाई देकर भी केवल एव बार शेन्टोविखको हरा दे। यदि वह भी डटा रहा तो निश्चय था वि ब्यूनो एयरी पहुँचनेसे पहले कई हजार डालर उसकी टेंटमें जा पहुँचेंगे।

शेन्टोविख उसी प्रकार निश्चल निर्द्वन्द खड़ा रहा। अबकी थोडी-सी नम्रतासे वह बोला—“ यदि आप लोग चाहें तो काले मुहरे ले सकते हैं। ”

दूसरी बाजीमें भी कोई विशेषता नहीं थी। केवल हमारी टोली अबकी काफी बड़ी हो गई थी। कई नये दर्शक अन्दर आ गये थे। मैक आइव टकटकी लगाये बोर्डको देख रहा था। मानों मुहरोंपर जादू डालना चाहता हो मुझे लगा कि यदि एक बार भी वह शेन्टोविखके मुँहपर ‘ मात ’ कह सके तो वह हजारों डालर देनेको तैयार हो जायेगा। आश्चर्य तो इसमें था वि मैक आइवरकी-सी क्रुद्ध उत्तेजना हम सभी लोगोंमें भी प्रवेश करती जा रही थी। प्रत्येक चाल चलनेसे पहले हम लोग बड़े आवशमें तर्क-वितर्क करते थे। शेन्टोविखको संकेत देनेसे पहले हम लोग खूब सोचकर देख लेते थे वि कहीं ग़लती तो नहीं रह गई है।

सत्रहवीं चालपर हमारा पहले खानेका पैदल अन्तिम घर तक पहुँच गय था। अगली बार हमें नया वज़ीर मिल जाता। यह अवसर जो हमें मिल रह था, उसे देखते हुए हम अत्यन्त आनन्दित हो रहे हों, सो बात नहीं है। हमें डर था कि शेन्टोविखने जान-बूझकर यह चारा हमारे सामने लटका रक्खा है। सम्भव है कि हम यदि लोभमें पड़ गये तो फिर न उबर सकेंगे। शेन्टोविखक क्या ठिकाना। वह तो कई चालोंको पहलेसे ही भाँप जाता है। बहुतसे तर्क वितर्कके उपरान्त भी हम लोग आपसमें यह तै नहीं कर सके कि पैदलकी चाल धोखेकी टट्टी है। दस मिनटकी अवधि समाप्त होनेपर हमने पैदल चलना ही उपयुक्त समझा। मैक आइवरकी अंगुलियाँ मुहरेपर थीं। वह आगे खिसकानेको ही था कि पीछेसे किसीने उसकी बाँह पकड़ ली, और धीमे किन्तु आदेशके स्वरमें किसीने कहा—

“ नहीं,-ईश्वरके लिए वह चाल न चलो। ”

हम सभीने एक साथ मुड़कर पीछे देखा। कोई पैंतालीस वर्षका एक व्यक्ति वहाँ खड़ा था। शायद अभी अभी कमरेके अन्दर आया था। मुझे स्मरण हुआ कि डेकपर इस आदमीको मैंने कई बार देखा है। प्रत्येक बार उसके

चेहरेपर एक अस्वाभाविक चूनेकी-सी सफेदी देखकर मुझे आश्चर्य हुआ था। हमें अपनी ओर घूरते देखकर वह बोला—

"यदि आपने वज़ीर बना लिया तो वह उसी समय हमला करेगा। आप अपने घोड़ेसे उसका मुहरा लेंगे। फिर वह चौथी कतारके सातवें खानेपर अपना पैदल चलेगा और यदि आपने अपने घोड़ेसे उसे रोका, तो भी आप बच नहीं सकते। नौ या दस चाल बाद आप हार जायेंगे। ये नक़शा ठीक वही है जो पिस्टानीमें बोगुजोवफ़के साथ खेलते हुए १९२२ में अलेखिनने बनाया था।"

मैक आइवरने पैदलपरसे अंगुलियाँ हटा लीं। आश्चर्यसे वह उस व्यक्तिको देखने लगा जो हमारी निष्कृतिके लिए मानो देवदूत बन कर आया हो। नौ चाल पहलेसे जो मनुष्य 'मात' का अनुमान लगा लेता हो, वह तो परले सिरेका उस्ताद है। हमने सोचा शायद वह भी टूर्नामेंटमें खेलने जा रहा है। ठीक आपत्तिके समय उसका प्रवेश हम लोगोंको एक प्रकारका अलौकिक रहस्य-सा प्रतीत हुआ।

पहले पहले मैक आइवर बोला—"तो बताइए आपकी क्या राय है?"

"अभी आप आगे बढ़नेके वजाय कतरा जाइए। सबसे पहले बादशाह-को खतरेसे बचाना है। उसे सातवीं कतारके आठवें घरसे आठवींके सातवें घरपर लाइए। तब वह शायद दूसरी दिशासे आक्रमण करेगा। उस समय आप अपना हाथी तीसरीके आठवेंसे चौथेपर आ जाइए। दो ही चालोंके बाद उसका प्यादा और जोर दोनों समाप्त हो जायेंगे। तब यदि आप लगातार बचावकी नीति बरतते रहे तो अन्तमें चौमुहरी हो जायेगी। इस बाजीमें इससे अधिक लाभ आपको नहीं हो सकता।"

हम चकित थे—विस्मित थे। जिस तेजीसे और बारीकीसे वह चालोंको आँकता था, उसे देखकर हम भौंचक्केसे हो गये। ऐसा लगता था मानो वह समूची बाजीको कहीं किसी छपी हुई पुस्तकमें देखकर पढ़ रहा हो। उसके एकाएक बीचमें आ पड़नेसे हमें यह आशा हो गई थी कि चौमुहरी हो जायगी। शेन्टोविख़ जैसे चैम्पियनसे उतना भी मिलना हमारे लिये पर्य्याप्त था। हम लोगोंमें एक इसी विचारने स्फूर्ति डाल दी। हम आगन्तुक व्यक्तिके सामनेसे हट कर एक ओर हो गये, ताकि उसे खेलका बोर्ड ठीक ठीक दिखाई दे।

मैक आइवरने पूछा--" बादशाहके आठवींके सातवेंपर चलूँ ? "

" हाँ, इस समय बचाव करना ही प्रधान कार्य है । "

मैक आइवर चला। हमने घंटी बजाई। शेन्टोविख़ आगे आया। बोर्डको एक सरसरी निगाहसे देखा और अपने पैदलको बादशाहकी बगलमें आठवीं-के दूसरेसे चौथेपर खिसका दिया। यह चाल वही थी जिसका अनुमान हमारे नये साथीने लगा लिया था।

" अब हाथी आगे बढ़ो—हाथी। तीसरीके चौथेपर। वह अपने पैदलपर जोर देगा। किन्तु उससे होगा कुछ नहीं। आप अपने पैदलोंकी चिन्ता न कीजिए। घोड़ेसे तीसरीके तीसरीसे चौथीके पाँचवेंपर हमला कीजिए। बस बाजी ठीक ठीक संतुलित हो जायेगी। अब तो बचावकी अपेक्षा आक्रमण करना अधिक उपयुक्त है।—"

वह क्या बोलता जा रहा है, हमें इसका ज्ञान न था। किन्तु मैक आइवर मानो जादूके जोरसे, जो वह कहता था करता जा रहा था। हमने फिरसे घंटी बजा कर शेन्टोविख़को बुलाया। अबकी पहली ही बार हमने शेन्टोविख़को जल्दबाजी करते नहीं देखा। वह आया; बहुत देर तक बोर्डपर टकटकी लगाये देखता रहा। उसकी दोनों भौंहें अपने आप ही कुंचित हो उठीं। उसके बाद उसने वही चाल चली जो कि हमारे नये साथीने बताई थी। जब वह मुड़ कर जाने लगा तो एक अप्रत्याशित घटना हो गई। शेन्टोविख़ने आँखें उठा कर हम लोगोंके समुदायकी ओर ग़ौरसे देखा। यह स्पष्ट था कि वह उस व्यक्तिको ढूँढ़ रहा है, जिसने बाजीमें एक नया मोर्चा खड़ा कर दिया है।

बस, उसी क्षणसे हम लोगोंकी उत्तेजना सीमासे बाहर हो चली। हम अबतक बिना किसी आशासे खेल रहे थे। अब यह सोच कर कि शेन्टोविख़की उपेक्षाका गढ़ टूटने ही वाला है हमारे हृदय बाँसों ऊपर उछलने लगे। बिना किसी विलम्बके हमारे नये मित्रने अगली चाल भी चल दी। हम फिरसे शेन्टोविख़को बुलानेकी तैयारी करने लगे। मैंने घंटीकी ओर हाथ बढ़ाया तो मेरी अंगुलियाँ मारे आवेगके काँप रही थीं। अब हमें अपनी पहली सफलताके आसार नज़र आने लगे थे। शेन्टोविख़ अब तक खड़े ही खड़े चाल चल दिया करता था। अबकी वह आया, पहले हिचका--फिर हिचका--तब कुर्सीपर चुपचाप बैठ गया। उसने बड़े ही संयम और विलंबसे यह काम किया, फिर भी

उसके बैठ जानेका अर्थ था कि अबतक उसके और हमारे स्तरोंमें जो अंतर था, अब नहीं रहा। कमसे कम बाहरी दृष्टिसे यह नितान्त स्पष्ट था। हम चाहते थे कि शब्दोंसे न सही, किसी भी प्रकार वह इस बराबरीको मान ले। वह बहुत देर तक सोचता रहा। उसकी आँखें बोर्डपर ही चिपकी रहीं। भारी पलकोंसे होकर आँखोंकी पुतलियाँ दिखाई नहीं दे रही थीं। सोचते सोचते धीरे धीरे उसका मुह खुल गया। इस रूपमें वह ऐसा दीख रहा था जैसे कोई भोंदू वहाँ आकर बैठ गया हो। कई क्षणों तक शेन्टोविख़ सोचता ही रहा, फिर चाल चला और उठकर खड़ा हो गया।

उसी समय हमारे मित्र बोल उठे—“ वाह ! खूब ! किन्तु घबराइए नहीं। बदल लीजिए। उसे बदलना ही पड़ेगा। हमें चौमुहरी मिलेगी। देवता भी उसे बचा नहीं सकते। ”

मैक आइवर मुहरा चला। उसके बाद उन दोनोंके बीच कई आगे पीछे चालें होती रहीं। हम लोगोंकी समझमें खाक भी नहीं आ रहा था। केवल मिट्टीके निष्प्राण पुतलों-से हम वहाँ बैठे हुए थे। कोई सातवीं चालके बाद शेन्टोविख़ने सिर उठाया और एक लम्बी चुप्पी तोड़कर बोला—“ चौमुहरी। ”

कुछ क्षणों तक स्मोकिंग रूममें पूर्ण निस्तब्धता छाई रही। बाहरसे समुद्री लहरोंका टकराना सुनाई दिया, और पड़ोसी कमरेसे रेडियोकी तान गूँज उठी। बाहर डेकपर पैरोंकी प्रत्येक चाँप और खिड़कियोंसे होकर आनेवाली धीमी हवाकी सरसराहट स्पष्ट सुनाई देने लगी। हम लोग मानो साँस भी नहीं ले रहे थे। यह सब कुछ एकाएक हो गया था। असम्भावितको सामने ही सामने होते देखकर सबके सब हकबका गये थे। एक बिना जान पहिचानका व्यक्ति आकर विश्वविख्यात चैम्पियनसे जो वह चाहे सो करा ले !—वह भी जब कि आधी बाजी प्रायः नष्ट हो चुकी हो। मैक आइवरके मनका आवेग शान्त हो गया। वह अँगड़ाई लेकर कुर्सीपर उठंग कर बैठ गया। मैंने एक बार फिरसे शेन्टोविख़की ओर देखा। बादकी चालोंमें साफ दीख रहा था कि उसका चेहरा पीला पड़ता जा रहा है। किन्तु वह अपनी स्थिति सँभाले रहना चाहता था। उसने एक हाथसे मुहरोंको ढकेलते हुए, उसी पुरानी शानसे अस्फुट शब्दोंमें पूछाः—

" क्यों साहब, आप लोग तीसरी बाजी भी खेलना चाहते हैं ?"

उसका यह प्रश्न शुद्धरूपसे व्यावसायिक था। किन्तु जो वस्तु ध्यान देनेकी थी, वह यह थी कि मैक आइवरकी ओर न देखकर वह हमारे मुक्तिदाता मित्र-पर टकटकी लगाये हुए था। जिस प्रकार घोड़ा अपने कुशल सवारको पहिचान लेता है, उसी प्रकार वह भी अपने एकमात्र प्रतिद्वंदीको पहिचान गया था। हमें भी विवश उसी ओर देखना पड़ा जिधर वह देख रहा था। इससे पूर्व कि वे शेन्टोविखको उत्तर दे सकें, मैक आइवर अपनी उसी उत्तेजित ध्वनिमें बोल उठाः—

" हाँ जी, अवश्य—नहीं क्यों ?—किन्तु अबकी आपको अकेले खेलना पड़ेगा।—आप और शेन्टोविख।"

इसपर एक असाधारण घटना हो गई। आगन्तुक महोदय उस समय तक चुप्पी साधे बोर्डपर ही आँखें गड़ाये हुए थे। उनके मुखपर उस समय भी गहरे चिन्तनका बोझ झलक रहा था। मैक आइवरकी बात सुनकर वे मानो डर कर चौंक पड़े। घबराकर बोले—" नहीं जी,—नहीं। बिलकुल नहीं। मेरे खेलनेकी कोई सम्भावना ही नहीं है। मुझे आप एक ओर कर दीजिए। कोई बीस बर्ष—नहीं—पचीस वर्षसे मैं आज पहली बार शतरंजके बोर्डपर बैठा हूँ।—मुझे तो केवल यही लज्जा है कि बिना बुलाये मैं क्यों आप लोगोंके बीच कूद पड़ा—मुझे क्षमा कीजिए। मैं अधिक विघ्न नहीं डालूँगा।"

इसके पूर्व कि हमारा आश्चर्य कुछ कम हो, वह उठकर चले भी गये थे।

मैक आइवर टेबिलपर घूँसा मारकर बोल उठा —" नहीं—नहीं,—यह असम्भव है। जनाब कहते हैं कि पचीस बर्षसे शतरंज नहीं खेला। यह कैसे भूल सकते हैं कि जो व्यक्ति पाँच-छह चालोंकी पहलेहीसे गिनती कर सकता है—यदि वह कहे कि 'मुझे शतरंजका अभ्यास नहीं है'—नहीं, मैं नहीं मान सकता।"

कहते कहते मैक आइवर शेन्टोविखकी ओर मुड़ा। मानो उससे अपने प्रश्न-का उत्तर माँगता हो। शेन्टोविखका ऊपरी भाव वैसा ही अबोध बना रहा।—

" मैं तो इस विषयमें कुछ भी राय नहीं दे सकता। हाँ, यह मैं अवश्य

कहूँगा कि उन महाशयका व्यवहार किसी हद तक विचित्र और चिन्तनीय अवश्य था।—और, इसी लिए मैंने जान बूझकर उन्हें मौका दिया। ”

यह कहते हुए वह उठा, और उसी निरपेक्ष भावसे बोला—“ यदि आप-या वह महाशय, मुझसे एकाध बाजी खेलना चाहें तो मैं कल तीन बजे सेवामें प्रस्तुत हो सकता हूँ। ”

हम लोगोंकी हँसी रोके नहीं रुकी। हम सभी जानते थे कि जो मौका शेन्टोविख़ने अपने प्रतिद्वंदीको दिया था, उसमें उदारताका लेश-मात्र भी नहीं था। उसका उपर्युक्त कथन इसके अतिरिक्त कोई अर्थ नहीं रखता कि वह अपने पराजित भावको छिपाना चाहता है। इन बातोंका एक ही परिणाम होना था। उसके निश्चल दम्भको चकनाचूर कर देनेकी हमारी आकांक्षा और भी प्रबल हो उठी। अचानक ही हम जैसे शान्तिप्रिय और अनुद्धत व्यक्ति भी युद्ध करनेकी बलवती प्रवृत्तिसे आन्दोलित हो उठे। एक ही विचार हमारे आकर्षणका केन्द्र बन गया कि इसी जहाजपर शेन्टोविख़से उसकी विजय-पताका छीन ली जा सकती है। यह समाचार बिजलीकी तेजीसे संसार भरमें पहुँचाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त और भी बातें हमारे आकर्षणका कारण थीं। एक तो उस व्यक्तिका रहस्य कि जिसने बीच मझधारमें आकर हमारी नाव डूबनेसे बचाई थी, दूसरे उसकी अत्यधिक नम्रता और शेन्टोविख़ जैसे पेशेवरका कठोर दम्भ। यह अज्ञात व्यक्ति कौन है? क्या यह भाग्यकी सृष्टि थी कि हम शतरंजका एक अदृष्टपूर्व रहस्य घटित होते देखते! हमारा एक ऐसे व्यक्तिसे संबंध हो रहा था, जो शतरंजका असाधारण खिलाड़ी होने-पर भी अपने आपको एकान्तवासमें छिपाये रखना चाहता था। कई प्रकारकी संभावनाओंपर हम तर्क करते थे। किन्तु यह हम किसी भी प्रकार नहीं समझ पाये कि आँखोंके सामने जिस व्यक्तिका अपूर्व कौशल हम देख आये हैं, उसके कार्यपर हम विश्वास करें या उसकी औपचारिक घोषणाको सच मान लें। फिर भी एक निश्चयपर हम लोग पहुँच चुके थे कि अब दुबारा उसी प्रतियोगिताका सूत्रपात नहीं किया जा सकता। हमने इरादा तो कर लिया था कि उनके पास जाकर आग्रह करें और कहें कि आप खेलें, और शेन्टोविख़की फीस इत्यादिका प्रबन्ध मैक आइवर करेगा। इसी समय जहाजके एक कर्मचारीने बतलाया कि

वह अज्ञात व्यक्ति आस्ट्रियन है। मैं भी आस्ट्रियन हूँ। अतएव मेरे साथियोंने इस कार्यके सम्पादनके लिए मुझे ही अपना प्रतिनिधि चुना।

मैं गया तो देखा वे डेककी कुर्सीपर अधलेटे हुए कुछ पढ़ रहे हैं। पास पहुँचने तक मैं उन्हें गौरसे सिरसे पैर तक देखता गया। उनका सिर कुर्सीके तकियेपर इस प्रकार टिका हुआ था कि मालूम होता बहुत थक गये हैं। चेहरेकी सुफेदी मुझे इस बार भी अप्राकृतिक-सी लगी। कनपटियोंके ऊपर बाल बर्फ-से सफेद हो चुके थे। मुझे लगा कि यह व्यक्ति अचानक ही बुड्ढा हो गया है। यह विचार क्यों उठा, कह नहीं सकता।

मैं सामने पहुँचा कि वे तपाकसे उठ खड़े हुए। उन्होंने अपना जो नाम मुझे बतलाया मैं उससे परिचित था। पुरानी आस्ट्रियाके एक सम्भ्रान्त वंशसे उनका संबंध था। मुझे स्मरण हुआ कि इसी नामका एक व्यक्ति शूबर्टका मित्र रह चुका था और इसी वंशका एक सदस्य किसी समय आस्ट्रियन सम्राटका वैद्य भी था।

डाक्टर बी०—मैं उन्हें इसी संक्षिप्त नामसे ही पुकारूँगा।

मैंने शेन्टोविच्के साथ शतरंज खेलनेका प्रसंग छेड़ा तो डाक्टर बी० भौंचक्के हो गये। तब वे एक चैम्पियनके साथ खेल रहे थे, यह जानकारी उन्हें नहीं थी। न जाने क्यों इस समाचारका उनपर विशेष प्रभाव पड़ा। कई बार मुझसे एक ही बात पूछते थे—क्या शेन्टोविच् सचमुच ही अन्ताराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त व्यक्ति हैं। इससे मेरा कार्य थोड़ा-सा सरल हो गया। कहीं वे बुरा न मान जायँ, इस लिए मैंने यह नहीं कहा कि हार जानेपर शेन्टोविच्की फीस मैक आइवर देगा। बहुत-सी आनाकानी कर लेने पर डाक्टर बाजी खेलनेको राजी हो गये। किन्तु उन्होंने स्पष्ट यह भी कह दिया कि उनके कौशलपर अत्यधिक आस्था रखनेसे कहीं हमें निराश न होना पड़े।

"क्योंकि मैं स्वयं नहीं जानता कि मुझमें नियमानुसार शतरंज खेलनेकी योग्यता है भी, या नहीं। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ; और तब मैंने केवल बनावटी उपचारके लिए नहीं कहा था कि मैंने बीस बर्षसे शतरंजका मुहरा नहीं छुआ है। मैं अपने कालेजके दिनोंमें शतरंज खेला करता था। उस समय भी इस विषयकी विशेष प्रतिभा मुझमें नहीं थी।"

यह बात इतनी सादगीसे कही गई थी कि अविश्वासका कोई भी कारण नहीं रह जाता था। फिर भी मेरे विस्मयकी सीमा न थी। शतरंजके प्रख्यात खिलाड़ियोंके नक़शे उन्हें इस तरह प्रस्तुत थे, कि देखकर कोई भी यह कह सकता था कि शतरंजका सैद्धान्तिक अध्ययन उन्होंने खूब किया है। मेरी बातें सुनकर डाक्टर एक स्वप्निल मुसकान लाकर बोले—

"आप कहते हैं 'सैद्धान्तिक अध्ययन !' ईश्वर जानता है कि शतरंजका मैंने खूब अध्ययन किया है। किन्तु विशेष प्रकारकी परिस्थितियोंमें। वह कहानी कुछ उलझी हुई-सी है। किन्तु आजके युगका इतिहास जब लिखा जायेगा तो मेरी कहानी उसमें एक छोटे मोटे अध्यायका रूप आसानीसे ग्रहण कर सकती है। यदि आप धैर्यसे आधा घंटा सुन सकें तो—"

उन्होंने अपने बगलकी कुर्सीपर बैठनेके लिए मुझे संकेत किया। आसपास उस समय कोई नहीं था। डाक्टरने अपना चश्मा उतार कर एक ओर रख दिया, और अपनी कहानी कहना आरम्भ किया—

"आपने कहा था कि विआनानिवासी होनेके नाते आप मेरे वंशसे परिचित हैं। किन्तु मुझे विश्वास है कि आपने मेरे और मेरे पिताजीके विषयमें नहीं सुना होगा। हम लोग वकालतका काम किया करते थे और वहीं हम लोगोंका कानूनी दफ्तर भी था। हमारा कोई भी मामला अखबारोंमें प्रकाशित नहीं होता था और नये आसामियोंसे हम दूर ही रहा करते थे। यदि सच पूछा जाय तो आस्ट्रियाके बड़े बड़े मठोंकी सम्पत्ति तक ही हमने अपनी प्रैक्टिस सीमित रक्खी थी। मेरे पिता किसी समय वहाँके पादरी संघके डिपुटी रह चुके थे। इसके अतिरिक्त राजकीय परिवारके कुछ सदस्योंकी सम्पत्तिका लेन देन भी हमें सौंपा गया था। मेरे एक चाचा दरबारके वैद्य और दूसरे सी टैन स्टैटनमें बड़े पादरी थे। इस प्रकार पिछली दो पीढ़ियोंसे हमारा संबंध राजपरिवार और धार्मिक सम्प्रदाय दोनोंसे अटूट रूपमें चला आ रहा था। वंशपरम्परागत विश्वसनीयतापर यह जो काम हमें सौंपा गया था वह बड़ा ही सादा और शान्तिपूर्ण था। इसमें केवल सच्ची नीयत और विश्वासकी आवश्यकता थी, और ये दोनों गुण मेरे पितामें पूर्ण रूपमें वर्तमान थे। ऐसे भी समय आये जब देशकी आर्थिक स्थिति कभी ऊँची उठी और कभी नीचे गिरी। किन्तु सभी अवस्थाओंमें पिताजीने अपने यजमानोंकी

आर्थिक स्थितिकी भरपूर रक्षा की। जर्मनीकी राजनीतिक पतवार जब हिटलरके हाथोंमें आ गई तो उसने मठों और धार्मिक आश्रमोंकी सम्पत्तिपर आक्रमण किया। जर्मनीमें हमारे कुछ मवक्किल लोग रहते थे। उनकी जो कुछ चल सम्पत्ति आस्ट्रियामें थी, कमसे कम उसे जब्त होनेसे बचाना हमारा धर्म हो जाता था। इस सम्बन्धकी कितनी ही लिखापढ़ी, कितने ही काग़जात हमारे हाथोंसे होकर गुज़रते थे—इसका किसी अन्य व्यक्तिको आभास मात्र भी नहीं था। क्यूरिया धर्मसंघ और राजघरानेके बीच जो कुछ भी पत्र-व्यवहार चलता, वह हम दोनोंको भली भाँति व्यक्त था। हमारे दफ्तरके सामने साइनबोर्डतक टँगा हुआ न था। ऊपर चौथी मंजिलमें हम लोग काम-काज देखा करते थे। इसलिए राजनीतिक देखरेख हमें छू नहीं पाती थी। कोई भी राजकर्मचारी यह सन्देह भी नहीं कर सकता था कि हमारे ही द्वारा राजपरिवारके सभी व्यक्तियोंकी आवश्यक डाक हस्तान्तरित हुआ करती थी।

"इसी बीच नेशनल सोशलिस्टोंने अपने पड़ोसी देशोंमें अपनी गुप्तचर सेना संघटित करनी प्रारम्भ की। संसार-भरके विरुद्ध उनकी सशस्त्र सेनाके प्रयाणमें अभी देर थी। गुप्तचरोंकी यह जमात भी अपने काममें अधिक दक्ष और अत्यन्त भयानक थी। इस सेनाका प्रत्येक सदस्य 'सेल' कहलाता था। कोई भी दफ्तर और व्यवसाय ऐसा न था जहाँ अनेक 'सेल' तैनात न हों। यहाँ तक कि डालफस और शुशनिगके निजी कमरोंमें भी ये 'सेल' अपने घोंसले बनाये हुए थे। उनका एक चर हमारे दफ्तरमें भी था।

"आह, जब मुझे इसका ज्ञान हुआ, तब बात बहुत आगे बढ़ गई थी। वह हमारे दफ्तरका एक नालायक-सा बुद्धू क्लर्क था। मैंने उसे एक पादरीकी सिफारिशपर रख लिया था। उसकी नियुक्तिके पीछे इसके अतिरिक्त और कोई भी प्रेरणा नहीं थी कि एक क्लर्कके होनेसे हमारे दफ्तरको चलता रूप मिले। उससे हम लोग साधारण काम लिया करते थे। टेलिफोनका उत्तर देना, कागजोंको फाईल करना, इत्यादि। कोई भी आवश्यक पत्र मैं उसे नहीं सौंपा करता था। उसे हमारी डाक खोलनेका भी अधिकार नहीं था। जितने भी आवश्यक पत्रादि होते थे, उन्हें मैं स्वयं टाइप करता और उनकी प्रतिलिपि नहीं रहने देता था। जितने ज़रूरी कागजात होते मैं घर ले जाता और लोगोंसे धर्माश्रमके गुप्त कमरों अथवा अपने चाचाके मंत्रणा-गृहमें मिला करता था। इतनी सावधानीका यह परि-

णाम हुआ कि हमारा गुप्तचर, जो कुछ होता, नहीं देख पाता था। किन्तु दुर्भाग्यसे कुछ न कुछ घटना ऐसी अवश्य हुई होगी कि उसे लगा कि उसका अविश्वास किया जा रहा है और कई महत्त्वपूर्ण कार्य उससे छिप कर किये जा रहे हैं। हो सकता है कि हमारे संदेश-वाहकने मेरी अनुपस्थितिमें 'बैरन फर्न' न कह कर 'हिज़ मैजेस्टी' इत्यादि कुछ शब्द कह दिया हो, या कमबख्तने हमारी कोई चिट्ठी खोलकर पढ़ ली हो। चाहे कुछ भी कारण हो, परन्तु इससे पूर्व कि मैं उसपर संदेह कर सकूँ, उसने बर्लिन या म्यूनिखसे प्रधान गुप्तचरको हमपर निगरानी रखनेके लिए बुलवा लिया। बन्दी होनेके कई दिन बाद मुझे स्मरण हुआ कि पहल पहले तो उसने ढीलापन दिखाया था किन्तु बादमें वही किस प्रकार चुस्ती और सतर्कतासे काम करने लगा था। यही नहीं, मेरे कई बार अस्वीकार करनेपर भी उसने आग्रहके साथ डाक भेजनेका काम अपने हाथोंमें ले लेना चाहा। मैं कभी कभी सोचता हूँ कि असावधानीके इस दोषसे मैं एकाएक मुक्त नहीं हो सकता। फिर भी, क्या संसारके बड़े बड़े नेताओंको हिटलरकी चालबाजियोंके आगे धूल नहीं फाँकनी पड़ी? कितनी बारीकी और लगनके साथ गेस्टापूके चर मेरी देखरेख कर रहे थे, इसका अन्दाजा आप यों लगा सकते हैं कि जिस दिन शुशनिगने पदत्याग किया और जिसके दूसरे दिन हिटलरका विआनामें प्रवेश हुआ, उसी शामको उन लोगोंने मुझे भी गिरफ्तार कर लिया था। सौभाग्यसे मैंने सभी महत्त्वपूर्ण पत्रादि जला कर राख कर दिये थे। कुछ रसीदें, जिनमें आस्ट्रियन मठोंकी विदेशी पूँजीका हिसाब था, मैंने अपने विश्वासपात्र अनुचरद्वारा अपने चाचाके पास भेज दीं। मैं इतना काम कर ही चुका था कि वे लोग दरवाजा तोड़कर अन्दर आ धमके।"

डाक्टर बी० कहते कहते काफी देर तक रुक गये। उन्होंने सिगरेट जलाई और दियासलाईके प्रकाशमें मैंने देखा कि उनके ओठोंका दाहिना कोना किंचित् काँप उठा है। मैंने इसपर पहले भी एक बार ध्यान दिया था। कम्पन अत्यन्त सूक्ष्म था; किन्तु उससे उनके चेहरेपर एक अज़ीब बेचैनी-सी साफ झलकने लगी थी।

"मैं समझता हूँ आप यह सोच रहे होंगे कि अब मैं आपको कंसंट्रेशन कैम्पका विवरण सुनाऊँगा, जहाँ वे सब लोग बन्दी किये गये थे, जिन्हें पुरानी

आस्ट्रिया और वहाँकी पिछली शासनप्रणालीसे प्रेम था। आप सोचते होंगे कि जर्मनोंके द्वारा मुझे घोर अपमान, लांछना और पीड़ा मिली होगी। किन्तु नहीं, इस प्रकारकी कोई भी घटना मेरे साथ नहीं हुई। मैं दूसरी ही श्रेणीका कैदी था। मैं उन अभागोंमें नहीं था जिन्हें शारीरिक और आध्यात्मिक यातना पहुँचा कर जर्मनोंने द्वेषकी भावनाको संतुष्ट किया था। मैं उन लोगोंमें था जिनसे नेशनल-सोशलिस्टोंको धन या महत्त्व-पूर्ण सूचना पानेकी आशा थी। वरना गेस्टापूके सम्मुख मुझ जैसे अकिंचन व्यक्तिका कोई मूल्य नहीं। उन्होंने सोचा होगा कि उनके कट्टर शत्रुओंके संचालक और विश्वासके पुतले हमीं लोग हैं। उन्हें आशा थी कि आस्ट्रियाकी राजसत्ताके निमित्त जिन्होंने आत्मत्याग करके युद्ध किया था, उन्हें फँसाने-के लिए मेरे पास थोड़े बहुत प्रमाण मिल जायेंगे। उन्हें सन्देह था—और उनका यह सन्देह निर्मूल नहीं था—कि धनका एक बहुत बड़ा परिमाण हमारे पास है, जोकि लूटनेसे बच गया है और जोकि उनकी पहुँचके बाहर कहीं दूर रक्खा गया है। इसीलिए जर्मनोंने मुझपर सूचना पानेके अपने अनुभूत साधनोंका प्रयोग करना चाहा। इसीलिए मेरी कोटिके लोग कंसन्ट्रेशन कैम्पमें न रक्खे जाकर, एक विशेष प्रकारके प्रबन्धमें रक्खे गये। आपको स्मरण होगा कि हमारे चान्सलर साहब और बैरन रोथ्स चाइल्ड भी कटीले तारोंके बन्दीगृहमें नहीं किन्तु मेट्रोपोल होटलके अलग अलग कमरोंमें बन्द कर दिये गये थे। उन दोनोंसे गेस्टापूके लोग करोड़ों रुपयोंकी आशा रखते थे। मुझ अकिंचनकी भी ठीक वही अभ्यर्थना जर्मनोंने की थी।

"आपको लगता होगा कि होटलमें प्रत्येक बन्दीको एक एक कमरा रहनेको मिले, इससे अधिक सुभीतेकी क्या बात हो सकती है? किन्तु आप विश्वास रखिए कि हम लोगोंको कन्सन्ट्रेशन कैम्पकी बर्फीली ठंडमें न रखकर होटलोंके गरम गरम कमरोंमें रखनेके पीछे हमारे सुभीतेका विचार तो कम, किन्तु जर्मनोंकी कार्यकुशलता अधिक थी। जिस दबावसे वे हमें विवश करना चाहते थे उसमें मारपीट या अन्य प्रकारकी शारीरिक यंत्रणा नहीं थी। वे भीषण अकेलेपनकी यातनाद्वारा हमें राहपर लाना चाहते थे। उन्होंने कोई भी भौतिक अत्याचार हमपर नहीं किये। हमें केवल 'अकिंचत्'के बीचें-बीच रख दिया। क्योंकि वे जानते थे कि मनुष्यकी आत्मापर निःसंगताके

अतिरिक्त और किसी शक्तिका अधिक प्रभाव नहीं पड़ता। हममेंसे प्रत्येकको एक वातावरणहीन, शून्य, बाहरी संसारसे विरक्त, विच्छिन्न कमरोंमें रख कर उन्हें आशा थी कि अन्तमें हमारे मुँह खुल ही जायेंगे।

"जो कमरा मुझे दिया गया था, उसे पहले पहल देखकर मुझे वितृष्णा नहीं हुई। एक दरवाजा, एक कुर्सी, एक टेबिल, एक चारपाई, एक प्रक्षालन-भाण्ड और एक सींकचोंसे बुनी हुई खिड़की। दरवाजा अहर्निश बन्द रहता था। टेबिलपर न तो पुस्तकें थीं, न समाचारपत्र, न पेंसिल, न कागज। खिड़कीके सामने दूसरी ओर नंगी दीवार खड़ी थी। मेरा अपनापन, मेरा भौतिक अस्तित्व नितान्त शून्यके पींजरेमें स्थित था। उन्होंने मेरी प्रत्येक वस्तु मुझसे ले ली थी। मेरी घड़ी, कि मैं न जान पाऊँ कि क्या बजा है। मेरी पेंसिल, कि मैं लिख न सकूँ। मेरा चाकू, कि कहीं मैं अपनी रुधिरकी शिराएँ काट न डालूँ। यहाँ तक कि तम्बाकूकी एक चुटकी तक मुझे नहीं दी गई। एक वार्डरके अतिरिक्त, जिसे बोलनेकी अनुमति नहीं थी, किसी अन्य-का मुख मैं नहीं देख सकता था। सूर्योदयसे सूर्यास्त तक मेरी आँखें, मेरे कान, मेरी समस्त इंद्रियाँ, उसी आधारशून्यतामें टँगी रहती थीं। मेरे पास मेरा शरीर और चार पाँच निर्जीव वस्तुएँ और थीं। टेबिल, कुर्सी, खिड़की और चिलमची—बस। बच निकलनेका कोई साधन नहीं। नीरवताके उस पातालमें मैं उस गोताखोरकी भाँति डूबा हुआ था जो धातुके खोलमें लिपटा। हुआ यह जानता है कि ऊपर खींचनेकी डोर टूट गई, और अतल गहराईसे उबरने-की उसकी आशा बुझ चुकी है। मुझे कुछ भी करनेको नहीं था, न कुछ सुनने को—न कुछ देखनेको। मेरे आसपास, चारों ओर वही अविच्छिन्न शून्यता थी, और वह समयहीन, सीमाहीन खोखलापन। मैं इधर-उधर टहलता था और मेरे विचार भी मेरे साथ इधर-उधर भटकते रहते थे—बस इधर-उधर, फिर इधर-उधर। किन्तु विचारोंको भी, चाहे वे कितने ही स्वल्प क्यों न हों, एक खूँटेकी आवश्यकता होती है, ताकि वे इधर-उधर न भटकें। अपने ही चारों ओर न मँडराने लगें। अन्यथा विचार भी शून्यताके गर्तमें डूब जाते हैं। मैं प्रातःकालसे सायंपर्यन्त प्रतीक्षा करता था कि कुछ 'हो'। किन्तु कुछ भी तो नहीं होता था। मैं प्रतीक्षा करता—प्रतीक्षा करता—प्रतीक्षा करता। मैं सोचता, सोचता, सोचता।—और सोचता, कि मेरा माथा

फटने लगता था। फिर भी कुछ नहीं हुआ । मैं अकेला रहा—बस अकेला—अकेला—

" दो सप्ताह तक यही होता रहा। इस बीच मैं समयसे बाहर, विश्वसे बाहर साँसें लेता रहा। यदि लड़ाई लग जाती तो भी मैं नहीं जान पाता। क्योंकि मेरे संसारमें तो वही वस्तुएँ थीं—टेबिल, कुर्सी, दरवाजा, खिड़की और दीवार। इन वस्तुओंकी आकृति, और आकृतिकी प्रत्येक रेखा मेरे मस्तिष्ककी पर्तोंपर ऐसी छप चुकी थी कि मानो लोहेकी छेनीसे आँक दी गई हो। और इसके उपरान्त सुनवाई हुई। मुझे एकाएक बुलावा मिला। मैं नहीं जानता कि वह दिन था या रात। मुझे कई बरामदोंमेंसे होकर ले जाया गया, न जाने कहाँ। मुझे कुछ देर प्रतीक्षा करनी पड़ी—न जाने कहाँ। फिर मैंने अपने आपको कुछ वर्दीधारी मनुष्योंके आगे खड़ा पाया। टेबिलपर कागज़ोंका ढेर था। ऐसे पत्रादि कि जिनका विषय तक मैं नहीं जानता। फिर, प्रश्न किये गये। कुछ सच्चे, कुछ झूठे। कुछ सरल और कुछ उलझे हुए। कुछ ऐसे प्रश्न कि नागपाश-से लिपट जायँ और कुछ ऐसे कि छूकर उड़ जायँ। मैं उत्तर देता और सामने विचित्र डरावनी अँगुलियाँ कागज़ोंसे खेलने लगतीं। उन कागज़ोंमें क्या था, मैं अनुमान नहीं लगा सकता। वे विचित्र डरावनी अँगुलियाँ कुछ लिखतीं, जिसे मैं जान न पाता। सबसे अधिक भयावह बात यह कि थी मुझे मालूम नहीं था कि मेरे आफिसके कितने भेद गेस्टापूवाले जानते हैं और कितने वे मुझसे जानना चाहते हैं। मैंने आपको बताया है कि अंतिम क्षणमें महत्त्वपूर्ण कागज़ात मैंने अपने चाचाके पास भेज दिये थे। क्या उन्हें मिले?—या नहीं मिले? उस क्लार्कने कितनी बातें इन्हें बताई? कौन कौनसे पत्र इन्हें मिले हैं? आश्रमके मूर्ख पादरीसे न जाने क्या क्या इन्होंने मालूम कर लिया है।

" और वे प्रश्नोंकी मीनार मुझपर खड़ी कर रहे थे। इस आश्रमके लिए मैंने कौन कौन-सी सनदें खरीदीं? किन बैंकोंके साथ मेरा पत्र-व्यवहार रहा? क्या मैं अमुक महाशयको—ईश्वर जाने और किस किसको—जानता हूँ? क्या स्विट्ज़रलैंडसे मेरी लिखा-पढ़ी थी? मुझे अनुमान तक न था कि कौनसे रहस्यका उन्होंने पता लगा लिया है। प्रत्येक उत्तरके पीछे एक आशंका मुँह बाये खड़ी रहती थी। यदि मैं कोई ऐसी बात बताऊँ कि जो उन्हें मालूम न

हो तो किसी दूसरेके प्राणोंपर संकट आ सकता है। न बताऊँ तो मेरी हानि होती थी।

"यह पूछताछ उतनी बुरी नहीं थी। वहाँसे लौटकर फिरसे अपने खोखले-में पहुँच जाना अत्यन्त भीषण अनुभव था। फिर वही कमरा, वही टेबिल, कुर्सी, चारपाई, चिलमची और वही दीवारें। ज्यों ही मैं अकेला होता त्यों ही पिछली कहा-सुनीका जमाखर्च शुरू कर देता। सोचता कि मुझे क्या कहना चाहिए था—अगली बार मैं क्या कहूँगा कि जिससे उन्हें यदि कोई सन्देह हुआ भी हो तो वह दूर हो जाय। मैं खूब सोचता, छानबीन करता, शब्दोंको तोल तोल कर, उनके अर्थमें डूब डूबकर मैं उन लोगोंके सामने जानेकी तैयारी करता था। मैं उनके प्रत्येक प्रश्नको और अपने प्रत्येक उत्तरको दुहराता। किन्तु एक बार मेरे विचारोंको छूट मिलती कि वे शून्यमें भटकने लगते थे। मेरे मस्तिष्कमें चक्कर लगाते और कई बार अनेकों आकृतियों और योजनाओंमें मेरी निद्रित अवस्थामें भी प्रवेश कर जाते।

"गेस्टापू द्वारा की गई प्रत्येक पूछताछके उपरान्त मैं फिर उन्हीं प्रश्नोत्तरियोंकी उलट पुलट किया करता था। फिर वही खोदखोदकर चुभनेवाले प्रश्न, वही छानबीन, वही मानसिक यंत्रणा। पूछताछ तो एक ही घंटेमें समाप्त हो जाती, किन्तु मेरे एकाकी मस्तिष्ककी भ्रान्तियोंका कोई अन्त न था। सदा, सर्वदा, वही टेबिल, वही चारपाई, कुर्सी, दीवार और खिड़की। कोई भी व्यतिक्रम नहीं। न तो कोई पुस्तक, न समाचारपत्र। किसी नये चेहरेकी झलक तक नहीं। एकाध पेंसिलका टुकड़ा भी नहीं कि कुछ लिख सकूँ। दियासलाईका डिब्बा तक नहीं कि जिसे अपनी अँगुलियोंमें लौट पलट सकूँ—सर्वत्र शून्य, महा शून्य। अब मैं समझा कि होटलके कमरोंकी यह आयोजना कैसी दान-वी बुद्धि और प्राणहारी मनोविज्ञानके द्वारा निर्मित हुई है। कंसंट्रेशन कैम्पमें लोगोंको कम-से-कम पत्थर तो ढोने पड़ते हैं। इस कार्यमें भले ही उनके हाथोंसे रक्त बहने लगे और उनके पाँव भले ही जूतोंके अन्दर ही अन्दर सिकुड़ जायँ। भले ही गन्दगी और सर्दीमें दो दो दर्जन मनुष्य एक ही कमरेमें ठूँस दिये जायँ। किन्तु वहाँ एक दूसरेका मुँह तो देख सकते हैं। वहाँ सामने एक विस्तार, एक पेड़, आकाशमें तारे,—कुछ तो होता है कि जिसे लोग देखते रहें। यहाँ तो सदा वही एकसापन मुँह बाये खड़ा रहता है। वही—सदा वही—

बौरा देनेवाला 'वही'। यहाँ कोई भी वस्तु ऐसी नहीं थी कि मुझे मेरे विचारोंसे छुड़ा सके, मेरी भ्रान्त धारणाओं और रोगी मनोवृत्तिसे मेरा त्राण कर सके। बस यही तो वे चाहते थे। वे मेरे विचारोंको मुझमें ठूँसना चाहते थे। इस तरह ठूँसना चाहते थे कि मेरे प्राण रुँध जायँ और मैं स्वयं ही तड़प तड़प कर सब कुछ स्वीकार कर लूँ। वह सब कुछ स्वीकार कर लूँ कि जिसकी उन्हें आवश्यकता थी। उन्हें प्रमाण दे दूँ कि वे और लोगोंको भी फाँस सकें।

"मुझे धीरे धीरे लगा कि किस प्रकार मेरी मानसिक शक्तियाँ उस शून्यके भारके नीचे ढीली पड़ती जा रही हैं। मुझे जब इस खतरेका आभास हुआ तो मैंने ताबड़ तोड़ प्रयत्न किया कि किसी प्रकार उससे बचनेका उपाय निकालूँ। मैं ग्राम-गीतोंको दुहराता। बचपनके सीखे हुए शिशु-गीतोंको गुनगुनाता। पाठशालाके दिनों सीखी हुई होमरकी कविताओंका पाठ करता। जाब्ता दीवानीकी धाराओंकी मानसिक आवृत्ति करने लगता। कभी अंकगणितके प्रश्नोंको हल करता। किन्तु मेरी स्मृति इतनी क्षीण हो गई थी कि उसमें थोड़ी-सी भी योजनाशक्ति नहीं बची थी। मैं किसी भी काममें एकाग्र होकर नहीं लग सकता था। केवल एक ही विचार बिजली-सा मेरे मस्तिष्कमें कौंध जाता कि वे लोग क्या क्या जानते हैं? कौन-सी बात उन्हें अवगत नहीं हुई? कल मैंने क्या कहा था? दूसरी बार मुझे क्या कहना चाहिए?

"मेरी यह अनिर्वचनीय दशा चार महिने तक रही। चार महिने!—लिखनेमें सरल लगते हैं—कोई आधे दर्जन अक्षर। कहनेमें भी सरल, केवल दो शब्द। ओठोंसे केवल आधे पलमें ये शब्द उच्चारित किये जा सकते हैं।—चार महिने! किन्तु कोई भी व्यक्ति स्वयं अपने आपको इसका ब्योरा नहीं दे सकता, नाप नहीं सकता, दिखा नहीं सकता कि सीमा और समयसे हीन वातावरणमें अवधिकी क्या इयत्ता होती है। कोई भी व्यक्ति दूसरेको यह समझा नहीं सकता कि यह जो चारों ओर शून्य, शून्यातिशून्य, महाशून्य फैला पड़ा है, यह व्यक्तिके अन्दर छन-छन कर किस प्रकार उसे नष्ट कर देता है। सदासे वही एक टेबिल, चारपाई, चिलमची और दीवारें—सदा वही एक-सी नीरवता—सदा वही एक वार्डर, जो कि बिना किसीको देखे भोजन रखकर चला जाता है। सदाके वही एकसे विचार, जो कि

महाशून्यमें व्यक्तिके चारों ओर घूमते रहते हैं। और तब तक घूमते रहते हैं कि जब तक वह पागल न हो जाय।

"कुछ छोटे-छोटे लक्षणोंसे मुझे यह ज्ञात हुआ कि मेरा मस्तिष्क ठीक ठीक काम नहीं कर रहा है। मैं यह जान कर विचलित हो उठा। प्रारम्भकी पूछताछमें मेरा मस्तिष्क बिलकुल साफ था। मैं बड़ी शान्ति और तत्परताके साथ उत्तर दिया करता था। मुझे क्या कहना चाहिए और क्या नहीं—मेरी यह द्विविध विचारप्रणाली अब तक ठीक ठीक चल रही थी। किन्तु अब मैं अपने वाक्योंको रुकरुक कर बोलने लगा था। जब मैं प्रश्नोंका उत्तर देता तो मेरी आँखें मानो मंत्रमुग्ध-सी होकर सामने कलमपर लगी रहतीं, मानो मैं वहाँ लिखे जाते हुए अपने ही शब्दोंका पीछा करना चाहता होऊँ। मुझे लगा कि वाणीपर मेरा अधिकार ढीला होता चला जा रहा है। मुझे वह क्षण निकट आता हुआ प्रतीत हुआ, जब मैं अपनी मुक्तिके लिए, जो कुछ जानता हूँ, उनसे कह दूँ। शून्यताके इस नागपाशसे बचनेके लिए मैं बारह व्यक्तियोंके नाम और गुप्त बातें प्रकट कर देता। मुझे इससे कोई लाभ तो न होता। हाँ, एक क्षणके लिए मुझे स्वतंत्र साँस लेनेका अवकाश मिल जाता।

"एक दिन सायंकालके समय मेरी मानसिक अवस्था ठीक इसी सीमा तक पहुँच गई थी। इसी समय वार्डर भोजन परोसकर जाने लगा तो मैं चीख उठा—'मुझे उन लोगोंके पास ले चलो। मैं सब कुछ कहूँगा, मैं बताऊँगा कि कहाँ कागजात रक्खे हैं और कहाँ धन। मैं सब कुछ बताऊँगा—सब कुछ।'—किन्तु भाग्यसे वह इतनी दूर निकल गया था कि उसने सुना नहीं—या जान बूझकर उसने सुनना नहीं चाहा।

"इसी उत्कट आवश्यकताके समय ऐसी एक अप्रत्याशित घटना हो गई जिससे मुझे थोड़ेसे समयके लिए मुक्ति मिली। जुलाईका अन्तिम सप्ताह था। मेघाच्छन्न, अँधियाला, बरसाती दिन। मुझे यह छोटी छोटी बातें अच्छी भाँति स्मरण हैं, क्यों कि जिस समय मुझे सुनवाईके लिए ले जा रहे थे, तब बरामदेकी खिड़कियोंपर बरसाती बूँदें टकरा रही थीं। मुझे कुछ देर बाहरके कमरेमें प्रतीक्षा करनी पड़ी। सुनवाईसे पहले सदा यहीं ठहरना पड़ता था। कदाचित् यह भी एक चाल थी। वे लोग अर्द्धरात्रिको अचानक बुलाकर डरा देते। इस बीच आहूत व्यक्ति परीक्षाका सामना करनेके लिए अपने मन और

मस्तिष्कको एकाग्र करे कि वे उसे बाहर रोक देते। एक लंबी प्रतीक्षा—जिसका कि कोई अर्थ न होता। किन्तु फिर भी उसके पीछे एक प्रयोजन होता था। एक घंटा—दो घंटे—तीन—कि जिससे शरीर थक जाय—आत्मा झुक पड़े। और आज गुरुवार ता० २७ जुलाईको उन्होंने मुझे भी इसी प्रकार लम्बी प्रतीक्षा करनेपर विवश किया। जब तक मैं बाहरी कमरेमें खड़ा रहा, दो बार घंटे बजे। तारीखके स्मरण रखनेका भी एक कारण है।

"इस कमरेमें एक कैलेण्डर टँगा हुआ था। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि ये लोग मुझे बैठने नहीं देते थे। दो घंटे तक, मुझे लगा कि मेरी टाँगे मेरे शरीरमें घुसी जा रही है। मुझे असंभव-सा लगता है कि आपको समझाऊँ कि किसी भी छपी हुई या लिखी हुई वस्तुके देखनेके लिए किस प्रकार मेरी आँखें भूखी थीं। मैं जब तक वहाँ खड़ा रहा, टकटकी लगाकर दीवारपर टँगे हुए उन थोड़ेसे अक्षरोंको देखता रहा—'२७ जुलाई'। मैंने भूखे भेड़ियेकी भाँति लपककर इन शब्दोंको अपने मस्तिष्कमें ठूँस लिया। मैं प्रतीक्षामें था कि अन्तमें कब दरवाजा खुलेगा और इसी बीच मैं यह भी सोचता जाता था कि अबकी बार मेरे परीक्षक लोग मुझसे क्या पूछेंगे। मैं जानता था कि जो कुछ कहने सुननेके लिए मैंने अपने आपको उद्यत कर रक्खा है, वे लोग उससे नितान्त भिन्न प्रश्न कर बैठेंगे। किन्तु इतना सब होने पर भी वहाँ खड़े रहने और प्रतीक्षा करनेकी यंत्रणा एक प्रकारका वरदान सिद्ध हुई। क्योंकि यह कमरा मेरे कमरेसे भिन्न प्रकारका था। उससे कुछ बड़ा और इसमें एकके बजाय दो खिड़कियाँ थीं। इसमें चारपाई नहीं थी—चिलमची नहीं थी। खिड़कीकी देहरीपर पड़ी दरार भी नहीं कि जिसमें लाखों बार देख-भाल चुका था। यहाँ दरवाजेका रंग भी दूसरा ही था। दीवारसे लगी हुई कुर्सी दूसरे ढंगकी थी। बायीं ओर एक आलमारी थी, जिसमें कागजात भरे हुए थे। एक ओर कपड़े टाँगनेकी खूँटियाँ थीं, जिनपर तीन चार भीगे हुए फौजी कोट टँगे हुए थे। मुझपर अत्याचार करनेवालोंके कोट। सब कुछ मिलाकर मेरे लिए यहाँपर एक नयापन था। नई वस्तुएँ, जिन्हें मैं देखूँ, जिनसे मेरी भुखमरी आँखोंको तृप्ति मिले। मेरी आँखें तो प्रत्येक छोटी छोटी वस्तुओंपर चिपकी पड़ती थीं।

"टँगे हुए कपड़ोंकी प्रत्येक शिकनको मैंने ध्यानसे देखा। उदाहरणके लिए कालरसे लटकी हुई पानीकी एक बूँदपर मैं टकटकी लगाये रहा। आपको यह

बात भोंड़ी लगेगी। किन्तु मैं तो आन्तरिक उत्तेजनाके साथ प्रतीक्षा करता रहा कि वह बूँद अन्तमें छूटकर नीचे गिर पड़ेगी या पृथ्वीकी आकर्षण शक्तिके विरुद्ध वहीं लगी रहेगी। कई मिनटों तक मैं साँस रोककर बूँदको देखता रहा। मानो मेरे प्राण उसी दाँवपर रक्खे हुए हों। अन्तमें वह बूँद नीचे गिर ही तो पड़ी। मैं अब कोटोंके बटन गिननेमें लग गया। पहलेमें आठ, दूसरेमें भी आठ और तीसरेमें दस। फिर मैं उन कोटोंपर सैनिक पदोंके चिह्न देखने लगा। इन सारी भद्दी और अनावश्यक बातोंसे मैं अपनी आँखोंको बहलाता। अचानक मैंने कुछ ऐसी वस्तु देखी कि मेरी आँखें पथरा गईं। एक कोटकी जेबमें आगेकी ओर निकला हुआ उभार मुझे दिखाई दिया। मैं निकट आया। कपड़ेपर आयताकार उभारसे मुझे मालूम हुआ कि जेबमें क्या है। एक 'पुस्तक'—मेरे पैर काँपने लगे—'पुस्तक!'

"पूरे चार महिनों तक मेरे हाथमें कोई भी पुस्तक नहीं आई थी। इस लिए पुस्तक मात्रकी भावना मेरे लिए एक उन्माद, एक मोहन-मंत्र सिद्ध हुई।—ऐसी एक पुस्तक कि जिसमें शब्दोंका, वाक्योंका, पत्रों और पृष्ठोंका एक नियत क्रम हो। जिसमें मनुष्य मनोरंजक विचारोंको पा सके और उन्हें अपने मस्तिष्कमें प्रविष्ट कर सके। पुस्तकसे कोटकी ज़ेबपर जो उभार बन गया था, मेरी आँखें मंत्रमुग्ध-सी होकर उसीपर लग गईं। मानो अपनी अग्निसे जलाकर कोटमें छेद कर देंगीं। फिर ऐसा क्षण आया कि मैं लोभ संवरण न कर सका। धीरे धीरे निकट जाने लगा। केवल इसी विचारसे कि कपड़ेपरसे होकर मैं पुस्तकका स्पर्श कर सकूँगा। मेरी अंगुलियोंके नाखूनोंसे होकर शरीरमें एक गुदगुदी फैल गई। विना यह जाने कि मैं क्या कर रहा हूँ, मुझे लगा कि मैं कोटके अत्यन्त समीप जा पहुँचा हूँ।

"भाग्यसे वार्डरने मेरी उन विचित्र भाव-भंगियोंपर ग़ौर नहीं किया। हो सकता है उसने सोचा हो कि एक व्यक्तिके लिए जो दो घंटेसे खड़ा है और दीवारसे टिकना चाहता है यह अत्यन्त स्वाभाविक है। अब मैं कोटके बिलकुल पास पहुँच चुका था और मैंने जान-बूझकर अपने हाथ पीछे कर लिये कि मैं कोटका स्पर्श कर सकूँ। मैंने वस्तुको टटोला और पहले ही स्पर्शने मुझे बता दिया कि यहाँ कुछ चौकोर आकारकी लचीली वस्तु है। छूनेपर 'फड़फड़' का धीमा शब्द भी करती है।—पुस्तक!—एक पुस्तक!!—तब एक विचार

तीरके समान मेरे मस्तिष्कमेंसे होकर निकल गया—'पुस्तक चुरा लो !' एक बार तुमने हाथकी सफाई दिखाई कि तुम पुस्तकको अपनी गुफामें छिपा सकते हो। और तब पढ़ो—खूब पढ़ो—दुहरा दुहरा कर पढ़ो। यह विचार आते ही विषकी भाँति मुझपर काम करने लगा। उसी समय मेरे कानोंमें गूँज-सी होने लगी, मेरा हृदय धक-धक करने लगा, मेरे हाथ सुन्न पड़ गये और मनके आदेशका विरोध-सा करने लगे। किन्तु ज्यों ही यह पहली मुर्दनी दूर हुई कि मैं धीरे धीरे कोटसे चिपक गया। मेरी आँख वार्डरपर लगी हुई थी और छिपे हुए हाथ धीरे धीरे पुस्तकको जेबसे ऊपर—ऊपर निकाल रहे थे। तब, एक झटका और एक धीमी, सधी हुई, खिचान। पुस्तक उसी समय मेरे हाथम थी। इसके पहले मुझे अपने काममें कोई डर नहीं लग रहा था। परन्तु अब तो लौटना असम्भव था। इसे लेकर मैं क्या करूँ ? मैंने उसे कमरेके पास पतलून-के नीचे खोंस दिया, इस प्रकार कि उसका एक किनारा कमरबन्दसे दबा रहे। वहाँसे फिर धीरे धीरे उसे कूल्हेतक खिसका लिया, ताकि फौजी ढंगसे मैं पतलूनकी बगलोंमें हाथ डालकर उसे सँभालता रहूँ। मुझे इसकी जाँच करनी थी। इसलिए मैं कपड़ोंके पाससे एक, दो, तीन कदम हटा। मेरी योजना काम कर गई। यदि मैं कमरबन्दको कसकर पकड़े रहा तो पुस्तकको अपने स्थानपर छिपाये रहना संभव हो गया था।

"उसके बाद पूछताछ शुरू हुई। मुझे अपने मस्तिष्कको एकाग्र करनेमें कठिन प्रयत्न करना पड़ा। मेरा सारा ध्यान पुस्तकको गिरनेसे बचानेमें लगा हुआ था। भाग्यसे अबकी मुझे अधिक समय तक वहाँ नहीं रहना पड़ा। मैं पुस्तकको निर्विघ्न रूपसे कमरेमें लेता आया। यद्यपि एक बार वह कमरबन्दसे हटकर नीचेकी ओर खिसक पड़ी थी। मुझे डर था कि पतलूनकी आस्तीनोंसे होकर नीचे न गिर पड़े। मैं उसी समय बड़े जोरोंसे खाँसने लगा। इसी बहाने थोड़ा-सा आगेकी ओर झुककर मैंने पुस्तकको फिरसे ठिकाने लगा दिया। किंतु उस क्षणकी कल्पना तो कीजिए जब कि मैं उसे अपने नरक तक ले आया !

"आप सोचते होंगे कि कमरेमें जाते ही मैंने चटपट यह जानना चाहा होगा कि वह पुस्तक है कौन-सी। किन्तु, नहीं-नहीं। मैं तो सबसे पहले पुस्तक अपने पास होनेके आनन्दका उपभोग करना चाहता था। यह चुराई हुई

पुस्तक क्या होगी, कैसी होगी। मैं दिन दहाड़े आँखें मूँदकर इसी अनुमानके स्वप्न देखने लगा। मैं चाहता था कि पुस्तकका टाइप बहुत छोटा हो। वह बहुत घनी छपी हो। बहुत बहुत-से अक्षर उसमें हों। बहुत बहुत-से पतले पतले पन्ने हों कि जिन्हें पढ़नेमें बहुत बहुत-सा समय लगे। कभी मैं चाहता कि इसे पढ़नेमें मस्तिष्कपर जोर पड़े। सस्ती हलकी पुस्तक मुझे नहीं चाहिए। ऐसी कुछ वस्तु हो कि जिससे मैं कुछ सीख सकूँ—कुछ ग्रहण कर सकूँ। हायरे स्वप्न! मैं चाहता था कि यह गेटे या होमरकी कोई कृति हो। अन्तमें अपने मोह और उत्कंठाको मैं अधिक न रोक सका। विस्तरपर लंबे लेटकर कि कहीं वार्डर एकाएक दरवाजा खोलकर देखे तो उसे सन्देह न हो, मैंने काँपते हाथोंसे कमरबन्दके नीचेसे पुस्तक निकाल ली।

"पहली झलकसे मुझे केवल निराशा ही नहीं किन्तु खीझ भी मनमें उठी। क्यों कि चोरीका यह माल, जिसे यहाँ तक लानेमें मुझे आशा और आशंकासे आन्दोलित होना पड़ा था, केवल शतरंजके डेढ़ सौ खेलोंका संग्रह मात्र था। यदि मैं बन्दी न होता तो इस खीझमें खुली खिड़कीसे पुस्तकको बाहर फेक देता। आप ही बताइए, इस प्रकारकी निरर्थक वस्तुका मैं क्या करूँ? जब मैं स्कूलमें था तो दूसरे लड़कोंकी भाँति एकाध बार कभी शतरंज खेल लिया करता था। किन्तु इस सैद्धान्तिक पुस्तकसे मुझे क्या लाभ? आप अकेले शतरंज नहीं खेल सकते; और जब कि मोहरे भी न हों और बोर्ड भी न हो तो कहना ही क्या है? उसी चिढ़में मैंने पन्नोंको उलटना शुरू किया। आशा थी कि भूमिका अथवा उपोद्घातके रूपमें उसमें कुछ पाठ्य सामग्री मिलेगी। किन्तु वर्गाकार कई मानचित्रोंके अतिरिक्त मुझे कुछ भी न मिला। स्थान स्थानपर ए-वन, ए-टू, नाइट–एफ–वन, नाइट–जी–थ्री इत्यादि यही सब कुछ लिखा हुआ था। मेरी समझमें यह खाक भी नहीं आया। मुझे लगा कि यह बीजगणितकी कोई कुंजी है, जिसे मैं नहीं जानता। बहुत-सी उधेड़-बुनके बाद मैं समझ पाया कि ए, बी, सी, अक्षर सीधी कतारोंके लिए और १, २, ३ अंक आड़ी कतारोंके लिए हैं। इतना समझ लेनेपर उन मान-चित्रों-का अर्थ मुझे सूझने लगा।

"मैंने सोचा कि यदि मैं किसी प्रकार इसी कमरेमें शतरंजका बोर्ड बना सकूँ तो कौन जान सकेगा। किसी दैवी संकेतसे मुझे मालूम हुआ कि मेरे

विस्तरकी चादर चौखानोंमें बुनी गई है। खींचतान कर उसमें चौसठ खाने निकल आये। पुस्तकका पहला पन्ना फाड़कर शेष मैंने गद्देके नीचे दबा दिया। उसके बाद, मुझे जो रोटियाँ मिलती थीं, उन्हींमेंसे बचाकर मैंने मोहरे बनाने आरम्भ किये। बड़े ही ऊलजलूल प्रयत्नोंके पश्चात् पुस्तकमें दिये नकशोंके अनुरूप नकलें मैंने बना लीं। रोटीके मोहरोंमेंसे आधे मैंने धूलमें लपेट लिये, ताकि सफेद मोहरों और उनमें अन्तर दिख सके। पहले पहले मैंने खेल प्रारम्भ किया तो बड़ी उलझनें सामने आईं। मेरा मस्तिष्क ही उन दिनों काम नहीं कर रहा था। मुझे प्रत्येक बाजी पाँच बार, दस-बीस बार दुबारा दुबारा लगानी पड़ती। किन्तु उन दिनों मेरे समान और किसके पास इतना फालतू समय होगा, कौन मेरी ही भाँति शून्यताका दास होगा और किसके हृदयमें इतनी उत्कंठा और इतना धैर्य निहित होगा ?

"पूरे छह दिनोंके उपरान्त मैं उस बाजीको बिना भूल-चूकके अन्त तक खेलने लग गया था। एक हफ्ते बाद ठीक ठीक स्थितिका अनुमान लगानेके लिए मुझे मोहरोंकी भी आवश्यकता न रही। उसीके ठीक एक हफ्ते बाद मैंने चादरको भी एक ओर कर दिया। वे छपे हुए चिह्न, ए–वन, ए–टू, सी–सेवन, सी–एट, जो कि मेरे लिए पहले पहल केवल काल्पनिक थे, अब ठोस, दृश्य बन गये थे। अब मैंने बोर्ड और उसके मोहरे अपने ही मस्तिष्क-में बना लिये थे। जिस प्रकार एक निपुण संगीतज्ञ छपे हुए सुरोंको देखते ही उसमें बजनेवाले बाजोंकी ध्वनि भी सुनने लगता है, उसी प्रकार उन मान-चित्रोंको देखते ही शतरंजका बोर्ड और उसके तमाम मोहरे यथास्थान मेरी कल्पनापर छप जाया करते थे।

"पुस्तककी शेष बाजियोंको केवल कल्पनासे, या शतरंजी परिभाषामें जिसे आप 'अदृश्य खेल' कहेंगे, खेलनेमें मुझे केवल दो हफ्ते लगे। अब मैं अपनी की हुई चोरीके अनन्त लाभका अनुमान भी लगा सका। क्यों कि अब मुझे एक 'कार्य' मिल गया था। आप उसे निरर्थक और अनुपयोगी अवश्य कहेंगे। किन्तु उसीने मेरे चारों ओर फैली शून्यताको भी शून्य कर दिया। उन डेढ़ सौ बाजियोंने मुझे वह अस्त्र दे दिया कि जिससे मैं स्थान और समयकी उस बोझिल एकान्ततासे लड़ सकूँ।

"उसके उपरान्त, इस नये मनोविनोदको अक्षुण्ण बनाये रखनेके लिए मैंने अपने दिनके समयको कार्यक्रममें बाँट दिया। दो बाजियाँ सुबह, दो दोपहरको और सायंकालके समय उन सबपर सिंहावलोकन। इसका परिणाम यह हुआ कि मेरा समय, जो कि पहले आकाशकी भाँति आकृतिहीन था, अब ठीक ठीक कटने लगा। मुझे अब ऐसा काम मिल गया था कि जिसे करनेमें मुझे तनिक भी थकान नहीं होती थी। शतरंजकी यही एक विशेषता है कि बिलकुल सीमित स्थानमें भी एकाग्रताके बोझसे मस्तिष्क थकता नहीं। बल्कि उसकी शक्ति और स्फूर्ति बढ़ती ही जाती है। जैसे जैसे समय बीतता गया, वैसे वैसे उन खेलोंसे जो कि मुझे पहले पहले नीरस लगे थे, मेरे मनमें एक कलात्मक रुचि जाग उठी। मैं खेलकी बारीकी, आक्रमण और बचावकी चालाकियोंसे भली भाँति परिचित हो गया। आगेकी चालोंके विषयमें सोचने और मोहरोंको ठीक ठीक लगानेका अभ्यास शीघ्र ही हो गया। शतरंजके प्रत्येक खिलाड़ीका निजी ढंग मैं उसी स्पष्टतासे पहिचान लेता था, जिस प्रकार कविताकी दो चार पंक्तियोंके सुनते ही कोई उसके कविको जान लेता है। जिसे मैंने पहले केवल समय काटनेका साधन मात्र समझा था, अब वह एक सच्चे आनन्दमें परिवर्तित हो गया। शतरंजके बड़े बड़े आचार्य, अलेखिन, लास्कर, बोगुल जोवफ और टर्टाकूवर जैसे व्यक्तित्व उस एकान्तमें प्रवेश कर मेरे प्रिय सहचर बन गये थे।

"मेरे उस एकान्त निर्जन कमरेमें कई प्रकारके व्यक्तित्व आकर बस गये थे। ठीक समयपर शतरंजकी समस्याओंको सुलझाते सुलझाते मेरे मस्तिष्ककी दुर्बल शक्तियाँ फिरसे बलवान् हो उठीं। मुझे लगा कि मेरा दिमाग़ ताजा हो गया है। लगातार नियन्त्रित रूपसे विचार करते करते उसपर सान चढ़ गई थी। स्पष्ट और संक्षिप्त विचार करनेकी ऐसी योग्यता आ गइ थी कि सुनवाईके समय मेरे उत्तर सुन सुन कर, मुझे लगा कि, गेस्टापूके लोग मेरा आदर करने लगे थे। शतरंज खेलते खेलते मुझे अभ्यास हो गया था कि झूठी धमकियों और अप्रत्याशित आक्रमणोंसे मैं अपनी रक्षा कर लूँ। संभव है कि गेस्टापूके लोग यही अनुमान लगाते रहे हों कि जब कि दूसरे लोगोंने हार मान कर घुटने टेक दिये, तब यह व्यक्ति किस प्रकार अपनी शक्तियोंको यथापूर्व रख सका है!

"प्रसन्नताका यह समय क़रीब ढाई-तीन महिनेका रहा। इस बीच मैंने पुस्तकमें

छपी डेढ़-सौ बाजियोंको विधिपूर्वक खेलना सीख लिया। तब वह समय आया कि जहाँ गति एकाएक रुक गई। अचानक ही मैंने अपने आपको फिरसे उसी शून्यताके महासागरमें डूबते उतराते हुए पाया। क्यों कि उस समय तक मैं प्रत्येक बाजीको असंख्यों बार खेल चुका था, इस लिए नवीनता और अनोखेपनका आकर्षण बीत गया। मुझे उत्तेजित करने और उकसानेकी शक्ति उसमें नहीं रह गई थी। उसी बाजीको फिर फिर दुहरानेसे लाभ ही क्या, जिसकी प्रत्येक चाल मुझे कंठस्थ हो ? क्यों कि ज्यों ही मैं प्रारम्भ करता कि सारीकी सारी वस्तु मुझे प्रत्यक्षगोचर हो जाती। कोई भी नवीनता नहीं, आग्रह नहीं, समस्या नहीं। इस समय मुझे एक नयी पुस्तककी आवश्यकता थी कि जो मेरा मन बहलाती रहे और मेरे मस्तिष्कको किसी न किसी कार्यमें लगाये रक्खे। यह तो असम्भव था। एक ही मार्ग था, वह यह कि मैं स्वयं ही नई बाजियाँ बनाऊँ और अपने ही साथ उन्हें खेलूँ।

"मुझे नहीं मालूम कि आप शतरंजके बौद्धिक स्तरको कितना ऊँचा समझते हैं। किन्तु यह बात तो, कम-से-कम, विना विचारे सोची जा सकती है कि जिस खेलमें अवसरवादका एक बड़ा हाथ रहता है, उसे अपने आपसे ही खेलना नितान्त मूर्खता है। शतरंजका मौलिक आकर्षण इस बातमें है कि उसकी मोर्चाबन्दी दो प्रकारसे दो भिन्न मस्तिष्कोंमें जन्म लेती है। इस मानसिक युद्धमें काले रंगवाला, यह न जानते हुए कि सफेदकी चालें क्या होंगी, लगातार उन्हींको सोचता और उनसे बचाव करता रहता है। इसी प्रकार सफेद भी अपनी ओरसे कालेकी आयोजनाओंका अनुमान लगाता रहता है और उसे हरानेकी कतर-ब्योंत करता रहता है। यदि एक ही मस्तिष्क काला भी बने और सफेद भी, तो स्थिति बड़ी विचित्र बन जाती है। वही एक मस्तिष्क कुछ जानता है और उसी 'कुछ' को जानते हुए भी 'नहीं जानता' है। क्यों कि 'सफेद' की आज्ञाओंका पालन करनेमें उसे 'काले' की उन आज्ञाओंको भूल जाना पड़ेगा जिन्हें एक ही क्षण पूर्व वह कार्यमें परिणत कर चुका है। मस्तिष्ककी इस प्रकारकी द्विरूपतामें चेतनाके बीचोंबीच एक स्पष्ट दरार पड़ जानी चाहिए। इच्छा करते ही मस्तिष्कके एक प्रकारके कार्यकी समाप्ति और दूसरेका प्रारम्भ होना चाहिए। इस सबका अर्थ यह हुआ कि स्वयं अपनेसे

शतरंज खेलना उतना ही बड़ा विरोधाभास है जितना अपनी ही छायाको लाघ सकना।

"अपनी निराशामें मैंने महिनों इसी असम्भवको सत्य प्रमाणित करनेका प्रयत्न किया। अपने आपको पागल होने और बुद्धिभ्रष्ट हो जानेसे बचानेके लिए ऐसी मूर्खताके अतिरिक्त और उपाय ही नहीं था। उस भीषण शून्यताके द्वारा पीसे जानेसे बचनेके लिए मुझे विवश होकर अपने आपको 'सफेद अहं' और 'काले अहम्' में द्विधा विभक्त करना पड़ा।"

डाक्टर बी० कहते कहते रुके और कुर्सीपर लेट गये। ऐसा लगा मानो वे एक व्यथित स्मृतिको दबानेका ताबड़तोड़ प्रयत्न कर रहे हों। उनके मुँहका बायाँ भाग फिर उसी प्रकार अनियंत्रित रूपसे काँप गया। फिर वे उठकर सीधे बैठ गये।

"यहाँ तक मैंने सभी कुछ साफ साफ समझानेका प्रयत्न किया है। किन्तु इसके आगेका विवरण मैं उसी स्पष्टतासे दे सकूँगा या नहीं—मुझे सन्देह है। यह जो नया व्यवसाय मैंने प्रारम्भ किया था, उसमें मस्तिष्कको इस प्रकार लगाये रखनेकी आवश्यकता थी कि अपने आपपर किसी प्रकारका नियंत्रण रखना असम्भव था। मैं तो पहले ही कह चुका हूँ कि अपने आपसे शतरंजकी बाजी खेलना महान् मूर्खता है। किन्तु यह भी सम्भव हो सकता है यदि आँखोंके सामने एक वास्तविक बोर्ड रक्खा हो। क्योंकि उसके होनेसे अपने आपके बीच एक दूरी, एक भौतिक यथार्थताका आभास तो मिलता है। बोर्ड आपके सामने हो, उसपर वास्तविक मोहरे रक्खे हों तो आपको इतना तो अवकाश मिलता है कि आप ठहर ठहर कर, सोच समझ सकते हैं। आप घूम-फिर सकते हैं, कभी टेबिलके इस ओर, कभी उस ओर। सफेद मोहरोंका कैसा जमाव है और काले मोहरोंका कैसा—यह आप दोनों ओरसे देख भाल सकते हैं। किन्तु मैं तो विवश था। आप तो जानते ही हैं। मुझे तो ये बाजियाँ कोरे कल्पनात्मक बोर्डपर खेलनी पड़ रही थीं। इसी लिए मुझे मस्तिष्कमें उन सब धाराओं और प्रतिधाराओंको निरंतर ध्यानमें रखना पड़ता था, जो कि चौसठ काले सफेद खानोंमें प्रवाहित होती थीं। मेरे अपने अन्दर जो दो भिन्न खिलाड़ी उत्पन्न हो गये थे, मुझे उनकी प्रत्येक चालका ध्यान रखना पड़ता था। यही नहीं, बल्कि प्रत्येक खिलाड़ी भी दो-दो, तीन-तीन, छै-छै, बारह-बारह चालोंको पहलेहीसे सोच समझकर रखना पड़ता था।

"आप यह न सोचें कि मैं आपको पागलपनका प्रत्येक विकास समझनेको वाध्य कर रहा हूँ। उन खेलोंमें जिन्हें कि मैं कल्पनाके द्वारा खेला करता था मुझे 'सफेद' और 'काले' दोनों रूपोंमें, दोनोंकी ओरसे चार-चार पाँच-पाँच चालें सोचनी पड़ती थीं। इस प्रकार मस्तिष्कों, यानी 'सफेद' और 'काले' मस्तिष्कसे मुझे शतरंजकी प्रत्येक संभावित योजनापर दोनों ओरसे विचार करना पड़ता था। इस दुर्बोध्य प्रयोगमें अपने व्यक्तित्वको दो-टुकड़े कर डालना ही मेरे लिए खतरनाक नहीं था; बल्कि स्वतंत्र रूपसे नयी नयी बाजियोंको बनाने और खेलनेकी आवश्यकता मेरे लिए घातक सिद्ध हुई। मैं अपनी पकड़ खो बैठा और अतल गर्तमें जा पड़ा। पुस्तकमें लिखे जिन खेलोंको मैं पिछले कई हफ्तोंसे खेलता चला आ रहा था, उनमें अब आवृत्तिके चमत्कारके अतिरिक्त कुछ भी नहीं रह गया था। एक दी हुई वस्तुका बारबार बनना बिगड़ना, उसमें मस्तिष्कपर इससे अधिक बोझ नहीं पड़ता था जितना कविताकी पंक्तियाँ या जाब्ता दीवानीकी धारायें कंठाग्र करनेमें। यह एक सीमित नियंत्रित कार्य होनेके कारण उत्तम मानसिक मनोविनोद था। दो खेल प्रातःकाल और दो मध्याह्नमें—एक निश्चित कार्यक्रम था—जिसे मैं बड़ी ही शान्तिसे निभा सकता था। साधारण जीवनमें मैं जो कुछ करता, यह उसीकी कमीको पूरा करता था। इसके अलावा खेलते खेलते यदि मैं भूल जाऊँ, या अगली चाल गलत चल बैठूँ तो पुस्तक देखकर मैं सुधार लेता। मेरे टूटे फूटे और उत्तेजित मस्तिष्कको इस कामसे शान्ति और स्वस्ति इसीलिए प्राप्त होती थी कि वे सभी दूसरोंकी खेली हुई बाजियाँ थीं। मेरा अपना व्यक्तित्व उनमें नितान्त अछूता बचा रहता। चाहे 'सफेद' विजयी हो अथवा 'काला' मुझे कोई सरोकार न था। क्यों कि यदि जीत होती तो, या अलेखिनकी या बोगुलजोवफकी। मेरा अपना व्यक्तित्व, मेरी विचारपरम्परा, मेरी आत्मा, एक दर्शककी भाँति सन्तुष्ट होती रहती, और प्रसन्नतासे उन महारथियोंकी टक्करें देखती रहती थी। जिस क्षण मैंने अपने आपहीसे खेलनेका प्रयत्न किया, उसी क्षण अनजानेहीमें मैंने अपने आपको चुनौती दे दी। मेरा प्रत्येक 'अहम्' मेरा 'काला' और 'सफेद' दोनों व्यक्तित्व एक दूसरेके विरुद्ध मैदानमें उतर आये। उनमेंसे प्रत्येक अपनी महत्त्वाकांक्षा, जीतनेकी, दूसरेको घर दबानेकी उत्कंठाका केन्द्र

बन गया। मैं ज्यों ही 'काले अहम्' की ओरसे चलता तो इसी आविष्ट उत्कंठामें रहता कि अब देखें 'सफेद अहम्' क्या चलता है। मेरा प्रत्येक व्यक्तित्व विजय-दर्पसे नाचने लगता, जब कि दूसरा कहीं भूल कर बैठता; और स्वयं भी भूलकर बैठनेपर अपनी ही बुद्धिहीनतापर खीझने लगता था।

"ये सारी बातें निरर्थक लगती हैं। और सच पूछा जाय तो सामान्य परिस्थितियोंमें किसी भी व्यक्तिके अन्दर चेतनाका ऐसा विभाजन और ऐसा भीषण आवेश, विचार शक्तिसे परे है। किन्तु आप यह न भूलें कि लोगोंने मुझे सामान्यतासे घसीट कर दूर फेंक दिया था। निर्दोष होनेपर भी मैं बन्दी था। महिनोंसे एकान्तताकी यंत्रणाओंको भोग रहा था। मैं कोई ऐसी वस्तु खोज रहा था कि जिसपर मैं इतने समयसे एकत्रित अपना रोष निकाल सकूँ। मेरे पास अपने आपको चुनौती देनेके अतिरिक्त और कुछ न था। मेरा रोष, बदला लेनेकी मेरी भावना, अन्तमें बौखला कर शतरंजके खेलमें बह चली। मुझमें कुछ ऐसी इच्छा उत्पन्न हो रही थी कि अन्यायका प्रतीकार करूँ। किन्तु मेरे सामने मेरा ही दूसरा व्यक्तित्व था, जिससे मैं जूझ पड़ता। इसीलिए खेलते समय एक दानवी आवेश मुझमें प्रविष्ट हो जाता। प्रारम्भमें मेरे विचार फिर भी शान्त और संयत होते थे। पहली और दूसरी बाजीके बीच विश्राम कर लिया करता था। किन्तु धीरे धीरे मेरे उत्तेजित मस्तिष्कने किसी भी प्रकारका विश्राम करना अस्वीकृत कर दिया। ज्यों ही सफेद 'अहम्' चलता कि काला 'अहम्' झपटता हुआ आता और अपना मोहरा आगे खिसका देता। ज्यों ही एक खेल खत्म होता कि मैं दुबारा अपने आपको चुनौती दे देता। प्रत्येक बार मेरा एक व्यक्तित्व मात खाता और अपने पराजित भावनाकी संतुष्टि माँगने लगता।

"शायद मैं कभी भी आपको ठीक ठीक नहीं बता सकूँगा कि अपनी पागल अतृप्तिको बुझानेके लिए उन महिनोंमें मैंने कितनी बाजियाँ खेलीं। शायद एक हजार, शायद उससे भी अधिक। यह एक ऐसा नशा था कि जिससे मैं किसी भी प्रकार अपनी रक्षा नहीं कर सकता था। सुबहसे शाम तक मैं हाथी, घोड़े, पैदल, ए-बी-सी, मात और शैक अतिरिक्त कुछ भी नहीं सोच पाता था। मेरा समूचा अस्तित्व और सम्पूर्ण चेतना एक काल्पनिक काले-सफेद बोर्डपर लिप गई। खेलका आनन्द अब लिप्सामें परिणत हो गया

था और लिप्सा अनिवार्यतामें बदल गई थी।—एक आवेशमय रोष, एक उन्माद—जो कि मेरी जाग्रत अवस्थामें ही नहीं, मेरी नींदमें भी भींग चुका था। मैं केवल शतरंजकी ही बातें सोच सकता था—उसीकी चालें, उसीकी समस्यायें। कभी कभी मैं सोकर उठता तो देखता कि पसीनेसे तर हो रहा हूँ। स्वप्नमें किन्हीं व्यक्तियोंका दर्शन होता तो वजीर, हाथी, पैदल, या घोड़ोंके आगे-पीछे चलनेके रूपमें होता।

"उस समय भी, जब कि मैं अपने परीक्षकोंके सन्मुख लाया गया, मैं अपने विचारोंको उत्तरदायित्वकी सीमाओंमें नहीं रख सका। मैं सोचता हूँ कि पिछली बार मैंने अपने उत्तर कुछ अटपटे रूपमें दिये होंगे। क्यों कि मैंने देखा था कि वे लोग उन्हें सुनकर विस्मयसे एक दूसरेकी ओर देखने लगे थे। जब कि वे लोग सोच सोच कर प्रश्न कर रहे थे, मैं अत्यन्त उत्कण्ठित होकर प्रतीक्षा कर रहा था कि कब मैं अपनी गुफामें लौट जाऊँ और नयी बाजी शुरू करूँ। थोड़ा-सा भी व्याघात होनेसे मेरी शान्ति भंग हो जाती। उन पन्द्रह मिनटोंमें, जब कि वार्डर मेरा कमरा साफ करता, या उन दो मिनटोंमें जब वह आकर मेरा भोजन परोसता, मेरा धैर्य टूट कर भयंकर यंत्रणामें तड़फने लगता था। कभी कभी दोपहरका भोजन सायंकाल तक थालीमें अछूता ही पड़ा रहता, क्योंकि खेल ही खेलमें मुझे उसकी सुधि न रह जाती। भौतिक चेतनाका एक मात्र अनुभव तब होता जब मुझे भयंकर प्यास लगती। लगातार सोचते और खेलते रहनेसे जो मानसिक उत्ताप उत्पन्न हुआ, यह शायद उसीका परिणाम था। मैं पानीकी बोतलको दो घूँटमें खाली कर देता और वार्डरसे दूसरी लानेके लिए कहता।

"अन्तमें खेलते खेलते मेरी मानसिक उत्तेजना इतनी बढ़ गई कि मैं एक मिनट भी स्थिर होकर बैठ नहीं सकता था। उन दिनों सुबहसे शाम तक मैं और कुछ भी नहीं करता। किसी एक चालपर सोचते समय मैं विना रुके इधर-उधर टहलता रहता—जल्दी जल्दी—इधर-उधर—इधर-उधर। खेलका अन्तिम क्षण जैसे जैसे निकट आता जाता मेरी रफ्तार वैसे वैसे ही तेज़ होती जाती। जीतनेकी लालसा—विजय, अपने ऊपर विजय प्राप्त करनेकी प्यास बढ़ते-बढ़ते अन्तमें क्रोधमें परिणत हो गई। मैं अधैर्यसे काँपने लगता। क्यों कि मेरे दो 'अहम्' में से एक-न-एक कभी दूसरेकी तुलनामें धीमा सिद्ध

होता। एक दूसरेको मानो कोड़ा मारकर आगे बढ़ाता। मैं उस समय क्रोधमें चीख उठता—'जल्दी! जल्दी!'—'चलो-चलो!' जब कि मेरा कोई एक व्यक्तित्व दूसरेकी चुनौतीपर भी शीघ्रतासे चालें नहीं चलता था। यह कहनेकी अब तो आवश्यकता ही नहीं है, और मैं भी भली भाँति यह जानता हूँ कि मेरी वह अवस्था अत्यन्त थके हुए मस्तिष्ककी विकृति-मात्र थी। उसके लिए डाक्टरोंकी भाषामें यदि कोई नाम हो सकता है तो वह है—'शतरंजका विष'।

'अब वह समय भी आया जब कि यह एकांगी उन्माद मेरे मस्तिष्कके अतिरिक्त मेरे शरीरपर भी आक्रामक प्रभाव दिखाने लगा। मेरा वजन घट गया। मेरी नींदमें विघ्न पड़ने लगा। बेचैनी बढ़ने लगी। जागनेपर मुझे पलकें खोलनेमें बड़ा प्रयास करना पड़ता। ऐसा लगता मानो वे सीसेकी बनी हुई हैं। कभी कभी मुझे इतनी दुर्बलता लगती कि मैं पानीका गिलास उठाकर ओठोंसे न लगा सकता। मेरे हाथ बुरी तरह काँपते थे। किन्तु ज्यों ही खेल प्रारम्भ होता, एक उन्मत्त शक्ति मुझमें आ जाती। मैं दौड़ता, झपटता—मुट्ठियाँ बाँधे हुए—इधर-उधर—इधर-उधर। कभी कभी मैं अपनी ही ध्वनि सुनता। मानो दूर कहीं किसी रक्तिम कुहरेको चीर कर मेरे कानों तक पहुँच रही हो। एक चीख—एक क्रुद्ध गलाफाड़ चिल्लाहट—'शै!'—'मात!'

"यह भीषण अनिर्वचनीय अवस्था किस प्रकार चरम तक पहुँची—मैं कह नहीं सकता। मैं जो कुछ जानता हूँ वह यह है कि एक दिन सुबह मैं उठा तो मुझे लगा उस दिनका जागरण और दिनोंसे भिन्न है। मेरा शरीर बोझ-सा नहीं लग रहा था। मैं आरामसे, शान्तिसे लेटा हुआ था। मेरी आँखोंपर थकावट थी, किन्तु ऐसी कि जिसका अनुभव सुखद था, जिसे मैं महिनोंसे महसूस नहीं कर पाया था। कई मिनटों तक मैं जाग्रत अवस्थामें पड़ा रहा। उस बोझिल नशीलेपनका, उस सुखदायिनी संज्ञाहीनताका आनन्द लेता रहा। एकाएक अपने पीछेसे आती हुई कुछ आवाजें मैंने सुनीं—जीवित मनुष्योंकी आवाजें—धीमी फुसफुसाती हुई आवाजें, जिनमें शब्द सुनाई दे रहे थे। कदाचित् आप मेरे उल्लासकी कल्पना भी नहीं कर सकते, क्यों कि महिनों बीत गये और शायद एक समूचा वर्ष बीत गया कि अपने परीक्षकोंके कठोर, चुभते, भयंकर शब्दोंके

अतिरिक्त दूसरी भाषा मैंने सुनी हो। 'तुम सपने देख रहे हो,'—मैंने अपने आपसे कहा,—'तुम सपने देख रहे हो। खबरदार, आँखें न खोलना। सपना चलने दो, नहीं तो तुम फिर वही कमबख्त कमरा अपने चारों ओर देखोगे। वही कुर्सी, वही चिलमची, वही टेबिल, वही दीवार या कागज़, और उसपर वही अपरिवर्तनशील छपे हुए डिज़ाइन।—तुम सपने देख रहे हो—देखते रहो—देखते रहो—'

"किन्तु उत्कंठा जीत गई। धीरे धीरे बड़ी सावधानीके साथ मैंने पलकें उठाईं। आश्चर्य। यह दूसरा ही कमरा था जिसमें कि मैंने अपने आपको पाया। मेरे होटलके कमरेसे अधिक चौड़ा, अधिक बड़ा। खुली, बिना सींकचोंकी खिड़कीसे उन्मुक्त प्रकाश अन्दर आ रहा था। बाहर वृक्ष दिखाई दे रहे थे हरे भरे, हवामें झूलते हुए। दीवारें सफेद पुती हुई और चिकनी। मेरे ऊपर ऊँची सफेद छत। मैं एक नये बिस्तरपर था। यह सपना नहीं था। मनुष्योंकी आवाजें मेरे पीछे फुसफुसा रही थीं।

"मैं इस आश्चर्यमें शायद एकाएक हिला डुला। क्यों कि उसी समय मुझे अपनी ओर आते हुए पैरोंकी चाँप सुनाई दी। दबे पैरों एक स्त्री आई—सफेद रूमाल सिरपर बाँधे हुए एक स्त्री—नर्स!—सिस्टर! आनन्दातिरेककी एक लहर मुझमें होकर दौड़ गई। मैंने सालभरसे नारीका दर्शन नहीं किया था। मैं उस सुन्दर दृश्यको टकटकी लगाये देखता रहा। मैं सोचता हूँ कि मेरी आँखोंमें उच्छृंखल उल्लास स्पष्ट झलक रहा होगा क्योंकि वह उसी समय झिड़क कर बोली-'चुप—हिलो मत।' मेरा हृदय तो उसके शब्दोंपर ही उलझ गया। क्या यह ऐसी व्यक्ति नहीं कि मुझसे वार्तालाप न करे? क्या दुनियामें एक भी मनुष्य अब ऐसा नहीं रह गया जो मुझसे प्रश्न ही प्रश्न पूछ कर मानसिक यंत्रणा देता रहे? इन सभी बातोंके ऊपर तो देखिए—एक अचिन्तनीय आश्चर्य, एक कोमल, स्नेहभरी, दयामयी नारीका स्वर! मैं क्षुधातुर नेत्रोंसे उसका मुँह देखता रहा। क्योंकि एक साल तक उस नरकमें रहनेके पश्चात् मुझे तो यह विश्वास भी नहीं रह गया था कि संसारमें एक व्यक्ति दूसरेके साथ प्रेमसे वार्तालाप कर सकता है। 'वह' मुझे देख कर मुसकराई। हाँ—वह मुसकराई। वहाँपर अभी दूसरे भी कुछ लोग थे। वे उदारतापूर्वक मुसकरा रहे थे। फिर 'उसने' तर्जनाभरी अपनी

तर्जनी होठोंसे लगाई और चुपचाप चल दी। किन्तु मैं उसके आदेशका पालन न कर सका। विस्मयसे अभी मुझे तृप्ति नहीं होने पाई थी। मैंने खींचकर अपने आपको बिठा देना चाहा, ताकि आँखोंसे मुझपर दया करनेवाली, मनुष्य जातिकी उस जीवित आश्चर्यको मैं देख सकूँ। देखता ही रहूँ। किन्तु अपने आपको सहारा देनेके लिए ज्यों ही मैंने हाथ पसारा तो लगा कुछ खो गया है। मेरे दाहिने हाथ, अंगुलियों और कलाईके स्थानपर मुझे किसी भिन्न वस्तुके होनेका आभास मिला। एक मोटा, बड़ा, सफेद तकिया-सा—साफ जाहिर था कि वह रुईभरी एक पट्टी है। पहले पहले तो मैं दिङ्मूढ़-सा उस भारी भरकम पदार्थको देखता ही रह गया। फिर धीरे धीरे मुझे समझमें आने लगा कि मैं कहाँ हूँ और मुझे क्या हुआ होगा। उन्होंने मुझे घायल किया होगा, या स्वयं मैंने ही अपने हाथपर चोट पहुँचा ली होगी। यह स्थान एक अस्पताल था।

"डाक्टर साहब दो पहरको आये। एक भले बूढ़े व्यक्ति थे। वे मेरे परिवारसे परिचित थे। मेरे उन चाचाको भी जानते थे, जो आस्ट्रियाके शाही वैद्य थे। वे मुझे जताना चाहते थे कि वे मेरे शुभचिन्तक ही हैं। बातोंमें उन्होंने मुझसे कई प्रश्न पूछ डाले। उनमेंसे खासकर एक प्रश्नसे मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। 'क्या आप गणितज्ञ हैं?' मैंने उत्तर दिया—'नहीं।'

"'आश्चर्य है,' वे बोले, 'सन्निपातकी दशामें तुम कुछ विचित्र सूत्रोंको दुहरा रहे थे। जैसे—सी-थ्री—सी-फोर—। हम लोग कुछ भी नहीं समझ सके।

"मैंने पूछा कि मुझे क्या हो गया था, तो वे अजीब तौरसे मुसकराये।

"'कोई खास बात नहीं थी। केवल मस्तिष्कका तीव्र सन्ताप था—बस।' —फिर वे इधर उधर देख कर धीमे स्वरमें बोले 'यह बात ऐसी नहीं थी जो समझमें नहीं आये। देखिए—उस दिन मार्चकी तेरह तारीख थी न?'

"मैंने सिर हिलाया।

"'नाजियोंकी प्रणालीमें ऐसा हो जाना कोई आश्चर्यजनक घटना नहीं है। आप ही पहले शिकार नहीं हैं। किन्तु चिन्ता न कीजिए।—' उनके बोलनेके ढंग और समवेदनाभरी मुसकानसे मुझे विश्वास हो गया कि मैं अब निरापद स्थानमें हूँ।

" दो दिनके बाद डाक्टरने मुझे स्वयं ही बता दिया था कि क्या हुआ। वार्डरने मेरे कमरेमें चीखने चिल्लानेकी आवाज़ें सुनी। उसने पहले सोचा कि मैं किसी व्यक्तिसे लड़ झगड़ रहा हूँ, जो जबरदस्ती मेरे कमरेमें चला आया है। किन्तु ज्यों ही वह मेरे दरवाजेपर आया कि मैं उसपर झपटा और चिल्लाया— 'क्या तुम चाल नहीं चलोगे?—बदमाश!—कायर!' मैंने उसका पाइप छीन लिया। अन्तमें इस वेगसे उसपर आक्रमण किया कि उसे सहायताके लिए दूसरोंको बुलाना पड़ा। मैं अपने उन्मत्त क्रोधमें था। वे मुझे डाक्टरी परीक्षाके लिए घसीटे लिये जा रहे थे। एकाएक मैं उनके हाथोंसे छूट पड़ा और बराण्डेकी खिड़कीपर झपटा। काँचसे मेरा हाथ कट गया—यह देखिए, कितना गहरा घाव है! पहले कुछ दिनोंतक मैं दिमागी ज्वरमें पड़ा रहा। किन्तु डाक्टरने बताया कि अब धीरे धीरे मेरी ग्राहक शक्तियाँ लौट रही हैं। उन्होंने धीमे स्वरमें कहा—' आप निश्चय रखिए। मैं इसकी रिपोर्ट ऊपर नहीं भेजूँगा। क्योंकि वे लोग फिर आयेंगे। मुझपर विश्वास कीजिए।—मैं जो कुछ हो सकेगा, आपके लिए करूँगा।'

" उन उदारचेता डाक्टर साहबने मेरे अत्याचारियोंसे क्या कहा, यह तो मैं नहीं जानता। कुछ भी हो वे जो चाहते थे, वही हुआ—मैं छोड़ दिया गया। हो सकता है कि उन्होंने मुझे गैर जुम्मेवार साबित कर दिया हो या गेस्टापूके लिए अब मेरा महत्त्व कम हो गया हो। क्योंकि बोहेमियापर अधिकार कर लेनेके उपरान्त हिटलरने आस्ट्रियाके मामलेको खारिज़ कर दिया था। मुझे केवल एक प्रतिज्ञापत्रपर हस्ताक्षर करने पड़े थे कि मैं दो सप्ताहमें देश छोड़ कर चला जाऊँगा। इतना साराका सारा समय यात्राके उपचारोंसे ही इस प्रकार भर गया था कि मुझे अपनी पिछली बातोंको सोचनेका अवसर ही नहीं मिला। फौज़ी प्रमाणपत्र, पुलिस, टैक्स, स्वास्थ्यका प्रमाणपत्र, पासपोर्ट इत्यादि—मैं तो इन्हींमें व्यस्त रहा। मैं तो सोचता हूँ कि मस्तिष्कपर किन्हीं गुप्त शक्तियोंका नियंत्रण रहता है। जो अपने आप ही उन सारी स्मृतियोंको छिपा देती हैं, जिनका ध्यानमें आना खतरनाक हो सकता है। इसीलिए जितनी बार अपने बन्दी जीवनके बारेमें मैंने सोचना चाहा, उतनी ही बार मुझे लगा कि मेरे मस्तिष्कका सारा प्रकाश एकाएक बुझ गया है। कई हफ्तोंके बाद, अभी आपके सामने ही मैं कहीं इतना साहस बटोर सका हूँ कि उन सारी

घटनाओंका वर्णन कर सकूँ जो मुझपर बीती हैं और जिनमेंसे होकर मुझे जीना पड़ा है।

"इतना सुन लेनेके उपरान्त आप समझ जायेंगे कि आपके मित्रोंके साथ मेरा भद्दा और विचित्र व्यवहार क्यों हुआ? वह तो एक संयोगमात्र था कि मैं घूमता हुआ स्मोकिंग रूममें आया और उन लोगोंको शतरंजके बोर्डके चारों ओर बैठे हुए देखा। मुझे लगा कि जहाँ मैं बैठा हुआ था, आश्चर्य और भयसे मेरे पाँव वहीं जम जायेंगे। क्यों कि मैं बिलकुल भूल ही गया था कि कोई व्यक्ति सचमुचके बोर्ड और सचमुचके मोहरोंसे शतरंज खेल सकता है। यह भी मैं भूल गया था कि भौतिक रूपसे नितान्त विभिन्न दो व्यक्ति, एक दूसरेके सामने बैठकर यह खेल खेला करते हैं। सच कहता हूँ, मुझे यह समझनेमें कई मिनट लग गये कि ये लोग ठीक वही खेल खेल रहे हैं, जो अपनी बेवसीके दिनों मैं अपने ही विरुद्ध खेला करता था और वे सारे संकेत चिह्न इन्हीं ठोस मोहरोंके ही प्रतीक थे। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि इस बोर्डपर मुहरोंका इधर उधर खिसकाना ठीक वैसा ही है जैसा मैं अपने काल्पनिक बोर्डपर देखा करता था। मेरा यह आश्चर्य किसी ज्योतिषीकी भावनाके समान था, जो दिनभर कागजोंपर रेखायें खींचता है, जोड़ता है, घटाता है, गुणा करता है और अन्तमें एक ग्रहकी कक्षा निश्चित करनेपर रातको खुले आसमानमें उसी सितारेको वास्तविक, चमकीले, ठोस रूपमें देख लेता है। मैं मंत्रमुग्ध-सा बोर्डपर टकटकी लगाये रहा। वहाँ मुझे अपनी कल्पनाके मूर्त्त स्वरूप दिखाई दिये। वही घोड़ा, वही हाथी, बादशाह, वजीर, पैदल—काठके बने हुए ठोस रूप। उस खेलको समझनेके लिए मुझे काल्पनिक अंकों और अक्षरोंके स्थानपर ठोस चल मोहरोंकी योजना करनी पड़ी। धीरे धीरे दो खिलाड़ियोंके बीच एक वास्तविक खेलको देखनेकी उत्कंठा बढ़ी। उसके बाद मेरा वह धृष्टतासे भरा हुआ आचरण कि मैंने आप लोगोंके खेलमें विघ्न पहुँचाया। किन्तु आपके मित्रकी वह गलत चाल मुझे छुरे-सी चुभ गई। यह केवल एक सहज बुद्धिमात्र थी जो मैंने उन्हें रोक दिया। ठीक वैसे ही जब कि हम कुँएपर झुकते हुए बालकको जाकर उठा लेते हैं। बहुत देरके बाद मुझे लगा कि मेरा वहाँ घुस आना नितान्त अनुपयुक्त था।"

मैंने डाक्टर बी० को समझाया कि उस घटनासे हम सभी सुखी हुए

हैं, और उनकी जान पहिचानके आभारी हैं। मैंने कहा कि जो कुछ इतिहास उन्होंने मुझे सुनाया उससे मेरी यह अभिलाषा दुगुनी हो गई कि कलके टूर्नामेंटमें वे अवश्य खेलें।

"मैं सच कहता हूँ, आप मुझसे अधिक आशा न करें। यह तो मेरे लिए एक परीक्षामात्र होगी। एक परीक्षा—यह देखनेके लिए कि साधारण तरीक़ेसे मैं शतरंज खेल सकता हूँ या नहीं। अब मुझे सन्देह होने लगा है कि वे सैकड़ों और हजारों बाजियाँ जो मैं खेलता रहा हूँ, क्या वास्तविक शतरंजके नियमोंके अनुसार थीं? अथवा वह एक स्वप्न शतरंज था, एक सन्निपात था, जिसमें कोई भी वस्तु वास्तविक नहीं हुआ करती। आप भी गम्भीरतासे यह विश्वास नहीं कर सकते कि मैं एक चैम्पियनका मुक़ाबला कर सकूँगा और संसारके सबसे बड़े महारथीको हरा सकूँगा। जो बात मुझे उस ओर आकर्षित कर रही है, वह यह है कि मैं देखना चाहता हूँ कि जो कुछ मेरे बन्दीगृहमें होता रहा वह शतरंज ही था, या कोरा पागलपन। तब मैं सचमुच पागल हो चुका था या पागलपनकी सीमा तक ही पहुचा था। बस, यही मैं जानना चाहता हूँ, अधिक नहीं।"

इसी समय यात्रियोंके डिनरका घंटा बजा। वार्तालाप दो घंटे चला होगा। क्योंकि जिस रूपमें मैं यहाँ लिख रहा हूँ, उससे कहीं अधिक विस्तृत रूपमें डाक्टर बी० ने अपनी कथा सुनाई थी। मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और वहाँसे चला आया। मैं मुश्किलसे डेक पार कर पाया था कि वे मेरी बगलमें आगये। साफ दीख रहा था कि घबराये हुए हैं। बोलनेमें भी कुछ हक़ला-से रहे थे।

"एक बात और है। कृपया आप अपने मित्रोंसे कह दीजिए कि मैं केवल एक ही बाजी खेलूँगा। क्योंकि उस समय यदि मैंने अस्वीकार किया तो बुरा-सा लगेगा।—मेरा विचार है कि यह खेल पुराने जमा-खर्चकी समाप्ति हो जाना चाहिए, न कि नये हिसाबका प्रारम्भ। मैं फिरसे उसी खेलके सन्निपातमें डूबना नहीं चाहता। उसके स्मरणमात्रसे मुझे डर लगता है। इसके अतिरिक्त—डाक्टरने मुझे साफ साफ चेतावनी दे दी थी। प्रत्येक व्यक्ति जो एक बार पागल हो चुका है, जो एक बार शतरंजके विषका बीमार रह चुका है, यदि एकाध बार अच्छा भी हो जाय, तो भी उसे शतरंजके बोर्डसे दूर ही रहना चाहिए।

आप समझ गये, होंगे। मैं प्रयोगके लिए केवल यही एक खेल खेलूँगा—अधिक नहीं।"

दूसरे दिन नियत समय पर तीन बजे हम लोग स्मोकिंग रूममें एकत्रित हो गये। हम लोगोंके समुदायमें जहाजके दो कर्मचारी भी आज शामिल थे। ये इस अवसरपर खेल देखनेके लिए छुट्टी लेकर आये थे। हमेशाके खिलाफ शेन्टोविख़ भी आज समयपर आ गया था। रंगोंके चुनावके बाद उस प्रसिद्ध महारथी और इस अध-पगले डाक्टरके बीच स्मरणीय खेलका प्रारम्भ हुआ।

मुझे दुःख तो इस बात का है कि हम जैसे सर्वथा अयोग्य दर्शकोंके सम्मुख वह बाजी खेली गई। कलाके इतिहासमें उसकी कहानी उसी प्रकार खो गई है, जैसे बीथोवनका संगीत। उस दिनके बाद हम लोगोंने मिल कर कई दुपहरियाँ उस दिनकी बाजीके समझने बूझनेमें लगा दीं। किन्तु सब व्यर्थ। यह संभव है कि उस क्षणकी उत्तेजनामें हम लोगोंकी सारी उत्कंठा खिलाड़ियों-पर ही केन्द्रित हो गई थी, खेलमें हमारा ध्यान कम था। ज्यों ही खेल आगे बढ़ा त्यों ही दोनों खिलाड़ियोंका बौद्धिक विभेद अधिकाधिक स्पष्ट होने लगा। शेन्टोविख़ पूरे समय लकड़ीके कुन्देके समान निश्चल बैठा रहा। उसकी आँखें अपलक बोर्डपर ही लगी रहीं। सोचनेमें उसे अत्यन्त शारीरिक परिश्रम-सा करना पड़ता। दूसरी ओर डाक्टर बी० बिलकुल मज़ेमें थे। उनके मस्तिष्कपर किसी प्रकारका बोझ नहीं था। सच्चे कलाकारकी भाँति उन्हें खेलका आनन्द खेलहीमें आ रहा था। वे आरामसे बैठे हुए हमें अपनी चालें समझाते जा रहे थे। लापरवाहीके साथ वे सिगरेटें सुलगाते और जब उनके चलनेकी पारी आती, तभी बोर्डकी ओर देख लेते। प्रत्येक बार ऐसा लगता मानो उनका प्रतियोगी वही चाल चलता है जिसकी उन्हें पहलेसे सम्भावना थी।

प्रारम्भकी चालें जल्दी जल्दी चली गईं। सातवीं या आठवीं चालके बाद खेलकी एक निश्चित प्रणाली-सी बनने लगी। शेन्टोविख़ सोचनेके लिए अधिका-धिक समय लेने लगा। उससे हम लोग समझ गये कि खेलके नेतृत्वके लिए कश-मकश प्रारम्भ हो गई है। किन्तु, सच बात तो यह है कि, सारी चीज़ इतने धीरे धीरे आगे बढ़ रही थी कि हम लोगोंको निराशा-सी होने लगी। जितने मोहरे आगे बढ़ते जाते थे और उनसे तस्वीर जितनी उलझती जाती थी, उतना ही वहाँका जमाव हमारे लिए दुरूह होता जा रहा था। हम

यह भी नहीं देख पा रहे थे कि दोमेंसे किस प्रतिद्वंद्वीका क्या अभिप्राय है और अब तक दोनोंमेंसे किसे अधिक सुविधाएँ प्राप्त हैं। हम तो इतना देख पाते थे कि प्रत्येक बार एक मोहरा आगे निकलकर खड़ा हो जाता था, मानो युद्धभूमिमें शत्रुसेनाको ध्वस्त करनेके लिए लीवर खड़े किये गये हों। किन्तु ये सभी चालें दो निश्चित योजनाओंका अंग थीं, जिनमें कई चालोंपर पहलेसे ही विचार कर लिया गया था। इसलिए मोहरोंके आगे पीछे चलने मात्रसे हम लोग खिलाड़ियोंकी मोर्चेबन्दियाँ नहीं समझ पाते थे।

हमपर एक बोझिल थकान आकर बैठ गई। शेन्टोविख़ सोचनेमें जरूरतसे ज्यादा देर लगा रहा था। इसका प्रभाव स्पष्टरूपसे अब हमारे मित्र महोदयपर भी पड़ने लगा था। मैंने चिन्तित होकर देखा कि जैसे जैसे बाजी लम्बी होती जा रही थी वैसे ही वैसे वे भी बेचैन होते जा रहे थे। वे अपनी कुर्सीमें इधर उधर खिसकते। सिगरेटके बाद सिगरेट जलाते। कभी एक पेंसिल लेकर कुछ लिखने लग जाते। वे सोडावाटर मँगवाते और गिलासपर गिलास खाली करते जाते। यह स्पष्ट था कि उनका मस्तिष्क शेन्टोविख़की अपेक्षा सौ गुना अधिक तेजीसे काम कर रहा है। प्रत्येक बार जब कि शेन्टोविख़, बहुत देर तक सोचनेके बाद जब किसी मोहरेको चलता तो वे उस व्यक्तिकी भाँति मुसकराते जो किसी प्रत्याशित वस्तुका सामना करता है और तुरन्त मुँहतोड़ जवाब भी दे देता है। अपने फुर्तीले मस्तिष्कमें उन्होंने वे सारी सम्भावनायें सोच समझ ली होंगी, जो शेन्टोविखको प्राप्त थीं। शेन्टोविख़ अपने निर्णयमें जितनी अधिक देर लगाता उनकी बेचैनी उतनी ही अधिक बढ़ती जाती। किन्तु शेन्टोविख मूर्ख नहीं था कि जल्दी करता और दाँव खो बैठता। वह चुपचाप अकड़े हुए बैठा रहा। बोर्डपर जितने अधिक मोहरोंका जमाव होता वह उतना ही गंभीरतापूर्वक सोचने लगता। बयालीसवीं चालपर डेढ़ घंटा हो चुका था। हम लोग ढीले ढाले बैठे हुए थे और युद्धस्थलमें क्या हो रहा है, उसमें हमारा कोई आग्रह नहीं रह गया था। जहाजके कर्मचारियोंमेंसे एक उठकर चला गया; दूसरा कोई पुस्तक पढ़ रहा था और कभी कभी जब चाल चली जाती तो उस ओर देख लेता था। तब अचानक शेन्टोविख़की चालपर एक अप्रत्याशित घटना हो गई। ज्यों ही डाक्टर बी० ने देखा कि शेन्टोविख़ने अपना वज़ीर उठाया, त्यों ही वे बिल्लीकी भाँति झपटनेके लिए दुबककर बैठ

गये। उनका सारा शरीर काँपने लगा। उधर शेन्टोविख़ चला कि वे अपना वज़ीर आगे खिसका कर विजयके स्वरमें जोरसे चिल्ला उठे—" यह लो! यह खत्म हो गया!!" वे अपनी कुर्सीपर लेट गये। दोनों हाथ छातीपर मोड़ कर चुनौती-भरी दृष्टिसे शेन्टोविख़को देखने लगे। जब वे बोल रहे थे तो उनके नेत्रोंकी तारिकाएँ प्रज्ज्वलित उल्लाससे चमक रही थीं।

हम लोग एक ही साथ बोर्डपर झुककर देखने लगे कि ऐसी कौन-सी महत्त्वपूर्ण चाल चली गई, जिसकी घोषणा इतने जोरोंसे हुई है। पहली दृष्टिमें कोई भी खतरा नहीं दिखाई दिया। शायद हमारे मित्र महोदयने किसी सम्भावित घटनापर संकेत किया था, जिसे हम अनाड़ी लोग नहीं समझ पाते थे। एक शेन्टोविख़ ही ऐसा व्यक्ति था जो डाक्टरकी आवाजपर हिला डुला तक न था। वह निश्चल बैठा रहा, मानो डाक्टरके अपमानभरे शब्द उस-परसे होकर फिसल गये हों। कुछ नहीं हुआ। प्रत्येक व्यक्ति साँस रोके बैठा रहा। टेब्लिपर समय नापनेके लिए रक्खी हुई घड़ीकी टिकटिक साफ सुनाई देने लगी। तीन मिनट बीते—सात मिनट—आठ—शेन्टोविख़ निश्चल था। किन्तु मैं सोचता हूँ कि मैंने उसका आन्तरिक तनाव भाँप लिया। क्योंकि उसके मोटे नथुने अत्यधिक फूल गये थे।

यह नीरव प्रतीक्षा जितनी असह्य हमे हो रही थी, उतनी ही हमारे मित्र महोदयको। उन्होंने अपनी कुर्सी पीछे खिसकाई। एकाएक उठ खड़े हुए और स्मोकिंग रूममें इधरसे उधर टहलने लगे। पहले धीरे धीरे—फिर जल्दी जल्दी। जो लोग वहाँ थे, आश्चर्यसे उन्हें देख रहे थे। किन्तु चिन्ता मुझसे अधिक दूसरेको न थी। क्योंकि मैं देख रहा था कि अत्यधिक उत्तेजित होनेपर भी उनका यह टहलना एक सीमित स्थानके ही भीतर हो रहा था। ऐसा कुछ लगता मानो उस डरावनी सीमामें वे प्रत्येक बार किसी अदृश्य 'आलमारी' से जाकर टकरा पड़ते थे, और उलटकर वापिस लौट जाते थे। मैंने मन ही मन काँपकर देखा कि अभी कुछ दिनों पहले अपने तहखानेमें वे जिस प्रकार टहला करते थे, यह तो उसीकी नकल-सी हो रही है। यंत्रणाके उन महिनोंमें वे ठीक इसी तरह इधर उधर टहलते होंगे; पींजरेमें बन्द जंगली जानवरकी भाँति, उनकी मुट्ठियाँ इसी प्रकार बँधी रहती होंगी; उनके कन्धे ठीक इसी प्रकार कुबड़ा जाते होंगे; ठीक इसी तरह हजारों बार वे आगे पीछे झपटते फिरते होंगे। उनकी आँखोंमें उन्मत्तताकी ऐसी ही लाल, पथराइ

हुई, ज्वलन्त टकटकी बँध जाती होगी। फिर भी उनका मानसिक नियंत्रण ज्यों-का त्यों अटूट बना हुआ था। क्योंकि वे बार बार बेचैनीसे टेबिलकी ओर देख लेते थे कि शेन्टोविख़ने कोई निर्णय किया अथवा नहीं। किन्तु समय बढ़ता ही गया—नौ—दस—मिनट बीत गये।

उसके बाद अन्तमें जो कुछ हुआ, उसकी भविष्यवाणी कोई नहीं कर सकता था। शेन्टोविख़ने अपना भारी हाथ जिसे वह अब तक निर्जीव-सा टेबिलपर रक्खे हुए था, धीरे धीरे उठाया। हम लोग साँस रोककर उस आकस्मिक क्रियाको देखते रहे। शेन्टोविख़ कोई मोहरा नहीं चला, किन्तु हाथके पिछले हिस्सेसे उसने एक ही लपेटमें सारे मोहरोंको बोर्डसे अलग हटा दिया। हमें समझनेमें केवल एक ही क्षण लगा। उसने बाजी छोड़ दी थी। उसने हार मान ली थी। इसलिए कि हम उसे 'मात' होते देख न सकें। संसार भरका चैम्पियन, अगणित प्रतियोगिताओंमें विजय प्राप्त करनेवाला शेन्टोविख़!—आज उस ऐसे अज्ञात व्यक्तिके सम्मुख अपनी विजय-पताका गिरा देनी पड़ी जिसने बीस या पचीस सालसे शतरंजका बोर्ड छुआ तक न था। हमारे मित्रने—उस मापहीन, मानहीन व्यक्तिने—संसारमें शतरंजके सबसे बड़े महारथीको खुले खेलमें हरा दिया।

उस उत्तेजनामें अपने आप ही हम लोग खड़े हो गये। प्रत्येक व्यक्तिमें यही भावना काम कर रही थी कि अपने उल्लासको कुछ न कुछ करके या कहके प्रकट करे। केवल एक व्यक्ति पत्थरकी भाँति निश्चल बैठा रहा, शेन्टोविख़!। एक परिमित समयके बाद उसने सिर उठाया और पथराई हुई दृष्टिसे हमारे मित्रकी ओर देखा—

"दूसरी बाजी?" उसने पूछा।

"अवश्य।" डाक्टर बी० ने ऐसे उत्साहसे उत्तर दिया जिसे देखकर मैं विचलित हो उठा। इससे पहले कि मैं उन्हें एक ही बाजी खेलनेके उनके आग्रहका स्मरण दिला सकूँ, वे बैठ गये और झटपट मोहरे लगाने लग गये। वे मोहरोंको इस सरगर्मीसे इधर-उधर रख रहे थे कि एक पैदल दो बार उनकी काँपती हुई अंगुलियोंमेंसे होकर फर्शपर गिर पड़ा। उनकी इस अप्राकृतिक उत्तेजनासे जो दर्द और बेचैनी मुझमें हो रही थी, अबकी बार वह भयमें बदल गई। क्योंकि सदा शान्त और निश्चल दीखनेवाला यह व्यक्ति अब चंचल हो

उठा था। उनके मुँहका कंपन अब और भी जल्दी होने लगा और उनका प्रत्येक अंग ऐसे काँप रहा था मानो वे ज्वरमें हों।

"नहीं, अब मत खेलिए" मैंने धीमे स्वरमें उनसे प्रार्थनाकी, "आप काफी खेल चुके हैं। इतना तनाव आपके मस्तिष्कपर बहुत ज्यादा हो जायेगा।"

"तनाव!—हा—हा—" वे ठठाकर हँस पड़े, और बोले, "पिछली बाजी जिस धीमी चालसे और जितने समयमें खेली गई थी. मैं उतने ही समयमें सत्रह बाजियाँ खेल लिया होता। केवल एक ही तनाव मेरे मस्तिष्कपर पड़ सकता है,—वह है जागरणका—अच्छा जी, क्यों साहब, आप क्या शुरू करेंगे ही नहीं?"

अन्तिम शब्द एक मग़रूर और असभ्य स्वरमें शेन्टोविख़से कहे गये थे। उसने प्रत्युत्तरमें केवल शान्त और तीक्ष्ण दृष्टिसे उनकी ओर देख भर लिया। किन्तु उसकी लड़ाकू अदम्य दृष्टिमें घूँसा मारनेका सा भाव था। इस क्षणसे एक नया तत्त्व वातावरणमें प्रवेश कर गया। एक भीषण तनाव—एक प्रमत्त घृणा। वे अब दो खिलाड़ी नहीं थे, जो केवल खेलकी ही भावनासे खेल रहे हों। वे दोनों एक दूसरेके शत्रु थे, जिन्होंने एक दूसरेका नाश करनेकी सौगन्ध ले ली थी। पहली चाल चलनेसे पूर्व शेन्टोविख़ काफी देर तक झिझकता रहा। मुझे लगा कि वह जान बूझ कर देर कर रहा है। कोई बात नहीं थी, केवल यही कि यह मँजा हुआ खिलाड़ी पहले ही भाँप गया था कि इस प्रकारके धीमेपनसे उसका प्रतिद्वंद्वी थक जाता है और चिढ़ जाता है। सबसे पहली साधारण चाल, बादशाहके पैदलको दो घर चलनेमें उसने चार मिनट लगाये। उसी समय हमारे मित्रने बादशाहका पैदल चल दिया। किन्तु फिर शेन्टोविख़ने एक अटूट, एक असह्य विराम प्रारम्भ कर दिया। यह उसी भाँति था जब कि भीषण बिजली चमकनेके बाद हम लोग धड़कते हृदयसे गरजनेकी प्रतीक्षा करते हैं—किन्तु गर्जन नहीं होता। शेन्टोविख़ नहीं चला। वह शान्तिसे धीरे धीरे सोचता गया। मुझे लगा कि वह और भी अधिक विलम्बसे, ईर्ष्यामें भरा हुआ, धीरे धीरे सोच रहा था। इस बीच मुझे डाक्टर बी० को देखते रहनेका पर्य्याप्त अवकाश मिल गया। वे अभी अभी पानीका तीसरा गिलास खाली कर चुके थे। मुझे स्मरण हुआ कि तहखानेमें उन्होंने अपनी ज्वलन्त प्यासका वर्णन किया था। उस असामान्य उत्तेजनाका प्रत्येक लक्षण स्पष्ट होता जा रहा था। मैंने देखा कि उनका ललाट भीगने लगा और उनके हाथका घाव अधिकाधिक लाल और स्पष्ट उभरने लगा।

फिर भी वे अपने आपपर नियंत्रण किये हुए थे। चौथी चालपर जब शेन्टोविख़ फिर उसी भाँति सोचनेमें लग गया तो वे अपने आपको भूल कर चिल्ला पड़े—"तुम! क्या चलोगे ही नहीं!"

शेन्टोविख़ने धीरेसे ऊपर देखा—" मुझे जहाँ तक स्मरण है, मैं समझता हूँ कि हम लोगोंने दस मिनटकी अवधि नियत की थी। यह मेरा सिद्धान्त है कि मैं उसे कम नहीं करता।"

डाक्टर बी० ने अपने होंठ चबा लिये। मैंने ध्यानसे टेबिलके नीचे देखा कि किस बेचैनीसे वे अपने पैरोंके तलवे ऊपर नीचे उठा गिरा रहे थे। मैं यह घबराहट, जो कि मुझपर हावी हो रही थी, किसी भी प्रकार दबा नहीं पा रहा था कि किसी पागलपनका पूर्वरूप उनके हृदयमें उबल रहा है। आठवीं चालपर दूसरी झड़प हुई। डाक्टर बी० का आत्मनियंत्रण प्रतीक्षाकी वृद्धिके साथ कम होता जा रहा था। वे अब अपना मानसिक तनाव छिपा नहीं सकते थे। वे बैठे-बैठे उकता गये और अंगुलियोंको अनजाने ही टेबिल-पर बजाने लगे। शेन्टोविख़ने अपना किसानी सिर ऊपर उठाया।

"क्या आप टेबिल बजाना बन्द करेंगे? मुझे उससे व्याघात पहुँच रहा है। यदि यही चलता रहा तो मैं खेल नहीं सकता।"

"हा—हा" डाक्टर बी० हँसकर बोले, "यह तो कोई भी व्यक्ति देख सकता है।"

शेन्टोविख़ जल उठा। "क्या अभिप्राय है आपका?" उसने तीव्र क्रुद्ध स्वरमें पूछा।

डाक्टर बी० फिरसे हँसे। "कुछ नहीं। यही कि तुम घबराए हुए हो। यह साफ दीख रहा है।"

शेन्टोविख़ने अपना सिर नीचा कर लिया और वह कुछ भी नहीं बोला। सात मिनटके बाद वह अगली चाल चला। खेलकी गति ऐसी हो रही थी जैसी कब्रिस्तान जानेवाले जुलूसकी। शेन्टोविख़ क्रमशः पत्थर बनता गया। अन्त अन्तमें वह अधिकसे अधिक समय चलनेमें लगाने लगा। एक विरामसे दूसरे विराम तक हमारे मित्रका आचरण और भी विचित्र होता गया। ऐसा लगा मानो खेलसे उनका कोई सबंध नहीं है और वे किसी अन्य विषयकी चिन्तनामें लग गये हैं। उन्होंने उत्तेजित चहलकदमी बन्द कर दी थी और निश्चल होकर एक स्थानपर बैठ गये थे। शून्यमें एक निरपेक्ष पागल

दृष्टिसे वे देखते, और लगातार कुछ बड़बड़ाते रहते। या तो वे शतरंजकी अनन्त योजनाओंमें डूब चुके थे, या, जैसा कि मेरा सन्देह था वे कुछ दूसरी ही बाजियाँ खेल रहे थे। क्यों कि जब कभी शेन्टोविख़ चलता तब उन्हें उनकी सुषुप्तिसे हमें जगाना पड़ता। उन्हें स्थिति समझानेमें एक या दो मिनट लग जाते। मेरा यह निश्चय दृढ़ होता गया कि वे शेन्टोविख़ और हम सभी लोगोंको भूल चुके हैं। पागलपनका यह शान्त रूप किसी भी समय भयंकर वेगसे उनपर आक्रमण कर सकता है। उन्नीसवीं चालपर वह चरम सीमा आ ही गई। ज्यों ही शेन्टोविख़ चला कि डाक्टर बी० बोर्डको बिना देखे ही अपने वजीरको दो घर आगे चले और इतने जोरोंसे चिल्लाये कि हम लोग चौंक उठे—

"शै!...शै!!...बादशाह...!!"

प्रत्येक व्यक्तिकी आँखें बोर्डपर इसी आशामें लगी थीं कि इस असाधारण चालके बाद क्या होता है। तब, एक मिनट बाद एक अप्रत्याशित घटना हुई। शेन्टोविख़ने धीरे-से अपना सिर उठाया और एक एक करके सबके चेहरोंको देखा। ऐसा उसने कभी नहीं किया था। ऐसा लगा मानो कुछ अदृश्य वस्तु उसे आनन्द दे रही है, क्योंकि धीरे धीरे उसके होंठ खुले और उनपर एक सन्तोषकी, घृणाकी, मुस्कराहट बिखर गई। जब कि वह अपनी विजयका, जिसे कि हम लोग समझ नहीं पा रहे थे, पूरा आस्वाद ले चुका, तब वह ताने-भरे स्वरमें बोला—

"अफसोस!—यहाँ तो कहीं भी किश्त नहीं है। शायद आप लोगोंमेंसे कोई महानुभाव मुझे बतायेंगे, क्या मेरा बादशाह किश्तपर है?"

हम लोगोंने बोर्डपर देखा, फिर बेचैनीसे डाक्टर बी० की ओर। शेन्टोविख़के बादशाह और उनके वजीरके बीच एक पैदल था। एक बच्चा भी यह देख सकता था। बादशाहपर किश्त लग ही नहीं सकती थी। हम एक दूसरेका मुँह ताकने लगे। क्या यह सम्भव नहीं है कि हमारे मित्रने उत्तेजनामें अपना मोहरा कतारसे बाहर दूसरी कतारके घरमें खिसका दिया हो! हमारी चुप्पीसे आकर्षित होकर डाक्टर बी० ने बोर्डकी ओर देखा और हकलाते स्वरमें कहा—"लेकिन बादशाह तो छठीके सातवेंपर होना चाहिए—यह ग़लत है, सब ग़लत है।—तुम्हारी चाल ग़लत है। सब मोहरे ग़लत रक्खे हैं। पैदल सातवींके पाँचवेंपर होना चाहिए। सातवींके चौथेपर नहीं। ओह!...

यह तो दूसरा ही खेल है!!—यह तो......"

वे एकाएक रुके। मैंने उनकी बाँह ऐसी झकझोर डाली कि उन्हें उसकी चेतना मिल ही गई। वे घूमे और स्वप्नाभिभूतकी भाँति मुझे घूर कर बोले—

"क्या है—आप क्या चाहते हैं?"

मैंने केवल यही कहा—"याद रखिए!"—और अपनी अंगुलीसे उनके हाथके घावको धीरेसे छू दिया। अपने ही आप उन्होंने मेरे संकेतका अनुसरण किया और उनकी आँखें पथराई हुई सी उस रक्तिम रेखा-पर लग गईं। एकाएक वे काँपने लगे और उनका शरीर हिल उठा।

"ओ ईश्वर! उन्होंने मुरझाये ओठोंसे पूछा, "क्या मैंने कोई भद्दी बात कह डाली? क्या यह संभव है कि मैं फिरसे...?"

"नहीं" मैंने धीमे स्वरमें कहा—"लेकिन आपको यह खेल अभी छोड़ना पड़ेगा। ठीक अवसर है। डाक्टरने जो कहा था।—याद कीजिए।"

एक ही झोंकेमें आकर डाक्टर बी० उठ खड़े हुए। अपनी उसी पुरानी नम्र भाषामें, विशेष कर शेन्टोविख़की ओर उन्मुख होकर, वे बोले—

"मैं अपनी भद्दी भूलके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। जो कुछ मैंने कहा वह साफ बेवकूफी थी—और कुछ नहीं।" फिर हमसे वे बोले, "महाशयो, मैं आपसे भी क्षमा माँगता हूँ। किन्तु मैंने आपको पहले ही जता दिया था कि मुझसे अधिक आशा न की जाय। मुझे क्षमा करें—यह अन्तिम अवसर है कि मैं शतरंजके मोहमें पड़ गया।"

वे उसी विनम्र और रहस्यमय रूपमें कमरेसे बाहर चले गये, जिस रूपमे उन्होंने पहले प्रवेश किया था। केवल मैं ही जानता था कि यह व्यक्ति अब शतरंज क्यों नहीं छुएगा। दूसरे लोग, कुछ अनमनेसे, केवल यही सोच पा रहे थे कि अभी अभी कुछ खतरनाक और दुःखप्रद घटना होते होते रह गई है।

"वज्रमूर्ख!"—मैक आइवर अपनी निराशामें बड़बड़ाया।

"अन्तमें शेन्टोविख़ उठा। असमाप्त खेलकी ओर देखकर वह बोला—"बहुत बुरा हुआ। आक्रमण बुरा नहीं था। उस आदमीमें सचमुच प्रति-भाका एक बड़ा अंश वर्तमान है, जो ऐसे अव्यवसायी खिलाड़ियोंमें देखनेको नहीं मिलता।"

गवर्नेस

दोनों लड़कियाँ अपने कमरेमें अकेली थीं। रोशनी बुझा दी गई थी। चारों ओर अँधियारा था। केवल दोनों बिस्तरोंपरसे कुछ सफेदी-सी झलक रही थी। दोनों इतनी धीमी साँसें ले रही थीं, कि लगता, सो गई हैं।

" मैं तो सोचती हूँ..." एक पलंग परसे फुसफुसाहट हुई। बारह वर्षकी लड़की बोल रही थी।

" क्या सोचती हो ? " उसकी बहिनने पूछा। वह पहलीसे एक वर्ष बड़ी थी।

" अरे, तुम अभी जाग रही हो ! मैं तो तुम्हींसे कुछ कहना चाहती थी। "

इस बार शब्दोंके द्वारा कोई उत्तर नहीं दिया गया। केवल दूसरे पलंगपर थोड़ी-सी सरसराहट हुई। बड़ी लड़की उठकर बैठ गई। उत्कण्ठा और उत्तेजनासे उस मन्द आलोकमें उसकी आँखें चमक उठीं।

" देखो, मैं जो कहना चाहती हूँ वह यह है। लेकिन पहले यह बतलाओ कि तुमने मिस मानमें इधर कुछ विचित्र बात देखी है ? "

क्षणभर चुप रहकर दूसरी बोली—" हाँ, है तो कुछ-न-कुछ अवश्य। लेकिन मैं नहीं जानती कि बात क्या है। वे पहलेकी भाँति कठोर नहीं रह गईं। दो दिनसे मैंने अपना काम नहीं किया। इसपर उन्होंने मुझे डाँटा फटकारा तक नहीं। पता नहीं, हुआ क्या ? किन्तु ऐसा लगता है कि वे हम लोगोंके विषयमें अब अधिक चिन्तित नहीं रहतीं। अकेली बैठी रहती हैं। पहलेकी भाँति हमारे साथ खेलोंमें सम्मिलित भी नहीं होतीं। "

" मैं सोचती हूँ कि वे दुखी हैं, और इस बातको प्रकट करना नहीं चाहतीं।—आजकल वे पिआनो भी नहीं बजातीं। "

कुछ देर चुप्पी रही। तदुपरान्त बड़ी लड़की फिरसे बोली—" हाँ, लेकिन तुम कहती थीं न, कि तुम्हें मुझसे कुछ कहना है ? "

"हाँ, किन्तु यह बात तुम्हीं तक रहनी चाहिए। एक भी शब्द न तो तुम माँसे कहोगी, न अपनी सखी लोटीसे—"

"अच्छी बात है मैं नहीं कहूँगी," दूसरीने चिहुँककर कहा—"तुम आखिर कहो तो।"

"अच्छा तो—आज शामको जब हम लोग सोनेके लिए चली आईं, तो मुझे लगा कि मिस मानको मैंने प्रणाम नहीं किया। फिरसे जूता पहिनकर जाना मैंने उचित न समझा, और मैं दबे पाँव उनके कमरेकी ओर चली। मैं चाहती थी कि एकाएक वहाँ जाकर उन्हें चौंका दूँ। मैंने उनका दरवाजा धीरे-से खोला। मुझे पहले लगा कि वे कमरेमें नहीं हैं। रोशनी जल रही थी, किन्तु मैं उन्हें देख न सकी। तब एकाएक--मैं तो भौंचक-सी रह गई--मैंने किसीको रोते हुए सुना। देखा वे पूरे कपड़े पहिनकर विस्तरपर लेटी हुई हैं। उनका सिर तकियेमें घुसा हुआ था। वे इस बुरी तरहसे सिसकियाँ ले रही थीं कि मुझे तो कुछ अजीब-सा लगा। उन्होंने मुझे देखा नहीं। तब मैं चुपचाप बाहर चली आई। दरवाजा जितने धीरे हो सकता था, मैंने बन्द किया। मैं क्षण-भर बाहर खड़ी रही, क्योंकि पैर उठानेकी शक्ति मुझमें नहीं थी। दरवाजेसे होकर उनकी सिसकियाँ मैं अब भी सुन रही थी। --फिर मैं चली आई।"

क्षणभरके लिए उन दोनोंमेंसे एक भी बोली नहीं। तब बड़ी लड़की एक लम्बी साँस लेकर कह उठी--"हाय, बेचारी मिस मान!"

फिर एक बार चुप्पी छा गई।

छोटी लड़की कहने लगी—"मुझे तो यह समझमें आता ही नहीं कि आखिर वे किस लिए रो रही थीं। इधर किसीसे उनका झगड़ा भी नहीं हुआ। सदाकी भाँति माताजीने अबकी उनसे कोई खींचतान नहीं की, और मैं समझती हूँ कि हमारे द्वारा भी उन्हें कोई क्लेश नहीं पहुँचा। तो क्या कारण है कि वे रो रही थीं?"

"मेरा एक अनुमान है,"—बड़ी बोली।

"अच्छी बात है, कहो तो!"

उत्तर देनेमें थोड़ी-सी हिचक हुई, किन्तु अन्तमें उसने कहा—

"मैं समझती हूँ कि वे प्रेममें फँस गई हैं।"

"प्रेममें ?"—छोटी लड़की चिहुँक उठी, "प्रेममें !—किसके साथ !"

"तुमने देखा नहीं ?"

"यानी, ओटोसे तुम्हारा अभिप्राय है ?—क्यों ?"

"हाँ, वही तो। और वह भी उन्हें प्यार करता है। तीन साल वह यहाँ रहा, किन्तु एक भी दिन आया वह हमारे साथ खेलने ?—इधर दो तीन महिनेसे एक भी दिन अछूता नहीं गया जब वह न आया हो। जब तक मिस मान नहीं आई थीं, वह हमारी ओर देखता तक न था। अब देखो तो हमारे ही चारों ओर मँड़राया करता है। जितनी बार हम बाहर जाती हैं, ऐसा लगता है, मानो हमीं उससे मिल पड़ती हैं। पार्कमें हो, चाहे बगीचेमें या और कहीं—जहाँ कहीं मिस मान हमें ले जायँ। तुमने अवश्य इस बातपर ध्यान दिया होगा।"

"हाँ जी, मैंने देखा अवश्य है," छोटीने उत्तर दिया, "लेकिन मैं तो सोचती थी कि—"

वह अपना वाक्य पूरा नहीं कर पाई।

"हाँ भई, मैं समझ गई। मैं भी इस तिलका ताड़ नहीं बनाना चाहती। केवल इधर कुछ लगने लगा है कि ओटो हमें केवल अपना निमित्त बनाता रहता है।"

बहुत देर तक सन्नाटा छाया रहा। लड़कियाँ इन्हीं बातोंपर सोचती रहीं। फिर छोटीने पुनः वार्तालाप प्रारम्भ किया—

"माना कि यही बात है। किन्तु वे रोती क्यों हैं ? वह भी उन्हें खूब चाहता है। मैं तो सदा यही सोचती रही हूँ कि प्रेम करना तो बड़े मज़ेकी बात है।"

"यही मैं भी सोचती रही हूँ"—बड़ी लड़की सुषुप्तिमें डूबी हुई-सी बोली—"मैं समझ नहीं पाती।"

फिरसे एक बार उनींदे स्वर-में वही शब्द बोले गये—

"हाय, बेचारी मिस मान।"

इस प्रकार उस रात उनकी वार्ता समाप्त हो गई।

× × ×

प्रातःकाल उन्होंने इस विषयपर प्रसंग नहीं छेड़ा। फिर भी दोनों जानती थीं कि दोनों इसीपर सोच रही हैं। जब कभी वे अपनी गवर्नेसको देखतीं कि उनकी आँखें आप ही आप एक दूसरीसे जा मिलतीं। उनका यह आशय कदापि नहीं था कि आँखोंके संकेतसे एकके विचार दूसरे तक पहुँचायें। भोजनके समय दूर ही दूरसे वे अपने चचेरे भाई ओटोको जाँचती रहीं; मानो वह कोई अज्ञात व्यक्ति हो। वे उससे बोली नहीं। किन्तु बारीकीसे उसकी पड़ताल करती रहीं कि मिस मानके साथ ओटोका कुछ गुप्त आशय है, या नहीं। खेलमें उन लड़कियोंका जी नहीं लगता था। क्योंकि उस प्रत्यासन्न पहेलीके अतिरिक्त वे कुछ सोच नहीं पाती थीं।

सायंकालके समय, ऊपरसे एक निरपेक्ष भाव-सा दिखाती हुई, उनमेंसे एक बोली—

"आज तुमने कुछ और बात देखी?"

"न—हीं—" उसकी बहिनने झिझककर कहा।

वे सचमुच इस विषयपर चर्चा करनेसे डरती थीं। इसी प्रकार कई दिन तक यह चलता रहा। दोनों लड़कियाँ चुपचाप चीजें देखती भालती रहीं। उनके मन अनमने-से हो रहे थे। किन्तु सदा यही लगता था कि शीघ्र ही वे किसी आश्चर्यजनक रहस्यको जान लेंगीं।

अन्तमें, एक दिन भोजनके समय, छोटी लड़कीने देखा कि गवर्नेसने ओटोकी ओर एक अदृश्य-सा संकेत किया और ओटोने उत्तरमें सिर हिला दिया। लड़कीने उत्तेजनामें काँपते हुए टेबिलके नीचे ही नीचे अपनी बहिनको लात लगा दी। बड़ीने जिज्ञासाकी दृष्टिसे छोटीकी ओर देखा। छोटीने अर्थ-भरी आँखोंसे उत्तर दिया। भोजनके बाकी समय दोनों उड़ी-उड़ी-सी फिरती थीं। भोजनके उपरान्त गवर्नेसने लड़कियोंसे कहा—"जाओ, पढ़नेके कमरेमें जाकर कुछ काम करो। मेरे सिरमें दर्द है; मैं आधे घण्टे लेटना चाहती हूँ।"

ज्यों ही दोनों लड़कियाँ अकेली मिलीं कि छोटी फूट पड़ी—

"अब देखना ओटो उनके कमरेमें जायेगा!"

दूसरीने कहा—"हाँ, इसीलिए तो उन्होंने हमें यहाँ भेज दिया है।"

"दरवाजेके बाहरसे हमें सुनना चाहिए।"

"कोई आ गया, तो ?"

"कौन आयेगा ?"

"माँ।"

"तब तो मर जायेंगी हम।" छोटी आशंकामें बोल उठी।

"देखो; सुनूँगी मैं, और तुम बराण्डेमें पहरा देती रहोगी।"

छोटीने कहा—"लेकिन फिर तुम मुझे सब कुछ बताओगी नहीं।"

"तुम घबराती क्यों हो ?"

"कहो, अपनी सौगन्ध।"

"अपनी सौगन्ध, बस ? किसीकी आहट सुनो तो खाँस देना।"

दोनों बराण्डेमें प्रतीक्षा करती रहीं। उनके हृदय उत्तेजनासे फटे जा रहे थे। क्या होने जा रहा है ? उन्होंने पैरोंकी चाँप सुनी और वे पढ़नेके अँधेरे कमरेमें खिसक आईं।

ओटो था। वह मिस मानके कमरेमें गया, और दरवाजा बन्द हो गया। बड़ी लड़की तीर-सी अपने स्थानपर पहुँच गई और साँस रोक कर तालीके छेदमेंसे सुनने लगी। छोटीको ईर्ष्या हुई। जिज्ञासासे प्रेरित होकर वह भी दबे पाँव दरवाजेके पास आ गई। किन्तु बहिनने उसे धकेल दिया। रोषमें संकेत किया कि बराण्डेके दूसरे छोरपर पहरा दे। इस प्रकार कई मिनटोंतक प्रतीक्षा करती रहीं। छोटी लड़कीको लगा कि एक युग बीत गया। वह हाथ-पाँव पटकती जाती थी। उसे लगता मानों अंगारोंपर खड़ी हो। उसे अपने आँसू रोकना कठिन हो गया, क्योंकि उसकी बहिन सभी कुछ तो सुने लेती थी। अन्तमें एक आहट पाकर वह चौंकी और खाँसने लगी। भागकर दोनों पाठशालामें चली आईं और हाँफने लगीं।

तब छोटीने उत्कंठासे पूछा—"लो अब तो बताओ सब ?"

बड़ी लड़की उलझी हुई-सी लगती थी। कहने लगी—मानो अपने आपसे बोल रही हो—

"मैं समझी नहीं।"

"क्या ?"

"यह ऐसी ही कुछ असाधारण बात है।"

"क्या है—क्या ?" दूसरी क्षोभसे चीख़ उठी।

बड़ी लड़कीने प्रयत्न करके कहना प्रारम्भ किया—" बड़ी असाधारण बात थी। मैंने जैसा कुछ सोचा था, उससे बिलकुल उलटी।—मैं समझती हूँ कि वह कमरेमें गया और बाँहें फैलाकर उसने उन्हें चूमना चाहा होगा। क्योंकि वे बोलीं—' अभी नहीं, मुझे कुछ गंभीर बात तुमसे कहनी है। '—मैं देख तो न सकी, क्योंकि छेदमें चाबी उलझी हुई थी; किन्तु मैंने सुना सब कुछ। ' क्या बात है ? '—ओटोने पूछा। उसका ऐसा स्वर मैंने आज तक नहीं सुना था। तुम तो जानती हो कि वह बहुधा ऊँचे और बुलन्द स्वरमें बोलता है। किन्तु इस बार, मुझे तो विश्वास है, कि वह डरा हुआ था। गवर्नेसने अवश्य देख लिया होगा कि वह डरा हुआ है और बगलें झाँक रहा है। वे बोलीं— ' मैं तो समझती हूँ कि तुम सब जानते हो। ' ' नहीं—नहीं। कुछ भी नहीं।' ' यदि ऐसा ही है तो तुम मुझसे कटे-कटे क्यों फिरते हो ? '—उन्होंने दुखते स्वरमें पूछा, ' एक हफ्ता हुआ तुम मुझसे बोले तक नहीं। जहाँ देखो, तुम मुझसे कन्नियाँ काटते रहते हो। लड़कियोंके साथ तुम अब नहीं जाते। पार्कमें हम लोगोंसे भेट करने नहीं आते। क्या एकाएक मेरे विषयमें सोचना भी तुमने छोड़ दिया ? हाय, हाय, तुम्हें अच्छी तरह मालूम है, जो तुम इस प्रकार मुझसे दूर हटते जाते हो। ' वे रोने लगीं और सिसकियाँ ले लेकर बोलीं-- ' ओटो, सच तो बताओ कि मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ? तुम मेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों करते हो ? मैंने कोई दावा तुमपर नहीं किया। किन्तु हमें तो इन सारी चीजोंपर स्पष्ट बातें कर लेनी चाहिए। तुम्हारी चेष्टाओंसे लगता है कि तुम सब कुछ जानते हो—' "

लड़की काँपने लगी, और वाक्य अधूरा ही रह गया। जो सुन रही थी, निकट आ गई। उसने पूछा--" सब-कुछ क्या ? "

" ' हम दोनोंके बच्चेके विषयमें '। "

" उनका बच्चा ? "--छोटी बोल उठी, " बच्चा ?--असम्भव ! "

" यही तो वे कह रही थीं। "

" तुमने ठीक ठीक सुना नहीं। "

" मैंने सुना। मुझे निश्चय है। फिर ओटोने कहा--' हमारा बच्चा ! '। कुछ देर बाद वे बोलीं--' अब हम क्या करें ? '—तब—"

"हाँ; तब ?"

"तब तुम खाँस पड़ीं और मुझे भागना पड़ा।"

छोटी लड़की डर गई—किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो गई।—"किन्तु उनके बच्चा हो ही नहीं सकता। बच्चा आखिर होगा कहाँ?"

"मैं भी तो तुमसे ज्यादा जानती नहीं।"

"शायद उनके घरपर हो; माँने उसे यहाँ न लाने दिया हो। और इसी कारण वे इतनी उदास रहती हैं।"

"अरे छिः!—किन्तु तब वे ओटोको कहाँ जानती थीं?"

दोनों निराश होकर सोचती रहीं। पुनः छोटी लड़की बोली—

"बच्चा होना तो असम्भव है। उनके बच्चे हो ही कैसे सकते हैं? विवाह उनका नहीं हुआ। केवल विवाहित लोगोंके ही बच्चे हुआ करते हैं।"

"हो सकता है कि उनका व्याह हो चुका है।"

"अरी, तू मूर्ख तो नहीं है? कमसे कम ओटोसे तो उनका व्याह नहीं हुआ।"

"तो फिर?"

वे दोनों एक दूसरेको देखती ही रह गईं।

उनमेंसे एकने दुखी होकर कहा—"हाय, बेचारी मिस मान!"

वे दोनों लौट फिरकर इसी एक वाक्यपर आ पड़ती थीं। यह मानो समवेदनाकी एक कराह हो। किन्तु सदा उनकी उत्कण्ठा फिरसे धधक उठती थी।

"तुम क्या सोचती हो—लड़का है या लड़की?"

"मैं कैसे बता दूँ, क्या है?"

"क्यों जी, अगर हमीं जायँ और उनसे घुमा फिरा कर पूछें?"

"अरी, चुप!"

"क्यों?—क्यों नहीं पूछें? वे कितनी भली हैं हमारे लिए?"

"किन्तु लाभ क्या होगा? ये लोग ऐसी बाते हम बताते ही ही नहीं हैं। यदि वे ऐसी बातें करें और हम जायँ तो चुप्पी साध लेते हैं और तमाम फाल्तू

बकवास करने लगते हैं। जैसे हम निरी बच्ची हों। मैं तो तेरह सालकी हो गई हूँ।—उनसे पूछनेसे क्या लाभ ? केवल यही कि उल्लू बना दी जायेंगीं।"

"लेकिन मैं तो जानना चाहती हूँ।"

"हाँ, जानना तो मैं भी चाहती हूँ।"

"किन्तु जो चीज मुझे समझमें नहीं आती, वह यह है कि ओटोने न जाननेका बहाना किया क्यों ? किसीके बच्चा हो तो उसे मालूम होना ही चाहिए--जैसे, प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि उसके माँ है, बाप है।"

"अजी वह केवल बहानेबाजी करता है। हमेशा दूसरोंको उल्लू बनाना !"

"किन्तु इसके बारेमें वह उल्लू सीधा नहीं कर सकता। हमें वह चाहे कैसा ही बना ले।"

उसी समय गवर्नेस कमरेमें आ गई। लड़कियाँ ऐसी बनकर बैठ गइ मानो कठिन परिश्रम करती रही हों। किन्तु लड़कियोंसे यह छिपा नहीं रहा कि गवर्नेसकी पलकें लाल हो रही थीं। उनके स्वरमें एक गहरी वेदना भींगी हुई थी। लड़कियाँ चुपचाप बैठी रहीं। मास्टरनीके प्रति एक नये आदरका भाव उन दोनोंके अन्तसमें पैठ गया था। "उनके बचा है"—वे यह सोचती रहीं।—"इसीलिए वे इतनी दुःखित हैं।"

किन्तु उन दोनोंपर भी, आने जानेमें, दुःखकी छाया पड़ने लगी थी।

* * *

दूसरे दिन भोजनके समय उन्होंने एक विस्मयजनक समाचार सुना। ओटो जा रहा था। उसने अपने चाचासे कहा कि उसे परीक्षाके निमित्त कठिन परिश्रम करना है, और यहाँ कई प्रकारके विघ्न पड़ते हैं। अगले दो महिने वह छात्रावासमें रहने जा रहा था।

लड़कियाँ उत्तेजनासे सँधी जा रही थीं। सोच रही थीं कि चचेरे भाईका प्रस्ताव पिछले दिनके वार्तालापसे अवश्य संबंधित है। उनकी सहज बुद्धिने सुझा दिया कि यह कायरका पलायन है। जब ओटो उनसे विदा लेने आया तो जान-बूझकर वे उद्दंड हो उठीं। उन्होंने मुँह फेर लिया। किन्तु मिस मानसे उसने किस प्रकार विदा ली, यह वे दोनों देखती रहीं। मिस मानने हाथ शान्तिसे मिलाय, किन्तु उनके होंठ किंचित् काँप उठे।

दोनों लड़कियाँ इन दिनों बदल-सी गई थीं। वे बहुत कम हँसतीं। किसी भी वस्तुमें उन्हें रस न मिलता। उनकी आँखें सदा दुखी रहतीं। वे बेचैनीसे इधर उधर टहलती रहतीं। अपनेसे बड़ोंपर उन्हें अविश्वास हो गया था। उन्हें सन्देह होता कि साधारणसे भी साधारण शब्दके पीछे प्रवंचना मुँह बाये खड़ी है। देख-भालके समय भी वे प्रेतछायाओंकी भाँति खिसकती जातीं। रहस्यका जो जाल उनके चारों ओर था, उसे तोड़कर वे उस पार जाना चाहती थीं। वास्तविकताके संसारकी कमसे कम एक झलक तो उन्हें मिलती। वह विश्वास, शैशवकी सन्तुष्ट अंधःप्रतीति, लुप्त हो चुकी थी। वे डरती थीं कि कहीं चूक न जायें। उनके चारों ओरके प्रवंचनामय वातावरणने उन्हें भी प्रवचनामयी बना दिया। जब कभी उनके माँ-बाप सामने होते तो वे बहाने बनातीं, मानो वे सचमुच बच्चोंकी ही भाँति काममें लगी हुई हैं। बड़ोंकी दुनियाके प्रति विद्रोह करनके कारण दोनों लड़कियाँ एक दूसरेके और भी निकट आ गईं। जब कभी अपनी अज्ञता और सामर्थ्यहीनताका बोध उन्हें होता तो भावुकताके वशमें होकर दोनों एक दूसरीसे लिपट जातीं और आँसुओंमें बरस पड़तीं। इस प्रकार विना किसी प्रत्यक्ष कारणके उन दोनोंके अबोध जीवन एक ऐसे परिच्छेदमें होकर बहने लगे, जो उनके लिए कठिन और दुर्बोध्य था।

उनके चारों ओर कई प्रकारके दुःख एकत्रित हो गये थे। उनमेंसे तीव्रतम एक ही था। दोनों लड़कियोंने, एक दूसरेसे विना पूछे, यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि मिस मानको कमसे कम कष्ट देंगी। वे अपनी पुस्तकोंसे कठिन परिश्रम करने लगीं। एक दूसरीको उसके पाठमें सहायता देतीं। सदा शान्त रहतीं। अच्छा व्यवहार करतीं। मास्टरनीकी इच्छाओंको पहलेहीसे ताड़ लेतीं। किन्तु गवर्नेसने लड़कियोंकी इस भावनापर कभी ध्यान नहीं दिया, लड़कियोंको इसीका दुख था। गवर्नेस कितनी बदल गई थीं ! यदि कोई लड़की उनसे कुछ बोलती, तो वे चौंक पड़तीं, मानो सो रही हों। उनकी दृष्टि लड़कियोंपर पड़ती तो लगता मानो बहुत दूर कहींसे आ रही हो। लड़कियाँ इस विचारसे दबे-पाँव इधर उधर चला करतीं कि कहीं गवर्नेसकी विचार-परम्परामें व्याघात न पहुँचे। क्यों कि लड़कियोंको यही विश्वास रहता कि गवर्नेस सदा अपने अनुपस्थित शिशुके ही विषयमें सोचती रहती हैं। उन

दोनोंके हृदयोंमें भी नारीत्वकी भावना जाग उठी थी। अतएव पहलेकी अपेक्षा अब वे अपनी मास्टरनीको अधिक प्यार करने लगी थीं। मास्टरनीको उन्होंने कभी रोते नहीं देखा, फिर भी उनकी पलकें बहुधा लाल रहती थीं। यह स्पष्ट था कि वे अपने दुःखोंको अपने तक ही सीमित रखना चाहती हैं। लड़कियोंको केवल यही खेद था कि गवर्नेसकी वेदनाओंको वे परस्पर बाँट न सकीं।

एक दिन उमड़ते अँसुओंको पोंछनेके लिए गवर्नेसने खिड़कीकी ओर देखा तो छोटी लड़कीने साहस बटोर कर उनका हाथ पकड़ लिया, और पूछा —

"मिस मान, तुम इतनी दुखी हो। कहीं हम लोगोंसे तो कोई अपराध नहीं बन पड़ा?—नहीं हुआ न?"

उन्होंने करुण दृष्टिसे लड़कीकी ओर देखा। उसके बालोंपर हाथ फेरते हुए वे बोलीं—"नहीं बेटी,—कदापि तुम्हारा अपराध नहीं।" फिर उन्होंने छोटी लड़कीका ललाट चूम लिया।

× × × ×

इस प्रकार लड़कियाँ लगातार घटनाओंके निरीक्षणमें लगी रहतीं। एक बार उनमेंसे एक लड़की बैठकके कमरेमें गई। उसके कानोंमें कुछ ऐसे शब्द पड़े, जो उसे सुनानेके लिए नहीं कहे गये थे और माता-पिताने तत्काल ही वार्तालापका विषय मोड़ दिया। किन्तु बालिकाके विचारोंको उत्तेजना देनेके लिए इतने शब्द काफी थे—

"हाँ, मुझे भी वही बात खटकी है।"—माँ कह रही थीं। "मैं मास्टर-नीसे बात करूँगी।"

लड़की उसी समय अपनी बहिनसे परामर्श करने गई—

"यह बात किस विषयमें हुई होगी?"

भोजनके समय लड़कियोंने देखा कि उनके माता-पिता किस बारीकीसे मिस मानको जाँच रहे हैं, और किस अर्थभरी दृष्टिसे वे एक दूसरेको देखते हैं। भोजनके उपरान्त माँने गवर्नेससे कहा—"जरा मेरे कमरे तक चली चलिए। मुझे आपसे कुछ बातें कहनी हैं।"

लड़कियाँ उत्तेजनाके मारे सिहर उठीं। कुछ-न-कुछ होने जा रहा है।

छिपकर बातें सुनना तो अब नित्यप्रतिका व्यवसाय हो गया था। उन्हें अब लाज नहीं लगती थी। जो वस्तु उनसे छिपायी जा रही थी उसे जानना ही एक-मात्र लक्ष्य बन गया था। ज्यों ही मिस मान अन्दर गईं कि वे दरवाजेसे जा लगीं।

उन्होंने जो कुछ सुना, वह धीमी फुसफुसाहटका शब्द था। क्या उन्हें कुछ भी न मालूम हो सकेगा? तब एक स्वर ऊँचा उठा। माँ रोषमें कह रही थीं।

"क्या तुम यह समझती थीं कि हम सब अन्धे हैं? तुम्हारी अवस्था हम न देख सकेंगे? इससे साफ जाहिर हो जाता है कि अध्यापिकाके कर्त्तव्योंका तुम्हें कैसा बोध है! मैं यह सोचकर ही काँप जाती हूँ कि अपनी बच्चियोंकी शिक्षाका उत्तरदायित्व मैंने तुम्हारे जैसे हाथोंमें दिया। इसमें तो सन्देह ही नहीं है कि तुमने निर्लज्जतासे उन दोनोंकी उपेक्षा की होगी।"

ऐसा लगा कि गवर्नेस कुछ आपत्ति करना चाहती थीं, किन्तु वे इतने धीमे बोलीं कि लड़कियाँ सुन न सकीं।

"हाँ, कहो, कहो। प्रत्येक पापके पीछे बहाने मिल ही जाते हैं। तुम्हारी जैसी औरतें, बिना परिणाम सोचे ही, प्रत्येक आगन्तुकको अपना शरीर सौंप सकती हैं। ईश्वर रक्षा करे! तुम जैसी स्त्री गवर्नेस बनाई जाय—कैसी भयंकर बात है? किन्तु जैसा मैं सोचती हूँ—कहीं तुम यह तो नहीं समझ बैठी हो कि मैं तुम्हें अब अपने घरमें रहने दूँगी?"

बाहर सुननेवाली काँप गईं। वे सभी कुछ समझ तो न सकीं। किन्तु उनकी माँका स्वर पर्याप्त भीषण था। मिस मानकी ओरसे केवल सिसकियाँ उत्तर दे रही थीं। लड़कियोंकी आँखोंसे भी आँसू फूट पड़े। माँ पहलेसे अधिक कुपित होकर बोलीं—"अब यही तुम कर सकती हो—रोओ और बहाने बनाओ—तुम्हारे आँसू मुझे डिगा नहीं सकते। तुम जैसी व्यक्तिके साथ मुझे कोई समवेदना नहीं है। तुम्हारा क्या होगा, यह सोचना मेरा कर्त्तव्य नहीं है। तुम्हें कहाँ शरण मिल सकती है, यह तुम अवश्य जानती होगी। यह तुम्हारा अपना काम है। जो कुछ मैं जानती हूँ, यह है कि इस घरमें तुम एक भी दिन नहीं रह सकतीं।"

मिस मानकी निराश सिसकियाँ अब भी उत्तरमें सुनाई देती थीं। लड़कियोंने किसीको इस प्रकार रोते सुना ही न था। वे सोचती थीं कि इतनी करुणासे रोने-वाला व्यक्ति अपराधी हो ही नहीं सकता। उनकी माँ कुछ देर चुप रहीं, फिर

तीखे स्वरमें बोल उठीं—"बस, मुझे यही कहना है। आज ही दुपहरको अपना बोरिया बँधना बँधो। कल सबेरे मुझसे अपना वेतन लेती जाओ।—अब तुम जा सकती हो।"

लड़कियाँ भागकर अपने कमरेमें आ गईं। क्या हुआ होगा? इस आकस्मिक तूफानके क्या अर्थ हो सकते हैं? एक क्षण उपरान्त उन्हें थोड़ेसे सत्यका अनुमान मिला। पहली ही बार अपने माता-पिताके प्रति विद्रोहकी भावना उनमें जाग उठी।

"बताओ तो, यह क्या ठीक था कि माँ इस तरह उनसे बोलीं?"

ऐसी स्पष्ट आलोचनापर छोटी लड़की थोड़ी-सी सहमी। हकलाते हुए वह बोली—"लेकिन...लेकिन...हम यह भी तो नहीं जानतीं कि उन्होंने किया क्या?"

"मुझे विश्वास है कि उन्होंने कोई भी अपराध नहीं किया होगा। मिस मान कभी ऐसा काम नहीं कर सकतीं जो अनुचित हो। जितनी अच्छी भाँति हम उन्हें जानती हैं उतना माँ नहीं जानतीं।"

"कैसे फूट-फूट कर वे रो रही थीं। मुझे तो बड़ा बुरा लग रहा था।"

"हाँ; बड़ी बुरी तरह। माँ जिस प्रकार उनपर गरज रही थीं, वह तो और भी बुरा था—और भी बुरा।"—कहते कहते उसने रोषसे पाँव पटक दिये। उसकी आँखोंमें आँसू उमड़ आये।

इसी समय मिस मान आईं। वे अत्यन्त श्रान्त-सी लगती थीं।

"बच्चियो, मुझे दोपहरको बहुत सारा काम करना है। मैं—मैं तुम्हें अकेली ही छोड़ जाऊँगी। तुम अच्छी तरह रहना, हाँ। शामको फिर हम लोग मिलेंगे।"

वह लौटकर कमरेसे बाहर चली गईं। उन्होंने एक बार भी न देखा कि लड़कियाँ कैसी निराश लगती थीं।

"देखा तुमने? उनकी आँखें कैसी लाल थीं? मैं तो यह समझ नहीं सकती कि माँ किस प्रकार उनके प्रति निर्दय बन सकीं?"

"हाय, बेचारी मिस मान!"

फिर वही रोते हुए शब्द! आँसुओंमें डूबता उतराता वही स्वर! तब उनकी माँने आकर पूछा कि वे उनके साथ घूमने जायेंगी?

" आज नहीं, माँ ! "

दोनों लड़कियाँ अब अपनी माँसे सचमुच डरने लगी थीं। रोष उन्हें इस लिए था कि मिस मानको आज ही निकाले जानेकी बात उनसे छिपाई गई थी। अब वे अकेले रहना चाहती थीं। पींजरेमें बन्द अबाबीलोंकी भाँति वे कमरेमें इधर उधर फड़फड़ाती रहीं। मिथ्या और नीरवताके वातावरणसे पिस पिसकर, वे सोचतीं कि मिस मानके पास जायँ, या नहीं—पूछें कि हुआ क्या था? उनसे कहें कि माँका व्यवहार उनके प्रति अनुचित हुआ—वे यहीं रहें। किन्तु लड़कियाँ डरती थीं कि मिस मानको इससे दुख होगा। उसके अतिरिक्त एक कारण और भी था। लड़कियोंने अब तक तमाम घटनाओंको लुकछिप कर देखा सुना था। अब उसीका प्रसंग छेड़नेमें उन्हें लज्जा और संकोच होता।

उस दिनकी अनन्त लंबी दुपहरी उन्हें अकेले बितानी पड़ी। वे रोतीं-सिसकतीं रहीं। बार-बार उन्हें उन सारी बातोंका स्मरण होता जिन्हें उन्होंने बन्द दरवाजेके भीतर सुना था—माँके हृदय-हीन, रोषभरे शब्द—मिस मानकी निराश सिसकियाँ।

सायंकालके समय गवर्नेस लड़कियोंके पास आई, केवल ' नमस्कार ' कहने-भरके लिए। जब वे जा रही थीं, लड़कियोंने चाहा कि चुप्पी तोड़ें, किन्तु वे एक भी शब्द न बोल सकीं। दरवाजे तक पहुँच कर मिस मान लौट पड़ीं। मानो उन दोनोंकी मूक इच्छा-शक्तिने उन्हें लौटाया हो। गवर्नेसने लड़कियोंको अपनी बाहोंमें भर लिया। दोनों रो उठीं। उन्हें चूम कर मास्टरनी जल्दी जल्दी चली गईं।

दोनों बाचियाँ स्पष्ट समझ गईं कि यह अन्तिम विदा है।

" हम उन्हें कभी न देखेंगी "—एक सिसककर बोली।

" मैं जानती हूँ। कल हम जब स्कूलसे आयेंगीं, वे उससे पहले ही चली जायेंगी। "

" शायद, कुछ समयके बाद उनसे हमारी भेंट हो। तब वे अपना बच्चा हमें दिखायेंगी। "

" हाँ,—कितनी भली हैं वे ! "

" हाय, बेचारी मिस मान ! "

ऐसा लगता था मानो दुखके ये शब्द स्वयं उन्हींके भाग्यकी घोषणा कर रहे हों।

" मैं तो यही नहीं समझ पाती कि उनके बिना हम रहेंगी कैसे ? "

" मैं तो, उनके बाद, दूसरी गवर्नेसको फूटी आँखों न देख सकूँगी। "

" मैं भी नहीं। "

" दूसरी मिस मान-सी कभी हो ही नहीं सकती। इसके अलावा..."

वह अपना वाक्य समाप्त न कर सकी। मिस मानके प्रति आदरका जो भाव उनके हृदयमें स्थान पा चुका था उसके पीछे एक अज्ञात नारी भावना काम कर रही थी। वे सदा यही सोचती रहती थीं, कि उनके एक शिशु है। यही एक बात सदा उनके विचारोंमें रहती और उन्हे आन्दोलित करती रहती।

" मैं सोचती हूँ "—एक बोली।

" क्या ? "

" मेरा एक विचार है। मिस मानके जानेसे पूर्व क्या हम कुछ कर सकतीं हैं, जो उन्हें प्रिय लगे ? कुछ ऐसा काम कि वे जान जायँ कि हम उन्हें कितना प्यार करती हैं और हम अपनी माँकी भाँति निर्मम नहीं हैं।—तुम मेरा साथ दोगी ? "

" बड़ी खुशीसे। "

" तुम्हें मालूम है कि सफेद गुलाब उन्हें कितना प्रिय है ! चलो, कल तड़के ही, स्कूल जानेसे पहले, फूल खरीद लायें। उनके कमरेमें जाकर रख दें। "

" लेकिन कब ? "

" स्कूलके बाद। "

" इससे कोई लाभ नहीं। तब तक वे चली जायेंगी। देखो, मैं प्रातःकाल नाश्तेसे पहले ही छिपकर जाऊँगी और फूल लेती आऊँगी। फिर हम दोनों उनके पास लिये चलेंगी। "

" अच्छी बात है; हमें तड़के ही उठ जाना चाहिए। "

लड़कियोंने अपने गोलक खाली कर दिये। इस विचारसे उन्हें एक बार

प्रसन्नता मिल गई कि वे मिस मानको अपने प्रेमकी इयत्ता दिखा तो सकेंगी।

दूसरे दिन प्रातःकाल, हाथोंमें गुलाब लिये, उन्होंने मिस मानका द्वार खटखटाया। कोई उत्तर नहीं। यह सोचकर कि गवर्नेस सो रही होंगी, लड़कियोंने भीतर झाँककर देखा। कमरा खाली था। बिस्तरपर एक भी झुर्री नहीं थी। ऐसा लगता था कि उसपर कोई सोया न हो। टेबिलपर दो पत्र पड़े थे। लड़कियाँ भौंचक्की रह गईं। क्या हुआ होगा ?

"मैं अभी माँके पास जाती हूँ।"—बड़ी लड़कीने कहा।

चुनौती-सी देकर निर्भीकतासे उसने अपनी माँसे पूछा—"मिस मान कहाँ हैं ?"

"अपने कमरेमें होंगी।"

"उनके कमरेमें कोई नहीं है। वे सोई तक नहीं; कल रातको ही वे चली गई हैं। तुमने इसके बारेमें हमें क्यों नहीं बताया ?"

लड़कीके स्वरकी चुनौतीपर माँका ध्यान नहीं गया। उनका चेहरा फक पड़ गया। अपने पतिको उन्होंने मिस मानके कमरेमें भेजा।

जब तक वे नहीं लौटे, तब तक लड़कियाँ दुख और निरादरसे माँको देखती रहीं। ऐसा लगता था कि लड़कियोंकी आँखोंसे आँखें मिलानेका साहस उन्हें नहीं होता।

उनके पिता एक खुला पत्र लेकर आये। वे भी उत्तेजित थे। माँ और बाप अपने कमरमें चले गये और धीमे स्वरमें बातें करने लगे। इस बार छिप-कर सुननेमें लड़कियाँ डरती थीं। पिताको इतना उत्तेजित उन्होंने कभी देखा न था।

माँ, जब बाहर आईं, तो वे रो रही थीं। लड़कियोंने कुछ पूछना चाहा। किन्तु वे तीखे स्वरमें बोल उठीं—। "जाओ, स्कूल जाओ। नहीं तो देर हो जायेगी।"

उन्हें जाना पड़ा। चार घण्टे वे कक्षामें बैठी रहीं। उन्होंने कुछ भी नहीं सुना—कुछ भी नहीं समझा। वहाँसे भागकर वे घर आईं। घरमें प्रत्येकके मनपर एक भीषण विचार मँडरा रहा था। यहाँ तक कि नौकरोंके चेहरे भी

विचित्र-से लगते थे। माँ लड़कियोंके निकट आई और रटे रटाये संयत शब्दोंमें बोली—"बच्चियो, तुम मिस मानको अब न देखोगी। वे——"

वाक्य अधूरा ही छूट गया। लड़कियोंका भाव ऐसा उग्र, ऐसा उद्धत था कि उनकी माँ उनसे झूठ नहीं बोल सकती थीं। वह लौटकर अपने कमरेमें शरण पाने चली गई।

उसी सायंकालको ओटो आ पहुँचा। दो पत्रोंमेंसे एक उसीके नाम लिखा गया था। उसकी पुकार हुई। उसका भी चेहरा रक्तहीन लगता था। वह भी बेचैन था। उससे कोई नहीं बोला। प्रत्येक व्यक्ति उससे दूर रहा। कमरेके एक कोनेमें दोनों लड़कियोंको अन्यमनस्क बैठी देखकर वह उनके पास गया।

"इधर मत आओ, इधर मत आओ।"—दोनों उसकी ओर आतंकित दृष्टिसे देखकर चीख उठीं।

वह कुछ देर इधर उधर टहलता रहा। फिर चला गया। न तो लड़कियोंमें कोई बोला, न उन्होंने किसीसे कुछ कहा। वे लक्ष्यहीन एक कमरेसे दूसरे कमरेमें भटकती रहीं। जब कभी एक लड़की दूसरीसे मिल पड़ती तो दूसरीकी आँसूभरी आँखोंमें चुपचाप अपनी आँखें डुबो देती। लड़कियाँ अब सभी कुछ जान चुकी थीं। उन्हें मालूम था कि धोखा दिया गया है। वे जान गई थीं कि लोग कितने नीच हो जाते हैं। वे अब माता-पिताको प्यार नहीं करती थीं। उनपर विश्वास करनेको उनका जी नहीं होता था। उनका निश्चय था कि अब वे किसीका भी विश्वास नहीं करेंगी। उनके दुर्बल कन्धोंपर जीवनका समूचा भार आ बैठा। उनका चिन्तारहित, सुखी शैशव पीछे था; और अज्ञात विभीषिकायें आगे उनकी राह देख रही थीं। जो कुछ हो चुका था उसके सम्पूर्ण तत्त्व तक उनकी पहुँच तो नहीं थी; किन्तु, उससे संबंधित दुःखकी शक्तियोंको अब वे पहिचानने लगीं थीं। अपने अपने एकाकीपनमें दोनों लड़कियाँ एक दूसरेके और भी निकट आ गईं। वह आत्माओंका मूक संबन्ध था। नीरवताको भंग करनेका सामर्थ्य उनमें नहीं था। अपने बड़े बूढ़ोंसे वे मानो बहुत दूर हो गईं। उनके निकट कोई आ नहीं सकता था, क्योंकि उनकी आत्माके द्वार बन्द हो गये थे—कदाचित् कई वर्षों तक वे न खुलते। अपने आसपासकी वस्तुओंसे उन्हें विद्रोह था। क्यों कि उसी एक छोटे-से दिनमें वे सयानी बन चुकी थीं।

रातको बहुत देर हो जाने पर वे अपने सोनेके कमरेमें गईं। तब तक अकेले-पनके प्रति बच्चोंका-सा उनका भय, भयंकर काल्पनिक सम्भावनाओंकी विभीषिका, उनके सम्मुख नहीं आई थी। उस दिन कड़ाकेकी सर्दी थी। दिन भरकी गड़बड़ीमें कमरे गरम करनेकी मशीन भी बुझा दी गई थी। वे दोनों एक ही बिस्तरमें घुस गईं। एक दूसरेको साहस देनेके लिए और गर्मी पानेके लिए वे दोनों आपसमें लिपट गईं। अब तक वे इस योग्य नहीं थीं कि अपने दुखकी चर्चा कर सकें। अन्तमें छोटी लड़कीकी रुँधी हुई भावनाएँ आँसुओंके तूफानमें बह चलीं। बड़ी लड़की भी रुक-रुक कर सिसकने लगी। एक दूसरेकी बाँहोंसे लिपट कर वे रोती रहीं। अब उन्हें मिस मानके वियोगका, अथवा माँ-बापसे झगड़नेका दुख नहीं था। किन्तु इस अज्ञात विश्वमें, जिसके यथार्थ स्वरूपका ज्ञान उन्हें अभी अभी हो चुका था, उनकी-जीवन धारा किस प्रकार बहेगी, इसी एक विचारसे वे काँप उठती थीं। जिस जीवनका उनमें विकास होने जा रहा था वे उसे देख-देखकर झिझक उठती थीं। जीवन एक अँधियाले जंगलकी भाँति लगता था, जिसे उन्हें पार करना था, जिसमें भयावनी छायायें संचार कर रही थीं। किन्तु धीरे धीरे आशंकाका वेग कम होता गया, वस्तुएँ काल्पनिक लगने लगीं। सिसकियोंका जोर क्षीण पड़ने लगा। अब वे शान्तिसे साँसें लेने लगीं और उनके श्वास प्रश्वास एक लयमें उठने गिरने लगे।

फिर वे सो गईं।

अपरिचिता

'आर'—एक लब्धप्रतिष्ठ उपन्यासकार था। कुछ ही दिनोंके अवकाशमें पहाड़ोंपर गया हुआ था। प्रातःकाल तड़के ही विआना पहुँचकर उसने स्टेशन-पर एक समाचार-पत्र खरीदा। तिथिकी ओर देखा तो स्मरण हुआ आज उसका जन्म-दिन है। 'इकतालीस वर्ष!'—बिजलीकी चमककी भाँति यह विचार उसके मस्तिष्कमें होकर दौड़ गया। इस तथ्यकी जानकारीसे उसे न तो हर्ष हुआ, न विषाद। उसने एक टैक्सी बुलाई और घरकी ओर जाते समय वह सरसरी निगाहसे समाचार-पत्रको देखने लगा। नौकरने बताया कि मालिककी अनुपस्थितिमें थोड़े-से लोग मिलने आये थे, और टेलिफोनसे भी उन्हें कुछ सन्देश भेजे गये हैं। पत्रोंका एक पुलिन्दा उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। निरपेक्ष दृष्टिसे इन सबको देखकर उसने दो-एक पत्र खोल लिये, क्योंकि उनके प्रेषकोंके प्रति उसे विशेष रुचि थी। किन्तु उसने एक मोटे-से पैकेटको, जिसके ऊपर विचित्र-से हस्ताक्षरोंमें पता लिखा गया था, कुछ समयके लिए एक ओर रख दिया। आरामकुर्सीपर सुखसे बैठकर उसने चाय पी, समाचार-पत्र समाप्त किया और कुछ सूचनायें पढ़ डालीं। तब उसने, सिगार जलाकर, उस बचे हुए पत्रकी ओर ध्यान दिया।

यह एक साधारण पत्र न होकर किसी लेखकी पाण्डुलिपि-सा लगता था। स्त्रीके हस्ताक्षरोंमें जल्दी-जल्दी लिखे हुए कई दर्जन पन्ने थे। विना सोचे विचारे उसने एक बार फिरसे लिफाफेको उलट पुलट कर देखा, इसलिए कि शायद साथमें आये हुए किसी पत्रको उसने विना पढ़े ही रख दिया हो। किन्तु वैसा कोई पत्र उसे न मिला। न तो किसीके हस्ताक्षर थे और न भेजनेवालेका पता लिफाफेपर या भीतरके कागज़ोंमें था। "विचित्र बात है!" उसने सोचा और वह लेख पढ़नेमें लग गया। पहलेके शब्द शीर्षकके रूपमें थे—"तुम्हें, जो मुझे कभी नहीं जान सके!" वह परेशान-सा हो गया। क्या यह उसीको लिखा गया था, अथवा किसी काल्पनिक व्यक्तिको? उसकी

उत्सुकता एकाएक जाग्रत हो गई और उसने जो कुछ पढ़ा वह नीचे लिखा हुआ है :—

× × × ×

कल मेरा बेटा मर गया। पूरे तीन दिन और तीन रात, मैं उसके सुकुमार नन्हें-से शरीरके लिए मृत्युसे संघर्ष करती रही। उसकी दुर्बल संतप्त देह इंफ्लुएंजाके ज्वरसे काँप रही थी और इसी दशामें लगातर चालीस घण्टे मैं उसके बिस्तरके निकट बैठी रही। मैं उसके ललाटपर ठण्डी पट्टियाँ रखती जाती—दिन और रात-भर, रात और दिन-भर। उसके बेचैन नन्हे नन्हें हाथोंको मैं सँभालती रही। तीसरे दिन सायंकालको मेरा सामर्थ्य टूट गया। बिना मेरे जाने ही मेरी आँखें झँप गईं, और तीन या चार घण्टे मैं उसी काठके सख्त स्टूलपर सो गई। इसी बीच मृत्युने उसे उठा लिया। मेरा प्यारा बेटा—वह जैसे मरा था वैसे ही अपनी सँकरी चारपाईपर पड़ा हुआ है। केवल उसकी आँखें बन्द हैं—उसकी समझदार काली काली आँखें। उसके हाथ छातीपर पड़े हुए हैं। चारपाईके प्रत्येक कोनेपर चार मोमबत्तियाँ जल रही हैं। मैं उधर देख नहीं सकती—मैं यहाँसे हिल नहीं सकती। क्यों कि जब मोमबत्तियाँ टिमटिमाती हैं, तब उसके चेहरे और मुँदे हुए होठोंपरसे छाया इधर उधर दौड़ने लगती है। ऐसा लगता है मानो उसकी आकृति हिली, और मैं करीब-करीब यही कल्पना कर बैठती हूँ कि अभी मरा नहीं, वह अभी उठ बैठगा और स्पष्ट स्वरमें बालोचित कोई प्यारी-प्यारी बात कहेगा। किन्तु मैं जानती हूँ, वह मर गया। अब मैं उस ओर नहीं देखूँगी, क्यों कि बारम्बार निराश होनेके लिए मैं बार-बार आशान्वित नहीं होना चाहती। मैं तो जानती हूँ—जानती हूँ कि मेरा बेटा कल मर गया है। अब संसारमें मेरे लिए केवल तुम बचे हो। केवल तुम, जो कि मुझे नहीं जानते—तुम, जो कि निश्चिन्त होकर आनन्दका उपभोग कर रहे हो; केवल तुम, जो कि मुझे कभी न जान सके और जिन्हें प्यार करनेसे मैं कभी भी विरत न हुई।

मैंने पाँचवीं मोमबत्ती जला ली है, और टेबिलपर बैठकर तुम्हें यह लिख रही हूँ। अपने हृदयका दुख बिना किसी दूसरेसे कहे, मैं अपने मृत बालकके समीप अकेली बैठ नहीं सकती। इस भीषण अवसरपर तुम्हें छोड़कर मैं और किसे

लिखूँ? तुम, जो कि मैं सदा-सर्वदा मेरे सर्वस्व बने रहे। कदाचित् मैं अपने विचारोंको तुम्हारे सम्मुख स्पष्ट न कर सकूँ। कदाचित् तुम मेरी बात समझ ही न सको। मेरा सिर भारी हो रहा है। मेरी कनपटियाँ फटी जा रही हैं। मेरे अंग अंगमें पीड़ा हो रही है। सोचती हूँ कि मुझे ज्वर है। इस मुहल्लेमें इन्फ्लुएंजाका प्रकोप है और शायद रोगने मुझे भी छू लिया है। किन्तु आत्महत्या करनेके बजाय यदि मैं इस मार्गसे अपने बच्चेके पास पहुँच जाती हूँ, तो मुझे दुःख नहीं होगा। कभी कभी मेरी आँखोंके आगे अँधेरा छा जाता है और शायद यह पत्र मैं पूरा न कर सकूँ। किन्तु, मेरे प्यारे, एक बार केवल इसी एक बार मैं अपने सामर्थ्य-भर तुमसे कहनेका प्रयत्न करूँगी। तुम, जो कि मुझे कभी नहीं जान सके।

केवल तुम्हींसे मैं कुछ कहना चाहती हूँ। पहली ही बार मैं तुमसे सब कुछ कह देना चाहती हूँ। मेरी इच्छा है कि तुम मेरे सम्पूर्ण जीवनको जान सको। वह जीवन कि जो सदा तुम्हारा ही होकर रहा और जिसके विषयमें तुम कुछ भी नहीं जानते। किन्तु मेरी मृत्युके उपरान्त ही तुम मेरे रहस्यको जान सकोगे। तब ऐसा कोई भी व्यक्ति न होगा जिसे तुम उत्तर दे सको। तुम इसे तभी जान सकोगे जब कि यह रोग, जो मेरे शरीरको कभी शीत और कभी तापसे कँपा रहा है, मेरा अन्त ही कर दे। यदि मुझे जीवित रहना पड़ा तो मैं पत्रको फाड़ डालूँगी और सदाकी भाँति चुप्पी साधकर ही रहूँगी। यदि यह पत्र कभी तुम्हारे हाथोंमें पड़े तो तुम समझ लेना कि एक मृत नारी तुमसे अपनी जीवन गाथा कह रही है। यह उस जीवनकी कहानी है जो प्रारम्भसे लेकर स्मृतिके अन्तिम क्षणों तक तुम्हारा बनकर रहा। मेरे शब्दोंसे डरनेकी तुम्हें आवश्यकता नहीं है। मरी हुई स्त्री कुछ भी नहीं माँगती—न तो प्यार, न सहानुभूति, न सान्त्वना। मैं तुमसे केवल एक ही वस्तु माँगती हूँ कि तुम पूरी प्रतीतिसे अनुभव कर सको कि किस पीड़ासे विवश होकर मैं तुम्हारे सम्मुख अपना रहस्य खोल रही हूँ। मेरे शब्दोंपर विश्वास करो, क्यों कि मैं इससे अधिक कुछ नहीं माँगती। कोई भी माँ अपने एकमात्र शिशुकी मृत्युशय्याके निकट बैठकर झूठ नहीं लिखेगी।

मैं अपना सम्पूर्ण जीवन तुम्हें बताने जा रही हूँ। यह जीवन उस दिन तक सचमुच प्रारम्भ नहीं हुआ था जब तक कि पहली

बार मैंने तुम्हें नहीं देखा। उस दिनसे पहले जो कुछ था वह सब धुँधला और टूटाफूटा है--उस तहखानेकी भाँति कि जिसमें धूलभरी, मैली, मकड़ीके जालोंसे लिपटी हुई वस्तु और मनुष्य भरे हुए हों। वह ऐसा स्थान है जिसके साथ मेरे हृदयका कोई सम्बन्ध नहीं। जब तुम मेरे जीवनमें आये, मैं तेरह वर्षकी थी। मैं उस घरमें रहती थी जिसमें आजकल तुम रहते हो—उसी घरमें, जहाँ तुम यह पत्र, मेरे जीवनकी अन्तिम साँस, पढ़ रहे हो। मैं उसी मंजिलमें रहती थी, क्यों कि हमारे फ़्लैटका दरवाजा तुम्हारे दरवाजेके ठीक सामने पड़ता था। तुम अवश्य ही हम लोगोंको भूल गये होगे। फटे हुए मातमी कपड़ोंसे लिपटी अकाउण्टैण्टकी विधवा और उसकी दुबली-पतली अधखिली लड़कीको तुम कई दिन पहले ही भूल चुके होगे। हम लोग चुपचाप रहनेवाले जीव थे। दरिद्र कुलीनोंकी यही विशेषता होती है। यह तो असम्भव है कि तुमने हमारा नाम सुना हो, क्यों कि हमारे दरवाजेपर तख्ती नहीं लगी थी और कभी कोई हमसे मिलने नहीं आता था। इसके अतिरिक्त यह बहुत पुरानी बात हो गई है--पन्द्रह या सोलह सालकी। असम्भव है कि तुम्हें स्मरण हो। किन्तु मैं कितने आवेगसे प्रत्येक वस्तुको याद रखती हूँ मानो वह सब अभी अभी घटित हुआ हो। मुझे वह दिन, वह क्षण याद है, जब मैंने पहले पहल तुम्हें देखा। यह कैसे हो सकता है कि मुझे स्मरण न हो, क्यों कि संसारका प्रारम्भ मेरे लिए उसी दिन तो हुआ था। धैर्य रक्खो कुछ देर, और मुझे आदिसे अन्त तक सब कुछ कह लेने दो। थोड़े-से समय तक ही मेरी बात सुनते सुनते तुम ऊब न जाना, क्यों कि अपनी तमाम जिन्दगी-भर मैं तुम्हें प्यार करते करते नहीं ऊबी थी।

तुम्हारे आनेसे पूर्व जो लोग उस फ़्लैटमें रहते थे, बड़े झगड़ालू थे। यद्यपि वे लोग स्वयं भी निर्धन थे, फिर भी हमारी दरिद्रताके कारण वे हमसे घृणा करते थे, क्योंकि हम लोग उनसे दूर-ही-दूर रहा करते थे। पुरुष शराब पीनेका आदी था और अपनी पत्नीको पीटा करता था। बहुधा आधी रातको कुर्सियोंकी खड़खड़ाहट और तश्तरियोंके फूटनेकी आवाजसे हम जाग पड़ते। एक बार पुरुषने स्त्रीको इतना पीट दिया कि रक्त बहने लगा। वह दौड़ी हुई नीचे पहुँच गई। उसके बाल अस्तव्यस्त थे, उड़ रहे थे। शराबमें चूर उसका पति पीछे था—गालियाँ बक रहा था। आखिर

तमाम लोग सीढ़ीके पास इकट्ठे हो गये, और उन्होंने धमकी दी कि पुलिस बुलायेंगे। मेरी माँ उन लोगोंसे कुछ भी सम्पर्क नहीं रखती थी। उनके बच्चोंके साथ खेलनेकी मुझे अनुमति नहीं थी और इसी लिए वे लोग मुझपर अपना बुखार उतारनेका अवसर ढूँढ़ा करते थे। सड़कपर मुझसे भेंट होती तो वे मुझे गालियाँ देते। एक बार बरफकी गेंद बनाकर उन्होंने मुझपर फेंकी, वह इतनी सख्त थी कि मेरा माथा फट गया। उस मकानमें जो लोग रहते थे, सभी उनसे घृणा करने लगे। हमने उस दिन खुली साँस ली जब न जाने क्या हुआ कि उन्हें मकान छोड़ना पड़ा—मेरा अनुमान है कि शायद वह व्यक्ति चोरीमें पकड़ा गया था। कुछ दिनोंके लिए दरवाजे पर 'किराए–पर खाली' ये शब्द लगे रहे। तब एक दिन वे हटा दिये गये और गुमाश्तेने हमें बताया कि किसी लेखकने मकान भाड़ेपर ले लिया है। वह अविवाहित है और इसलिए यह तो निश्चित है कि वह शान्त स्वभावका व्यक्ति होगा और तभी मैंने पहली बार तुम्हारा नाम सुना।

कुछ दिनोंके पश्चात्, वह मकान समूचा साफ किया गया, रंग पोतनेवाले और सजावट करनेवाले आये। यह सच है कि वे काफी शोर करते थे, किन्तु मेरी माँ प्रसन्न थीं। क्यों कि वे कहती थीं कि इससे पड़ोसमें जो अशान्ति रहा करती थी, वह समाप्त हो जायेगी। इस उथल-पुथलके बीच मैंने तुम्हें नहीं देख पाया। सजावट और सामान इत्यादि रखनेवालेका काम तुम्हारा नौकर देखा करता था। वह छोटे कदका भूरे बालोंवाला व्यक्ति था। उसका व्यवहार इतना गंभीर था कि लगता उसे सम्भ्रान्त घरानोंमें नौकरी करनेका अच्छा अभ्यास है। वह प्रत्येक वस्तुका प्रबन्ध बड़ी चतुरतासे करता था और हम सब लोगोंपर उसका बड़ा प्रभाव पड़ा। हमारे देहाती फ्लैट्सूमें उच्च कोटिके इस प्रकारके नौकरका आना एक नई बात थी। इसके अतिरिक्त वह अत्यन्त विनम्र भी था, किन्तु साथ ही साथ दूसरे ऐरेगैरे नौकर चाकरोंसे लल्लो-चप्पो करना उसे पसन्द नहीं था। प्रारम्भसे ही उसने मेरी माँके साथ आदरपूर्ण व्यवहार किया, मानो वे किसी सामन्तकी पत्नी हों। मुझ छोटी-सी लड़कीसे भी वह नम्रतासे पेश आता था। तुम्हारा नाम यदि कभी उसे लेना पड़े तो वह ऐसे लिया करता था कि मानो तुम्हारे प्रति उसके भाव परिवारके अभिभावककी भाँति हैं। इसी लिए मैं बूढ़े जॉनको अच्छा मानती थी, यद्यपि कभी कभी मुझे उससे ईर्ष्या भी होती।

क्योंकि निरन्तर तुम्हें देखने और तुम्हारी सेवा करनेका विशेषाधिकार उसीको प्राप्त था।

क्या तुम जानते हो कि मैं ये तुच्छ बातें तुमसे क्यों कह रही हूँ ? मैं तुम्हें यह समझाना चाहती हूँ कि किस प्रकार प्रारम्भसे ही, जब मैं एक लज्जाशील डरपोक बच्ची ही थी, तुम्हारे व्यक्तित्वका मुझपर शक्तिशाली प्रभाव पड़ने लगा था। इससे पहले कि मैंने तुम्हें देखा, तुम्हारे मस्तकके चारों ओर मैंने काल्पनिक आलोकका वृत्त खींच दिया। मेरे लिए तुम धन, विस्मय, और रहस्यके वातावरणमें छिपी एक पहेली थे। वे लोग, जो संकुचित जीवन बिताते हैं, उनपर नयापन सरलतासे हावी हो जाता है। और उस छोटे-से देहाती मकानमें हम लोग उत्कण्ठासे तुम्हारे आगमनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। मेरे अपने विषयमें तो जब एक दिन सायंकालको मैं स्कूलसे लौट कर आई और मैंने मकानके आगे फरनीचरकी गाड़ी देखी, तो मेरी उत्सुकता चरम सीमापर पहुँच गई। भारी भारी सामान तो ऊपर जा चुका था और फरनीचर ले जानेवाले छोटी मोटी वस्तुएँ बटोर रहे थे। मैं दरवाजेपर खड़ी खड़ी सब कुछ देखती रही, क्यों कि तुम्हारी प्रत्येक वस्तु उन सब वस्तुओंसे विभिन्न थी, जिनसे मेरा प्रतिदिनका परिचय था। वहाँ भारतकी बनी मूर्तियाँ, इटलीकी प्रस्तर प्रतिमाएँ और बड़ी-बड़ी चमकीली रंगीन तसवीरें थीं। सबके अन्तमें पुस्तकें आईं। ऐसी सुन्दर पुस्तकें और इतनी अधिक कि जिसकी सम्भावना कभी मैंने सोची ही न थी। वे दरवाजेके पास एक स्तूप बना कर रख दी गईं। नौकर वहाँ खड़ा था और बड़ी सावधानीसे उन्हें एक-एक करके पोंछता जाता था। मैं ललचाई आँखोंसे उस ढेरको बढ़ते देख रही थी। नौकरने मुझे वहाँसे हटाया तो नहीं किन्तु वहीं रहनेके लिए आग्रह भी नहीं किया। इसलिए उनमेंसे एकाधको छूनेमें भी मुझे डर लगता था। वैसे, मैं चाहती थी कि चमड़ेकी कोमल जिल्दोंको अँगुलियों-से स्पर्श कर देखूँ। झिझकते हुए मैंने कुछ पुस्तकोंके शीर्षक पढ़े। उनमेंसे बहुतसे फ्रेञ्च और अंग्रेजीमें थे, और कुछ ऐसी भाषाओंमें जिनका मैं एक शब्द भी नहीं जानती। मैं वहाँ घण्टों खड़ी खड़ी देखती रहती, किन्तु मेरी माँने मुझे पुकारा और मुझे अन्दर जाना पड़ा।

मैंने तुम्हें अभी देखा तो न था, किन्तु उस सायंकालको मैं तुम्हारे ही विष-

यमें सोचती रही। मेरे पास सस्ती दफ्तियोंमें बँधीं कोई एक दर्जन किताबें थीं। मैं संसारमें सबसे अधिक उन्हींको चाहती थी, और निरन्तर उन्हें पढ़ती और पुनरावृत्ति करती रहती थी। अब मुझे विस्मय हो रहा था कि वह व्यक्ति कैसा होगा जिसके पास इतनी ज्यादा किताबें हैं, जो इतना अधिक पढ़ता है और इतनी भाषायें जानता है। इतनी पुस्तकोंके विचारसे मेरे हृदयमें एक अलौकिक श्रद्धा जाग उठी। मैंने मस्तिष्कमें तुम्हारा चित्र खींचनेका प्रयत्न किया। तुम्हें एक बूढ़ा आदमी होना चाहिए, चश्मा पहने हुए और हमारे भूगोलके अध्यापककी भाँति लम्बी, सफेद दाढ़ी रक्खे हुए। किन्तु उनसे अधिक दयालु, अधिक सुरूप और अधिक सज्जन। मैं नहीं जानती कि मैंने यह अनुमान क्यों किया कि तुम सुन्दर हो, क्यों कि मैंने तो कल्पना की थी कि तुम एक वयोवृद्ध मनुष्य हो। उसी रातको पहले पहल मैंने तुम्हें स्वप्नमें देखा।

दूसरे दिन तुम आ गये। यद्यपि मैं सतर्क थी फिर भी तुम्हारे चेहरेकी झलक तक नहीं देख पाई। मेरी इस असफलतासे उत्सुकता और भी अधिक दीप्त हो उठी। आखिर तीसरे दिन मैंने तुम्हें देखा। अपनी बालसुलभ कल्पनामें मैंने जिस बूढ़े दादाका चित्र अंकित कर रक्खा था, तुम उससे कितने भिन्न थे, यह देखकर मेरे विस्मयकी सीमा न रही। मैंने तो चश्माधारी किसी भलेमानुस बूढ़की प्रत्याशा कर रक्खी थी; लेकिन तुम तो ऐसे दीखे, जैसे तुम आज भी दिखाई देते हो। तुम उन व्यक्तियोंमेंसे हो जिनपर बीते हुए वर्ष अपना चिह्न नहीं छोड़ जाते। तुम हलके बादामी ट्वीडका सुन्दर सूट पहने हुए थे, और बालकोंकी-सी सहज गतिसे दो-दो सीढ़ियोंपर एक साथ पाँव रखते हुए तुम दौड़कर ऊपरी मंजिलमें चले गये—तुम्हारी चाल-ढालमें सदा यही विशेषता रही है। टोप तुम्हारे हाथमें था, इसलिए एक अनिर्वचनीय आश्चर्यके साथ मैं तुम्हारे उज्ज्वल और सुन्दर मुखको, तथा चमकीले बालोंको देखती ही रह गई। तुम्हारी सुन्दर, लचीली, छरहरी मूर्ति तो मेरे लिए मूर्तिमान् आश्चर्य ही थी। यह कितनी विचित्र बात है कि उस पहले क्षणमें ही मैंने स्पष्टरूपसे वह रहस्य जान लिया, जिसे मैं और दूसरे व्यक्ति निरन्तर तुममें देखकर चकित होते रहे हैं। मैंने जान लिया कि तुम एक ही साथ दो व्यक्तित्वोंके मिश्रण हो। तुम एक उत्साही प्रसन्नचित्त युवक हो जो खेल-कूदमें अपना मन लगाये रहता है, किन्तु साथ-ही-साथ, तुम्हारी कलाका जहाँ सम्बन्ध है, तुम एक खूब

पढ़े-लिखे उच्च कोटिके सुसंस्कृत गम्भीर व्यक्ति हो, और अपने उत्तरदायित्वका तुम्हें सूक्ष्म ज्ञान है। विना सोचे विचारे ही मैंने देखा कि तुम दो प्रकारके जीवन बिताते हो। उनमेंसे एक तो वह है जिसे सब जानते हैं और जो संसारके सामने सदा प्रत्यक्ष रहता है; और दूसरा जीवन संसारसे विमुख है, जिसे एकमात्र तुम्हीं जानते हो। तेरह वर्षकी मैं, जो कि तुम्हारे आकर्षणके इन्द्रजालमें पड़ गई थी, तुम्हारे जीवनके रहस्यको पा चुकी थी। पहली ही दृष्टिमें मैंने तुम्हारे द्विविध जीवनके बीचकी गहरी खाई देख ली थी।

क्या तुम आज समझ सकते हो कि मुझ जरा-सी बच्चीके लिए तुम कैसी आश्चर्यकारक आकर्षक पहेली बन गये थे? मेरे समक्ष एक मनुष्य था जिसके विषयमें प्रत्येक व्यक्ति आदरसे बोलता था, क्योंकि वह पुस्तकें लिखता था और इस बड़े भारी संसारमें प्रसिद्धि पा चुका था। और जब वह अकस्मात् प्रकट हुआ तो देखा कि वह तो लड़कों-सा प्रसन्नचित्त पच्चीस वर्षका नवयुवक है। यह तो मुझे कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि उस दिनसे तुम्हीं एकमात्र विषय थे कि जिसमें मेरी रुचि शेष हो। तेरह वर्षकी लड़कीमें जो संभव थी, उस भक्तिको लेकर उसी दिनसे मेरा जीवन तुम्हारे ही चारों ओर मँडराने लगा। मैं तुम्हें देखती रही। तुम्हारी आदतोंको और उन लोगोंको, जो तुमसे मिलने आया करते थे, परखती रही। इन सारी बातोंसे तुम्हारे व्यक्तित्वके प्रति मेरी उत्कंठा घटनेके बजाय और भी बढ़ गई। तुम्हारी प्रकृतिके दोनों रूप तुम्हारे अभ्यागतोंकी विभिन्नतामें साफ साफ प्रतिफलित होते दिखाई देते थे। उनमेंसे कुछ तो नवयुवक थे। तुम्हारे निजी बन्धु, असावधानीसे कपड़े पहिने हुए विद्यार्थी लोग, जिनके साथ तुम हँसते, गीत गाया करते। उनमेंसे कुछ महिलाएँ होतीं, जो मोटरोंमें आया करतीं। एक बार ओपेराका संचालक तुमसे मिलने आया। उस महान् व्यक्तिको मैंने इससे पहले केवल एक बार दूरसे देखा था। उनमें कुछ लड़कियाँ भी होतीं—छोटी लड़कियाँ जो अभी कमर्शियल स्कूलोंमें ही पढ़ती थीं—वे आतीं और लजाती हुई दरवाजेके भीतर चली जातीं। तुम्हारे अभ्यागतोंमें अधिकतर महिलाएँ होती थीं। मैंने इसपर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया, और उस दिन भी नहीं सोचा जब स्कूलको जाते समय मैंने एक पर्दानशीन महिलाको तुम्हारे फ्लैटसे निकलते हुए देखा था। तब मैं केवल तेरह वर्षकी थी, और अपनी अविकसित अवस्थामें मैं

यह नहीं जान सकी थी कि जिस तीव्र उत्कंठासे मैं तुम्हारी गतिविधिका निरीक्षण करती हूँ वह प्रेममें परिणत हो चुकी है ।

किन्तु वह दिन और वह क्षण मुझे याद है जब मैंने जान बूझकर अपना सम्पूर्ण हृदय तुम्हें अर्पित कर दिया । मैं अपनी एक सहपाठिनीके साथ घूमकर लौटी थी, और हम लोग दरवाजेपर खड़ी-खड़ी बातें कर रही थीं । एक मोटर आकर रुकी । तुम उछलकर बाहर निकले—उसी उतावली और लचीली गतिसे, जो सदा मुझे मोहित करती रही है—और मकानके भीतर जाने लगे । एक आकस्मिक प्रेरणासे मैंने आगे बढ़कर तुम्हारे लिए दरवाजा खोल दिया । मैं तुम्हारी राहमें आ गई और हम दोनों टकराते टकराते बचे । तुमने मेरी ओर एक विनम्र, नजाकत भरी, सर्वग्रासिनी दृष्टिसे देखा । वह तुम्हारी दृष्टि ही मानो आलिंगन थी । तुम मुझे देखकर मृदुतासे मुसकराये—उस भावके लिए ' मृदुता ' ही एकमात्र शब्द है । और तुम बोले—नम्रतासे, नहीं-नहीं, प्रतीतिसे—" अत्यन्त धन्यवाद ! "

बस । किन्तु उसी क्षणसे, उसी समयसे, जब कि तुमने इतनी सहृदयतासे, कोमलतासे मेरी ओर देखा, मैं तुम्हारी हो गई । बादमें, थोड़े ही समयके उपरान्त, मुझे यह जानना भी बाकी था कि प्रत्येक स्त्रीको, जो तुम्हारे सम्पर्कमें आती है, देखनेका तुम्हारा ढंग सदा यही रहा है । वह एक लिपट जानेवाली—खींचनेवाली दृष्टि थी । एक साथ ही अपनेमें समेट कर नग्न कर देनेवाली एक जन्मजात व्यभिचारीकी दृष्टि थी । प्रत्येक दुकानदार लड़कीको, प्रत्येक नौकरानीको जो तुम्हारे लिए दरवाजा खोलती थी, तुम इसी दृष्टिसे देखा करते थे । इसलिए नहीं कि तुम हृदयसे यह चाहते हो कि ये स्त्रियाँ सब तुम्हारी हो जाँय । किन्तु तुम्हारे विचार स्त्रियोंके प्रति कुछ ऐसे हैं कि तुम्हारे विना जाने ही, जब कभी तुम्हारी आँखें किसी स्त्रीपर पड़ती हैं, तो वे जल उठती हैं—पिघल पड़ती हैं । तेरह वर्षकी अवस्थामें मुझे इतना ज्ञान तो न था; और मुझे लगा जैसे मैंने आगसे नहा लिया हो । मैंने तो यही विश्वास किया कि तुम्हारी आँखोंकी वह मृदुता मेरे लिए है—केवल मेरे ही लिए, और उसी क्षण उस अर्द्ध विकसित लड़कीमें नारी जाग उठी—वह नारी जो भविष्यमें सदा तुम्हारी होकर रहनेको थी ।

" वह कौन था ? " मेरी सखीने पूछा । पहले तो मैं उत्तर नहीं दे पाई ।

तुम्हारे नामका उच्चारण करना ही मुझे असम्भव लगा। अकस्मात् ही वह नाम मेरे लिए पवित्र वस्तु बन गया था और मैं उसे गुप्त रखना चाहती थी। मैंने झेंपकर कहा—"अरे जाने भी दो, कोई है जो इसी मकानमें रहता है।"

"तो, जब उसने तुम्हें देखा, तुम लजाकर अंगारे-सी लाल क्यों पड़ गईं?"—एक उत्सुक बच्चेकी-सी ईर्ष्यासे मेरी सह-पाठिनीने पूछा।

मुझे लगा कि यह मेरा उपहास कर रही है और मेरे रहस्यको आगे बढ़कर छू लेना चाहती है। इससे मेरे गाल पहलेसे भी अधिक रंग गये। मैं जान बूझकर उसके प्रति उद्धत हो उठी। "तुम दुष्ट हो—मूर्ख हो!"—मैंने क्रोधमे भरकर कहा। मैं तो चाहती थी कि उसका गला घोंट दूँ। वह चिढ़ा-चिढ़ा कर हँसने लगी, और असमर्थ क्रोधके मारे मेरी आँखोंमे आँसू भर आये। मैं उसे वहीं दरवाजेपर छोड़कर ऊपर भाग गई।

तबसे मैंने निरन्तर तुम्हें प्यार किया है। मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि स्त्रियोंसे यह सुननेकी तुम्हें टेव पड़ गई है कि वे तुम्हें प्यार करती हैं। किन्तु मुझे विश्वास है कि जैसा मैं करती रही—और करती हूँ—वैसे ही गुलामोंकी भाँति, कुत्तेकी-सी भाँति तुम्हें किसीने प्यार नहीं किया होगा। अबोध शिशुके अदृश्य प्रेमकी समानता कोई नहीं कर सकता। वह आशा-रहित और सेवा भावसे परिपूर्ण रहता है, उसमें धैर्य और वासना दोनों मिली रहती हैं। वह ऐसी वस्तु है कि जिसे सयानी स्त्रीका कामुक स्वार्थपूर्ण प्रेम नहीं पा सकता। इस प्रकारकी भावना एकाकी बच्चोंके अतिरिक्त और कहीं नहीं पनप सकती। दूसरे लोग अपनी भावनाओंको संगी-साथियोंपर विखेरते रहते हैं—गुप्त वार्तालापोंमें उनपर टीका टिप्पणी करते हैं। प्रेमके विषयमें उन्होंने खूब सुना है—पढ़ा है और वे जानती हैं कि प्रेम सबको प्राप्त होता है। वे खिलौनेकी भाँति इससे खेलती हैं। जिस प्रकार कोई लड़का पहली सिगरेटका प्रदर्शन करता है, वैसे ही वे भी अपने प्रेमका प्रदर्शन करती हैं। किन्तु मेरा कोई विश्वासपात्र न था। न तो मुझे सिखाया गया था, न चेतावनी ही दी गई थी। मुझे अनुभव न था और न कोई आशंका थी। मैं तो दौड़ी अपने भाग्यसे मिलने। मेरे अन्दर जो आन्दोलन हो रहा था, या जो कुछ मेरे साथ घट रहा था वह सब तुम्हींपर, तुम्हारे प्रति मेरी कल्पनाओंपर, केन्द्रित था। मेरे पिता बहुत पहले ही मर चुके

थे। मेरी माँ अपने कष्टोंके अतिरिक्त और किसी विषयपर सोच ही नहीं सकती थीं। एक सीमित आमदनीके भीतर तमाम खर्चका प्रबन्ध करना ही उनके लिए कठिन चिन्ताका विषय था। सो, बढ़ती हुई अवस्थावाली लड़कीसे उनकी कोई समानता नहीं थी। मेरी स्कूलकी साथिनें, जिनका ज्ञान अधूरा था और जो अर्द्ध पतित-सी थीं, मुझे अच्छी नहीं लगती थीं। जिस वस्तुको मैं सर्वोच्च भावना माना करती हूँ उसके प्रति उनका परिहास पूर्ण दृष्टिकोण था। जो आवेग मेरे अन्दर उमड़ रहा था, और जिसे मेरी उम्रकी दूसरी लड़कियाँ चारों ओर फैला देती हैं, वह केवल तुम्हींपर केन्द्रित हो गया था। तुम मेरे लिए ऐसे हो गये, जैसे—मैं क्या कहूँ, किस उपमाके द्वारा अपनी भावनाओंको व्यक्त करूँ? तुम मेरे लिए मेरा समग्र जीवन बन गये। मेरे लिए संसारमें ऐसी किसी भी वस्तुका अस्तित्व नहीं रह गया, जिसका तुमसे कोई सम्बन्ध न हो। ऐसी वस्तुका मेरे लिए कोई अर्थ ही न होता, जो तुम्हारे कामकी न हो। तुमने मेरी प्रत्यक वस्तुमें परिवर्तन ला दिया। अब तक स्कूलके प्रति मैं उपेक्षा रखती आई थी और इसीलिए मैं कभी अच्छे नम्बरोंसे पास नहीं हुई। किन्तु अबकी अकस्मात् ही मैं प्रथम उत्तीर्ण हुई। मैं बहुत रात तक पुस्तकके बाद पुस्तक पढ़ा करती। क्यों कि मैं जानती थी कि तुम पुस्तकोंके प्रेमी हो। जब मैंने हठ करके पिआनो सीखना प्रारम्भ किया तो मेरी माँके आश्चर्यकी सीमा न रही। क्यों कि मैं जानती थी कि संगीत तुम्हें अच्छा लगता है। मैं अपने कपड़ोंपर टाँके लगाती, उन्हें मरम्मत करती, इसलिए कि तुम्हें साफ-सुथरे लगें। यह सोच-सोच कर मुझे असह्य यंत्रणा होती कि मेरे स्कूलके गाउनमें एक चौकोर पैबन्द लगा हुआ है। यह गाउन मेरी माँके पुराने कपड़ेसे काटकर बनाया गया था। मुझे डर था कि तुम यह देख लोगे और मुझसे घृणा करने लगोगे। सीढ़ियोंपर उतरते-चढ़ते समय मैं उस पैबन्दको किताबोंके बस्तेसे ढक लेती। मैं मारे भयके काँप उठती कि कहीं तुम्हारी दृष्टि उसीपर न पड़ जाय। आह; कैसी मूर्ख थी मैं? तुमने तो फिर मेरी ओर देखा तक नहीं।

फिर भी मेरे दिन तुम्हारी प्रतीक्षामें, तुम्हें देखते रहनेमें ही बीतने लगे। हमारे दरवाजेमें एक सूराख बना हुआ था। उससे होकर तुम्हारे दरवाजेकी झलक मिल जाया करती थी। मुझपर हँसो मत, मेरे प्यारे! आज भी, उस छेदके पास मैंने जो समय बिताया, मैं उसके लिए लज्जित नहीं हूँ। हॉलमें बरफ-

की-सी ठंडक रहती थी, इसलिए वहाँ जाकर मैं माँके हृदयमें सन्देह उगाना नहीं चाहती थी। मैं हाथमें पढ़नेकी पुस्तक लेकर, उन कई महिनों और वर्षों तक, पूरी दोपहर उसी छेदसे देखा करती। मेरा मन वीणाके तारकी भाँति उत्तेजित रहता और तुम्हारे सामीप्यसे उसमें कम्पन उत्पन्न होने लगता। मैं तो सदा तुम्हारे निकट, सदा उत्तेजित ही रही। मेरी इस उत्तेजनाका तुम्हें उसी प्रकार ज्ञान न थ। जिस प्रकार तुम्हारी जेबमें रहनेवाली घड़ीकी कमानीका तनाव तुम्हें अनुभव नहीं होता। फिर भी वह घड़ी तुम्हारे समयका ईमानदारीसे जमा-खर्च रखती है, तुम्हारी पदध्वनियोंके ही साथ-साथ उसमें भी अश्रुत स्पन्दन होता है और उसे केवल इतना ही प्रत्यय मिलता है कि हजारों-लाखों क्षणोंके बीच तुम एक ही क्षणके लिए उसे देख-भर लेते हो। मैं तुम्हारे विषयकी प्रत्येक वस्तुसे अवगत थी—तुम्हारी आदतोंसे, उन नेकटाइयोंसे जिन्हें तुम पहिनते थे; मैं तुम्हारे पहिननेके प्रत्येक सूटको पहिचानने लगी थी। शीघ्र ही मैं तुम्हारे अभ्यागतोंसे परिचित हो गई, और उनमें कुछ मुझे भले लगते और कुछ बुरे। तेरहवें बर्षसे सोलहवे बर्ष तक, मेरा प्रत्येक क्षण तुम्हारा ही था। मैंने कौन-कौन-सी मूर्खताएँ नहीं कीं? मैंने दरवाजेके उस हैण्डलको चूमा, जिसे तुमने छुआ था। मैंने तुम्हारा फेंका हुआ सिगरेटका टुकड़ा उठा लिया था। मेरे लिए वह पवित्र था क्यों कि तुम्हारे होंठ उसपर लगे थे। सायंकालको सैकड़ों बार, कभी एक कभी दूसरा बहाना करके, मैं बाहर सड़कपर चली जाती। यह देखनेके लिए कि तुम्हारे किस कमरेमें बत्ती जल रही है, ताकि तुम्हारी अदृश्य उपस्थितिका मुझे भरपूर आभास हो सके। जब तुम कहीं बाहर चले जाते तो उन हफ्तोंमें जीवन अर्थ-शून्य हो जाता। जॉनको तुम्हारा सन्दूक बाहर ले जाते हुए देखती तो मेरे हृदयकी धड़कन बन्द होने लगती। मेरी मति भ्रष्ट हो जाती; मैं ऐसी ऊब जाती मानो मर रही होऊँ। मेरा मन अप्रसन्न रहता और इसी दशामे किंकर्त्तव्यविमूढ़ मैं इधर-उधर भटकती रहती। मुझे सतर्क रहना पड़ता कि कहीं मेरी अश्रुसिंचित आँखें मेरी निराशा माँपर प्रकट न कर दें।

मैं जानती हूँ कि जो कुछ मैं यहाँ लिख रही हूँ वह भोंड़ी विषमताओंका, किसी लड़कीकी अनर्गल कल्पनाओंका विवरण है। मुझे इनके लिए लज्जित होना चाहिए, किन्तु मैं लज्जित नहीं हूँ; क्यों कि मेरा प्रेम इतना

शुद्ध, इतना तीव्र, कभी नहीं हो पाया, जितना उस समय। यद्यपि तुम मुझे जानते तक नहीं थे, फिर भी मैं कई घंटे, कई दिन, तुमसे केवल यही कहनेमें व्यतीत कर देती कि किस अदृश्य रूपसे मैं तुम्हारे साथ जिया करती थी। सचमुच तुम मुझे नहीं जानते थे। क्योंकि यदि सीढ़ियोंपर तुमसे कभी मेरी भेंट होती और साक्षात्कारसे बचनेका कोई उपाय न होता, तो सिर नीचा करके मैं शीघ्रतासे तुम्हारे पाससे होकर निकल जाती। मैं डरती थी तुम्हारी ज्वलन्त दृष्टिसे। मैं उस व्यक्तिकी भाँति भाग निकलती, जो झुलसनसे बचनेके लिए पानीमें कूद पड़ता है। मैं घण्टों तक, दिनों तक तुमसे उन वर्षोंकी बात कह सकती हूँ, जिन्हें तुम बहुत पहले भूल चुके हो। मैं तुम्हारे जीवनका पूरा पंचाग तुम्हारे सम्मुख खोल सकती हूँ। किन्तु इस वर्णनसे मैं तुम्हें थकाऊँगी नहीं। किन्तु उन्हीं दिनोंकी एक बात तुमसे कहना चाहती हूँ। वह मेरे शैशवकी सर्वोत्तम अनुभूति है। तुम चाहे इसे कितना ही तुच्छ समझो किन्तु इसपर हँसना मत। क्योंकि मेरे लिए तो उसका मूल्य असीमित है।

उस दिन इतवार रहा होगा। तुम कहीं गये हुए थे। तुम्हारा नौकर फ़ेटक खुले दरवाज़ेसे भारी भारी कालीनोंको झाड़कर, खींचते हुए अन्दर ले जाना चाहता था। वे उसके सामर्थ्यके बाहर थे, इसलिए मैंने साहस बटोर कर उससे पूछा कि मैं उसे सहायता दूँ। उसे आश्चर्य तो हुआ, किन्तु उसने अस्वीकार नहीं किया। क्या मैं किसी तरह तुम्हें अपना वह आतंक, वह श्रद्धा, समझा सकती हूँ, कि जिन्हें लेकर मैंने तुम्हारे निवासमें प्रवेश किया—तुम्हारा संसार देखा—वह टेबिल जहाँ तुम बैठनेके आदी थे, वहाँ नीले बिल्लौरके फूलदानमें कुछ फूल रक्खे हुए थे—और वे तसवीरें और पुस्तकें ! मैंने केवल एक ही बार छिपकर उधर देख लिया। इसमें तो मुझे सन्देह नहीं कि यदि मैं कहती तो भलामानुस जॉन मुझे और भी कुछ देखने देता। किन्तु वहाँके वातावरणको ग्रहण करनेके लिए इतना पर्याप्त था। सोते जागते जिन अनन्त स्वप्नोंको मैं देखा करती थी, उन्हें पुष्ट करनेके लिए यही काफी था।

यह लघु क्षण मेरे बचपनका सर्वाधिक सुखी समय था। मैं यह तुमसे कहना चाहती थी, ताकि तुम, जो मुझे नहीं जानते, आखिर इतना तो समझने लगोगे कि किस प्रकार मेरा जीवन तुमपर अवलम्बित था। मैं तुम्हें उस

क्षणका, तथा उसके उपरान्त जो भीषण समय उपस्थित हुआ, उसका विवरण दना चाहती थी। मैं तुम्हें समझा चुकी हूँ कि तुम्हारे ही विषयमें सोचते–सोचते ओर दूसरी बातोंकी ओर मेरा ध्यान ही नहीं जाता था। मैं अपनी माँके कार्यों ओर अपने अभ्यागतोंकी ओरसे उपक्षा रखने लगी। मैं यह भी नहीं देख सकी कि एक अधेड़ सज्जन, जो इन्सब्रुकके व्यापारी थे और मेरी माके दूरके रिश्तेदार लगते थे, उन दिनों अक्सर हमारे यहाँ आया करते और बहुत दिन वहीं रहा करते। कभी कभी वे माँको थियेटर ले जाते और मुझे इससे बड़ी प्रसन्नता होती; क्यों कि, मैं अकेली रह जाती, तुम्हारे प्रति मेरी विचारपरम्परामें कोई व्याघात न होता। मेरा एक मात्र मनोरंजन तुम्हें देखते रहना था, और मेरे इस कार्यमें कोई रुकावट न पड़ती। किन्तु एक दिन मेरी माँने मुझे बुलाया और बड़े ही औपचारिक ढंगसे कहा कि उन्हें मुझसे कुछ परामर्श करना है। मेरा चेहरा फ़क़ हो गया और कलेजा धक-धक करने लगा। क्या उन्हें कुछ सन्देह होने लगा था? क्या मेरे हा किसी कार्यसे उनपर मेरा रहस्य प्रकट हो गया? मेरा पहला विचार तुम्हारे और अपने रहस्यके विषयमें था—उस वस्तुके विषयमें जो कि मेरे और तुम्हारे जीवनके बीच संबन्ध बनाये हुए थी। किन्तु मेरी माँ स्वयं भी सिटपिटा रही थीं। मुझे चूमनेका उनका स्वभाव कभी नहीं रहा। किन्तु अबकी उन्होंने कई बार मुझे चूमा। मुझे अपने साथ सोफेपर ले गईं। रुक रुक कर, शरमाए हुए चेहरेसे कहने लगीं कि उनके सम्बन्धी महाशय, जो कि स्वयं भी विधुर थे, उनके साथ विवाह करना चाहते हैं। केवल मेरे ही कल्याणके लिए उन्होंने इस प्रस्तावको स्वीकार करनेका निश्चय कर लिया है। मैं मोर आशंकाके काँप उठी। मैं तो केवल तुम्हारे ही विषयमें सोच रही थी। "हम लोग रहेंगे तो यहीं न?" मैंने टूटे-फूटे स्वरमें पूछा। "नहीं हम लोग इन्सब्रुक जा रहे हैं। वहाँ फर्डिनांडका एक बढ़िया मकान है।" मैंने और कुछ नहीं सुना। आँखोंके आगेकी प्रत्येक वस्तुपर अंधकार छा गया। बादमें मुझे ज्ञात हुआ कि मैं बेहोश हो गई थी। मैंने ऐंठते हुए दोनों हाथ भींच लिए थे और सीसेके ढेलेकी भाँति मैं फर्शपर गिर पड़ी थी। अगले कुछ दिनोंमें क्या होता रहा, मैं वह सब नहीं कह सकती। किस प्रकार सामर्थ्य-हीन बालिका, मैं, अपने शक्तिमान् गुरुजनोंके प्रति विद्रोह करती रही। इस समय

भी जब मैं उसे सोचती हूँ तो मेरा हाथ काँपने लगता है। मैं कठिनतासे यह लिख पाती हूँ। मैं वास्तविक भेद तो खोल नहीं सकती थी, इसलिए मेरा विरोध-प्रदर्शन एक बुरे स्वभावकी धृष्टता-सी देखती थी। फिर किसीने मुझसे कुछ नहीं कहा। मेरे पीठ-पीछे ही सारे प्रबन्ध होते रहे। उसी समय जब मैं गई होती, सारे काम किये जाते। जब जब मैं घर आती तो प्रत्येक बार एक नई चीज़ बेच दी गई होती या कहीं हटा दी जाती। मेरा जीवन टुकड़े टुकड़े होकर मिटता जा रहा था। आखिर एक दिन, जब मैं भोजन करने घर आई, तो फरनीचर ले जानेवालोंने फ्लैट साफ कर दिया था। खाली कमरोंमें थोड़े-से बन्द सन्दूक थे और दो सफरी पलंग--एक मेरे लिए और दूसरा माँके लिए। हमें वहाँ एक रात और सोना था और दूसरे दिन हम इन्सब्रुक चले जाते।

उस अन्तिम दिन मैंने अकस्मात् यह निश्चय किया कि बिना तुम्हारे समीप रहे मैं जी नहीं सकती। मेरे लिए सम्पूर्ण जगत् तुम्ही थे। यह कहना कठिन है कि मैं क्या सोच रही थी और निराशाके उस क्षणमें म कुछ सोच भी सकती थी, या नहीं। मेरी माँ घरसे बाहर गई हुई थी। मैं उठी और स्कूलके ही कपड़ोंमें तुम्हारे दरवाजे तक गई। मैं चलकर गई, यह तुम नहीं कह सकते। मेरे अंग प्रत्यंग अकड़-से गये थे। मेरे घुटने काँप रहे थे। लगता था कि किसी चुम्बकके द्वारा खिंची हुई मैं तुम्हारे द्वारतक आ पहुँची हूँ। मैंने सोच रक्खा था कि तुम्हारे चरणोंपर गिर पड़ूँ और कहूँ कि मुझे नौकरानी रख लो—अपनी दासी बना लो। मुझे तो यह डर लगता है कि पन्द्रह वर्षकी लड़की-की इस भावुकतापर तुम हँसोगे। किन्तु यह जान कर तुम हँस नहीं सकोगे कि किस प्रकार आशंकासे सिकुड़ी हुई मैं उस ठंडी भूमिपर खड़ी रही—किस प्रकार एक अप्रतिहत शक्तिसे खिंची हुई मैं वहाँतक आ गई। किस प्रकार मेरा हाथ बिना मेरी प्रेरणाके अपने आप उठा--मुझे लगा कि यह संघर्ष अनन्त भीषण समयमें भी समाप्त न होगा और तब मैंने घण्टी बजाई। वह तीक्ष्ण ध्वनि अभीतक मेरे कानोंमें सुनाई दे रही है। उसके बाद एक नीरवता छा गई। मुझे लगा मेरे हृदयका स्पन्दन रुकनेको है। मेरा रुधिर जम रहा है और मैं तुम्हारे आनेके शब्दकी प्रतीक्षा करती रही

किन्तु तुम नहीं आये। कोई नही आया। तुम उस दिन बाहर चले गए होगे, और जॉन भी कहीं चला गया होगा। मैं अपने शून्य निवासमें

लौट आई। घण्टीकी प्रतिध्वनि तब भी मेरे कानोंमें गूँज रही थी। मैं एक कम्बलपर जाकर लुढ़क गई। मैं थोड़े-से कदम चल कर ही इतना थक गई थी मानो घण्टों बरफपर चलती रही होऊँ। किन्तु इस थकानके नीचे, अब भी, तुम्हारे दर्शनोंका मेरा दृढ़ निश्चय यथापूर्व सम्बद्ध था। इससे पहले कि वे लोग मुझे यहाँसे ले जायँ, मैं तुमसे बोलना चाहती थी। मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ कि मेरे मनमें उस समय वासना जैसी किसी वस्तुका लेश भी न था। मैं तब भी अबोध थी, केवल इसी कारण कि तुम्हारे अतिरिक्त मैं और कुछ सोचती न थी मैं केवल यही चाहती थी कि एक बार तुम्हें देख लूँ और तुमसे लिपट जाऊँ। उस भीषण रात्रिमें मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करती रही। ज्यों ही मेरी माँ सोई कि मैं दबे पाँव तुम्हारे लौटनेकी आहट सुननेको हॉलमें चली आई। वह जनवरीकी अत्यन्त शीत रात्रि थी। मैं थक गई। मेरे अंग प्रत्यंगमें पीड़ा होने लगी। वहाँ एक कुर्सी भी न बची थी कि मैं बैठ जाती। इसलिए मैं फर्शपर ही बैठ गई। दरवाजेकी राह जो हवाके बर्फीले झोंके आ रहे थे उनसे मैं झुलसी जा रही थी। अपने पतले वस्त्रोंमे मैं वहाँ पड़ी रही। ओढ़नेको मेरे पास कुछ नहीं था। मैं चाहती भी नहीं थी कि मैं गरम हो जाऊँ, इसलिए कि यदि मैं सो गई तो तुम्हारी पदध्वनि नहीं सुन सकूँगी। मेरा शरीर अकड़ गया। इतनी ठंड थी उस भीषण अंधकारमें। मुझे बार बार खड़ा होना पड़ता। किन्तु मैं प्रतीक्षा करती रही, प्रतीक्षा करती रही, तुम्हारी प्रतीक्षा करती रही—मानो अपने भाग्यकी राह देख रही होऊँ।

अन्तमें मकानका दरवाजा खुलनेकी आवाज आइ और मैंने सीढ़ियोंपर पैरोंकी चाँप सुनी। उस समय प्रातःकालके दो या तीन बजे होंगे। शीतकी अनुभूति अदृश्य हो गई और उष्णताकी एक लहर-सी मुझपर होकर दौड़ गई। मैंने चुपकेसे दरवाजा खोला। दौड़कर बाहर जाना चाहती थी; तुम्हारे चरणोंपर गिर जाना चाहती थी—। कह नहीं सकती कि उस उत्तेजनामें मैं क्या न कर बैठती। पैरोंकी चाँप और निकट आई। मोमबत्तीका प्रकाश टिमटिमाया। काँपते हृदयसे मैंने दरवाजेका हैण्डिल घूमते हुए सुना। क्या तुम्हीं सीढ़ियोंसे ऊपर आ रहे थे?

हाँ, तुम्हीं थे, मेरे प्यारे!—किन्तु तुम अकेले नहीं थे। मैंने एक धीमी-

सी हँसी सुनी। रेशमकी सरसराहट और तुम्हारा स्वर। तुम निम्न स्वरमें बोल रहे थे। तुम्हारे साथ एक स्त्री थी...।

मैं कह नहीं सकती कि बाकी रात मैं कैसे रही। दूसरे दिन सवेरे आठ बजे वे लोग मुझे इन्सब्रुक ले गये। मुझमें विरोध करनेकी शक्ति भी नहीं बची थी।

* * * *

मेरा बेटा कल रात मर गया। यदि मुझे जीवित रहना ही पड़ा तो मैं एक बार फिरसे अकेली ही रह जाऊँगी। कल कुछ लोग आयेंगे—अपरिचित, काले वस्त्र पहने हुए, असंस्कृत व्यक्ति—वे मेरे इकलौते बालकके लिए कफन और सन्दूक लायेंगे। कदाचित् बन्धु बान्धव आयेंगे, मालाएँ लेकर—किन्तु कफनपर फूल चढ़ानेसे होता ही क्या है? एक-एक दो-दो वाक्य कहकर वे मुझे सांत्वना देंगे। कोरे शब्द—शब्द—शब्द। शब्दोंसे क्या होगा मेरा? मैं तो इतना जानती हूँ कि मुझे अकेली ही रहना होगा। इससे अधिक भयानक और क्या हो सकता है कि मनुष्योंके बीच किसीको अकेले रहना पड़े? अपने सोलहवें वर्षसे अठारहवें तक, अपने ही लोगोंके बीच, दो अनन्त वर्ष मुझे इन्सब्रुकमें बिताने पड़े तो इसी अकेलेपनका मुझे अनुभव हुआ। मेरे सौतेले पिता शान्त स्वभावके नीरस व्यक्ति थे और मुझपर कृपा रखते थे। मेरी माँ, मानो वे अपने अन्यायका प्रायश्चित्त करना चाहती हों, मेरी प्रत्येक इच्छाकी पूर्ति करती रहती थीं। समवयस्क लड़कियाँ मुझे मित्र बनाकर प्रसन्न होतीं। किन्तु मैं चिढ़कर उनका आमन्त्रण अस्वीकार कर देती। मैं सुखी होना नहीं चाहती थी। तुमसे दूर रह कर सन्तुष्ट होना मुझे अच्छा नहीं लगता था। इसी लिए वेदना और एकाकीपनके संसारमें मैंने आपने आपको छिपा लिया। वे लोग मेरे लिए नये और सुन्दर वस्त्र लाते, किन्तु मैं उन्हें न पहनती। मैं संगीत-सभाओं अथवा थियेटरोंमें जानेसे अस्वीकार कर देती। सुखद यात्राओंमें कोइ भाग न लेती। घरसे बाहर बहुत कम जाती। क्या तुम मेरा विश्वास करोगे कि जहाँ मैं दो वर्ष रही उसी शहरकी एक दर्जनसे अधिक सड़कें मैंने नहीं देखीं? शोक ही मेरा सुख था। मैंने संग छोड़ दिया और प्रत्येक सुखका त्याग कर दिया। तुम्हारे दर्शनोंके अभावमें इस प्रकार अपनी आत्माको कसनेमें मुझे आनन्द मिलता था।

इस प्रकार उस समय भी मेरा जीवन तुम्हींपर केन्द्रित था। मैंने तुम्हारी सभी पुस्तकें खरीद लीं। यदि कभी तुम्हारा नाम समाचारपत्रोंमें देखनेको मिलता तो वह मेरे लिए उत्सव-दिवस बन जाता। क्या तुम विश्वास करोगे कि मैंने तुम्हारी पुस्तकें इतनी बार पढ़ी हैं कि मुझे कंठाग्र हो चुकी हैं? यदि कोई मुझे आधी रातको जगाकर एकाध असम्बद्ध वाक्य पढ़कर सुनाने लगे तो आज भी, इन तेरह वर्षोंके उपरान्त भी, मैं पूरे पैराग्राफकी बिना रुके आवृत्ति कर सकती हूँ। तुम्हारा प्रत्येक शब्द मेरे लिए बाइबिल था। तुम्हींसे संबंधित संसारका मेरे लिए अस्तित्व था।

इन्हीं बातोंको क्यों बार बार दुहराऊँ? एक परित्यक्ता बालिकाकी पीड़ित निराशाका चित्रण क्यों करूँ? मैं यह तुमसे क्यों कहूँ, कि जिन्होंने मेरी चाहकी, मेरे दुखकी स्वप्नमें भी कल्पना नहीं की? किन्तु क्या मैं अब भी बच्ची ही थी? मैं सत्रह वर्षकी थी। मैं अठारह वर्षकी हो गई थी। सड़कोंपर नवयुवक मुझे घूम घूम कर देखते थे। किन्तु उनसे मुझे क्रोध ही होता था। तुम्हें छोड़कर दूसरेको प्यार करना, यही नहीं—तुम्हें छोड़कर दूसरेको प्यार करनेकी कल्पना करना तक मेरे लिए नितान्त असम्भव था। दूसरेकी ओरसे प्यारका संकेत भी मुझे घोर अपराध लगता था। तुम्हारे प्रति मेरी भावना वैसी ही तीव्र थी, किन्तु ज्यों ज्यों मेरे शरीरमें परिवर्तन होते गये और मेरी इन्द्रियाँ जाग्रत होने होने लगीं, त्यों त्यों उसमें भी रूप परिवर्तन होने लगा। वह अधिक आवेशमय, अधिक शारीरिक और पूर्ण विकसित स्त्रीका प्रेम बन गई। एक नासमझ बच्चीकी—उस लड़कीकी कल्पनासे, जिसने तुम्हारे दरवाजेकी घंटी बजाई थी—जो वस्तु आजतक तिरोहित रही, अब वही मैं चाहने लगी थी। मैं अपने आपको तुम्हें दे देना चाहती थी।

मेरे संगी साथी मुझे लज्जालु तथा डरपोक समझते थे। किन्तु मुझमें उद्देश्यकी दृढ़ता थी। मेरा सारा जीवन एक ही दिशाको उन्मुख था—वापिस वियानाकी ओर, वापिस तुम्हारी ओर। मैंने किसी प्रकार संघर्ष करके अपना मार्ग पा ही लिया। दूसरोंको भले ही वह विवेकशून्य तथा अर्थहीन लगा हो। मेरे सौतेले पिताकी आर्थिक दशा अच्छी थी और वे मुझे अपनी ही बेटीकी भाँति मानते थे। मैंने आग्रह किया कि मैं अपनी जीविका स्वयं जुटाऊँगी,

और अन्तमें उन्हें इस बातपर राजी कर लिया कि मैं वियानामें उन्हींके एक सम्बन्धीकी कपड़ेकी फर्ममें नौकरी करने लगूँ।

क्या तुम्हें यह भी कहनेकी आवश्यकता है कि जब आखिरकार—आखिरकार—मैं वियाना पहुँच गई, तो शिशिरकी उस कुहरेभरी शामको मेरे पाँव मुझे किस ओर ले गये ? मैंने क्लोक-रूममें अपना सन्दूक रख दिया और शीघ्रतासे ट्रामगाड़ीपर पहुँची। आह, कितनी धीमी चालसे वह चलती थी ! प्रत्येक बार वह रुकती थी और प्रत्येक बार मेरी परेशानी बढ़ती जाती। अन्तमें मैं उस मकान तक पहुँच गई। मैंने तुम्हारी खिड़कीपर प्रकाश देखा तो मेरा हृदय उछलने लगा। वह शहर, जो मुझे पहले पराया-सा और एकान्त लगा था, अब एकाएक जीवित-सा हो उठा। अब मैं तुम्हारे समीप आ चुकी थी। तुम्हीं मेरे अनन्त स्वप्न हो। मैं भी फिरसे जी उठी। उस समय तुम्हारे और मेरे उन्नमित नेत्रोंके बीच केवल काँचका एक पतला आलोकित टुकड़ा था। किन्तु इस यथार्थताका मुझे फिर भी ज्ञान नहीं हुआ कि तुम्हारे मस्तिष्कमें तो मेरे और तुम्हारे बीच मानो अगणित पहाड़ों और घाटियों और नदियोंकी दूरी फैली हुई है। इतना ही पर्य्याप्त था। मैं निरन्तर तुम्हारी खिड़कीकी ओर देखती रहती थी। उसमें प्रकाश था। वह तुम्हारा निवास था। तुम वहाँ थे। वही मेरा संसार था। दो वर्ष तक मैं इस क्षणका स्वप्न देखती रही, और अब वह आ पहुँचा था। उस गरम और बादलोंभरी शामको मैं तब तक तुम्हारी खिड़कीके सामने खड़ी रही जब तक कि बत्ती बुझ नहीं गई। तब तक मैं भी अपने निवासको न लौटी।

प्रत्येक संध्याको मैं उसी स्थानपर लौटकर पहुँच जाती। छह बजे तक मैं अपना काम करती थी। मेरा काम कठिन था, फिर भी मैं उसे पसन्द करती। दुकानका कोलाहल मेरे हृदयके कोलाहलको दबाये रखता था। ज्यों ही दरवाजे बन्द होते कि मैं भागी हुई अपने प्रिय स्थानपर पहुँच जाती। मैं केवल यही चाहती थी कि एक बार तुम्हें देख लूँ—एक बार तुमसे मिल लूँ। मैं केवल दूरसे तुम्हारे चेहरेको अपनी आँखोंकी राह पी जाना चाहती थी। आखिर एक हफ्तेके बाद मैं तुमसे मिली। यह मिलन अकस्मात् ही होगया। जब तुम सड़कपर आ रहे थे तब मैं तुम्हारी खिड़कीकी ओर देख रही थी। एक ही क्षणमें मैं बालिका, वही तेरह वर्षकी लड़की बन गई। मेरे

कपोल रंग गये। यद्यपि मैं तुम्हारी आँखोंमें देखना चाहती थी, फिर भी मैंने अपना सिर झुका दिया और शीघ्रतासे तुम्हारे समीपसे होकर निकल गई, मानो कोई मेरा पीछा कर रहा हो। बादमें मुझे लज्जा हुई कि मैं स्कूलकी छोकरियोंकी भाँति भाग आई। किन्तु अब मैं जानती हूँ कि मैं सचमुच क्या चाहती थी। म चाहती थी कि आखिर इन लम्बे वर्षोंके बाद तुम मुझे पहिचानो, मुझे देखो, प्यार करो।

एक लम्बे समय तक तुम मुझे देख न सके। मैं प्रत्येक रात्रिको तुम्हारे घरके सामने आकर खड़ी रहती थी—चाहे बरफ गिर रहा हो, चाहे वियानाके हेमन्तकी तीखी हवायें बह रही हों। कभी कभी तो मैं घंटों व्यर्थ ही खड़ी रहती। बहुधा उस प्रतीक्षाके अन्तमें तुम मित्रोंके साथ मकानसे बाहर चले जाते। दो बार मैंने तुम्हें एक स्त्रीके साथ देखा। मैं अब जागरूक थी और तुम्हारे प्रति मेरी भावनाओंमें एक नया और भिन्न परिवर्तन आ चुका था। मैं इस सत्यको तब जान सकी जब मैंने एक अपरिचित स्त्रीको बड़ी प्रतीतिके साथ तुम्हारी बाँहोंमें बाँहें डाले घूमते देखा। मेरे लिए यह कोई नई बात नहीं थी, क्यों कि बचपनसे ही मैं देखती आ रही थीं ऐसी कितनी ही अभ्यागताएँ तुम्हारे मकानमें प्रतिदिन आया करती थीं। किन्तु अबकी इस दृश्यसे मेरे हृदयमें एक विशेष भाँतिकी वेदना जाग उठी। जब मैंने एक दूसरी स्त्रीके साथ तुम्हारी शारीरिक मैत्रीका यह खुला प्रदर्शन देखा तो द्वेष और कामना दोनोंसे सम्मिलित भावना मेरे मनमें उत्पन्न हो गई। युवावस्थाके अपने दर्पमें, जो मुझमें अभीतक है, मैंने एक दिन वहाँ जाना स्थगित कर दिया। किन्तु आत्माकी पुकारके विरुद्ध लिये गये उस संन्यासके कारण वह संध्या कितनी भीषण लगती थी! दूसरी रातको, पराजित-सी होकर, मैं पुनः तुम्हारी खिड़कीके सामने जाकर खड़ी हो गई। तुम्हारे अनावृत जीवनके सम्मुख तुम्हारी प्रतीक्षा करती रही।

अन्तमें वह क्षण आया कि तुमने मुझे देख लिया। मैंने दूरसे ही तुम्हें आते देखा और तुम्हारे मार्गसे न हट सकूँ इसलिए मैंने अपनी तमाम शक्तियोंको बटोर लिया। संयोगसे शराब ढोनेवाली एक गाड़ीके कारण सड़क रुँधी हुई थी और तुम्हें मेरे अत्यन्त समीपसे निकलना पड़ा। आने जानेमें तुम्हारी आँखें मुझपर पड़ीं। तुमने यह तो नहीं देखा होगा कि कितनी सूक्ष्मतासे मैं तुम्हें

परख रही थी, किन्तु तुम्हारे चेहरेपर अकस्मात् वही भाव झलक पड़ा जो स्त्रियोंको देखते ही तुमपर स्वाभाविक रूपसे आ जाता था। उसकी स्मृति बिजलीकी लहरके समान मेरे शरीरमें दौड़ गई। वही आकर्षक दृष्टि—एक ही साथ अपनी ओर खींचकर विह्वल कर देनेवाली—वही दृष्टि, जिसके द्वारा, कई वर्ष पूर्व एक बालिकाके मनमें नारीको, प्रेमिकाको जाग्रत कर दिया था। दो-एक क्षणके लिए तुम्हारी आँखें मुझपर लगी रहीं और उतनी ही अवधिमें मैं भी अपने नेत्र तुमपरसे नहीं हटा सकी। तब तुम चले गये। मेरा हृदय इस वेगसे चलने लगा था कि मुझे अपनी चाल धीमी करनी पड़ी। जब मैं अपनी उत्कण्ठाको अधिक न रोक सकी तो मैंने पीछे मुड़कर देखा। तुम खड़े थे और मुझे देख रहे थे। तुम्हारे मुखपर छपी उत्सुकता और जिज्ञासा देखकर मुझे यह तो निश्चय हो गया कि तुम मुझे पहिचान न सके थे। तुमने मुझे न तो तब पहिचाना, न कभी भविष्यमें। मैं अपनी निराशाका कैसे वर्णन करूँ? यह मेरी पहली निराशा थी। पहली ही बार मुझे वह सहना पड़ा जो मेरे भाग्यमें लिखा था—कि तुम मुझे कभी भी नहीं पहिचान सके। मैं अपरिचिता ही मर जाउँगी। आह, मैं किस प्रकार तुम्हें अपनी निराशा समझाऊँ? अपनी निराशाके क्षणोंमें मैं सोचा करती कि तुम मुझे दुतकार दोगे, मुझसे घृणा करोगे। क्योंकि मैं तुम्हारे किसी प्रयोजनकी नहीं थीं। मैं सीधीसाधी थी। स्वयं-प्रार्थिनी थी। तुमसे प्रत्येक प्रकारकी अकृपा, निर्दयता और उपेक्षाकी मैंने कल्पना कर रक्खी थी। किन्तु अत्यन्त दुराशाके क्षणोंमें भी, अपनी अकिंचनताको अच्छी प्रकारसे समझ लेने पर भी, यह घृणित सम्भावना मुझे कभी नहीं जँची कि तुम कभी भी मेरे अस्तित्वको जान न सकोगे? तुमने मुझे सिखा दिया है और मैं भी अब समझने लगी हूँ कि पुरुषके लिए किसी लड़की या स्त्रीका चेहरा असाधारण रूपसे परिवर्तनशील होता है। कोई भी पुरुष किसी स्त्रीका चेहरा भूल सकता है क्योंकि अवस्था-क्रमसे छाया और प्रकाशमें भी परिवर्तन होता है, और कई बार भिन्न-भिन्न प्रकारके वस्त्रोंसे भी एक विभिन्नता उत्पन्न हो जाती है। स्त्रीकी यह जानकारी ज्यों ज्यों बढ़ती है त्यों त्यों उसके मनमें अनासक्ति प्रवेश करने लगती है। किन्तु मैं तो अभी लड़की ही थी, इसलिए तुम्हारी भूल जानेकी प्रवृत्तिको समझ न सकी। जबसे मैंने पहले पहल तुम्हें जाना तभीसे मेरे मनमें

तुम्हीं समाये हुए हो। इसीसे मुझे यह भ्रान्ति हो गई थी कि तुमने भी मेरे विषयमें बहुधा सोचा होगा, मेरी प्रतीक्षा भी की होगी। मैं जीवित रह कैसे सकती यदि मैं समझती कि तुम्हारे लिए मैं कुछ भी नहीं हूँ ! उस दिन शामको तुम्हारी दृष्टिने मुझे जता दिया कि तुम्हारी ओरसे तो मेरे और तुम्हारे जीवनके बीच मकड़ीके तार-सा बारीक सम्बन्ध भी नहीं है। उस दृष्टिने पहले-पहल मुझे यथार्थताके समुद्रमें डुबो दिया, पहली ही बार मेरी नियतिका प्रथम परिचय मुझे दे दिया।

तुमने मुझे नहीं पहिचाना। दो दिनके बाद मार्गमें फिर हम दोनों मिले। तुमने ऐसे मुझे देखा मानों हमारे बीच एक निकट सम्बन्ध स्थापित हो गया हो। किन्तु फिर भी तुम्हारी दृष्टिमें परिचयका भाव नहीं था कि तुम इस लड़कीको पहिचान गये, जो इतने समयसे तुम्हें प्यार करती रही है और जिसे तुमने ही नारीत्व प्रदान किया है। तुम्हारी दृष्टिसे केवल यही लगता था कि दो दिन पहले जो एक खूबसूरत-सी छोकरी तुम्हें मिली थी, आज उसके चहरेको तुम पहिचानते हो। मित्रता और विस्मयके भाव तुम्हारे मुख-पर थे। तुम्हारे होठोंपर मुस्कराहट खिल पड़ी। तुम पहलेकी भाँति मेरे समीपसे होकर निकले, और पहलेकी ही भाँति उसी समय तुमने अपनी गति धीमी कर दी। मैं काँप गई। मुझे गौरवका-सा अनुभव हुआ और मैं चाहने लगी कि तुम मुझसे बोलो। पहली ही बार मुझे लगा कि तुम्हारी दृष्टिसे मैं जीवित हो उठी हूँ। मैं भी धीरे धीरे चलने लगी और तुमसे बचनेका मैंने प्रयत्न नहीं किया। एकाएक अपने पीछे तुम्हारी पद-ध्वनि सुनी। विना पीछेको मुड़े, मैं यह जान गई कि तुम्हारा मधुर कंठस्वर अब मुझे सुनाई देगा। इस प्रत्याशासे मैं वहीं गड़ गई। मेरा हृदय इस बुरी तरहसे धड़कने लगा कि मुझे चुपचाप खड़ी हो जाना पड़ा। तुमने बड़ी नम्रतासे मेरी अभ्यर्थना की। मानो हम दोनों पुराने परिचित हों। तुम्हारे बोलनेका ढंग इतना सरल और मनोमोहक था कि मैं विना संकोचके तुम्हें उत्तर दे सकी। हम दोनों साथ साथ सड़कपर टहलने लगे और तब तुमने एक साथ भोजन करनेका प्रस्ताव किया। मैं राजी हो गई। ऐसी कौन सी वस्तु थी जिसे मैं तुम्हारे लिए अस्वीकार कर देती !

एक छोटे-से रेस्तूराँमें हम लोगोंने भोजन किया। तुम्हें तो स्मरण भी नहीं होगा कि वह कहाँपर था। ऐसे कई होटलोंमेंसे तुम्हारे लिए एक यह भी था। यों तो, मैं भी तुम्हारे लिए क्या हो सकती थी?—सैकड़ोंमें एक, अनन्त शृंखलाकी एक कड़ी। उस दिन हुआ ही क्या था कि तुम्हारी स्मृतिमे मेरा स्थायी महत्त्व होता? मैं बहुत कम बोलती थी; क्यों कि तुम्हें अपने समीप पाकर और तुम्हें बोलते हुए सुन कर मैं अत्यन्त सुखी हो गई थी। प्रश्नों और निरर्थक शब्दोंमें मैंने एक भी क्षण नहीं खोया। उस एक क्षणके लिए मैं तुम्हारे प्रति सदा आभारी रहूँगी। तुमने जिस विनम्र चातुर्यका प्रदर्शन किया, मैं वह भूल नहीं सकती, तुमने कोई उतावली नहीं की; मुझे आलिंगन करनेमें भी जल्दबाज़ी नहीं प्रकट की। पहले ही क्षणसे तुमने ऐसी विश्वस्त मैत्रीका-सा प्रदर्शन किया, कि उससे पूर्व ही मैं तुम्हारी न भी हो गई होती, तो भी तुम मेरी आत्मापर विजय प्राप्त कर लेते। क्या मैं तुम्हें समझा सकती हूँ कि उसका मेरे लिए कितना मूल्य था, कि जिसे प्राप्त करके मेरी आकांक्षाके पाँच बर्ष सफल हो रहे थे?

रात काफी हो चुकी थी, और हम लोग रेस्तूराँसे बाहर निकले। दरवाजेपर आकर तुमने पूछा कि मुझे कहीं जानेकी जल्दी है, या मेरे पास अतिरिक्त समय भी कुछ बचा है? मैं तुमसे कैसे छिपाती कि मैं तुम्हारी ही हूँ? मैंने कहा, मेरे पास काफी समय है। एक क्षणिक हिचकिचाहटके उपरान्त तुमने पूछा कि क्या मैं वार्तालापके लिए तुम्हारे कमरे तक जा सकती हूँ। 'बड़ी प्रसन्नतासे' मैंने तत्काल उत्तर दे दिया। मैंने यह देखनेमें भूल नहीं की कि इस तत्काल-स्वीकृतिसे तुम्हें विस्मय हुआ था। मुझे यह तो नहीं मालूम कि तुम्हारे उस भावमें प्रसन्नता थी या अचकचाहट। किन्तु यह तो स्पष्ट था कि तुम चकित अवश्य हो गये थे। आज मैं तुम्हारे विस्मयको समझने लगी हूँ। आज मैं जानती हूँ कि, स्त्री किसी पुरुषको आत्मसमर्पण करनेके लिए कितनी ही उद्यत क्यों न हो, किन्तु यह उसके लिए स्वाभाविक है कि अनिच्छाका अभिनय करे; अपने आपको आतंकित अथवा अपमानित दिखानेका नाटक रचे। उसे प्रार्थनासे, मिथ्या वचनोंसे, शर्तों और प्रतिज्ञाओंसे राजी करना पड़ता है। अब मैं जानती हूँ कि पेशेवर वेश्यायें ही इस प्रकारके आमंत्रणोंकी स्पष्ट स्वीकृति दे सकती हैं—वेश्यायें, अथवा सरल

प्रकृतिकी अविकसित बालिकायें। तुम कैसे जान सकते कि, मेरे विषयमें तो, मेरी स्वीकृति अनन्त इच्छाओंकी प्रतिध्वनि थी। हजारों दिन मैं जिस आकांक्षाको वहन करती आ रही थी, यह उसीका उद्वेग था।

कुछ भी हो, मेरे आचरणसे तुम्हारा ध्यान मेरी ओर आकर्षित हुआ। जब हम लोग साथ साथ चल रहे थे, तो मुझे लगा कि बातें करते करते तुम मुझे परखनेका प्रयत्न कर रहे हो। तुम्हारी अनुभूतियों, और मानवी भावनाओंको समझनेकी तुम्हारी शक्तिने तुम्हें यह बता दिया कि मेरे व्यवहारमें कुछ अस्वाभाविकता है और यह कि इस सुन्दर मौन बालिकाके हृदयमें कोई रहस्य छिपा पड़ा है। तुम्हारी उत्सुकता जाग उठी थी और तुम्हारे प्रश्नोंसे लगता था कि मेरे रहस्यकी गाँठ तुम खोलना चाहते हो। किन्तु मेरे उत्तर अस्पष्ट होते थे । अपना रहस्य तुमपर प्रकट करनेके बजाय मैं मूर्ख-सी दिखाई देना पसन्द करती थी।

हम तुम्हारे घर पहुँचे। मुझे क्षमा करना मेरे प्यारे, तुम सम्भवतः यह नहीं समझ सकते कि तुम्हारे साथ उस घरकी सीढियाँ चढ़नेमें मुझे कैसा अनुभव हो रहा था। मारे प्रसन्नताके मैं कैसी पागल हो गई थी; मुझे क्या वेदना हो रही थी; किस प्रकार मेरी साँस घुटी जा रही थी! आज भी विना आँसू बहाये मैं उस घटनापर विचार कर ही नहीं सकती। किन्तु मेरे तो आँसू बचे ही नहीं। उस घरकी प्रत्येक वस्तु मेरे बचपन और आकांक्षाओंकी प्रतीक थी। वही दरवाजा था, जिसके पीछे सहस्रों बार मैंने तुम्हारी प्रतीक्षा की थी। वही सीढ़ियाँ थीं, जिनपर मैं तुम्हारी पदध्वनि सुनती आर जिनपर मैंने तुम्हारा प्रथम दर्शन किया। वही सूराख, जिसमेंसे होकर मैं होकर मैं तुम्हारा आवागमन देखती रहती थी। दरवाजेकी वही चटाई कि जिसपर मैं एक बार लेटी रही थी। तालेमें चाबी घुमानेका वही शब्द, जो मेरे लिए संकेत बन गया था। इस थोड़े-से स्थानमें मेरा बचपन और उसकी भावनाएँ आश्रय पा रही थीं। वहीं मेरा समूचा जीवन था और तूफानकी भाँति वह मेरे चारों ओर उमड़ने लगा। क्यों कि सभी इच्छाएँ अब पूरी होने जा रही थीं। मैं तुम्हारे साथ जा रही थी—तुम्हारे साथ! तुम्हारे-हमारे घरमें जा रही थी। मेरे कहनेका ढंग बड़ा तुच्छ लगता है। किन्तु मेरे पास इससे अच्छे शब्द नहीं हैं। जरा सोचो तो कि तुम्हारे दरवाजेके बाहर तक

यथार्थताका संसार था—वह नीरस संसार, जिसमें मैं मेरा पिछला जीवन बीता था। किन्तु उस दरवाजेपर मेरे बचपनकी कल्पनाओंका संसार—अलादीनकी दुनिया प्रारम्भ होती थी। जरा सोचो तो, किस प्रकार सहस्रों बार मेरी उत्तप्त आँखें इस दरवाजेपर लगी रहती थीं। अब मैं उसीको पार कर रही थी। मेरे मस्तिष्कमें झंझावात उठ रहा था। और तुम्हें तो इसका आभास-मात्र भी न होगा कि उस महान् क्षणका अर्थ मेरे लिए क्या था!

उस रात मैं तुम्हारे साथ रही। तुमने स्वप्नमें भी नहीं सोचा होगा कि तुमसे पहले मेरे शरीरको किसी भी पुरुषने न तो स्पर्श किया था, न देखा ही था। तुम यह कल्पना कैसे कर सकते हो। क्यों कि मैंने कोई विरोध नहीं किया और इस डरसे कि कहीं मेरा रहस्य खुल न जाय, मैंने लज्जाका एक भी चिह्न प्रकट नहीं होने दिया। इसे देखकर तुम अवश्य चकित हुए होगे। तुम तो केवल उसी वस्तुकी चिन्ता करते हो, जो सरलतासे आती जाती हो, जो छूनेमें हलकी और अविचारणीय हो। तुम दूसरेके भाग्यमें सम्मिलित होनेसे डरते हो। तुम संसार भरको अपना स्वच्छन्द दान करना पसन्द करते हो, किन्तु आत्मत्याग करना तुम्हें अच्छा नहीं लगता। यदि मैं कहूँ कि मैंने अपना कौमार्य तुम्हें दे दिया था, तो मेरे कहनेका दूसरा तात्पर्य न समझ लेना। मैं तुमपर कोई दावा नहीं करना चाहती। तुमने मुझे बहकाया नहीं; धोखा नहीं दिया; कुकर्म करनेको नहीं उकसाया। मैंने तो स्वयं ही अपने आपको तुम्हारी भुजाओंपर डाल दिया था। मैं स्वयं ही अपने भाग्यसे मिलने बढ़ी थी। उस रात्रिके उल्लासके लिए मैं तो तुम्हारी आभारी हूँ। अंधकारमें जब मैंने आँखें खोलीं और तुम मेरी बगलमें थे तो मैंने समझा कि मैं स्वर्गमें हूँ। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि तारे क्यों मुझपर चमक रहे हैं। मेरे प्यारे, उस रातको आत्मसमर्पण करनेके लिए मैंने कभी पश्चात्ताप नहीं किया। जब तुम मेरे साथ सो रहे थे, जब मैं तुम्हारी साँसोंको सुनती, तुम्हारे शरीरको स्पर्श करती और अपनेको तुम्हारे इतने निकट पाती तो मारे आनन्दके मैं आँसू बहाने लगती थी।

प्रातःकाल मैं तड़के ही चली आई। मुझे अपने कामपर जाना था, और मैं तुम्हारे नौकरके आनेसे पहले ही निकल जाना चाहती थी। जब मैं जानेको थी, तो तुमने अपने हाथ मेरे गलेमें डाल दिये और बड़ी देरतक मुझे देखते

रहे। क्या तुम्हारे मनमें कोई धुँधली स्मृति तड़पने लगी थी, अथवा मेरी आरंजित प्रसन्नताके कारण मैं तुम्हें सुन्दर लग रही थी? तुमने मेरे होंट चूम लिये, और मैं जानेको उद्यत हुई। तुमने पूछा—"ये थोड़ेसे फूल अपने साथ ले जाओ न?" लिखनेकी मेजपर नीले बिल्लौरके फूलदानमें चार सफेद गुलाब रक्खे हुए थे। उन्हें तुमने मुझे दे दिया। वे कई दिन मेरे पास रक्खे रहे। मैं उन्हें चूमती रही।

दूसरे दिन शामको मिलनेकी हम लोगोंने व्यवस्था कर ली थी। पुनः विस्मय और आनन्दका मैंने अनुभव किया। एक तीसरी रात्रि भी तुमने मुझे दी। तब तुमने कहा कि तुम्हें वियानासे बाहर कहीं जाना है। आह, मैं तुम्हारी इन यात्राओंसे कितनी घृणा करती थी! तुमने वचन दिया कि ज्यों ही तुम लौटोगे, तुम मेरे पास सूचना भेज दोगे। मैंने तुम्हें किसी दूसरेके मार्फत अपना पता दे दिया। तुम्हें अपना वास्तविक नाम नहीं बतलाया। मैं अपने रहस्यकी रक्षा कर रही थी। विदा होते समय—विदा लेते समय तुमने एक बार मुझे फिरसे गुलाब दिये।

दो महिने तक, दिन-प्रति-दिन, मैं अपने आपसे पूछती—नहीं, मैं अपनी आशा और निराशाके दुखका वर्णन नहीं करूँगी। मैं कोई शिकायत नहीं करती। मैं तुम्हें, जैसे तुम हो—उत्साही और विस्मृतिशील, उदार और अविश्वसनीय—उसी रूपमें प्यार करती हूँ। तुम दो महिनेसे पूर्व ही लौट आये थे। तुम्हारे कमरेका प्रकाश मुझे दिखाई देता था; किन्तु तुमने मुझे पत्र नहीं लिखा। आज अपने अन्तिम क्षणोंमें मैं देखती हूँ कि मेरे पास तुम्हारे हस्ताक्षरोंमें एक भी पंक्ति प्राप्य नहीं है—जिन्हें मैंने अपना जीवन दे दिया था, उनकी एक भी पंक्ति नहीं। तुमने मुझे अपने पास नहीं बुलाया। एक भी शब्द नहीं लिख भेजा—एक भी शब्द नहीं—।

मेरा लड़का, जो कल मरा, वह तुम्हारा भी था। वह तुम्हारा बेटा था—उन तीन रात्रियोंमेंसे किसी एकका शिशु! मैं तुम्हारी ही रही—उस समयसे इसके उत्पन्न होने तक मैं केवल तुम्हारी बनी रही। मुझे लगा था कि तुम्हारा स्पर्श पाकर मैं पवित्र हो गई। तब मेरे लिए यह संभव नहीं हो सका कि दूसरे पुरुषके आलिंगन स्वीकार करती। वह हमारा पुत्र था, मेरे प्यारे! वह मेरे चेतन प्रेम और तुम्हारी निश्चिन्त, कृपण मृदुताका शिशु था। हमारा शिशु, हमारा

ाटा, हमारा एक मात्र बालक। कदाचित् तुम चौंक पड़ोगे, कदाचित् ईषत् वेस्मय मात्र तुम्हें होगा। तुम सोचोगे कि मैंने इस लड़केके विषयमें तुम्हें क्यों ाहीं बतलाया। और, इतने लंबे वर्षों तक चुप रहनेके उपरान्त, आज, जब ाह अपनी अन्तिम निद्रामें सो रहा है, मुझे सदाके लिए छोड़ जानेको—कभी, ःभी नहीं आनेको उद्यत है, आज क्यों उसके विषयमें तुमसे यह कह रही ! मैं तुमसे कहती कैसे ? मैं अपरिचिता थी। मैं तो एक लड़की थी जो िन रात विताने भरको उतावली हो रही थी। तुम, जो कि अविश्वसनीय ो, तुमने यह कभी नहीं सोचा होगा कि मैं, संयोग-प्राप्त मिलनकी ुमनाम साथीदार मैं—तुम्हारे प्रति सर्वदा ईमानदार बनी रही। विना ानाकानी किये, तुम इस लड़केको अपना पुत्र कभी नहीं मानते। ाहरी तौरपर दिखानेके लिए यदि किसी प्रकार तुम मेरे कथनपर विश्वास ःर लेते, तो भी यह सन्देह तुम्हें बना ही रहता कि तुम्हारी आर्थिक स्थितिको खकर, किसी दूसरे प्रेमीसे उत्पन्न बालकका पिता तुम्हें बनानेका अच्छा ावसर मुझे मिल गया है। तुम संशयालु बने रहते। तुम्हारे और मेरे बीच ादा एक अविश्वासकी छाया वर्तमान रहती। मैं उसे सहन नहीं कर सकती ी। इसके अतिरिक्त, मैं तुम्हें जानती हूँ। तुम जितना अपने आपको जानते ो, उससे अधिक मैं तुम्हें जानती हूँ। तुम स्वच्छन्द होकर, चिन्तारहित और ारामकी जिन्दगी गुज़ारना पसन्द करते हो। प्रेमका यही अर्थ तुमने लगाया । अकस्मात् अपने आपको एक पिताकी परिस्थितिमें पाना तुम्हारे लिए णोत्पादक होता। अकस्मात् ही तुम एक शिशुके भाग्यके प्रति उत्तरदायी बन ाते। स्वतंत्रताकी साँस तुम्हारे लिए जिन्दगीकी साँस है। और तुम मुझे न्धन-सा मानने लगते। अन्दर ही अन्दर, तुम्हारी इच्छाके प्रतिकूल भी, तुम ुझे मूर्तिमान भार समझकर घृणा करने लगते। किन्तु मैं यह अभिमान ानुभव करती हूँ कि जीवनभर मैं तुम्हारे दुख और चिन्ताका कारण नहीं नी। तुमपर बोझ बन जानेके बजाय मैं सारा भार स्वयं ही वहन करना ाहती थी। मैं उन्हीं स्त्रियोंकी भाँति बन जाना चाहती थी, जिनका तुमसे िकट सम्बन्ध था, और जिन्हें प्रेम करने और धन्यवाद देनेके अतिरिक्त तुम ुछ और नहीं कर सकते। किन्तु सच पूछा जाय तो, तुमने मेरे विषयमें ःभी सोचा ही नहीं। तुम तो मुझे भूल गये।

मैं तुम्हें दोष नहीं दे रही हूँ। विश्वास रखो, मैं तुमसे शिकायत नहीं करती हूँ
यदि कभी ऐसा तुम्हें लगे कि मेरी लेखनी द्वेषभरे शब्दोंको उगल रही है, तो तुम मु
क्षमा करना। तुम्हें मुझे क्षमा करना ही पड़ेगा। क्यों कि मेरा लड़का, हमारा पुत्र, व
टिमटिमाती मोमबत्तियोंकी छायामें मरा हुआ पड़ा है। मैंने कई बार क्रोधमें ईश्वरं
लिए घूँसे ताने हैं—कई बार उसे हत्यारा कहा है। मैं अपने दुःखमें अके
जो हूँ। इस आक्रोशके लिए मुझे क्षमा करो। मैं जानती हूँ तुम दयालु हो
सदा सहायताके लिए उद्यत रहते हो। तुम कह देनेसे ही किसी भी अपरिचि
तकी सहायता कर सकते हो। किन्तु तुम्हारी दयालुता बड़ी विचित्र है। व
असीमित है। कोई भी व्यक्ति तुमसे इतना प्राप्त कर सकता है
जितना उसके दोनों हाथोंमें समा जाय। फिर भी, मुझे कहना पड़े
कि तुम्हारी दया बड़ी कृपण है। तुमसे माँगना पड़ता है। तुम उन
सहायता करते हो, जो सहायता माँगते हैं। तुम लोकलाजके कार
अपनी दुर्बलताके कारण सहायता देते हो। स्वान्तःसुखाय तुम सहाय
नहीं करते। मैं तुमसे स्पष्ट कहे देती हूँ कि तुम्हारे जो भाई सुखमें
वे तुम्हें अधिक प्रिय हैं। दुःख और पीड़ामें जो रह रहे हैं वे तु
नहीं सुहाते। तुम जैसोंसे, तुम जैसे व्यक्तियोंमें दयालुतमसे भी कुछ माँगन
बड़ा कठिन है। एक बार जब मैं बच्ची थी, मैंने दरवाजेके सूराखसे तुम्हें ए
भिखमंगेको कुछ देते देखा था। उसने तुम्हारी घंटी बजाई थी। उसके बो
नेसे पूर्व ही तुमने शीघ्रतासे, मुक्त-हस्त होकर, उसे भीख दे दी, किन्तु तुम्ह
व्यवहारमें एक घबराहट, एक उतावली दीखती थी। मानो तुम्हारा एक मा
उद्देश्य उससे पल्ला छुड़ाना ही था; मानो उससे आँखें मिलानेमें भी तुम डर
थे। सहायताके इस डरपोक और झिझकभरे ढंगको और धन्यवादके शब्दों
दूर भागनेकी प्रवृत्तिको मैं कभी नहीं भूल सकती। इसी कारण अपनी आपत्ति
के समय मैं तुम्हारे निकट नहीं आई। आह, मैं जानती हूँ, इस सन्देह
बावजूद भी कि यह बालक तुम्हारा नहीं है, तुम प्रत्येक आवश्यक सहाय
मुझे देते। तुम मुझे आराम देते और पर्याप्त धन मुझे प्रदान करते। किं
इस दानके आवरणमें तुम्हारी अधीरता छिपी रहती और तुम इस झंझट
मुक्ति पानेकी इच्छा करने लगते। मैं तो यहाँ तक सोचती हूँ कि तुम मुझ
आगन्तुक शिशुसे छुटकारा पानेके लिए कहते। मैं इसी बातसे अधिक घबरा

थी। क्यों कि मैं जानती हूँ कि तुम जो कहते मुझे वह करना ही पड़ता। किन्तु वह बालक मेरा सर्वस्व था। वह तुम्हारा था। वह तुम्हारा ही पुनर्जात रूप था। वह तुम्हीं थे, जो कि मुझे दे दिये गये थे; मेरे ही अस्थि-मांससे जिसका निर्माण हुआ था; मेरे अपने जीवनसे जो परस्पर गुँथा हुआ था। अन्तमें मैंने तुम्हें बाँध ही लिया। मैं अपनी धमनियोंमें तुम्हारे जीवित रक्तको दौड़ते हुए अनुभव करती। मैं, जबतक मेरी आत्मा चाहती, तुम्हें पालती पोसती, तुम्हारा आलिंगन करती, चूमती। यही कारण था कि मैं प्रसन्न थी और तुमसे इस रहस्यको छिपाये रखना चाहती थी। अब तुम मेरे हो चुके थे—बचकर भाग नहीं सकते थे।

तुम यह अनुमान न लगा लेना कि प्रतीक्षाके वे महिने, जैसा मैं सोचती थी, प्रसन्नतामें कटे होंगे। वे दुःख और चिंतासे भरे हुए, मनुष्यकी नीचताके प्रति घृणामें रंगे हुए थे। मुझपर कठिनाइयाँ आने लगीं। अन्तिम महिनोंमें मैं अपने कामपर नहीं जा सकती थी, क्योंकि मेरे पिताके सम्बन्धी लोग मेरी दशा देख लेते तो घरपर यह समाचार भेज देते। न मैं अपनी माँसे खर्च माँग सकती थी। इसलिए उस समय तक अपने गहने बेचकर मैं किसी प्रकार काम चलाती रही। बैठनेसे एक सप्ताह पूर्व, जो थोड़ेसे रुपये मेरे पास बचे थे, धोबिनने चुरा लिये। इस लिए मुझे प्रसूतिगृहकी शरण लेनी पड़ी। दुर्भाग्यके उस आश्रयस्थलमें, दीनों, निर्वासितों और परित्यक्तोंके बीच इस शिशुका—तुम्हारे पुत्रका जन्म हुआ। वह एक भयंकर स्थान था। वहाँकी प्रत्येक वस्तु विचित्र थी—बेमेल थी। हम सब एक दूसरेसे विभिन्न थीं—अपने अपने एकाकीपनमें एक दूसरेसे घृणा करती हुई, हम वहाँ पड़ी हुई थीं। क्लोरोफार्म और रुधिरकी गंधसे परिपूर्ण, चीख और कराहसे गूँजते हुए उस एक ही वार्डमें हम ठूँस दी गई थीं। दरिद्रता और निराशाका एक मात्र सम्बन्ध हम लोगोंमें था। इन वार्डसमें प्रत्येक रोगिणी अपना व्यक्तित्व खो बैठती है। विस्तरपर जो वस्तु पड़ी रहती है वह मांसका एक लोथड़ा, अध्ययन करनेकी वस्तु होता है।

इन वस्तुओंका वर्णन करनेके लिए मैं तुमसे क्षमा माँगती हूँ। अब कभी मैं उनके विषयमें नहीं बोलूँगी। ग्यारह वर्षोंतक मैं चुप रही, अब तो सदाके लिए मैं अवाक् हो ही जाऊँगी। एक बार, केवल, मुझे रोना पड़ा—मैं तुम्हें

बताना चाहती हूँ कि यह बालक मुझे कितना मँहगा पड़ा है—यह लड़का जो मेरे सुखका कारण था, और अब जो मरा हुआ पड़ा है। मैं उन भीषण क्षणोंको भूल गई थी। उसकी मुसकराहट, उसकी बोली सुननेमें; अपने आनन्दके अतिरेकमें मैं सब कुछ भूल गई थी। अब वह मर गया है और मेरी वेदनाएँ जीवित हो उठी हैं। केवल इसी बार मुझे इसकी पुकार करनी है। किन्तु तुमपर मैं दोष नहीं लगाती। मैं ईश्वरको कोसती हूँ; ईश्वरको, जो कि इस अकारण दुःखका रचयिता है। मैंने कभी तुम्हारे प्रति क्रोधकी भावनाको अपने मनमें प्रश्रय नहीं दिया। प्रसूतिकी अत्यन्त यातनाके क्षणोंमें भी तुम्हारे प्रति विरोधका अनुभव मुझे नहीं हुआ। उन रात्रियोंके लिए, जब मैंने तुम्हारे प्रेमका उपभोग किया, मैं कभी पश्चात्ताप नहीं करती। तुम्हें प्यार करना, और उस क्षणको धन्यवाद देना, कि जब तुमने मेरे जीवनमें प्रवेश किया, मैंने कभी नहीं छोड़ा। भविष्यकी पूरी जानकारी रखते हुए भी, यदि यह मेरे लिए आवश्यक होता कि मैं नरकमें जाकर रहूँ, तो मैं एक बार नहीं, कई बार प्रसन्नतासे वहाँ चली जाती।

हमारा पुत्र कल मरा और तुम उसे कभी न जान सके। उसका सुन्दर लघु व्यक्तित्व कभी भी तुम्हारे सम्पर्कमें नहीं आया; और तुम्हारी आँखें कभी उसपर नहीं पड़ीं। हमारे पुत्रके होनेके कई दिनों तक मैं अपने आपको तुमसे छिपाये रही। तुम्हारे प्रति मेरी आकांक्षाओंका वेग कम हो गया था। सच-मुच ही अब मैं तुम्हें कम आवेगसे प्यार करने लगी। तुम्हारे प्रति मेरे स्नेहको कोई क्षति नहीं पहुँच पाती, क्यों कि अब मेरा पुत्र हो चुका था। मैं तुम्हारे और उसके बीच अपने आपको नहीं बाँट देना चाहती थी। मैं अपने आपको तुम्हें नहीं देना चाहती थी, क्यों कि तुम सुखी थे, स्वच्छन्द थे। उस लड़केको मेरी आवश्यकता थी, जिसका पालन-पोषण मुझे करना था, जिसे मैं चूम सकती, लाड़ कर सकती थी। मुझे लगा कि तुम्हारे प्रति मेरी उन्मत्त वासना अब अच्छी हो गई है। तुम्हारे इस दूसरे रूपके उत्पन्न होते ही मुझे लगा कि मुझपरसे शाप उठ गया है। अब तुम्हारी और तुम्हारे निवासकी ओर मेरी इच्छाएँ बहुत कम उन्मुख होती थीं। केवल एक बात यह थी—तुम्हारे जन्म-दिवसको मैं तुम्हें सफेद गुलाबोंका एक गुच्छा भेज दिया करती थी। ठीक वैसे ही गुलाब, जैसे हमारी मिलनकी पहली रातको तुमने मुझे दिये थे। इन दस

या ग्यारह वर्षोंमें क्या तुम्हें एक बार भी सूझा है कि तुम्हें ये फूल किसने भेजे थे? क्या तुमने कभी सोचा है कि ऐसे ही फूल एक बार तुमने किसी लड़कीको दिये थे ! मैं नहीं जानती। न मैं कभी जानूँगी। मेरे लिए इतना ही पर्य्याप्त था कि, वर्षमें एक बार, स्वयं अंधकारमें छिपी रह कर, उस क्षणकी स्मृतिको ताजी करनेके लिए, मैं उन्हें तुम्हारे पास भेजती रहूँ।

हमारे पुत्रको तुमने कभी नहीं जाना। मैं आज अपने आपको कोस रही हूँ कि मैंने उसे तुमसे छिपाकर रखा। तुम तो उसे प्यार करते। जब उसने प्रथम निद्रासे जागकर आखें खोलीं, तो तुमने उसे मुसकराते हुए नहीं देखा। उसकी काली काली आँखें, जो तुम्हारी जैसी ही थीं और जिनसे बड़े उल्लासके साथ वह मुझे और संसारको देख रहा था। वह इतना सुन्दर था और इतना प्यारा। तुम्हारे चित्तकी सारी उत्फुल्लता और तुम्हारी प्रवहमान कल्पना उसमें भी थी—ठीक उसी रूपमें जिसमें ये विशेषताएँ बच्चोंमें दिखाई देती हैं। तुम जिस प्रकार जीवनसे खिलवाड़ करते हो, उसी प्रकार वह भी मुग्ध-सा होकर वस्तुओंसे खेला करता था। और तब एकाएक गंभीर होकर किताबें पढ़ने बैठ जाता। वह तो तुम्हीं थे—पुनर्जात। क्रीड़ा और गंभीरताका वह मिश्रण, जो कि तुम्हारी विशेषता है, उसमें स्पष्ट दिखाई देने लगा था। वह जितना ही तुमसे मिलता, मैं उतना ही उसे प्यार करती थी। वह अपना अध्ययन अच्छी प्रकार करता था। फ्रैंच तो वह ऐसे बोलता जैसे मैगपाई चिड़िया चहचहाती है। उसकी कापियाँ क्लास-भरमें सबसे साफ रहतीं। और कितना सुन्दर, छरहरे शरीरवाला छोटा-सा पुरुष वह था ! एक बार गर्मियोंमें मैं उसे समुद्रके किनारे ग्रैडो तक ले गई। स्त्रियाँ उसे देख कर खड़ी हो जातीं और उसके सुन्दर बालोंपर थपकियाँ देतीं। सेमरिंगमें, जब वह स्केटिंग कर रहा था, लोग घूमघूमकर उसे देखते रहते। वह इतना सुन्दर, इतना विनीत, और इतना आकर्षक था। गतवर्ष, जब वह छात्र बन कर कालेजमें गया, उसने अठारहवीं शताब्दी जैसी कालेजकी वर्दी पहनी। कमरबन्दमें उसने एक कटार भी खोंस रक्खी थी। आज वह यहाँ अपने विस्तरपर पड़ा हुआ है—होंठ उसके रक्तहीन हैं—दोनों हाथ एक दूसरेपर पड़े हुए हैं।

तुम्हें आश्चर्य होगा कि लड़केके इस प्रकारके धनसाध्य पालन-पोषणके लिए मैंने कहाँसे प्रबन्ध किया होगा। धनवानोंके योग्य सुन्दर और सुखी जीवन-

में उसका प्रवेश कराना मेरे लिए कैसे संभव हुआ होगा ? मेरे प्यारे, मैं अंधकारमेंसे बोल रही हूँ। निर्लज्ज होकर, मैं तुम्हें बताऊँगी। मुझसे सिकुड़कर भागो मत। मैंने बेच दिया अपने आपको। मैं गली गली फिरनेवाली एक सामान्य वेश्या तो नहीं बनी किन्तु अपना विक्रय मैंने किया। मेरे मित्र, मेरे चाहनेवाले, धनी लोग थे। पहले मैंने उन्हें ढूँढ़ निकाला, फिर वे ही मुझे ढूँढ़ने लगे। क्यों कि—क्या तुमने एक बार भी ध्यान दिया ?—मैं एक खूबसूरत औरत थी। जिस किसीको मैं अपना समर्पण करती, वह मेरा भक्त बन जाता। वे सबके सब मेरे अनुग्रहके पात्र, मेरे प्रशंसक बन गये। वे सब मुझे प्यार करते थे—तुम्हें छोड़कर—तुम्हें तो मैं प्यार करती थी।

क्या तुम मुझसे घृणा करोगे ? क्यों कि जो कुछ मैंने किया, तुम्हें बता दिया। मुझे विश्वास है कि तुम ऐसा नहीं करोगे। मैं जानती हूँ कि तुम सब कुछ समझ जाओगे। तुम समझ लोगे कि जो कुछ मैंने किया, वह तुम्हारे लिए, तुम्हारे दूसरे रूप, तुम्हारे पुत्रके लिए किया। प्रसूति-गृहमें निर्धनताके भीषण दृश्य मैं देख चुकी थी। मैं जान गई थी कि दरिद्रोंके जगतमें, केवल वे ही रहते हैं जो अत्याचारोंके शिकार हैं। मैं यह नहीं सोच सकती थी कि तुम्हारा पुत्र, तुम्हारा सुन्दर लड़का, उस पातालमें, अनाचारोंके बीच, गन्दे मुहल्लोंकी विषाक्त वायुमें पले। मैं नहीं चाहती थी कि उसके कोमल होंठोंसे नीच मनुष्योंकी-सी भाषा उपजे; उसके सुन्दर सफेद शरीरपर दरिद्रोंके-से मोटे-झोटे खुरदरे वस्त्र लदे हों। तुम्हारे लड़केको तो सर्वोत्तम वस्तुएँ, संसार-भरकी निधि, प्रफुल्लता मिलनी चाहिए। उसे जीवनमें तुम्हारे चरण चिह्नों-पर चलना था। तुम्हारे ही जैसे उसी उच्च स्तरमें निवास करना था।

यही कारण है कि मैंने अपने आपको बेच दिया। मैं इसे बलिदान नहीं कहती। क्योंकि वे वस्तुएँ, जिन्हें लोग सरलतासे 'इज्जत' और 'निरादर' कहते हैं, मेरे लिए निरर्थक-सी हैं। तुम्हीं एक मात्र व्यक्ति थे जिनका मेरे शरीरपर अधिकार था। तुम मुझे नहीं चाहते थे। तब, मैं उस शरीरका क्या करती हूँ, इसका अर्थ ही क्या है ? मेरे साथियोंका आलिंगन यहाँ तक कि उनकी अत्यन्त उद्दाम वासना भी मेरी गहराई तक नहीं छू सकती थी। यद्यपि उनमेंसे बहुत-से व्यक्ति ऐसे होते कि जिनकी मैं इज्जत करती। अपने ही दुर्भाग्यके विचार-से उनके सरल स्नेहके प्रति मुझे सहानु

भूति उपजती। वे सब लोग मेरे प्रति कृपालु थे। वे सब मेरी स्तुति करते और मुझे बिगाड़ते। वे सब मुझे अपनी शक्तिभर श्रद्धा अर्पित करते। उनमेंसे एक विधुर था। उपाधिधारी कोई व्यक्ति। उसने अपना सम्पूर्ण प्रभाव डालकर तुम्हारे पुत्रको कालिजमें भरती करा दिया। यह मनुष्य मुझे ऐसा प्यार करता था, जैसे मैं उसकी लड़की होऊँ। तीन या चार बार उसने मुझसे प्रार्थना की कि मैं उससे विवाह कर लूँ। आज मैं एक काउण्टेस होती। टाइरोलके एक सुन्दर किलेकी स्वामिनी होती। मैं भी चिन्ता-मुक्त होकर रहती। क्योंकि लड़केको एक अत्यन्त वत्सल पिता मिल गया होता और मुझे एक सरल-प्रकृति, लब्ध प्रतिष्ठ, दयालु पति। किन्तु अपनी अस्वीकृतिपर ही मैं डटी रही, और मैं जानती हूँ कि इससे उसे दुःख मिला। हो सकता है कि यह मेरी मूर्खता हो। क्यों कि यदि मैं राजी हो जाती तो आज कहींपर एक सुरक्षित एकान्त जीवन बिताती होती और मेरा बालक अब तक मेरे ही साथ रहा होता। मैं तुमसे अपनी अस्वीकृतिका कारण क्यों छिपाऊँ? मैं अपने आपको बाँधना नहीं चाहती थी। मैं स्वच्छन्द रहना चाहती थी— तुम्हारे लिए अपने अन्तरतममें, अपने अचेतन मनमें मैं निरन्तर अपने शैशवके स्वप्नोंको ही देखा करती थी। किसी दिन, कदाचित् तुम मुझे अपने समीप—चाहे वह एक ही क्षणके लिए हो—बुला लेते। एक इसी क्षणकी सम्भावनाके लिए मैंने अन्य वस्तुओंको अस्वीकार कर दिया। केवल इसी लिए कि मैं तुम्हारे आह्वानका उत्तर देनेके लिए स्वतंत्र रह सकूँ। अपने नारीत्वकी प्रथम जागृतिके क्षणसे आज तक मेरा जीवन था ही क्या?—तुम्हारी इच्छाओंकी प्रतीक्षा—केवल प्रतीक्षा!

अन्तमें वह चिर प्रत्याशित क्षण आया। और फिर भी तुम नहीं जान सके कि वह आ पहुँचा। जब वह समय आया, तो तुमने मुझे नहीं पहिचाना। तुम मुझे कभी नहीं पहिचान सके थे—कभी नहीं—कभी नहीं। मैं थियेटरोंमें, नाचघरों और प्रेटरमें तुमसे बहुधा मिलती थी। प्रत्येक बार मेरा हृदय उछलता और प्रत्येक बार बिना ध्यान दिये तुम पाससे निकल जाते। बाहरी दिखावेमें मैं एक दूसरी ही व्यक्ति बन गई थी। वह भीरु लड़की अब स्त्री थी। कहते थे, वह सुन्दर है। बढ़िया कपड़ोंसे सजी हुई—प्रशंसकोंसे घिरी हुई। तुम्हारे शयन-कक्षके मन्द प्रकाशमें सिकुड़ी हुई लज्जालु लड़कीको तुम

तुझमें कैसे पा सकते ? कभी कभी मेरा साथी तुम्हारी अभ्यर्थना करता और तुम उसका उत्तर देते हुए मेरी ओर देख भर लेते। किन्तु तुम्हारी दृष्टि एक विनयशील अपरिचितकी-सी होती। उसमें आदरका भाव होता, किन्तु परिचयका नहीं—दूरीका, निराशाजनक दूरीका आभास उसमें मिलता। एक बार, मुझे याद है, यह अपरिचय तो मेरे लिए घोर यंत्रणा-सी बन गया था। मैं ओपेरामें अपने मित्रके साथ एक बॉक्समें बैठी हुई थी। तुम निकटके दूसरे बॉक्समें थे। जब नृत्य प्रारम्भ हुआ तो प्रकाश मन्द कर दिया गया। मैं चेहरा तो नहीं देख सकती थी, फिर भी तुम्हारी साँस मुझे सुनाई दे रही थी—ठीक उसी प्रकार जब मैं तुम्हारे कमरेमें थी! दोनों बाक्सोंके बीचके मखमली पार्टीशनपर तुम्हारा हाथ रक्खा हुआ था। मुझे एक अदम्य इच्छा हुई कि झुककर उस हाथको चूम लूँ, जिसका प्रिय स्पर्श मैं एक ही बार जान सकी थी। आरकेस्ट्राके कोलाहलमें मेरी यह आकांक्षा और भी उग्र हो गई। मुझे अन्दर ही अन्दर ऐंठ ऐंठ कर अपने आपको रोकना पड़ा। पहले अंकके अन्तमें मैंने अपने मित्रसे कहा कि मैं बाहर जाना चाहती हूँ। यह मेरे लिए असह्य था कि तुम वहाँ अन्धकारमें बैठे रहो—इतने समीप, फिर भी इतने वियुक्त!

किन्तु वह क्षण फिरसे आया—केवल एक ही बार फिरसे। यह एक ही साल पहलेकी बात है। तुम्हारी जन्म-गाँठके दूसरे दिन। और दिनोंकी तुलनामें मेरे विचार उस दिन अधिकतर तुम्हारा ही चिन्तन कर रहे थे, क्यों कि तुम्हारे जन्म-दिनको मैं सदासे त्योहार-सा मनाती रही हूँ। प्रातःकाल तड़के-ही मैं सफेद गुलाब खरीदने गई। इन फूलोंको मैं प्रतिवर्ष तुम्हारे पास भेजा करती हूँ। सायंकालके समय मैं लड़केको मोटरमें घुमाने ले गई, और हम लोगोंने एक साथ चाय पी। रातको हम लोग थिएटरमें गये। मैं चाहती थी कि वह इस दिनको अपनी किशोरावस्थाकी रहस्यमयी जयन्ती माने। वह इसका कारण नहीं जान सकता था। मैंने दूसरा दिन अपने एक अभिन्न मित्रके साथ बिताया। वह ब्रूनका एक नवयुवक धनी व्यापारी था। मैं उसके साथ पिछले दो वर्षसे रह रही थी। वह मुझे अत्यधिक प्यार करता था, और, वह भी चाहता था कि मैं उससे विवाह कर लूँ। मैंने अस्वीकार कर दिया और इसका कारण वह जान नहीं सका। वह मुझे और उस बालकको उपहारोंके बोझसे लाद देना चाहता। अपनी इस मूर्खतापूर्ण अन्ध भक्तिके कारण वह किसी सीमातक मुझे अच्छा भी लगता

था। हम लोग नाचघरमें गये। वहाँ हमें कई दूसरे मित्र भी मिल गये। रिंगस्ट्रासीके एक रेस्तूराँमें हम लोगोंने भोजन किया। उस वार्तालाप और हास-परिहासके बीच मैंने प्रस्ताव किया कि हम लोग नाच-घरमें चलें। प्रायः ऐसे स्थान मुझे अच्छे नहीं लगते जहाँ नशेमें आधे चूर होकर प्रसन्नताका उपभोग हुआ करता है। किन्तु उस समय मेरे अन्दर कोई नैसर्गिक शक्ति काम कर रही थी। मेरे प्रस्तावका लोगोंने उत्साहपूर्वक समर्थन किया। एक अनिर्वचनीय कामना मुझे प्रेरित कर रही थी, मानो कोई असाधारण अनुभव मुझे होना हो। सदाकी भाँति, प्रत्येक व्यक्ति मेरी इच्छाओंकी पूर्तिके लिए उतावला था। हम लोग नाचघरमें गये। शैम्पेन पी। अकस्मात् एक उन्मत्त उल्लास-सा मुझपर छा गया। ऐसा अनुभव मुझे पहले नहीं हुआ था। मैंने एकके बाद दूसरा शराबका गिलास खाली कर दिया। एक अभिव्यंजनात्मक गीतमें मैंने भाग लिया और मैं चाहती थी कि मोर उल्लासके मैं नाचने लगूँ। तब, अकस्मात्, मुझे लगा कि किसी बरफ से ठंडे या जलते हुए हाथने मेरा हृदय जकड़ लिया हो। तुम अपने मित्रोंके साथ दूसरी टेबिलपर बैठे हुए थे। मेरी ओर ललचाई हुई दृष्टिसे देख रहे थे—तुम्हारी इस दृष्टिसे मैं सदा ऐसी काँप उठती थी कि उसका मैं वर्णन नहीं कर सकती। दस वर्षोंमें पहली ही बार अपनी प्रकृतिगत अज्ञात वासनासे भरे हुए तुमने यों मेरी ओर देखा था। मैं काँप गई। मेरा हाथ इस बुरी तरहसे हिला कि शराबका गिलास गिरते गिरते बच गया। संयोगसे मेरे साथियोंने मेरी दशा नहीं देखी, क्यों कि उनकी देखने-सुननेकी शक्तियाँ हँसी और संगीतके कोलाहलमें खो गई थीं।

तुम्हारी दृष्टि उत्तरोत्तर उन्मत्त होती गई। उसे छूकर मानो मेरी चेतनामें आग-सी लग गई। मैं यह निर्णय तो नहीं कर सकी कि आखिर तुमने मुझे पहिचान लिया, अथवा, ऐसी एक स्त्रीको देखकर तुम्हारी कामनाएँ जाग उठी हैं, जिसे तुम अपरिचिता ही समझ रहे थे। मेरे कपोल आरक्त हो उठे और मैं प्रलाप-सा करने लगी। तुम्हारी दृष्टिका जो प्रभाव मुझपर पड़ा वह तुमसे छिपा नहीं रह सका। तुमने पासके कमरेमें चलनेके लिए सिर हिलाकर अस्पष्ट संकेत किया। मैं ज्वरकी शीत अवस्थामें फँसे रोगीकी भाँति काँपने लगी। कोई मुझसे

बोलता तो मैं उत्तर न दे सकती। मेरे रक्तमें जो उथल-पुथल मच गई थी मैं उसपर नियंत्रण नहीं कर सकती थी। संयोगसे इसी समय हबशियोंका एक जोड़ा अपनी एड़ियाँ पटक-पटक कर नाचने और उच्च स्वरमें गाने लगा। प्रत्येक व्यक्ति उसी ओर देखने लगा और मुझे मेरा अभीष्ट अवसर प्राप्त हो गया। मैंने खड़े होकर अपने मित्रसे कहा कि मैं कुछ ही मिनटोंमें लौट आऊँगी, और मैं तुम्हारे पीछे पीछे चली आई।

तुम बराण्डेमें मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे और मुझे आती देखकर तुम्हारा चेहरा प्रफुल्लित हो गया। होठोंपर मुस्कराहट लाकर तुम मुझसे मिलने आगे बढ़े। यह स्पष्ट था कि तुमने मुझे नहीं पहिचाना। मैं फिरसे तुम्हारे लिए एक नया परिचय थी। "क्या आप एक घंटेका समय मुझे दे सकती हैं?"— तुम्हारे स्वरमें कुछ ऐसी प्रतीति खनकती थी, जिससे लगता कि मुझे ऐसी स्त्री समझते हो जिसे कोई भी व्यक्ति एक रात्रिके लिए खरीद सकता है। "हाँ" मैंने उत्तर दिया। यह वही काँपती हुई, किन्तु अनुरक्त "हा" थी, जो दस साल पहले, मेरे लड़कपनके समय, अँधियारी गलीमें तुमने सुनी थी। "मुझे बताइए कि हम कब मिलेंगे?" तुमने पूछा "जब आप चाहे," मैंने उत्तर दिया; क्योंकि जहाँ तक तुमसे संबंध था, मैं लज्जा-वज्जा कुछ भी नहीं जानती थी। तुमने ईषत् विस्मयसे मेरी ओर देखा। ऐसा विस्मय कि जिसमें थोड़ी-सी सन्देहकी पुट उत्सुकताके साथ मिली हुई थी। पहले भी एक बार मेरी तत्काल स्वीकृतिपर तुमने यही भाव दिखाया था। "अभी?" तुमने क्षणभर हिचकते हुए पूछा। "हाँ," मैंने उत्तर दिया, "चलो चलें।"

मैं क्लोकरूमसे अपनी ओढ़नी लानेको थी, तभी मुझे स्मरण हुआ कि मेरे ब्रूनवाले मित्रने हमारी सभी चीजें एक साथ जमा की थीं, और उनका टिकट उसीके पास था। यह तो असम्भव था कि मैं लौटकर जाऊँ और उससे अपनी वस्तुओंके लिए कहूँ। और मुझे यह और भी असम्भव लगता था कि तुम्हारे समीप होनेके लिए जिस क्षणकी मैं वर्षोंसे प्रतीक्षा कर रही थी उसे मैं खो दूँ। मैंने अपना शाल चारों ओर लपेट लिया और उस धुँधली रातको मैं बाहर निकल आई। मुझे अपने लबादेका भी ध्यान नहीं रहा। इसी प्रकार मुझे उस दयालु व्यक्तिका भी स्मरण स्मरण न रहा,

जिसके साथ मैंने कई वर्ष बिताये थे। मुझे यह भी ध्यान नहीं रहा कि मैंने उसके मित्रोंके समक्ष उसे बड़ी हास्यास्पद परिस्थिति-में डाल दिया है। क्यों कि उसकी प्रिया किसी एक अपरिचितके संकेत मात्र पर उसे छोड़ कर चली गई थी। अन्दर ही अन्दर मैं यह अनुभव कर रही थी कि एक अच्छे मित्रके साथ किस नीचता और कृतघ्नतासे मैं पेश आ रही हूँ। मैं जानती थी कि मेरी इस बर्बर नृशंसताके कारण वह जीवनभरके लिए मुझसे विच्छिन्न हो जायेगा। मैं अपने जीवनसे अग्नि-क्रीड़ा कर रही थी। किन्तु उस एक क्षणकी तुलनामें उसकी मित्रता और मेरा सम्पूर्ण जीवन मुझे तुच्छ लगता था। मैं तो अपने अधरोंपर तुम्हारे होठोंका स्पर्श अनुभव कर रही थी। मैं फिरसे एक बार तुम्हारे कंठस्वरका उतार चढ़ाव सुन रही थी। अब चूँकि इन सारी बातोंका अन्त हो गया है, मैं तुमसे यह कह रही हूँ, तुम्हें बता रही हूँ कि मैं तुम्हें कैसा प्यार करती थी। मैं सोचती हूँ कि यदि तुम मुझे मृत्यु-शय्यापरसे बुला सकते तो भी मैं तुम्हारी पुकार-का अनुसरण करनेके लिए पर्याप्त सामग्री बटोर लेती।

दरवाजेके निकट एक टैक्सी खड़ी थी। उसमें चढ़कर हम लोग तुम्हारे घर गये। मैं एक बार फिरसे तुम्हारा स्वर सुन सकती थी। तुम्हारे निकट होनेके आनन्दका अनुभव कर सकती थी। मैं प्रसन्नता और आवेशके नशे-में उन्मत्त-सी हो गई थी। मैं उन सभी बातोंका वर्णन नहीं कर सकती। उन सीढ़ियोंसे ऊपर चढ़ते समय मुझे वह अनुभव हो रहा था जो दस वर्ष पूर्व हुआ था। तुम्हारे साथ ऊपर चढ़ते समय मैं एक ही साथ भूत और वर्तमान दोनों समयोंमें अपने आपको पा रही थी। तुम्हारे कमरेमें कोई विशेष परि-वर्तन नहीं हुआ था। कुछ तसवीरें और आगई थीं, और बहुत-सी नई पुस्तकें। फरनीचरमें भी एकाध चीज और शामिल हो गई थी। किन्तु पूरा दृश्य वही पुराना परिचित-सा था। लिखनेकी टेबिलपर फूलदानमें गुलाब रक्खे हुए थे। वे गुलाब मैंने तुम्हें पिछले दिन भेजे थे। वे उस स्त्रीके स्मारक चिह्न थे जिसे तुम स्मरण नहीं करते, जिसे तुम नहीं पहिचानते, जिसे तुम इस समय भी नहीं पहिचान सके जब कि वह तुम्हारे समीप-में है, जब कि उसके हाथ तुम्हारे हाथोंसे लिपटे हुए हैं, उसके होंठ तुम्हारे होंठोंसे लगे हुए हैं। किन्तु फूलोंको वहाँ देखकर,

और यह जानकर मुझे सान्त्वना मिली कि तुमने ऐसी एक वस्तुको अपने निकट पनपने दिया है जिसका आगमन मेरे पाससे हुआ था, जो तुम्हारे प्रति मेरे स्नेहका निःश्वास थी।

तुमने मुझे अपनी बाँहोंमें भर लिया। एक बार फिरसे मैं एक समूची रात तुम्हारे साथ रही। किन्तु फिर भी तुमने मुझे नहीं पहिचाना; तुम्हारे आलिंगनोंसे जब मुझे रोमांच हो रहा था, उस समय यह सत्य मुझे ज्ञात हुआ कि तुम्हारी वासना एक प्रेमिका और एक छिनालके बीच कोई अन्तर नहीं देखती, तुम्हारा कृपण प्यार अपनी अभिव्यक्ति तक केन्द्रित रहता है। मेरे प्रति, जो कि एक अपरिचित स्त्री थी, जिसे नाचघरमें तुमने पाया था, तुम एकाएक बड़े ही नम्र बन गये। उसी पुरानी प्रसन्नतासे मदान्ध-सी होकर मैंने पुनः तुम्हारी प्रकृतिकी द्विरूपताका अनुभव किया। तुममें एक ओर अपार बौद्धिक क्षमता थी और दूसरी ओर अत्यन्त तीव्र इन्द्रिय लोलुपता। इन दो रूपोंके सम्मिश्रणको देखकर ही बचपनमें मैं तुमपर निछावर हो गई थी। दूसरे किसी मनुष्यमें क्षणिक सुखकी सम्पूर्ण मधुरता मैंने नहीं पाई। तुम्हारी भाँति, उस एक क्षणका सम्पूर्ण उपभोग कर लेनेपर, कोई भी व्यक्ति था जो पुनः एक अनन्त अमानवी विस्मृतिमें पड़कर सब कुछ भूल जाय। किन्तु, मैं भी अपने आपको भूल गई। उस अन्धकारमें तुम्हारे पार्श्वमें लेटी हुई मैं थी कौन ? क्या मैं पुराने दिनोंकी ही मुग्ध बालिका थी; क्या मैं तुम्हारे पुत्रकी जननी थी; क्या मैं एक नितान्त अपरिचिता नारी थी ? उस आश्चर्य-मयी रात्रिमें मेरे लिए प्रत्येक वस्तु एक ही साथ परिचित भी थी और नूतन भी।

किन्तु प्रातःकाल हुआ। हम देरमें सोकर उठे। तुमने जलपान करने तक मुझे रुकनेको कहा। चाय पीते समय हम शान्तिसे वार्तालाप करते रहे। पहलेकी ही भाँति तुम विनम्र स्पष्टतासे बोल रहे थे। पहलेकी ही भाँति तुम कोई अनर्गल प्रश्न नहीं करते थे और तुमने मेरे प्रति किसी जिज्ञासाका परिचय भी नहीं दिया। तुमने मेरा नाम-धाम नहीं पूछा। पहलेकी ही भाँति मैं तुम्हारे लिए एक संयोग मात्र थी—एक अनामिका नारी—उल्लासका एक नश्वर क्षण, जो अपने पीछे एक चिह्न तक नहीं छोड़ जाता। तुमने कहा कि तुम एक दीर्घ प्रवासपर जा

रहे हो, उत्तरी आफ्रिकामें तुम्हें दो या तीन महिने बिताने पड़ेंगे। ये शब्द बज्राघातकी भाँति मुझपर बरस पड़े। "बीत चुका—बीत गया—बीत गया और विस्मृत हो चुका!" मेरी इच्छा हुई तुम्हारे चरणोंपर गिर पड़ूँ, रोकर कहूँ, "मुझे भी—अपने साथ ले चलो।" किन्तु मैं भीरु थी—कायर, और दुर्बल थी। मैं इतना ही कह सकी—"कितने दुःखकी बात है!" तुमने मुसकरा कर मेरी ओर देखा "क्या तुम्हें सचमुच दुःख हो रहा है?"

क्षण-भरके लिए मैं उन्मत्त-सी हो गई। मैं खड़ी हुई और टकटकी लगाकर तुम्हें देखती रही। तब मैंने कहा, "जिस पुरुषको मैं प्यार करती हूँ वह सदासे यात्रा कर रहा है।" मैं सीधे तुम्हारी आँखोंमें देख रही थी। मैंने सोचा —"बस, अब ये मुझे पहिचान लेंगे।" तुम मुसकराए और सांत्वनासी देते हुए बोले—"प्रत्येक व्यक्ति कुछ समय उपरान्त लौट आता है।" मैंने कहा—"हाँ, लौट तो आता है, किन्तु तब तक वह भूल चुका होता है।"

मैं तीव्र भावुकतासे बोली होऊँगी, क्यों कि मेरे स्वरने तुम्हें हिला दिया। तुम भी खड़े हुए और आश्चर्य तथा स्नेहसे मुझे देखने लगे। तुमने अपने हाथ मेरे कन्धोंपर रक्खे: "सुन्दर वस्तुएँ भुलाई नहीं जातीं, और मैं तुम्हें नहीं भूलूँगा।" तुम्हारी आँखें देरतक मुझे परखती रहीं, मानो मेरा स्थायी प्रतिबिम्ब तुम अपने मनपर उतारना चाहते थे। मैंने जब उस अन्तर्भेदिनी दृष्टिका अनुभव किया, और अपने समूचे व्यक्तित्वकी छानबीन होते देखी, तो अनुमान लगाने लगी कि तुम्हारी दृष्टिहीनताका शाप अब टूट जायेगा। "वे मुझे पहिचान लेंगे—पहिचान लेंगे!" मेरी आत्मा इसी प्रत्याशामें काँपने लगी।

किन्तु तुमने मुझे नहीं पहिचाना। नहीं—तुमने मुझे पहिचाना ही नहीं। उससे पहले इतनी अपरिचित मैं तुम्हें नहीं लगी थी। यदि ऐसा न होता तो तुम वह न करते जो तुमने किया। तुमने मुझे बार बार चूमा,—अत्यन्त भावावेशमें चूमा। मेरे केश अस्तव्यस्त हो गये और मुझे उन्हें फिरसे ठीक करना पड़ा। मैं दर्पणके सम्मुख खड़ी थी—मैंने देखा, और ज्यों ही मैंने देखा कि मैं मारे शरम और आतंकके सिकुड़ गई—कि तुम मुझसे छिपाकर दो बैंकनोट मेरे मफलरमें खोंस रहे थे। मैं बड़ी कठिनतासे अपने आपको रोक सकी—बड़ी कठिनतासे मैंने अपने आपको तुम्हारे मुँहपर तमाचा मारनेसे रोका। तुम मुझे उस रातके दाम दे रहे

मैंने तुम्हारे साथ बिताई—मुझे, जो तुम्हें बचपनसे प्यार करती आई है—मुझे जो तुम्हारे पुत्रकी जननी है। तुम्हारे लिए तो मैं एक वेश्या थी, जिसे तुम नाचघरसे उठा लाये थे। यही पर्य्याप्त नहीं था कि तुम मुझे भूल गये; तुम्हें मुझे दाम देने पड़े, और इस प्रकार तुमने मेरी बेइज्जती भी की।

मैंने शीघ्रतासे अपनी वस्तुएँ सँभाली, कि यथासंभव शीघ्र मैं निकल भागूँ; यंत्रणा अत्यधिक तड़प उठी थी। मैंने अपनी टोपीके लिए इधर उधर देखा। वह लिखनेकी टेबिलपर, गुलाबोंके फूलदानके निकट रक्खी हुई थी—मेरे गुलाबोंके पास। मुझमें एक दुर्निवार इच्छा जाग उठी कि तुम्हारी स्मृतिको लौटानेका अन्तिम प्रयत्न करूँ। "क्या उनमेंसे एक सफेद गुलाब मुझे दोगे?" "अवश्य" तुमने कहा, और तुम सब उठा ले आये। "किन्तु ये तुम्हें किसी स्त्रीने भेजे हैं, जो शायद तुम्हें प्यार करती है!" तुमने कहा, "हो सकता है। मैं नहीं जानता। ये उपहार हैं, किन्तु मैं नहीं जानता इन्हें भेजा किसने। इसी लिए मैं इन्हें इतना पसन्द करता हूँ।" मैंने आँखें गड़ा गड़ा कर तुम्हें देखा। "कदाचित् किसी ऐसी स्त्रीने तुम्हें ये भेजे हैं, जिसे तुम भूल गये हो।"

तुम चकित हो गये थे। मैंने और भी एकाग्रतासे तुम्हें देखा। 'पहिचानो मुझे—केवल अन्तिम बार मुझे पहिचान लो'—यह मेरी आँखोंकी पुकार थी। किन्तु तुम्हारी मुस्कराहटमें, यद्यपि वह स्नेहभरी थी, परिचयका भाव नहीं था। तुमने फिर मुझे चूमा, किन्तु मुझे नहीं पहिचाना।

मैं भाग खड़ी हुई, क्योंकि मेरी आँखें आँसुओंसे भर आई थीं, और मैं तुम्हें यह दिखाना नहीं चाहती थी। द्वारपर, ज्यों ही मैं लड़खड़ा कर बाहर निकली, मैं करीब करीब तुम्हारे नौकर जॉनपर गिर पड़ी। सिटपिटाते हुए किन्तु बड़े ही आदरके साथ वह मेरे मार्गसे एक ओर हट गया। उसने मेरे लिए दरवाजा खोल दिया। उस क्षणिक समयमें, आँसुओंमेंसे होकर जब मैंने उसे देखा तो मुझे लगा कि वृद्धके मुखपर एक आलोक-सा बिखर गया है। मैं तुम्हें बताती हूँ कि उसी क्षणिक समयमें उसने मुझे पहिचान लिया था—उस व्यक्तिने, जिसने मेरे बचपनसे आज तक मुझे एक ही बार देखा था। मैं उसके प्रति इतने अधिक आभारका अनुभव कर रही थी कि मैं उसके आगे झुक जाती, उसके हाथोंको चूम लेती। मैंने मफलरसे खींच कर बैंक-नोट निकाल लिये, और उसके ऊपर फेंक दिये। उसने आशंकासे मेरी ओर देखा, और मैं

समझती हूँ कि उस एक क्षणमें वह मुझे इतना समझ गया, जितना तुम अपने संपूर्ण जीवनमें नहीं जान सके। प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक मनुष्य मुझे बिगाड़नेमें ही उत्सुक रहा। प्रत्येक व्यक्तिने अपनी कृपासे मुझे आभारी बनाया। किन्तु तुम, केवल तुम, मुझे भूल गये। तुमने, केवल तुमने मुझे कभी नहीं पहिचाना।

× × × ×

मेरा लड़का, हमारा पुत्र, मर गया है। मुझे प्यार करनेके लिए इस संसारमें कोई नहीं बचा—कोई नहीं, केवल तुम्हें छोड़ कर। किन्तु तुमसे मेरा क्या होगा?—तुम, जो मुझपरसे होकर ऐसे निकल गये, जैसे तुम किसी छोटी-सी नदीको पार कर जाते; तुम, जो मुझपर लात रख कर यों निकल गये, जिस प्रकार तुम किसी पत्थरपर रख कर निकल जाते; तुम, जो कि अपने मार्गपर उपेक्षाके भावमें चलते ही रहे, और मुझे तुमने कल्पान्त तक प्रतीक्षा करनेके लिए पीछे छोड़ दिया। एक बार मैं समझती थी कि मैं तुम्हें बाँधकर अपना ही बनाकर रखूँगी; और मैंने तुम्हें, ओ छलनामय, मैंने तुम्हें शिशुके रूपमें बाँध ही लिया। किन्तु वह तो तुम्हारा ही पुत्र था न? रातको वह बड़ी निर्दयतासे मेरे निकटसे खिसककर महायात्रापर चल दिया। वह भी मुझे भूल चुका, और अब लौट कर कभी नहीं आयेगा। मैं पुनः अकेली हूँ—सदासे अधिक एकाकिनी। मेरे पास कुछ भी नहीं रहा—तुमसे प्राप्त कुछ भी नहीं। कोई शिशु नहीं, कोई शब्द नहीं, तुम्हारी लिखी एक पंक्ति नहीं, तुम्हारी स्मृतिमें एक भी स्थान नहीं। यदि कोई मेरा नाम तुम्हारे समक्ष ले, तो तुम्हारे लिए वह किसी अपरिचितका नाम होगा। क्या मुझे मरनेमें प्रसन्नता न होगी, क्यों कि तुम्हारे लिए तो मैं मर ही चुकी हूँ? चले जानेमें मुझे सुख न होगा?—क्यों कि तुम तो मुझसे दूर चले गये हो।

मेरे प्यारे, मैं तुम्हें दोष नहीं दे रही। तुम्हारे आनन्दी जीवनमें मैं अपने दुःख नहीं डाल देना चाहती। तुम डरो मत कि मैं कभी तुम्हें कष्ट दूँगी। केवल इसी बार, इस भीषण क्षणमें जब कि वह लड़का मरा हुआ पड़ा है, मैंने अपने हृदयकी पुकार तुम तक पहुँचानी चाही है। सो, इसे तुम सह लेना। तब मैं विस्मृतिके गर्तमें जा पड़ूँगी; और सदाकी भाँति तुम्हारे प्रति मूक बनी रहूँगी। जब तक मैं जीवित हूँ, तब तक तुम मेरी पुकार नहीं

सुनोगे। केवल, जब मैं मर जाऊँगी तब यह वसीयत तुम्हें मिलेगी। यह उस स्त्रीकी है जिसने तुम्हें इतना प्यार किया जितना किसीने नहीं, जिसे तुम कभी नहीं पहिचान सके, जो सदा तुम्हारे आह्वानकी प्रतीक्षा करती रही, किन्तु जिसे तुमने कभी नहीं बुलाया। कदाचित्, कदाचित्, यह वसीयत तुम्हें जब मिलेगी, तो तुम मुझे बुलाओगे। और तब पहली ही बार मैं तुम्हारे प्रति बेईमान साबित होऊँगी, क्यों कि मृत्युकी नींदमें मैं तुम्हारी पुकार नहीं सुन सकूँगी। न तो कोई चित्र, और न कोई स्मृति चिह्न-ही मैंने तुम्हें छोड़ा है, ठीक उसी प्रकार जैसे तुमने नहीं छोड़ा, क्यों कि अब तुम मुझे कभी नहीं पहिचान सकोगे। जीवनमें यही मेरी नियति थी, और मृत्युमें भी यही रहेगी। अपने अन्तिम समयमें मैं तुम्हें नहीं बुलाऊँगी। तुम्हें अपने नाम और आकृतिके विषयमें अज्ञान ही छोड़ कर मैं अपने मार्गपर चल दूँगी। मृत्यु मेरे लिए सरल होगी, क्यों कि उतनी दूरसे तुम उसका अनुभव नहीं कर सकोगे। यदि मेरी मृत्युसे तुम्हें दुख होता तो मैं मर न सकती।

मैं अधिक नहीं लिख सकती। मेरा सिर बहुत भारी हो रहा है। मेरे जोड़-जोड़में दर्द हो रहा है। मुझे ज्वर है। मुझे लेट जाना चाहिए। कदाचित् सभी कुछ जल्दी ही समाप्त हो जायेगा। कदाचित्, इसी बार, नियति मेरे प्रति कृपालु होगी, और उन्हें मेरा पुत्र ले जाते मुझे देखना नहीं पड़ेगा।—अब मैं नहीं लिख सकती। बिदा, मेरे प्रिय, बिदा। मेरे तमाम धन्यवाद तुम तक पहुँचें। जो कुछ हुआ, वह सब अच्छा ही हुआ। अन्तिम साँस तक मैं तुम्हारी अनुग्रहीत रहूँगी। मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि मैंने सब कुछ तुमसे कह दिया। अब तुम जानोगे, यद्यपि तुम ठीक-ठीक तो नहीं समझ सकोगे कि, मैं तुम्हें कितना प्यार करती थी। किन्तु मेरा प्यार तुमपर बोझ कभी नहीं बनेगा। मेरे लिए यही सान्त्वना है कि मैंने तुम्हें कष्ट नहीं दिया। तुम्हारे उज्ज्वल सुन्दर जीवनमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। मेरे प्यारे, मेरी मृत्यु तुम्हें क्षति नहीं पहुँचायेगी। मुझे इसस सुख मिला है।

किन्तु, हाय, तुम्हारे जन्मावसरपर तुम्हें गुलाबके फूल कौन भेजेगा?—हाय, कौन भेजेगा? वह फूलदान रिक्त रक्खा रहेगा। मेरे जीवनकी वह साँस, वह सुगन्धि, जो बर्षमें एक बार तुम्हारे कमरेमें बहा करती थी, अब नहीं आयेगी।

मेरी एक अन्तिम भिक्षा है—पहली और अन्तिम। मेरे लिए यह तुम करना। अपनी जन्मगाँठके दिन—जब सभी लोग अपने अपने विषयमें सोचते हैं—कुछ गुलाब मँगवा लेना और उन्हें फूलदानमें रख लेना। इसे ठीक उसी भावनासे करना, जिस भावनासे लोग अपने प्रिय मृत व्यक्तियोंके लिए प्रार्थना करवाते हैं। मैं अब ईश्वरपर विश्वास नहीं करती, इस लिए मैं अपने अर्थ प्रार्थना नहीं कराना चाहती। मैं तो केवल तुमपर विश्वास करती हूँ। मैं तुम्हें-ही प्यार करती हूँ। केवल तुम्हींमें मैं जीवित रहना चाहती हूँ—चुपचाप, शान्तिसे, वर्षमें केवल एक बार—जिस प्रकार मैं सदा तुम्हारे ही समीप रहती आई थी। इतना तुम कर देना, मेरे प्रियतम, इतना कर देना।—मेरी पहली प्रार्थना, और अन्तिम——धन्यवाद, धन्यवाद,—मैं तुम्हें प्यार करती हूँ—प्यार करती हूँ--बिदा--

* * * *

उसके काँपते हुए हाथोंसे पत्र गिर पड़ा। वह बड़ी देर तक गंभीरतासे सोचता रहा। हाँ, एक धुँधली-सी स्मृति उसे हुई—पड़ोसीकी बच्चीकी, एक लड़कीकी, नाच-घरकी एक स्त्रीकी। यह सब धुँधला था और टूटा फूटा—तेजीसे बहती हुई नदीके तलमें पड़े हुए पत्थरकी तरल आकृतिहीन छायाकी भाँति। उसके मस्तिष्कमें छायाएँ एक दूसरीके पीछे भागतीं किन्तु मिलकर एकाकार नहीं होती थीं। चेतनाके संसारमें स्मृति तड़प उठती थी, किन्तु वह स्मरण नहीं कर सका। लिखनेकी मेजपर रक्खे फूलदानपर उसकी दृष्टि गई। वह रिक्त था। कई वर्षोंसे उसकी जन्म-तिथिको वह कभी खाली नहीं रहा। वह काँप गया। मानो कोई अदृश्य कपाट अकस्मात् खुल पड़ा हो और दूसरे लोकसे शीत वायु आकर उसके बन्द कमरेमें बहने लगी हो। मृत्युका सन्देश उसे मिला—मृत्युहीन प्रेमका सन्देश। उसके अन्दर-ही-अन्दर कुछ उमड़ने लगा; मृत-स्त्रीका विचार उसके मनमें तड़प उठा—अशरीरी और उन्मद—दूरपर किसी संगीतकी ध्वनिकी भाँति।

अदृश्य संग्रह

ड्रेसडनके बाद पहले जंक्शनपर एक अधेड़ सज्जन हमारे डिब्बेमें आये। हमारे समुदायको देखकर वे मुसकराये और विशेषरूपसे मेरे प्रति उन्होंने अपना सिर हिलाया, जैसे मैं बहुत दिनोंसे उनका परिचित होऊँ। मुझे हतप्रभ-सा देखकर उन्होंने अपना शुभ नाम लिया तो लगा मैं सचमुच ही उन्हें जानता हूँ। वे बर्लिनके एक अत्यन्त प्रसिद्ध कला-पारखी और कला-वस्तुओंके व्यापारी थे। लड़ाईसे पहले मैंने उनकी दुकानसे कई हस्तलिपियाँ और दुष्प्राप्य पुस्तकें मोल ली थीं। वे मेरी सामनेकी सीटपर बैठे और कुछ समय तक हम ऐसी बातें करते रहे, जिनका उल्लेख यहाँपर वांछनीय नहीं होगा। फिर, वार्तालापकी दशा बदलकर, उन्होंने अपनी उस यात्राका उद्देश्य मुझे बतलाया, जिसे समाप्त करके वे अभी अभी लौट रहे थे। उन्होंने कहा कि सैंतीस वर्षोंसे वे कला-व्यापार कर रहे हैं, किन्तु जैसा विचित्र अनुभव उन्हें आज हुआ है, वह उनके लिए अभूतपूर्व था।—इतनी भूमिका पर्याप्त है। अब मैं उन्हींको उनके अपने शब्दोंमें कहानी कहने दूँगा। मैंने यहाँपर वाक्य-चिह्नोंका प्रयोग इसलिए नहीं किया है कि मैं उलझनोंके भीतर नई उलझने नहीं उत्पन्न करना चाहता।

× × × ×

आप जानते हैं (उन्होंने कहा) कि मेरे व्यापारकी इधर क्या दशा हो गई है ? रुपएका मूल्य इस प्रकार नष्ट हो गया है जैसे शून्यमें जाकर भाप अदृश्य हो जाती है। लड़ाईके मुनाफ़ाखोरोंमें इधर प्राचीन कला-कृतियों (मेडोना इत्यादि) के लिए, हस्तलिखित पुस्तकों और प्राचीन वस्त्रोंके लिए प्रेम उत्पन्न हो गया है। उनकी इच्छाओंको सन्तुष्ट करना कठिन है। मैं तो सर्वोत्तम वस्तुओंको अपने ही उपयोग और आनन्दके लिए रख लेता हूँ। सो, मुझ जैसे व्यक्तिको यही दूभर हो गया कि अपने घरको नंगाझोरीसे बचा लूँ। मैं यदि कहता तो मेरी आस्तीनोंके बटन और टेबिल लैम्प तक वे लोग खरीद

लेते। बेचनेके लिए वस्तुओंका मिलना कठिन हो गया। कलाकी वस्तुओंके लिए मैं व्यावसायिक भाषाका प्रयोग कर रहा हूँ; यह बात आपको खटकती होगी। मुझे आप क्षमा कीजिएगा। इधरके नये नये ग्राहकोंसे ही मैंने यह भाषा सीखी है। क्या बुरे सम्बन्ध हैं ...प्रतिदिनके अभ्यास और स्वभावसे मुझमें एक विचित्र प्रवृत्ति आ गई है। वेनिसके प्राचीनतम छापेखानेकी अमूल्य पुस्तक और एक कुरूप ओवरकोटमें, जिसका मूल्य कई सौ डालर हो, मैं कोई अन्तर नहीं देखता। इसी प्रकार गेरसीनोके रेखाचित्र और हजार फ्रांकके एक नोटमें मेरे लिए कोई भी एक दूसरेसे अधिक आदरका पात्र नहीं है।

इन लोगोंकी जेबें रुपयोंसे जल रही थीं। उनके लोभका कोई भी प्रतीकार न था। एक दिन रातको अपनी दुकानमें झाड़-फूँक कर देखा तो लगा कि एक भी अमूल्य वस्तु नहीं बची है, जिसे कम-से-कम खिड़कियोंपर सजानेके लिए-ही रख सकूँ। मेरे पिता और पितामहसे यह सुन्दर व्यापार मुझे उत्तराधिकारमें मिला था। सो, मेरी दुकान तो १९१४ से कुछ पहले ऐसी सड़ी-गली वस्तुओं-से भरी पड़ी थी कि जिन्हें ठेलेमें लेकर सड़कोंपर निकलनेमें किसी कबाड़ी-को भी लज्जाका बोध होने लगता।

इस द्विविधामें मुझे लगा कि अपनी बहीके पृष्ठोंको टटोलूँ। शायद मुझे अपने भूतपूर्व ग्राहकोंका पता चल जाय और हो सकता है कि वे लोग संपत्तिके दिनोंमें खरीदी गई वस्तुएँ बेचना चाहें। ऐसे ग्राहकोंकी सूची युद्धके उस मैदानकी भाँति होती है, जो लाशोंसे पटी हुई हो। मुझे लगा कि उन खरीदारोंमेंसे बहुत-से या तो मर गये हैं, या इतने गिर गये हैं, कि, कदाचित् जो कुछ भी बहुमूल्य सामग्री उनके पास थी, उन्होंने बेच खाई है। फिर भी मुझे कुछ पत्रोंका एक पुलिन्दा मिला। उन्हें एक ऐसे व्यक्तिने लिखा था जो हमारे ग्राहकोंमें सबसे बूढ़ा था। मुझे सन्देह था कि वह जीवित भी है, या नहीं। १९१४ के भीषण विस्फोटके बाद उसने हमारी दुकानसे कुछ भी खरीदा न था, और वह इतना बूढ़ा हो चुका था कि मुझे उसका स्मरण तक नहीं हुआ। प्रारम्भके पत्र करीब आधी शताब्दी पूर्व लिखे गये थे। उस समय मेरे पितामह व्यापारकी देखभाल किया करते थे। मुझे तो स्मरण भी नहीं है कि, इन सैंतीस वर्षोंमें, जबसे मैं इस व्यापारमें क्रियात्मक भाग लेने लगा हूँ, मेरा एक बार भी उससे परिचय हुआ हो।

पत्रोंसे और बहीके विवरणोंसे जो कुछ मैं जान सका, वह यह था कि यह व्यक्ति उन थोड़ेसे विचित्र लकड़दादाओंमेंसे एक है, जो आज भी जर्मनीके प्रान्तीय शहरोंमें जीवित हैं। उनके हस्ताक्षर ऐसे थे, मानो ताम्रपत्रोंकी खुदाई हो। जिन वस्तुओंको वे मँगाते उनमेंसे प्रत्येकके नीचे लाल-स्याहीकी रेखाएँ होतीं। प्रत्येककी कीमत अंकों और अक्षरोंमें लिखी होती, ताकि भूल होनेकी कोई सम्भावना ही न रहे। उनके पत्र किसी कापीसे फाड़े हुए पन्नोंपर लिखे जाते थे, और लिफाफे गन्दे, कोई लम्बे, कोई चौड़े, अनेकों आकृतियोंके होते थे। इससे जान पड़ता था कि वे संसारकी धाराओंसे दूर रहनेवाले एक मितव्ययी व्यक्ति हैं और अपने एक-एक पैसेकी कीमत पहचानते हैं। हस्ताक्षरोंके नीचे सर्वदा उनका पद और उपाधि लिखी रहती थी: "फॉरेस्ट रेंजर, और अर्थ-सचिव—रिटायर्ड; लेफिनेण्ट-रिटायर्ड; आयरन क्रौस फर्स्ट-क्लासके विजेता।" इन उपाधियोंसे स्पष्ट था कि वे १८७०--७१ के कोई सैनिक थे, इसलिए अब उनकी अवस्था कोई अस्सी वर्षकी होनी चाहिए।

इन सारी विचित्रताओंके बावजूद वह व्यक्ति प्राचीन चित्रों और खुदी हुई कलात्मक वस्तुओंका एक अद्वितीय पारखी और चतुर प्रेमी था। उसकी मँगाई हुई वस्तुओंको देखकर कोई भी यह जान सकता था कि आज उस देहाती बूढ़ेके पास ताम्रपत्रोंपर खुदे हुए चित्रों और दूसरी वस्तुओंका ऐसा बढ़िया संग्रह है कि जैसा इन मुनाफाखोरोंको देखना भी नसीब न हुआ हो। ये वस्तुएँ उसने तब खरीदीं, जब एक साधारण व्यक्ति भी इच्छा करनेपर ही, जर्मनीमें खुदे हुए काष्ठफलकोंका ढेर खरीद सकता था। केवल वे ही वस्तुएँ आज लाखों रुपयोंकी थीं, जिन्हें उसने कई वर्षोंमें थोड़ी-थोड़ी कीमत देकर खरीदा था। मुझे यह न सोचनेका कोई कारण नहीं दिखाई दिया कि हमारी ही भाँति किसी दूसरे व्यापारीसे भी उसने वस्तुएँ मोल ली होंगी। क्या उसका संग्रह तितर-बितर हो गया ? अन्तिम खरीद उसने जब हमारी दुकानसे की थी, तबसे आज तक कला-वस्तुओंके व्यापारमें बड़े बड़े परिवर्तन हो गये हैं। मुझे यह सोच-सोच कर आशंका होती थी कि, मेरे विना जाने ही, इतना विशाल संग्रह किसी अन्य व्यक्तिके हाथमें चला गया हो। यदि वह मर गया तो कदाचित् यह निधि उसके उत्तराधिकारियोंके पास सुरक्षित होगी।

इन्हीं बातोंसे विवश होकर मुझे कल शामको सैक्सनी प्रान्तके उस सुदूरवर्ती नगरकी ओर यात्रा करनी पड़ी। छोटे-से रेलवे स्टेशनसे बाहर आकर मैं नगरकी प्रधान सड़कपर चलने लगा। उस ओरके टूटे फूटे पुराने ढंगके मकानोंसे आप तो परिचित होंगे ही। वैसे ही किसी घरमें वह व्यक्ति रहता था जिसके पास रेम्ब्राण्टकी खुदाईका पूरा सेट, तथा डयूरे और मेन्टेनाका समूचा संग्रह रक्खा है। मुझे तो यह असम्भव-सा लगा। पास ही डाकघरमें पूछताछ की। मैं तो चकित हो गया, क्यों कि भूतपूर्व फॉरेस्ट-रेंजर और अर्थ-सचिव, अब भी जीवित हैं।—ऐसा मुझसे कहा गया। लोगोंने उनके घरका मार्ग मुझे बताया। मैं उस ओर चला कि मेरा हृदय मारे उत्कण्ठाके फटने लगा। तब दोपहर होनेको कुछ ही समय बाकी था।

कलाके जिस जौहरीकी खोजमें मैं यहाँ आया था, वे एक बारिक-नुमा मकानकी दूसरी मंजिलमें रहते थे। पिछली शतीके तीसरे चरणमें मुनाफाखोरोंने ऐसे कई मकान इस ओर बनवाये थे। दाहिनी ओरके दरवाजेपर चीनी-मिट्टीकी एक प्लेटपर उनका नाम खुदा हुआ था। आखिर मैंने उन्हें खोज ही लिया! मेरी पुकारके उत्तरमें एक महिला आई। अत्यन्त वृद्ध थीं। बाल सब सफेद हो चुके थे। वे काली टोपी पहिने हुए थीं। मैंने अपना कार्ड उन्हें दिया और पूछा कि मकान मालिक घरपर हैं, या नहीं। उन्होंने सन्देह भरी दृष्टिसे मेरी ओर, फिर कार्डपर, और पुनः मेरी ओर देखा। इस उपेक्षित नगरमें राजधानीके एक निवासीका आगमन असाधारण घटना थी। फिर भी, अपना कंठस्वर यथासम्भव मधुर बनाकर उन्होंने मुझसे एकाध मिनट हॉलमें ठहरनेको कहा, और दरवाजेके भीतर जाकर अदृश्य हो गई। एक फुसफुसाहट और इसके उपरान्त तेज, प्रसन्नता-भरी एक पुरुषकी कंठध्वनि सुनाई दी। "क्या कहती हो? बर्लिनसे हर रैकनर आये हैं? प्राचीन वस्तुओंके व्यापारी हर रैकनर? अजी हाँ, हाँ, मैं अवश्य उनसे मिलूँगा।" इसपर वह वृद्धा पुनः दिखाई दीं और मुझसे उन्होंने अपने साथ चलनेको कहा।

मैंने ओवरकोट खोला और पीछे पीछे चल दिया। सस्ते फरनीचरवाले एक कमरेके बीचोंबीच एक मनुष्य मेरा स्वागत करनेके लिए खड़ा था। बूढ़ा, किन्तु स्वस्थ और सबल। उन्होंने एक अर्ध सैनिक जैकट पहन रक्खा था। अत्यन्त विनम्रताके साथ उन्होंने दोनों हाथ मेरी ओर बढ़ाये। उनका यह

हाथ बढ़ाना अत्यन्त स्वाभाविक था। नहीं जान पड़ता था कि वे ऐसा विवश होकर कर रहे हैं। किन्तु वे अकड़कर ऐसे अडिग खड़े थे कि उनके खड़े रहने का ढँग और उनकी विनम्रता दोनों परस्पर विरोधी कार्यों-से लगते थे। मुझसे मिलनेको वे आगे नहीं बढ़े। मुझे ही विवश होकर ठीक उन तक जाना पड़ा कि हाथ मिला सकूँ। मैं आपसे सच कहता हूँ कि मैं थोड़ा चिढ़-सा गया था मैंने यह भी देखा कि उनका हाथ मेरे हाथकी ओर स्वयं नहीं खिंचा, किन्तु मानो मेरे हाथकी प्रतीक्षा कर रहा था। आखिर, मैं जान गया कि बात क्या है। वह व्यक्ति अन्धा था।

बचपनसे ही यह मेरा स्वभाव रहा है कि अन्धोंके आगे मैं बेचैन-सा हो जाता हूँ। मुझमें एक प्रकारकी अचकचाहट-सी आ जाती है। एक प्रकारकी लज्जा कि मैं जिस व्यक्तिके सम्मुख खड़ा हूँ वह पूर्णरूपसे जीवित है, फिर भी अपनी इद्रियोंका समूचा उपयोग नहीं कर सकता। लगता है कि मैं एक अनुचित लाभ उठा रहा हूँ। उनकी चमकती हुई सफेद पलकोंके नीचे दृष्टिहीन दो गोल तारिकाएँ जब मैंने देखीं तो भावनाओंके वश मैं काँप उठा। किन्तु उन्होंने मुझे अधिक समय तक इस अन्यमनस्कतामें पड़े नहीं रहने दिया। प्रसन्नतासे अट्टहास-सा करते हुए वे बोले—

"आज सचमुच बड़ा शुभ दिन है। आश्चर्य होता है कि बर्लिनका एक बड़ा आदमी यहाँ आ पहुँचे। समझ लीजिए कि जब आप ऐसे प्रसिद्ध व्यापारी युद्ध-घोषणा-सी करते हुए निकल पड़ते हैं तो हम प्रान्तवासियोंको सतर्क हो जाना चाहिए। हमारे इधर एक कहावत है कि 'अगर आसपास बनजारे दिखाई दें तो अपने दरवाजे बन्द कर दो और जेबोंमें बटन लगा लो।' मैं जानता हूँ, आपने इधर आनेका कष्ट क्यों किया। व्यापार चल नहीं रहा। खरीदार हैं नहीं। सो, लोग पुराने ग्राहकोंको ढूँढ़ रहे हैं। किन्तु डर है कि आपको निराश न होना पड़े। हम पेंशनरोंको तो यही सुख है कि सूखी रोटियाँ मिल जाती हैं। अपने समयमें मैं एक संग्रहकर्ता था। अब मैंने यह टंटा-बखेड़ा छोड़ दिया है। खरीदनेके मेरे दिन समाप्त हो चुके हैं।"

मैंने तत्काल उन्हें समझाया कि वे गलती कर रहे हैं। मैं वस्तुएँ बेचने नहीं आया। कार्यवशात् इस प्रदेशमें आ जानेके कारण मैंने यह अनुचित समझा कि अपने उन पुराने ग्राहकको, जो जर्मनीके प्रसिद्ध संग्रहकर्ताओंमें माने

जाते हैं, अपनी श्रद्धांजलि अर्पित किये विना ही चला जाऊँ। मेरे होंठोंसे ये शब्द निकले ही थे कि वृद्ध महाशयके मुखपर एक अद्वितीय भाव-परिवर्तन दिखाई देने लगा। वे कमरेके बीचोंबीच तनकर खड़े रहे, किन्तु उनका मुख दीप्तिसे भर गया। उनकी प्रत्येक गतिविधिमें गर्वकी भावना उमड़ पड़ी। वे उस ओर मुड़े जहाँ वे समझते थे कि उनकी पत्नी खड़ी हैं, और, ऐसा लगा मानो कह रहे हों—"सुना तुमने?" फिर मेरी ओर घूमकर उन्होंने कहना आरंभ किया। अबकी कवायद करानेवाले हवलदारकी भाँति उनके स्वरमें तीखापन नहीं रह गया था। वे विनम्र—नहीं, अत्यन्त कोमल स्वरमें बोले:—

"आह, कितने भले हैं आप—यदि आपकी यह यात्रा केवल मुझ बूढ़ेसे परिचय-मात्र प्राप्त करके ही समाप्त हो जाय और आपको दूसरा कोई लाभ न हो, तो मुझे दुःख होगा। कुछ भी हो, मेरे पास जो वस्तुएँ हैं आप उन्हें देखें। उनसे अधिक बहुमूल्य आपको वियाना, बर्लिनके अल्बर्टिना या फ्रांसके लोरेमें देखनेको नहीं मिलेंगी। ऐसा व्यक्ति, जो पचास वर्ष तक लगातार संग्रह करता रहा, कला-प्रेम जिसका मार्गप्रदर्शक था, उसके पास ऐसी निधियाँ हैं, जो किसी भी नगरकी दुकानमें नहीं दिखाई देंगी।—लिस्बेथ,—भई, जरा उस आल्मारीकी चाबी तो देना—"

यहाँपर अब एक विचित्र घटना हो गई। उनकी पत्नी, जो अब तक मुस्कराती हुई हमारी बातें सुन रही थीं, एकाएक चौंक पड़ीं। वे मेरी ओर प्रार्थनाके चावसे हाथ जोड़कर सिर हिलाने लगीं। इन संकेतोंका क्या अर्थ है—यह मेरे लिए एक समस्या थी। इसके बाद वे अपने पतिके पास गईं और उनके कंधेको छूकर बोलीं—"फ्रांज, तुमने अपने अतिथिसे यह भी तो नहीं पूछा कि उन्हें और भी कहीं जाना है? इसके अलावा, यह भोजनका समय भी हो गया है," —फिर मेरी ओर देखकर वे बोलीं, "इस घरमें इतना भोजन भी नहीं है कि हम आपको न्योत सकें। आप तो होटलमें खायेंगे ही। उसके उपरान्त आप यहाँ आकर काफी पीजिए। मेरी लड़की आन्ना मेरिया यहीं रहेगी। संग्रहकी फाइलोंसे उसे ही अधिक परिचय है।"

फिरसे एक बार दयनीय दृष्टिसे उन्होंने मेरी ओर देखा। यह स्पष्ट था कि चाहती थीं कि मैं उसी समय, वहींपर, संग्रह देखना अस्वीकार कर दूँ। इतना मैं समझ गया था। मैंने कहा, मुझे सचमुच 'गोल्डन स्टाग' जाकर

भोजन करना है। तीन बजे मैं लौट कर आऊँगा, और तब क्रोनफील्ड महाशय जो कुछ मुझे दिखाना चाहें, मैं प्रसन्नतासे देखूँगा। छह बजेसे पहले वहाँसे प्रस्थान करनेका मेरा निश्चय नहीं है।

वृद्ध महाशय चिहुँक कर बोले—उस बच्चेकी भाँति जिसे मनचाहा खिलोना न मिला हो–"अच्छी बात है। मैं जानता हूँ कि बर्लिनके रईसोंको अपने समयपर पूरा अधिकार है। किन्तु मुझे यह तो विश्वास है कि आप थोड़ा-सा समय मुझे अवश्य देंगे। मैं आपको एक या दो प्रिन्ट्स नहीं दिखाना चाहता बल्कि पूरे सत्ताईस फाइलोंका मसाला मेरे पास है। प्रत्येक फाइलमें एक-एक कलाकारके सम्पूर्ण प्रिण्ट्स ठूँसठूँस कर भरे हुए हैं। यदि आप ठीक तीन बजे आ जायँ तो शायद छह बजे आपकी मुक्ति हो सकती है।"

उनकी पत्नी मुझे दरवाजे तक पहुँचाने आईं। हॉलका द्वार खोलनेसे पूर्व वे धीमे स्वरमें मुझसे बोलीं—"आप यह बताइए, यदि आन्ना मेरिया लौटनेसे पहले होटलमें आपसे मिलने आवे, आप बुरा तो नहीं मानेंगे? बहुत-से कारण हैं, जिन्हें मैं यहाँ नहीं समझा सकती।"

"अवश्य अवश्य—बड़ी प्रसन्नतासे। वैसे, मैं अकेले ही भोजन करूँगा। यदि वे चाहें तो भोजन करके सीधे आ सकती हैं।"

एक घंटे बाद, जब मैं 'गोल्डन स्टाग'के भोजन-गृहसे निकल कर बैठकमें आया तो आन्ना क्रोनफील्ड आ पहुँची। अवस्था पर्य्याप्त बीत चुकी थी। सीधे सादे वस्त्र पहिन रक्खे थे। आते ही इस प्रकार मुझे देखती रही, मानो सिट-पिटा रही हो। मैंने उसे शान्त करनेका प्रयत्न किया। कहा, कि यद्यपि समय तो नहीं हुआ है, फिर भी यदि आपके पिता उतावले हो रहे हों तो मैं अभी चलनेको उद्यत हूँ। यह सुनकर उसका मुख रक्तिम हो उठा। वह और भी उलझी हुई-सी लगी। तब हकलाते हुए उसने कहा कि यहाँसे जानेसे पूर्व मैं कुछ बातें कर लेना चाहती हूँ।

"आप बैठ जाइए न? मैं तो पूर्ण रूपसे आपकी सेवामें हूँ।" मैंने कहा।

उसे अड़चन हो रही थी कि कैसे प्रारम्भ करे। उसके हाथ और होंठ काँप रहे थे। आखिर...

" मेरी माँने मुझे भेजा है। आपसे कृपाकी एक भीख हमें माँगनी है। यहाँसे जाते ही पिताजी आपको अपना संग्रह दिखाना चाहेंगे। किन्तु उस संग्रहमेंसे...उसमेंसे अब कुछ भी तो बचा नहीं है।..."

वह हाँफ गई, सिसकने लगी, और बिना रुके कहती गई—" मुझे साफ साफ ही कह देना चाहिए।......आप जानते हैं कि किस संकटके समयमेंसे हम लोग गुजर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि आप समझ जायेंगे। लड़ाई छिड़ते ही पिताजी बिलकुल अन्धे हो गये। उनकी दृष्टि पहलेसे ही क्षीण होती जा रही थी। युद्धकी उत्तेजनासे उनके अन्धे होनेमें सहायता-सी मिली। सत्तर वर्षकी उनकी अवस्था थी, फिर भी वे युद्धस्थलमें जाना चाहते थे। पुराने समयकी उनकी लड़ाइयोंका उन्हें स्मरण होता था। यह तो स्वाभाविक है कि फौजमें उनके लिए कोई स्थान नहीं था। जब हमारी सेनाओंकी विजय-यात्रा अवरुद्ध हो गई तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ। डाक्टरका कहना है कि उसीसे वे एकदम अन्धे हो गये। दूसरी बातोंमें तो, आपने देखा ही है कि वे पूर्ण स्वस्थ हैं। १९१४ तक वे दूरदूर तक घूमने जाया करते थे। शिकार खेला करते थे। जबसे आँखें फूटी हैं, उनका एक मात्र विनोद वही संग्रह बच रहा है। वे प्रत्येक दिन उसे ही देखते हैं। मैं कह रही हूँ, वे उसे 'देखते हैं' यद्यपि उन्हें दिखाई कुछ भी नहीं देता। प्रतिदिन दोपहरको वे अपनी टेबिलपर फाइलें मँगवाते हैं और एकके बाद दूसरे प्रिण्टपर अँगुलियाँ फेरते रहते हैं। दूसरी किसी वस्तुमें उन्हें रस नहीं मिलता। वे मुझसे नीलामोंका विवरण पढ़वा कर सुनते हैं। जैसी जैसी कीमतें बढ़ती जाती हैं, वे उतने ही उत्साहित होते चले जाते हैं।

" ऐसी भयंकर दशा है। पिताजीको रुपयेके पतनकी सूचना नहीं मिली। हम तो दिवालिया हो चुके हैं। वे यह नहीं जानते कि उनकी एक महिनेकी पेंशन हमारे एक दिनके भोजनके लिए भी पर्य्याप्त नहीं होती। हमें औरोंका भी भरण पोषण करना है। मेरी बहिनके पति वरदूनमें मारे गये थे। उनके चार बच्चे हैं। हमने रुपए पैसोंकी इन समस्याओंको पिताजीसे दूर ही रक्खा है। अपने खर्च यथासम्भव हमने कम कर लिये हैं। फिर भी काम चलना असम्भव हो गया। हम लोगोंने चीजें बेचनी प्रारम्भ कीं। गहने-पत्ते, और–और चीजें। उनके प्रिय संग्रहको हमने छुआ तक नहीं। अब

बेचनेको कुछ भी नहीं बचा। पिताजी पहले जो कुछ बचा पाते थे उसे वे लकड़ीपर खुदे चित्रों या ताम्रपत्रोंपर खर्च कर देते थे। संग्रहकर्त्ताका ही तो पागलपन था! खैर...अन्तमें यह प्रश्न हमारे सामने आया कि या तो अब हम उनके संग्रहको छुएँ, या उन्हें भूखों मार डालें। हमने उनकी अनुमति नहीं माँगी। क्या लाभ होता! उन्हें तो अनुमान तक नहीं था कि भोजन कितनी कठिनतासे प्राप्त हो रहा है। उन्होंने सुना तक नहीं कि जर्मन हार गये हैं और उन्हें विवश होकर अलसाँस लोरें दुश्मनको सौंपना पड़ा है। समाचार-पत्रोंकी इस प्रकारकी प्रवृत्तियोंको हम उन्हें नहीं सुनाया करते।

"पहली वस्तु जो हमने बेची, वह अत्यन्त मूल्यवान् थी। रेम्ब्रैन्टका एक ताम्रपट्ट। व्यापारीने हमें एक गहरी रकम दी—कई हजार मार्क। हमने सोचा कि इससे कई वर्ष कट जायेंगे। किन्तु आप जानते हैं--१९२२ और २३में रुपया किस प्रकार पिघलता चला जा रहा था। प्रत्यक्ष आवश्यकताओंके लिए कुछ रखकर बाकी हमने बैंकमें जमा कर दिया। दो ही महिनोंमें वह साफ हो गया। हमें दूसरी वस्तु बेचनी पड़ी।—फिर तीसरी। वे दिन आर्थिक उतारके थे। प्रत्येक व्यापारी वस्तु लेकर रख लेता और तब तक हमें रुपया न देता, जब तक उसकी कीमत दशमांश अथवा शतांश न रह जाय। हमने नीलाम-घरोंमें देखा। किन्तु हम वहाँ भी ठगे गये, यद्यपि बोलियाँ लाखों तक चढ़ जाती थीं। एक लाख, या करोड़के नोट, जब तक हमें मिलें-मिलें कि वे रद्दीकी टोकरीमें फेंक देने योग्य हो जाते थे। इस तरह साराका सारा संग्रह प्रतिदिनकी रोटी जुटानेमें ही तितर-बितर हो गया।

"यही कारण था कि आपके आनेपर माँ घबरा गई थीं। ज्यों ही फाइलें खोली जायेंगी, हमारी यह प्रवंचना, जो हमने पुण्यकार्यके लिए की थी, पकड़ ली जायेगी। वे प्रत्येक वस्तुको छूकर पहचान सकते हैं। प्रत्येक प्रिण्ट जब हम लोगोंने बेचा तो उसके स्थानपर उसी आकार और मोटाईकी दफ्तियाँ हमने लगा दीं। ताकि जब वे उसे हाथमें लें तो कोई अन्तर उन्हें न जान पड़े। एकके बाद एकको छू कर और गिन कर उन्हें उतना ही आनन्द प्राप्त होता है, जितना आँखोंसे देखनेमें। यहाँ कोई भी कलाका पारखी नहीं है। इसलिए वे किसीको दिखाना पसन्द भी नहीं करते। उन्हें देखे, ऐसा योग्य व्यक्ति कोई है भी तो नहीं। किन्तु वे अपने संग्रहको इतना अधिक चाहते हैं

कि यदि उन्हें मालूम हो गया कि वह बेच दिया गया, तो उनका कलेजा टूट जायेगा। पिताजीने अन्तिम बार जिस व्यक्तिको अपना संग्रह दिखाया, वह ड्रेसडनके संग्रहालयम ताम्रपत्रोंका क्यूरेटर था। वह कई वर्ष पूर्व मर चुका है।

"मैं आपसे विनती करती हूँ"—उसने टूटे स्वरमें कहा, "कि उनके स्वप्नको आप तोड़े नहीं। उनकी इस प्रतीतिको कि उनकी निधियाँ ज्योंकी त्यों हैं, आप नष्ट न कर दें। इस हानिका ज्ञान होनेके उपरान्त वे जीवित नहीं रह सकते। हो सकता है कि हमने उनके प्रति अपराध किया। किन्तु हम और कर क्या सकते थे? जीवित रहना प्रत्येकके लिए आवश्यक है। प्राचीन लिपियोंसे अधिक मूल्यवान् अनाथ बच्चे हैं। इसके अतिरिक्त पिताजीके लिए तो सारा जीवन और सारी प्रसन्नता यही रह गई है कि प्रति दोपहरको वे अपने काल्पनिक संग्रहको उलट-पुलट करें, और प्रत्येक लिपिसे मित्रकी भाँति वार्तालाप करें। अन्धे होनेके बाद आज यह अनुभव बड़ा ही भयंकर होगा। किस प्रकार वे जीवनभर यही आशा करते रहे कि किसी दिन अपना संग्रह एक विशेषज्ञको दिखाएँगे। यदि आप कृपा करके हमारी इस प्रवंचनामें योग दे सकें......"

मैं अभी आपको यह कहानी यों ही सुना रहा हूँ, इसलिए यह नहीं बता सकता कि वह प्रार्थना किस तीव्र वेदनासे आप्लुत थी। इस व्यापारी जीवनमें मुझे कई दुःखप्रद लेन-देन भी करने पड़े हैं। जब कि रोटीके टुकड़े टुकड़के लिए लोगोंको अपनी सर्वप्रिय संग्रहीत वस्तुओंको थोड़ी-सी कीमतमें बलि चढ़ा देना पड़ा। ऐसे कई अवसरोंपर मैं निरपेक्ष भावसे खड़े-खड़े उन्हें देखा किया हूँ। किन्तु मेरा हृदय पत्थर नहीं बन पाया है और इस कहानीका मुझपर बड़ा प्रभाव पड़ा। यह तो कहना ही व्यर्थ है कि झूठमूठ अभिनय करते रहनेकी मैंने प्रतिज्ञा कर ली।

हम दोनों उनके मकानपर साथ साथ गये। मार्गमें यह सुनकर मुझे अत्यन्त दुःख हुआ कि उन दो मूर्ख, किन्तु कोमलहृदया स्त्रियोंने बहुत ही कम मूल्यमें ऐसे ऐसे प्रिण्ट्स् दे दिये जो अत्यन्त मूल्यवान् थे और कुछ तो अद्वितीय भी थे। इससे उन्हें शक्तिभर सहायता देनेका मेरा विचार और दृढ़ हो गया। हम ज्यों ही सीढ़ियां चढ़ने लगे कि प्रसन्नताकी एक चीख

सुनाई दी। "आइए! आइए!" अन्धोंकी श्रवण शक्ति तीव्र होती है। उन्होंने चिर-प्रतीक्षित पदध्वनि पहचान ली थी।

"भोजन करके फ्रांज हमेशा कुछ देर सो लिया करते हैं। किन्तु आज इसी उत्कण्ठामें वे नहीं सो सके।" वृद्ध महिलाने मुसकराकर कहा। अपनी पुत्रीकी ओर एक ही नजर देखकर वे समझ गई कि सब कुछ ठीक है। अन्धे कला-पारखीने मेरी बाँह पकड़ ली, बगलकी कुर्सीपर बिठा दिया।

"आइए, शीघ्र ही प्रारम्भ कर दें। बहुत कुछ देखना है और समय कम है। इस पहली फाइलमें ड्यूरेकी कृतियाँ हैं। आप समझ लीजिए—पूरा सेट है। एकसे एक बढ़ियाँ कटे हुए हैं। अत्युत्तम नमूने—आप स्वयं परख लीजिए।"

कहते कहते उन्होंने फाइल खोली—"आइए एपोकैलिप्स सिरीज़से ही प्रारम्भ करें।"

तब, बड़ी कोमलता और सावधानीसे, जैसे कोई व्यक्ति सुकुमार और मूल्यवान् वस्तुओंको छूता है, उन्होंने दफ्तीके पहले कोरे टुकड़ेको मेरी आँखोंके सामने कर दिया। इतने उत्साहसे आँखें फाड़फाड़ कर वे देख रहे थे कि यह विश्वास करनेको जी नहीं चाहता था कि वे अन्धे हैं। यद्यपि मैं जानता था कि यह कल्पना मात्र है, फिर भी मुझे लगा कि उनके झुर्रिया-भरे मुखपर पहचानकी-सी एक झलक मुझे दिखाई दी।

"आपने इससे बढ़िया प्रिण्ट कहीं देखा है? देखिए कितनी बारीक छाप है! प्रत्येक विवरण दिनकी भाँति स्पष्ट! मैंने ड्रेसडन वाले प्रिण्टसे अपने प्रिण्टकी तुलना की। वह अन्धा है, इसमें तो सन्देह नहीं। किन्तु इसके मुकाबले वह रद्दी लगता था। अब तो इसके साथके सभी प्रिण्टस मेरे पास हैं।"

उन्होंने दफ्ती उलट दी और उसकी पीठपर एक स्थानमें इस विश्वाससे अँगुली रख दी कि मुझे भी भ्रान्ति-सी हो गई। मुझे मालूम था कि वहाँपर कुछ भी नहीं है। फिर भी मैं इस प्रकार आगे झुक कर देखने लगा मानो वहाँपर छपे किसी लेखको पढ़ना चाहता होऊँ।

"नैगलर संग्रहकी मुहर है। रेमी और इंसडेलकी मुहरें बादमें लगी थीं।

मेरे इन पूर्व-संग्रहकर्त्ताओंने सोचा भी नहीं होगा कि उनकी निधियाँ एक दिन इस छोटे-से कमरेमें दुबक कर पड़ी रहेंगी।"

जब वे असंदिग्ध विश्वासमें कोरे कागजोंके टुकड़े उठाते तो मैं काँप उठता था। जब वह ठीक उसी स्थानपर अँगुली रखते कि जहाँ कभी मृत पूर्वसंग्रह-कर्त्ताओंने अपनी अपनी मुहरें लगाई थीं, तो मेरा सारा शरीर रोमांचित हो उठता था। उनका यह व्यापार मुझे ऐसा डरावना लगता कि जिन व्यक्तियोंके वे नाम लेते, वे मानो अपनी अपनी कब्रोंसे उठ-उठ कर वहाँ इकट्ठे हो जाते। मेरी जीभ तालूसे सट गई। फिर मेरी दृष्टि क्रोनफील्डकी पत्नी और पुत्रीके हतप्रभ चेहरोंपर पड़ी। मैंने किसी भाँति अपनी संज्ञायें बटोर लीं और अपना पार्ट अदा करनेमें लग गया। झूठी प्रसन्नताके स्वरमें मैं बोल उठा—"सचमुच आप ठीक कहते हैं। यह वस्तु अनुपम है।"

वे विजय-दर्पसे प्रफुल्लित हो उठे।

"किन्तु यह तो कुछ भी नहीं है।" वे कहते गये—"इन दोनोंको देखिए। यह 'मैलंकोलिया' है और यह 'पैशन' का आलोकित प्रिण्ट। आपके बर्लिनवाले सहकारी और पब्लिक संग्रहालयोंके अधिकारी लोग इसे देखें तो मारे ईर्ष्याके पीले पड़ जायँ।"

मैं आपको इन विवरणोंसे थकाना नहीं चाहता। यह रूपक पूरे दो घंटे चलता रहा। वे फाइल पर फाइल खाली करते फिरते थे। उन दो तीन सौ शून्य फलकोंको उठाते रखते देखना, उपयुक्त अवसरपर उनकी प्रशंसामें वाहवाही करना—। मुझे लगता कि उस शून्य, काल्पनिक वातावरणमें भी मेरे अन्दर, उनके प्रभावसे, वास्तविक प्रतीति-सी जाग पड़ती।

केवल एक बार ऐसा लगा कि सर्वनाश होता है। वे मुझे रेम्ब्रैण्टके 'एण्टि-ओप' का पहला प्रूफ दिखा रहे थे। वह सचमुच ही अमित मूल्यका रहा होगा और कौड़ियोंके भाव बेच दिया गया होगा। वे प्रिण्टकी बारीकीपर आलोचना कर रहे थे। किन्तु ज्यों ही उन्होंने उसपर हाथ फेरा तो उनकी स्पर्शप्रवण अँगुलियोंको लगा कि प्रिण्टपरका एक परिचित उभार कहीं खो गया है। उनका चेहरा गिर गया। होंठ काँपने लगे। बोले—

"क्यों जी, यह 'एण्टिओप' ही है न? लकड़ीके इन नमूनों और ताम्र-फलकोंको मेरे अतिरिक्त कोई छूता तक नहीं। यह गड़बड़ कैसे हो गई?"

"सचमुच ही यह 'एण्टिओप' है, हर फोनफील्ड," मैंने यह कहते हुए उनके हाथोंसे वह प्रिण्ट ले लिया। अपनी स्मृतिके बलपर जैसा कुछ मुझसे बन पड़ा, मैं झूठ-मूठ उनकी अन्यान्य विशेषताएँ उन्हें गिनाने लगा।

उनका विस्मय कम हुआ, और जितनी अधिक प्रशंसा मैं करता गया उतना ही वे संतुष्ट होते गये। अन्तमें दोनों महिलाओंकी ओर मुड़कर वे बोले—

"यह एक व्यक्ति हैं, जो वस्तुओंकी परख करना जानते हैं। तुम सदा शिकायत करती आई हो कि मैं इस संग्रहपर व्यर्थ रुपये फेंकता रहा हूँ। यह सच है कि आधी शताब्दी-भर मैंने अपने सुखके लिए बियर नहीं पी। शराब, तम्बाकू, यात्रायें, थियेटर और पुस्तकोंका परित्याग किया। जो कुछ मैं बचा सकता, मैंने उससे वे वस्तुएँ खरीदीं जिन्हें तुम तुच्छ समझती रहीं। किन्तु मेरे विचारोंका समर्थन हर रैकनर करेंगे। जब मैं मर जाऊँगा—चला जाऊँगा—तब तुम लोग शहरमें सबसे अधिक धनवान् होओगी। ड्रेसडनके बड़े बड़े धन-कुबेरोंमें तुम्हारी गिनती की जायेगी। तभी मेरी 'सनक'पर तुम्हें साधुवाद देनेके कारण भी मिल जायेंगे। किन्तु जब तक मैं जीवित हूँ यह संग्रह अछूता रहना चाहिए। किन्तु ज्यों ही मुझे सन्दूकमें बन्द करके गाड़ दिया गया कि, ये महाशय या और कोई विशेषज्ञ तुम्हें विक्रयमें सहायता देंगे। तुम्हें बेचना ही पड़ेगा, क्योंकि मेरी पेंशन भी मेरे ही साथ मर जायेगी।"

वे बोलते जाते थे और उनकी अँगुलियाँ फाइलोंको सहलाती जाती थीं। वह दृश्य भयानक था—अत्यन्त मार्मिक। कई वर्षोंसे—१९१४ से आजतक—मैंने किसी भी जर्मनके मुखपर निर्मल प्रसन्नताकी ऐसी झलक नहीं देखी थी। उनकी पत्नी और पुत्री आँखोंमें आँसू भरे, आविष्ट भावनाओंसे उन्हें देखती रहीं।—सदियों पूर्वकी उन औरतोंकी भाँति जिन्होंने भयभीत और आनन्दित होकर एक दिन जेरूसेलमकी चहार-दीवारीके बाहर देखा कि क्राइस्टकी कब्र-परसे पत्थर लुढ़क गया है, कब्र खाली पड़ी है और क्राइस्ट फिरसे जाग उठे हैं। किन्तु वह मनुष्य मेरी प्रशंसाओंसे मानो अघाता ही न था। वे फाइलपर फाइल, और प्रिण्टपर प्रिण्ट खोलते ही जाते। अन्तमें मैंने प्रसन्न

होकर देखा कि कागज़के वे कोरे पन्ने सन्दूकमें बन्द कर दिये गये, और काफी पीनेकी तैयारीमें कमरा खाली कर दिया गया।

मेरे आतिथेय (मेज़मान) थकनेके बजाय अधिक प्रफुल्लित-से दिखाइ देते थे। वे कहानीपर कहानी कहने लगे कि अपनी इन त्रिविध निधियोंको उन्होंने किस प्रकारसे बटोरा। कहते कहते वे फिरसे उन्हीं वस्तुओंको बाहर निकलवाना चाहते। जब मैंने हठ किया, उनकी पत्नी और पुत्रीने हठ किया कि यदि मैं अधिक देर ठहरा तो मेरी गाड़ी चूक जायेगी तो वे रूठ से गये।

अन्तमें, किसी तरह, वे मुझे जाने देनेमें राजी हो सके, और हमने विदा ली। उनका स्वर पिघल उठा। उन्होंने मेरे दोनों हाथ अपने हाथोंमें ले लिये। "आपके आगमनसे मुझे अत्यन्त सुख मिला है।" उन्होंने काँपते स्वरसे कहा, "कितनी प्रसन्नताकी बात है कि मुद्दतों बाद अन्तमें अपना संग्रह मैं एक विशेषज्ञको दिखला सका। अपनी प्रसन्नता प्रकाश करनेके लिए मैं और भी कुछ करूँगा। मुझ अन्धे व्यक्तिसे मिलनेका लाभ अवश्य मिलेगा आपको। मेरी वसीयतके परिशिष्टमें यह लिखा होगा कि आपकी फर्मको ही मेरे संग्रहको नीलाम करनेका अधिकार दिया जाय।"

उन्होंने प्यारके साथ एक हाथ निकम्मी फाइलोंकी गठरीपर रक्खा: "आप वचन दीजिए कि इनकी एक सुन्दर सूची बनेगी। मैं अपने स्मारकके लिए इससे अधिक कुछ भी नहीं माँगता।"

मैंने दोनों महिलाओंकी ओर देखा। वे भगीरथ प्रयत्न कर रही थीं कि उनके काँपनेकी आवाज वृद्धके तेज कानोंमें न पड़ जाय। मैंने असम्भव प्रतिज्ञा कर दी, और उत्तरमें उन्होंने मेरा हाथ दबा दिया।

पत्नी और पुत्री दोनों मुझे दरवाज़े तक पहुँचाने आईं। वे बोलनेका साहस नहीं करती थीं, किन्तु उनके कपोलोंपर आँसुओंकी धाराएँ बह रही थीं। मैं स्वयं उनसे अच्छी दशामें नहीं था। कला-वस्तुओंका व्यापारी मैं, लेन-देनकी खोजमें इधर आ निकला था। इसके बजाय, घटनाओंके फेरमें, मैं सौभाग्यका दूत बन गया। मैंने एक वृद्धको सुखी बनानेके लिए धोखेबाज़ीमें मदद पहुँचाई। झूठ बोलनेके लिए मुझे लज्जा तो है, किन्तु प्रसन्नता है कि मैं झूठ

बोला। कुछ भी हो, इस दुःख और अंधकारके समयमें, मैंने कहींपर आनन्दकी एक लहरको जन्म तो दिया।

सड़कपर पहुँचा तो कहीं खिड़की खुलनेका शब्द और अपने नामकी पुकार मैंने सुनी। वृद्ध महाशय देख तो नहीं सकते थे, किन्तु वे जानते थे कि मैं किस दिशामें जाऊँगा। उनकी दृष्टिहीन आँखें उसी ओर लगी थीं। वे आगेकी ओर ऐसे झुक रहे थे कि उनके परिजनोंने हाथोंसे उन्हें थाम लिया, कि कहीं वे गिर न पड़ें। रूमाल हिला-हिलाकर वे पुकार उठे—

"हर रैकनर, मैं आपकी सुखद यात्राकी कामना करता हूँ।"

उनका स्वर बालकोंका-सा गूँज उठा। सड़कपर चलनेवाले दूसरे मनुष्योंके चिन्ताग्रस्त चेहरोंकी तुलनामें उनके प्रसन्न मुखको मैं कभी नहीं भूलूँगा। अभी अभी मैं जिस धोखाधड़ीकी पुष्टि कर आया था उसने उनका जीवन सुखी बना दिया। क्या गेटेने एक बार कहा नहीं था?—

"सुखी जीव हैं, ये संग्रह करनेवाले लोग!"

विक्षिप्त

—मार्च, १९१२ को, जब कि डाक ले जानेवाला एक जहाज नेपल्सके बन्दरगाहपर सामान उतार रहा था, एक दुर्घटना हो गई। समाचारपत्रोंमें उसका अत्यन्त अयथार्थ विवरण प्रकाशित हुआ था। स्वयं मैंने दुर्घटना होते नहीं देखी। कोयला लादनेकी खटपट और कोलाहलसे बचनेके लिए मैं किनारेपर चला गया। मेरे साथ दूसरे भी कई यात्री थे। सायंकालका समय मैं वहीं बिताना चाहता था। फिर भी, कई कारणोंसे मैं उस घटनाके मौलिक रहस्यको स्वयं समझता और दूसरोंको समझा सकता हूँ। एक बात और भी है। उस घटनाको हुए कई वर्ष बीत चले हैं। इसलिए, उस विषयको लेकर जो चुप्पी मैंने साध रक्खी है, उसे क्यों न तोड़ दूँ—मैं यह नहीं समझ पाता।

उन दिनों मैं मलायाके संघ-राज्योंमें यात्रा कर रहा था। घरसे आवश्यक कार्यका तार मिला तो मुझे वापिस लौटना पड़ा। सिंगापुरसे ‘ वोतन ’ जहाज जा रहा था। मुझे रहनेको एक अत्यन्त संकुचित स्थान मिला। इंजिनके पास कोनेमें सिकुड़ा हुआ एक छोटा-सा सूराख मेरा केबिन था, गरम और अँधियाला। तेलकी गंधसे लदी हुई, गन्दी और सड़ी हुई वायु। मुझे बिजलीका पंखा लगातार चालू रखना पड़ता। उसके दुर्गन्धित झोंके जब चेहरेपर स्पर्श करते हुए निकल जाते तो लगता कोई पागल चमगीदड़ कमरे भरमें पंख फड़फड़ाता हुआ उड़ रहा है। नीचेसे इंजिनकी अनवरत खड़खड़ाहट और कराह सुनाई देती, मानो कोयला ढोनेवाला कोई कुली धमधम करता हुआ, हाँफता हुआ किन्हीं अनन्त सीढ़ियोंपर चढ़ता चला जा रहा हो। ऊपर डेक-परसे असंख्यों पैरोंके चलने-फिरनेका शब्द सुनाई देता। केबिनमें ज्यों ही अपना सामान रक्खा मैं भागा हुआ डेकपर चला गया। दक्षिणकी सुख-स्पर्श वायुमें साँस लेकर मुझे शान्ति मिली।

किन्तु जहाजके ऊपरी डेकपर भी कोलाहल और अव्यवस्था छाई हुई थी,

वहाँ भी यात्री लोग भरे हुए थे। उन्हें काम-काज कुछ नहीं था। विवश निष्क्रियता उन्हें जकड़े हुए थी। एक यात्री दूसरेसे दूर रह नहीं सकता था। इस अनिवार्य निकटतासे घबराये-हुए-से वे लोग निरन्तर चहल-कदमी और निरर्थक प्रलाप करते रहते थे। डेककी कुर्सियोंपर अधलेटी स्त्रियोंकी मन्द हँसी और भारसे लदे डेकपर व्यायाम करनेवालोंके मुड़ने, झुकने और ऐंठनेसे मुझे अत्यन्त अरुचि हो उठी। मलायामें, और उससे पहले बर्मा और स्याममें, मैं एक अपरिचित विश्वमें घूमता रहा था। मेरे मस्तिष्कपर नई-नई स्मृतियाँ छपी हुई थीं—नये-नये छाया-चित्र उभर उठते, जो एक-दूसरेका पीछा करते हुए शीघ्रतासे भागते जाते थे। मैं अवकाशके समय उनपर विचार करना, उन्हें छाँटना, यथास्थान सँजोना, उन्हें पचाकर अपने व्यक्तित्वमें मिला देना चाहता था। किन्तु जीवनकी विभिन्न ध्वनियोंसे गुंजित इस स्थानमें मुझे वह शान्तिमय वातावरण नहीं मिल सकता था जिसकी मुझे अत्यन्त आवश्यकता थी। कुछ पढ़नेका प्रयत्न करता तो आने-जाने वालोंकी परछाईंके नीचे पुस्तक-पर छपी हुई पंक्तियाँ एक दूसरेसे मिलकर एकाकार हो जातीं। इस जनाकीर्ण स्थानमें यह असम्भव था कि किसी भी प्रकार अपने विचारोंको अपने आपमें समेट कर अकेला रह सकूँ।

तीन दिन तक मैं प्रयत्न करता रहा कि धैर्यपूर्वक अपनी आत्माको सुस्थिर बना सकूँ। मैं साथी यात्रियोंसे दूर रहकर केवल समुद्रकी ओर ही टकटकी लगाए रहता। सागरका सदा वही रूप था—नीला और शून्य। केवल सन्ध्याके समय, कुछ क्षणोंके लिए, विविध रंगोंकी क्रीड़ासे वह जगमगा उठता था। और वहाँके लोग?—मैं लगातार तीन दिन तक देखते देखते उनके चेहरोंसे ऊब चुका था। मैं उनकी प्रत्येक विशेषता जानने लगा। महिलाओंकी ही-ही खी-खी और छुट्टीपर जानेवाले कुछ उच्च अफसरोंकी विवाद-प्रियतासे अरुचि उत्पन्न हो गई। सैलूनमें जाकर शरण ली। किन्तु वहाँसे भी मुझे भागना पड़ा; क्योंकि भोजनसे पहले ही कुछ अँग्रेज लड़कियाँ पिआनोपर वाल्ज़ बजाने लगी थीं। अब मेरे लिए अपने केबिनके अतिरिक्त दूसरा स्थान नहीं रह गया था। भोजन करके मैं लेट गया। बिअरकी दो बोतलें पीकर मैंने अपने आपको नशेमें भुला दिया। विचार था कि सायंकालके भोजन और उसके बादके नाचसे

किसी प्रकार दूर रहूँ। आशा थी कि पूरे बारह घंटे—या और अधिक—सो लूँगा और दिनका अधिकांश विस्मृतिमें ही बिता दूँगा।

उठा तो अँधेरा हो रहा था। मेरी वह कब्र पहलेसे भी अधिक रुद्धश्वास लग रही थी। सोनेसे पहले पंखा बन्द कर दिया था, और अब मैं पसीनेमें सराबोर था। उस लम्बी तन्द्राके उपरान्त मस्तिष्क भारी हो गया था। कई मिनटोंके बाद कहीं यह समझ पाया कि मैं हूँ कहाँ? अवश्य ही आधी रात बीत चुकी है; क्योंकि संगीतकी ध्वनि सुनाई नहीं दे रही थी, और ऊपर पैरोंकी धम-धम भी बन्द हो गई थी। केवल मशीन चलनेकी आवाज आ रही थी—उस भारी जहाजके हृदयका स्पन्दन, जो कि काँखता-कराहता हुआ अपने जीवित बोझको अन्धकारमेंसे होकर आगे ले जा रहा था।

मैं टटोलता हुआ डेक तक पहुँचा। वहाँ जीवित व्यक्तिकी छाया तक नहीं दिखाई दी। धुआँ उगलती हुई चिमनियों और भूतोंकी भाँति खड़े मस्तूलोंसे हटकर मैंने अपनी आँखें ऊपरकी ओर उठाईं। स्वच्छ आकाश था—काले मखमल-सा, जिसपर तारे बिखर गये हों! ऐसा लगता था मानो प्रकाशके किसी बिराट् उद्गमपर एक पर्दा फैला दिया गया हो, तारे छोटे-छोटे सूराख हों जिनमेंसे होकर अनिर्वचनीय प्रकाश छन-छन कर बरस रहा हो। मैंने ऐसा आकाश कभी नहीं देखा था।

रात ठंडी और ताज़गीसे भरी हुई थी। सुन्दर दीपोंकी सुगन्धिसे लदी समीरमें मैंने गहरी साँसें लीं। जहाजपर आनेके समयसे आज पहली ही बार मनमें सपने देखनेकी इच्छा जाग उठी। एक और भी आसक्तिमय कामना, रात्रिके कोमल आलिंगनमें स्त्रियोंकी भाँति अपने आपको सौंप देनेकी लालसा पनप उठी। मैं वहीं पड़े-पड़े तारोंभरे विस्तारमें चमकते श्वेत ज्योतिःपुंजोंको देखते रहना चाहता था। परन्तु लम्बी कुर्सियाँ सब उठा कर रख दी गई थीं और पहुँचके बाहर थीं। खाली डेकपर एक भी स्थान ऐसा नहीं था जहाँ कोई बैठ कर सपने गढ़ सके।

रस्सियों और लोहेकी कड़ियोंसे टकराते हुए मैं जहाजके सिरेकी ओर बढ़ा। रेलिंगपर झुककर जहाजको एक लयके साथ उठते-गिरते और फासफोरसकी-सी ज्योतिसे दीप्त लहरोंपर आगे बढ़ते हुए देखता रहा। मैं वहाँ एक घण्टे खड़ा रहा, या कुछ मिनट—कौन कह सकता है? उस विशाल-

काय झूलेमें झूलते हुए मुझे समयका कोई ध्यान नहीं रहा। मुझे तो केवल एक सुखभरी तन्द्राका अनुभव हो रहा था। मैं सो जाना और सपने देखना चाहता था। किन्तु जादूकी इस दुनियाको छोड़ कर अपनी कब्रमें फिरसे जानेकी मेरी इच्छा नहीं थी। एक-आध कदम आगे बढ़कर पैरसे रस्सीका एक पुलिन्दा ढूँढ़ लिया। बैठ गया, और आँखें मूँद कर अपने आपको रात्रिकी नशीली तन्द्रामें बह जाने दिया। चेतनाकी सीमा-रेखाएँ विलीन होने लगीं। मुझे यह भी ज्ञान न रहा कि यह ध्वनि जिसे मैं सुन रहा हूँ मेरे श्वास-प्रश्वासकी है, या जहाजके यांत्रिक हृदयकी। मैंने तो निश्चेष्ट होकर सम्पूर्ण रूपसे अपने आपको उसी नैश जगतके सौन्दर्यमें खो दिया।

पासहीमे किसीकी सूखी खाँसी सुनकर मैं चौंक पड़ा और चैतन्य हो गया। आँखें खोलीं। इतनी देरमें अँधेरेको चीरकर देखनेका अभ्यास मुझे हो चुका था। अपने पासहीमें चश्मेकी चमक, उससे कुछ ही इंच नीचे आगकी धधक दिखाई दी, जो अवश्य ही किसीके पाइपसे उठ रही थी। यहाँ बैठनेसे मेरा ध्यान सितारों और समुद्रकी ओर उन्मुख था, इसी लिए मैंने अपने इस पड़ोसी-को देखा नहीं। वह कदाचित् तभीसे चुपचाप यहाँपर बैठा हुआ है। मेरे चारों ओर इतना धुँधलापन था कि कहाँपर बैठा हूँ यह नहीं जाना जा सकता था। फिर भी यह सोचकर कि यहाँ आना मेरी अनधिकार चेष्टा है, मैंने अपनी ही मातृभाषा जर्मनमें अत्यन्त विनम्रतापूर्वक कहा—"क्षमा कीजिए!" तत्काल उसी भाषामें, और असंदिग्ध जर्मन ध्वनिमें उत्तर मिला—"अजी कुछ नहीं!"

यह बड़ी विचित्र और रोमांचकारिणी घटना थी—अंधकारमें किसी अदृष्ट अज्ञात व्यक्तिसे भेंट। मुझे लग रहा था कि ठीक जिस प्रकार मैं घूर-घूर कर व्यर्थ उसकी ओर देख रहा हूँ, वह भी मेरी ओर टकटकी लगाये हुए है। एक धुँधली पृष्ठभूमिपर उभड़ी हुई काली रूप-रेखाओंके अतिरिक्त हम दोनों कुछ भी नहीं देख सकते थे। मैं उसका धीमा श्वास-प्रश्वास और पाइपकी अस्फुट गुड़गुड़ सुन रहा था।

यह नीरवता असह्य हो उठी। मैं तो उठ कर चला गया होता। किन्तु इस अपनी इच्छाको केवल यही सोच कर रोके रहा कि बिना एकाध शब्द कहे

यों ही चले जाना एक अक्षम्य बर्बरता होगी। इस हड़बड़ीमें मैंने सिगरेट निकाली और दिया सलाई जलाई। एक या दो क्षणके लिए प्रकाश हुआ और हम दोनों एक दूसरेको देख सके। मैंने जो कुछ देखा वह एक अपरिचितका चेहरा था—एक ऐसा व्यक्ति जिसे मैंने भोजनगृह अथवा ऊपरी डेकपर कभी नहीं देखा। एक चेहरा, जो कि असाधारण रूपसे भयंकर और दानवताका व्यंजक था। इसके पूर्व कि मैं दूसरी विशेषताएँ भी बारीकीसे देखूँ अंधकारकी लहरें फिरसे उमड़ पड़ीं। केवल जो वस्तुएँ दिखाई देती थीं वे थीं पाइपसे उठनेवाली अग्निकी लौ और चश्मेकी आकस्मिक चमक। दोनोंमेंसे बोला कोई नहीं। उष्णप्रधान देशोंके ग्रीष्मकी भाँति वह चुप्पी उत्पीड़क और असह्य थी।

आखिर, मैं अधिक सहन नहीं कर सका। खड़े होकर मैंने विनम्र शब्दोंमें कहा—“ नमस्कार ”

“ नमस्कार ”—एक कठोर कर्कश ध्वनिमें उत्तर मिला।

डेकके अगले भागपर रक्खे हुए ढेरोंके बीच लड़खड़ाते हुए जा रहा था कि मैंने अपने पीछे तेजीसे आते हुए पैरोंका शब्द सुना। रस्सीके पुलिन्देपर बैठा हुआ मेरा वह पड़ोसी डगमगाती चालसे मेरा पीछा कर रहा था। वह अत्यन्त निकट तो नहीं आया; फिर भी अन्धकारमेंसे होकर मैं उसकी चिन्ता और बेचैनीका अनुभव कर सकता था।

वह तेजीसे बोल रहा था।

“ क्षमा कीजिए, यदि कृपाकी एक भीख माँगूँ। मैं...मैं......” वह हिचकिचाने लगा—“ मैं......मुझे कुछ निजी—अत्यन्त निजी कारणोंसे जहाजपर अकेला ही रहना पड़ता है।.........मातम मना रहा हूँ।—यही कारण है कि यात्रामें मेरी किसीसे भी जान-पहचान नहीं हो सकी। आप अवश्य सोचते होंगे......मैं यह चाहता हूँ......यानी......, मेरा अभिप्राय यह है कि आप किसीसे भी यह न कहें कि आपने मुझे यहाँ देखा है। फिरसे मैं निवेदन करता हूँ कि अत्यन्त निजी कारणोंसे मैं जहाजके समाजमें हिल-मिल नहीं सकता; और यह बात मेरे लिए अत्यन्त दुःखप्रद होगी यदि आपने एक भी शब्द किसीसे कहा कि मैं रातको जहाजके फोरकेसलमें घूमा करता हूँ... मैं...”

वह रुका, और मैंने तत्काल उसे विश्वास दिलाया कि उसकी इच्छाओंका आदर होगा। मैंने कहा कि मैं भी एक आकस्मिक यात्री हूँ और मेरा भी कोई परिचित जहाजपर नहीं है। हम दोनोंने हाथ मिलाये, और बाकी रात सोकर बितानेके लिए मैं अपने केबिनमें चला आया। किन्तु मेरी तन्द्रा बेचैनीसे भरी हुई थी, क्यों कि रातभर मैं दुःखद स्वप्न देखता रहा था।

अपने इस विचित्र सम्मिलनके विषयमें किसीको कुछ न कहनेकी प्रतिज्ञा मैंने निभा ली, यद्यपि उसके विपरीत आचरण करनेका लोभ भी अत्यधिक प्रबल था। समुद्री यात्राओंमें छोटी-छोटी बातें भी घटनाएँ बन जाया करती हैं—दूर क्षितिजपर दीखनेवाली दूसरी नावकी पाल; जल-जन्तुओंका एक झुण्ड; कोई नई दिल्लगी; कोई क्रियात्मक उपहास—। इसके अतिरिक्त उस असामान्य सहयात्रीके प्रति मेरी उत्सुकता भी कम नहीं थी। मैंने यात्रियोंकी सूची एक सरसरी दृष्टिसे देख डाली, इस आशासे कि उस जैसे व्यक्तिके अनुरूप कोई नाम मिल जाय। दूसरे-दूसरे मनुष्योंको मैं देखता रहता कि कदाचित् इनमेंसे कोई उसे जानता हो। मैं दिनभर सायंकालकी प्रतीक्षा करता हुआ उद्विग्न अधीरतासे पीड़ित रहा। मुझे यह आशा-सी बनी हुई थी कि कदाचित् उससे फिर मिल जाऊँ। मनोवैज्ञानिक पहेलियाँ मुझे सदा अत्यन्त आकर्षित करती रही हैं। किसी अपरिज्ञेय व्यक्तिसे मिलनेपर मेरे हृदयमें रहस्यको खोद-खोदकर देखनेकी उत्कट इच्छा आन्दोलित हो उठती है। स्त्रीको प्राप्त करनेकी पुरुष-कामनासे कम वेगवती मेरी यह इच्छा नहीं थी। वह दिन असह्य रूपमें लम्बा मालूम हुआ। जल्दी सोने चला गया। यह विश्वास था कि मेरी अन्तश्चेतना मुझे तड़के उठा देगी।

वही हुआ भी। मैं पिछली रात्रिकी भाँति ठीक उसी समय जाग उठा। घड़ी निकालकर देखी। अँधेरेमें उसके डायलपर अंक और सुइयाँ चमकती हुई उभर रही थीं। अभी अभी दो बज चुके थे। मैं शीघ्र ही डेककी ओर चल दिया।

हमारे यहाँके जल-वायुके समान उष्णप्रधान देशोंमें जल्दी-जल्दी ऋतु-परिवर्तन नहीं हुआ करते। रात पहलेकी ही भाँति थी—अँधेरी, साफ और उज्ज्वल सितारोंसे प्रदीप्त। किन्तु मुझमें एक अन्तर उत्पन्न हो गया था। पहलेकी ही भाँति मैं स्वप्नाविष्ट सुखका अनुभव नहीं कर रहा था। जहाजके मन्द आन्दोलनसे तन्द्रा नहीं लग रही थी। एक अज्ञात 'कुछ' मुझे विक्षिप्त-सा बनाये दे रहा था।

दुर्निवार आकर्षणसे मुझे जहाजके अग्रभागकी ओर खींचे ले जा रहा था। मैं यह जानना चाहता था कि वह रहस्यमय व्यक्ति क्या अब भी अकेला, रस्सीके पुलिन्देपर बैठा हुआ है। झिझकता हुआ, किन्तु उत्कण्ठासे प्रेरित मैं अपनी इच्छाके आगे झुक गया। उस स्थानके निकट पहुँचा तो एक लाल चमकती आँखके समान कोई वस्तु देखी, उसका पाइप।—वह बैठा हुआ था।

मैं हठात् ठिठककर खड़ा हो गया। मुड़कर लौटनेको ही था कि वह काली आकृति उठी, दो कदम आगे बढ़कर मेरे निकट आई और एक विनम्र तथा निर्जीव स्वरमें कहने लगी—

"मुझे दुःख है। मैं समझता हूँ कि आप अपने पुराने स्थानपर जा रहे थे और मुझे देखकर लौटना चाहते हैं। क्या आप बैठेंगे नहीं? मैं तो जा रहा हूँ।"

मैंने तत्काल उत्तर दिया कि मैं तो लौटनेको था। आपको कोई विघ्न न हो इसी लिए मैं डरता था। अच्छा है, आप बैठे रहें।

"आपसे मुझे कोई विघ्न नहीं हो रहा,"—उसने किंचित् कटुतापूर्वक कहा, "इसके विपरीत, मैं तो प्रसन्न हूँ कि (कुछ ही देरके लिए सही) मैं अकेला तो नहीं हूँ। कई दिनोंसे किसीसे बोला नहीं। लगता है वर्षों बीत गये। और,—यह अपनी सहन-शक्तिके बाहर प्रतीत होता है कि मैं प्रत्येक वस्तुको अपने ही अन्दर ठूँसकर रक्खे रहूँ। अपने केबिनमें अधिक देर नहीं बैठ सकता। वह स्थान जेलकी काल-कोठरीके समान है। किन्तु मैं यात्रियोंको भी सहन नहीं कर पाता। क्योंकि वे दिन-भर बोलते और हँसते रहते हैं। उन्हें निरन्तर हँसते-खेलते देख मैं पागल हो उठता हूँ। उनकी मूर्खतापूर्ण बातचीत केबिन तक पहुँचती है तो मुझे अपने कान बन्द करने पड़ते हैं। यह सच है कि वे नहीं जानते कि मैं उनकी बातें सुन सकता हूँ और उससे मुझे दुःख होता है। यह भी सच है कि यदि वे जानते तो भी मेरी परवा न करते।—"

कहते-कहते एकाएक वह रुका, और बोला—"किन्तु,—समझता हूँ कि मैं आपको ऊबा रहा हूँ। इतना बकना मैं नहीं चाहता था।"

वह झुका और जानेको उद्यत हुआ। किन्तु मैंने रुकनेका आग्रह किया।

"आप तनिक भी मुझे नहीं ऊबा रहे। इसके विपरीत यहाँ सितारोंकी

छायामें शान्तिमय वार्तालापसे मुझे प्रसन्नता ही होती है। सिगरेट पियेंगे आप ?"

उसने ज्यों ही सिगरेट जलाई मैंने फिरसे एक बार उसके चेहरेकी झलक देखी— वह चेहरा अब एक परिचितका हो गया था। उस क्षणिक आलोकमें, दियासलाई फेंकनेसे पहले, उसने मेरी ओर बड़ी तीक्ष्ण दृष्टिसे देखा, मानो मेरे मनके भावोंको खोद डालना चाहता हो। चश्मोंसे ढकी उसकी आँखें जब मेरी आँखोंसे आ मिलीं तो लगा उस दृष्टिमें प्रार्थनाका-सा भाव मिला हुआ था।

मुझे कुछ डर-सा लगा और रोमांच हो आया। लगा कि यह व्यक्ति कोई कहानी कहना चाहता है—कह डालनेको व्याकुल हो रहा है, किन्तु कुछ अन्तः-प्रतिबन्ध उसे रोके हुए हैं। केवल चुप रह कर—ऐसी चुप्पी कि जिससे प्रतीति उत्पन्न हो—मैं उसके संरोधको मिटाना चाहता था।

ऊपरी रेलिंगसे टिककर, रस्सीके पुलिन्दोंपर एक दूसरेके सामने हम दोनों बैठ गये। उसके जिस हाथमें सिगरेट थी, उसके ईषत् कंपनसे अन्तर्द्वन्द्वका परिचय मिलता था। हम लोग धूम्रपान करते रहे; मैं फिर भी एक शब्द न बोला। अन्तमें उसीने चुप्पी तोड़ी—

"क्या आप थक गये हैं ?"

"रत्ती-भर नहीं।"

वह हिचकिचाते हुए बोला—"मैं आपसे कुछ पूछना चाहता था। यदि कहूँ कि मैं कुछ कहना चाहता हूँ तो वह अधिक स्पष्ट होगा। जानता हूँ कि प्रथम परिचितके ही सम्मुख इस प्रकार बकने लगना कितना हास्यास्पद है। किन्तु मेरी मानसिक अवस्था आप जानते तो समझते कि मैं कितनी भयंकर स्थितिमें हूँ। मैं उस मंजिल तक पहुँच गया हूँ कि मुझे किसी न किसीसे कुछ न कुछ कह देना चाहिए; अन्यथा मेरा मस्तिष्क शून्य हो जायेगा। जब मैं सब कुछ कह लूँगा तो आप स्वयं समझ जायेंगे। इतना अवश्य है कि आप कुछ भी सहायता मुझे नहीं दे सकते, किन्तु अपने रहस्यको अपने तक ही सीमित रखते रखते मैं बीमार-सा हो गया हूँ। आप जानते हैं कि रोगी मनुष्य कैसा मतिहीन होता है—स्वस्थ व्यक्तिको वह कितना मूर्ख प्रतीत होता है।"

मैंने उसे रोका और समझाया कि इस प्रकारकी कल्पनाओंसे अपने आपको निराश नहीं करना चाहिए। "यह तो स्वाभाविक है कि जब तक मैं परिस्थिति नहीं समझ पाता, तब तक आपको असीमित सहायताकी प्रतिज्ञा करनेका कोई अर्थ नहीं है। फिर भी, सहायता मैं करना चाहता हूँ, यह प्रतीति आपको देता हूँ। क्या मनुष्यका यह स्पष्ट कर्त्तव्य नहीं है कि किसी दूसरेको आपत्तिसे बचानेकी इच्छा तो प्रकट करे ? कमसे कम प्रयत्न तो प्रत्येक व्यक्ति कर सकता है।"

"सहायता देनेका कर्त्तव्य ? कमसे कम प्रयत्न करनेका कर्त्तव्य ? दूसरेको आपत्तिसे बचानेकी इच्छा प्रकट करनेका कर्त्तव्य ?"

इस प्रकार मेरे कथनकी शब्दशः आवृत्ति उसने की। उसके स्वरमें व्यंग्य और कटुता भरी हुई थी। उसका अर्थ बादमें मुझे स्पष्ट हुआ। उस समय तो अपने शब्दोंकी पुनरावृत्ति सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ कि कहीं वह पागल अथवा शराब पिये हुए तो नहीं है !

मानो मेरे विचारोंका अनुमान लगाकर वह साधारण स्वरमें बोलने लगा—"आप कदाचित् समझेंगे कि मेरे मस्तिष्कमें विकृति उत्पन्न हो गई है, अथवा अपने एकाकीपनमें मैं अत्यधिक सोचता रहा हूँ। किन्तु यह बात नहीं है। अब तक तो मैं पर्य्याप्त प्रकृतिस्थ हूँ। मैं जो बहक गया था सो आपके एक शब्दके कारण। 'कर्त्तव्य !' इसने मेरे मर्मान्तको छू लिया है। मैं समूचा घायल-सा हो गया हूँ कि वह विचित्र वस्तु जो मुझे अहर्निश पीड़ित करती है, कर्त्तव्य है !—कर्त्तव्य !—"

झटका-सा देकर उसने अपने आपको प्रकृतिस्थ किया। अब वह साफ-तौरसे कहने लगा—

"आपको जानना चाहिए कि मैं एक डाक्टर हूँ। मेरी कहानीका यही आवश्यक अंश है। चिकित्सा-मार्गमें डाक्टरोंका कभी कभी ऐसे रोगियोंसे भी पाला पड़ता है जहाँ कर्त्तव्य उतना स्पष्ट नहीं होता जितना आप समझते हैं। ये आकस्मिक रोगी होते हैं। आप चाहें तो उन्हें मानसिक सीमा-प्रान्तके रोगी कह सकते हैं। उनके विषयमें कोई एक स्पष्ट कर्त्तव्य नहीं हुआ करता। परस्पर विरोधी वस्तुएँ होती हैं—एक साधारण कर्त्तव्य कभी राज्यके विरुद्ध

हो जाता है, कभी चिकित्सा-विज्ञानके ही विरुद्ध। मनुष्यको आपत्तिसे उबारना चाहिए?—अवश्य। यह तो प्रत्येकको करना चाहिए। इसीलिए तो मनुष्य संसारमें उत्पन्न होता है। किन्तु ऐसे सिद्धान्त केवल पोथीके बैंगन होते हैं। क्रियात्मक रूपमें सहायताकी सीमा कहाँ तक पहुँचती है?—आप यहाँ आते हैं—एक नैश आगन्तुक—आपने मुझे पहले कभी देखा नहीं, और न आप-पर मेरा कोई अधिकार ही है। मैं प्रार्थना करता हूँ किसीसे यह न कहें कि आपने मुझे देखा है। अच्छी बात है, आप चुप रहते हैं; क्यों कि मेरी इच्छाके अनुसार मुझे सहायता देना आप कर्त्तव्य समझते हैं। दुबारा आप आते हैं तो मैं प्रार्थना करता हूँ कि मुझे बोलने दें, क्यों कि यह चुप्पी मेरा कलेजा खाये जाती है। आप कृपा करके मेरी बात सुन लेते हैं। आखिर, वह तो बड़ी सरल बात है। मैंने कोई भी कठिन प्रार्थना आपसे नहीं की थी। किन्तु अब जरा सोचिए तो; यदि मैं कहूँ—'मुझे पकड़कर जहाजके नीचे फेंक दीजिए!'—आप तत्काल अपनी कृपालुताके सीमान्त तक पहुँच जायेंगे। क्यों है न यही बात? मैं सोचता हूँ फिर आप इसे सहायता देनेका कर्त्तव्य नहीं कहेंगे। कहीं न कहीं एक सीमा होनी चाहिए। जहाँ ऐसा अवसर आ पहुँचे कि किसीका जीवन खतरेमें हो, अथवा सामाजिक संस्थाओंके प्रति किसीकी जिम्मेदारियोंपर आघात होता हो, वहाँ आपका कथित कर्त्तव्य तो समाप्त हो जाता है।—या, कदाचित, जहाँतक एक डाक्टरका प्रश्न है क्या इस सहायताकी कोई सीमा नहीं है? क्या इसीलिए एक डाक्टर संसार भरका उद्धारक मान लिया जायेगा कि उसे लैटिन पढ़नेका डिप्लोमा मिला हुआ है? क्या इसी कारण उसे अपने जीवनको दूधकी मक्खीकी भाँति निकाल फेंकना चाहिए कि किसीने उससे सहायता देने और कृपालु बननेकी अपील की है? कर्त्तव्यकी एक सीमा होती है और ज्यों ही आप वैयक्तिक तनावके छोरपर पहुँच जाते हैं——"

वह फिर उसी तरह अनर्गल बकने लगा।

"मुझे खेद है कि मैं इतना अधिक उत्तेजित हूँ। कारण यह नहीं है कि मैंने शराब पी रक्खी है। मैं नशेमें अभी तक बेहोश नहीं हुआ हूँ। यह सच है कि इधर जहाजपर आकर मात्रा पर्य्याप्त बढ़ गई

है। मैंने अपने जीवनमें बहुत देरमें पीना प्रारम्भ किया था। पूरबमें मेरा जीवन भयंकर रूपसे एकाकी हो गया था। ज़रा सोचिए तो; पिछले सात वर्षोंसे केवल आदिवासियों और पशुओंके बीच रहता आया हूँ। इन हालतोंमें आप स्वभावतः यह भूल जाते हैं कि स्वस्थ मस्तिष्क और शान्तिसे कैसे बोला जाता है। अन्तमें जब अपने ही देशके किसी मनुष्यसे बोलनेको मिले तो जीभ मनके साथ-साथ दौड़ने लगती है।—मैं क्या कह रहा था? —मैं एक प्रश्न आपके सम्मुख उपस्थित करने जा रहा था। एक समस्या रखना चाहता था—आपसे पूछने जा रहा था कि, चाहे कैसी ही परिस्थिति क्यों न हो, क्या यह आवश्यक है कि मनुष्यको दूसरेकी सहायता करनी ही चाहिए? जैसे स्वर्गसे देवदूत आकर सहायता देता है...किन्तु मैं डरता हूँ कि यह एक लम्बी वार्ता बन जायेगी। आप सचमुच थक तो नहीं गये?"

"रत्ती-भर भी नहीं।"

वह अँधेरेमें हाथोंसे अपने पीछे कुछ टटोलने लगा। मैंने किसी वस्तुके खनकनेकी आवाज सुनी। अनुमान लगाया कि दो बोतलें हैं। उसने उनमेंसे एक गिलासमें उड़ेली, और मुझे दे दी—शुद्ध ह्विस्कीकी एक बड़ी घूँट!

"पियेंगे आप?"

उसका साथ देनेके लिए मैंने भी चूसना प्रारम्भ किया। उसके पास दूसरा गिलास नहीं था, इस लिए वह बोतलसे ही बड़ी बड़ी घूँट लेने लगा। क्षणभर नीरवता रही। उस बीच जहाजकी घंटीपर पाँच चोटें पड़ीं। प्रातःकालके ढाई बज चुके थे।

"अच्छी बात है। मैं आपके समक्ष एक मामला रखना चाहता हूँ। मान लीजिए देहातके किसी कस्बेमें एक डाक्टर प्रेक्टिस करता है...एक डाक्टर, जो..."

वह हिचकिचाया, रुका और पुनः नया आरम्भ करके बोला—

"नहीं, ऐसे नहीं चलेगा। मुझे आपसे सभी बातें—जैसी कि मेरे साथ घटीं—कह देनी चाहिए। ठेठ कहानी—आरम्भसे अन्त तक। अन्यथा आप कभी नहीं समझ पायेंगे। कोई भी झूठी लज्जा नहीं होनी चाहिए —कोई भी दुराव नहीं। जब लोग मेरे पास चिकित्साके लिए आते हैं तो उन्हें

नग्न हो जाना पड़ता है । मेरे सम्मुख अपना गोपनीय भी दिखाना पड़ता है। यदि मुझे उनकी सहायता करनी ही है तो उनको कोई भी आडम्बर नहीं करना चाहिए। इससे कोई लाभ नहीं कि मैं आपसे कहूँ कि कभी किसी एक रहस्यमय डाक्टरको कहीं किसी समय कुछ हुआ था। मैं तो नग्न हो जाऊँगा, मानो मैं आपका रोगी होऊँ। कुछ भी हो; उस भीषण स्थानमें, जहाँ मैं रहता था, मैं सारी औचित्य-भावना भूल गया हूँ। उस बीभत्स एकाकीपनमें —एक ऐसे देशमें कि जो आपके शरीरमेंसे आत्माको खा जाता है, हड्डियोंके अन्दरसे मज्जा चूस लेता है..."

इसी बीच मैंने किसी प्रकारकी चेष्टा की होगी। क्यों कि वह इधर-उधरकी बातोंमें लग गया था——

"ओह, मैं समझ गया कि पूरबी देशोंके प्रति आपमें विशेष उत्साह है। आप वहाँके मन्दिरों और खजूरके पेड़ोंपर मुग्ध हैं। जब कि आप एक या दो महिनेका समय बिताने और केवल आनन्दप्राप्तिके उद्देश्यसे जाते हैं तो वहाँ एक प्रकारका रोमान्स है। इसमें सन्देह नहीं कि उस व्यक्तिके लिए उष्णप्रधान देश बड़े ही आकर्षक सिद्ध होते हैं जो रेल, मोटर या रिक्शेमें बैठा-बैठा निरुद्देश्य वहाँ भ्रमण करता रहता है। सात साल पहले जब मैं आया तो मैंने भी यही अनुभव किया था। उस समय स्वप्नोंसे मेरा मस्तिष्क भरा हुआ था कि वहाँ मुझे क्या करना है—वहाँकी भाषा सीखना; वहाँकी पवित्र पुस्तकोंको मूलमें पढ़ना; उष्णप्रधान देशोंमें होनेवाले रोगोंका अध्ययन करना; मौलिक वैज्ञानिक कार्य करना; आदिवासियों-के मनोविज्ञानपर अधिकार प्राप्त करना; सभ्यताका प्रचारक बनना......

"किन्तु वहाँका जीवन तो अदृश्य दीवारोंसे घिरे किसी गरम मकानमें रहनेके समान है। वह शक्तियोंको चूस लेता है। बुखार आता है; आप भले ही चम्मचभर कुनीन निगल जायँ। सारे उत्साहको वह बुखार खा जाता है। आप ढीलेढाले, आलसी और घोंघेके समान मुलायम पड़ जाते हैं। किसी योरोपियनको यदि बड़े शहर छोड़ने पड़ें और उसे जंगलों या दलदलके पासकी किसी बस्तीमें भेज दिया जाय तो वह जीवनके राजमार्गसे विच्छिन्न हो जाता है। कभी न कभी उसकी पकड़ छूट जायेगी। कुछ लोग

शराब पीने लगते हैं; चीनियोंसे मदक पीना सीख लेते हैं; पाशविकता, निर्लज्जता इत्यादि भीषण बातोंकी शरणमें चले जाते हैं। सबके सब नियत मार्गको छोड़ बैठते हैं।—घर लौट चलनेकी कैसी इच्छा होती है!—ऐसी सड़कोंपर चलना जिनकी इमारतें ठीक-ठीक बनी हों—काँचकी खिड़कियोंवाले, मजबूत-बने कमरेमें गौर वर्ण मनुष्यों और स्त्रियोंके बीच बैठना उठना! वर्ष-प्रति वर्ष इसी प्रकार बीतता चला जाता है। अन्तमें समय आता है कि जब घर जानेकी छुट्टी मिले। तब लगता है कि घर जानेका भी सामर्थ्य उसमें नहीं रह गया। आखिर उसमें लाभ ही क्या है? वह जानता है कि लोग उसे भूल चुके हैं। यदि वह घर गया भी तो स्वागत करने कोई उसकी प्रतीक्षा नहीं करेगा। बल्कि इसके विपरीत उसके आगमनकी उपेक्षा की जायगी। इस प्रकार वह उन्हीं दलदलों और नमी-भरे जंगलोंमें पड़ा रहता है। वह अशुभ दिन था, जब उष्ण देशोंमें नौकरी करनेके लिए मैंने अपने आपको बेच दिया।

"साथ ही साथ, छुट्टीपर घर जाना मेरे लिए उतना ऐच्छिक विषय नहीं रह गया था। जर्मनीमें, जहाँ कि मैं पैदा हुआ, मैंने चिकित्सा-शास्त्रमें योग्यता प्राप्त की और कुछ ही दिनोंके बाद लीपज़ीक प्रयोगशालामें अच्छे पदपर नियुक्त हो गया। यदि आपको उन दिनोंके चिकित्सा-विषयक कागजातोंकी फाइलें देखनेको मिलें, तो आप पायेंगे कि एक सामान्य रोगके लिए नए प्रकारकी जिस चिकित्साकी पैरवी मैंने की थी, उससे, उन दिनों, नवयुवक होनेपर भी, मेरी पर्याप्त ख्याति होने लगी थी।

"तब प्रेमका एक नाटक हुआ जिससे मेरे भविष्यकी सारी सम्भावनाएँ नष्ट हो गईं। यह एक स्त्रीके कारण हुआ, जिससे अस्पतालमें मेरी जान-पहिचान हुई थी। वह तब तक एक ऐसे व्यक्तिके साथ रहती थी जिसे उसने ऐसा पागल बना दिया कि उसने अपने आपको गोली मार ली। लेकिन वह मर नहीं सका। शीघ्र ही मैं भी उसीकी भाँति पागल हो गया। उस स्त्रीके स्वभावमें एक प्रकारका अनुष्ण दर्प था जिसका आकर्षण मेरे लिए दुर्निवार सिद्ध हुआ। वे महिलाएँ जो स्वभावकी दुर्द्धर्ष और उद्धत होती हैं, मेरे साथ जो चाहे कर सकती हैं। किन्तु इस स्त्रीने तो मेरा कचूमर ही निकाल दिया। उसने जो कुछ कहा, मैंने वही किया। और अन्तमें (आपसे यह कहना कठिन प्रतीत होता है,

यद्यपि यह कहानी बहुत पुरानी हो चुकी है—आजसे आठ बरस पहलेकी)
मैंने उसके लिए अस्पतालकी तिजोरीसे कुछ रुपया भी चुरा लिया। बात प्रकट
हो गई और उसका भीषण परिणाम भुगतना पड़ा। मेरे एक चाचाने उस
हानिको पूरा तो कर लिया; किन्तु लीपजीगमें मेरे जीवनका अन्त हो चुका था।

"ठीक उसी समय मैंने सुना कि डच सरकारके औपनिवेशक विभागमें
डाक्टरोंकी कमी है, और वह पेशगी रुपया देकर जर्मनोंको भी ले रही है।
मुझे लगा कि इसमें कहीं न कहीं गड़बड़ी अवश्य है। मैं अच्छी तरह जानता
था कि उष्णप्रधान देशोंके जंगलोंमें कब्रके पत्थर भी घास-फूसकी भाँति लहलहा
उठते हैं। किन्तु युवावस्थामें प्रत्येक व्यक्ति समझता है कि ज्वर और मृत्यु
दूसरोंपर भले ही आक्रमण कर लें, परन्तु उसे मज़ेमें निकल जाने देंगे।

"मेरे सामने और कोई चारा भी नहीं था। मैंने रौटरडमका मार्ग पकड़ा,
और दस वर्षके ठेकेपर हस्ताक्षर कर दिये। बैंक-नोटोंका एक मोटा पुलिन्दा
मुझे मिला। उसमेंसे आधे चाचाके पास भेज दिये। बचा खुचा धन उसी
शहरकी एक लड़कीको मिला। वह भी उसी स्त्रीकी भाँति थी, जिसके कारण
मेरा पतन हुआ था। बिना पैसेके, यहाँ तक कि बिना एक घड़ीके और
प्रत्येक भावनासे शून्य मैं योरोपसे जहाजपर सवार होकर चला आया।
बन्दरगाहसे बाहर होते समय मैं किसी भी प्रकार दुखी नहीं था। ठीक उसी
प्रकार जैसे आप बैठे हैं मैं भी डेकपर बैठा रहता था—पूर्वीय देशोंके नये
आकाशके नीचे खजूरके वृक्षोंको देखनेके लिए उत्कंठित—आश्चर्यमय
जंगलों, एकाकीपन और शान्तिके सपने देखता हुआ...

"किन्तु शीघ्र ही अकेलेपनसे मुझे तृप्ति हो गई। उन्होंने मुझे बटाविया
अथवा सुराबाया अथवा किसी दूसरे बड़े शहरमें नियुक्त नहीं किया, कि
जहाँ गोरी चमड़ीके मनुष्य मुझे मिलते; या जहाँ एक क्लब, एक गॉफ कोर्स,
किताबें या अखबार देखनेको मिलते। उन्होंने मुझे—खैर, जाने दीजिए उस
स्थानके नामको—ऊपरी प्रदेशमें दैव-परित्यक्त एक स्थान—पासके कस्बेसे
एक दिनकी यात्रापर—रख दिया। 'साथ' कहनेको दो या तीन पाषाणमति
कर्मचारी और एक या दो नीच जातिके व्यक्ति थे। उस बस्तीके चारों ओर
अनन्त जंगल, ईखकी खेतियाँ और दलदल फैले हुए थे।

"फिर भी पहले-पहले वह किसी प्रकार सह्य था। नयेपनका आकर्षण था। कुछ समय तक मैंने खूब अध्ययन किया। उन्हीं दिनों वाइस रेज़ीडेन्ट दौरा कर रहा था। उसे एक मोटर-दुर्घटनाका शिकार होना पड़ा। पैरकी दोनों हड्डियाँ टूट गईं। दूसरा कोई डाक्टर पासमें नहीं था। आपरेशनकी आवश्यकता थी। वह जल्दी अच्छा हो गया और मुझे काफी रुपया मिला, क्यों कि वह धनवान् मनुष्य था। वहाँके आदिवासी जिन शस्त्रों और विषोंका प्रयोग करते थे मैंने उस विषयमें भी अच्छी छान-बीन की। आखिर वह ताजगी खत्म हो गई। कई वस्तुएँ मैंने ढूँढ़ निकालीं जो जीवित रहनेमें मुझे सहायता देती थीं।

"ये बातें तब तक रहीं जब तक वह शक्ति बनी रही जो योरोपसे यहाँ आते समय थी। इसके उपरान्त वहाँकी जलवायुका प्रभाव मुझपर पड़ने लगा। बस्तीके दूसरे गोरोंसे मुझे चिढ़ होने लगी, मैं उनके सम्पर्कसे भागने लगा। खूब पीना और अपने ही भ्रान्त विचारोंमें डूबना-उतराना आरम्भ कर दिया। किसी प्रकार और दो वर्ष काटने थे। फिर तो पेंशनपर चला जाता और योरोपमें नये सिरेसे जीवनका प्रारम्भ करता। जब तक वह समय नहीं आता, मुझे प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। मैं प्रतीक्षा करता ही रहता, यदि वह घटना न घटी होती, जिसका वर्णन मैं आपसे कहूँगा।"

अंधकारमेंसे आता हुआ वह स्वर रुक गया। रात इतनी निःशब्द थी कि फिरसे एक बार जहाजके पानी चीरकर आगे बढ़नेकी आवाज और दूरपर मशीनोंकी नाड़ियोंका स्पन्दन सुनाई दे सकता था। मैं सिगरेट सुलगाना चाहता था। किन्तु मुझे डर था कि किसी आकस्मिक चेष्टा और अप्रत्याशित चमकसे मैं उसे चौंका न दूँ।

कुछ समयके लिए चुप्पी अटूट बनी रही। क्या उसने यह सोचकर अपना विचार बदल दिया कि कुछ और कहना अनुपयुक्त होगा? क्या वह तन्द्रामें डूब गया?

मैं इन्हीं विचारोंमें डूबा था कि छह घंटियाँ बजीं। प्रातःकालके तीन बज चुके थे। वह हिला-डुला और मैंने एक धीमी खनक सुनी। उसने व्हिस्कीकी बोतल उठा ली थी। अपने आपको फिरसे ताजा बना रहा था। फिर, भावावेशकी एक नई लहरके साथ, उसने कहना प्रारम्भ किया।

"हाँ,...ये बातें मेरे साथ घटती रहीं। अपने जालमें निश्चल बैठी हुई मकड़ीकी भाँति महिनों तक मैं उस घृणित स्थानमें निष्क्रिय होकर पड़ा रहा। बरसात समाप्त हो चुकी थी। हफ्तों छतपरसे बरसनेवाली धाराओंका शब्द मैं सुनता रहा। एक भी व्यक्ति मेरे पास नहीं आया—एक भी योरोपियन नहीं। अपने मकानमें मलायन नौकरों और व्हिस्कीको लेकर मैं अकेला पड़ा रहा। देश जानेके विषयमें पहलेसे अधिक उत्सुक था। जब कभी उपन्यासोंमें जगमगाती सड़कों और गौरांगी स्त्रियोंके विषयमें पढ़ता तो मेरी अंगुलियाँ काँपने लगती। आप तो केवल विश्व-पर्यटक रहे हैं। आप उस देशको वैसे नहीं जानते जैसे वहाँके रहनेवाले जानते हैं। कभी कभी किसी गोरेको एक विशेष प्रकारका रोग हो जाता है, जो उष्णप्रधान देशोंकी देन है—एक प्रकारकी मानसिक उदासी जो रोगीको करीब करीब सन्निपातमें ढकेल देती है। ऐसे ही दौरेमें मैं एक दिन मानचित्र सामने फैलाकर काल्पनिक यात्राओंके सपने देख रहा था। उसी क्षण मेरे दो नौकर अन्दर आये। आश्चर्यसे उनके मुँह खुले हुए थे। वे कहना चाहते थे कि एक महिला—एक गौरांगी महिला—मिलना चाहती है।

"मैं भी चकराया। मैंने बग्घी या मोटरकी आवाज नहीं सुनी थी। इस अरण्यमें वह गौरांगी आखिर क्या कर रही है? दुमंजिले मकानके ऊपरी बरांडेमें बैठा हुआ था और एक योरोपियनसे भेंट करनेके योग्य वस्त्र मैंने नहीं पहिन रक्खे थे। अपनी वेषभूषा सँभालते-सँभालते ही मैंने अपने उन्मन विचारोंको भी समेट लिया। किन्तु मैं फिर भी घबराया हुआ था। बेचैनी और एक प्रकारकी अमंगलसूचक संभावनासे मन काँप उठता था। यह कौन व्यक्ति है, जो मिलने आई है? मैं तो मित्र-विहीन था। इन जंगलोंमें कोई भी योरोपियन महिला मुझसे भेंट करने आई क्यों?

"वह बैठकके कमरेमें बैठी हुई थी। उसकी कुर्सीके पीछे एक चीनी लड़का खड़ा था, जो अवश्य ही उसका नौकर था। मेरी अभ्यर्थना करनेको वह तपाकसे उठ खड़ी हुई। मैंने देखा कि उसका चेहरा मोटे परदेसे ढका हुआ है। इससे पहले कि मैं कुछ कहूँ उसने बोलना प्रारम्भ कर दिया।

"'नमस्कार 'डाक्टर'। वह अँग्रेजीमें बोली। 'आप मुझे क्षमा करेंगे कि मैं बिना पूर्वसूचनाके इसी प्रकार चली आई।' वह जल्दी जल्दी बोल रही थी,

मानो रटे हुए भाषणको दुहरा रही हो। 'हम लोग बस्तीसे होकर जा रहे थे। मुझे किसी कामने कार रोकनी पड़ी। तभी मुझे स्मरण हुआ कि आप यहां रहते हैं'। यह बात रहस्यकी थी। यदि वह कारमें थी तो इस मकान तक उसीमें क्यों नहीं आई? 'मैंने आपके विषयमें बहुत कुछ सुन रक्खा है। उस दुर्घटनामें आपने वाइस रेज़ीडेण्टके साथ आश्चर्यमय व्यापारकी सृष्टि की थी। अभी उसी दिन मैंने उसे पहलेकी ही भाँति गॉफ खेलते देखा। यहाँ प्रत्येक-को जबानपर आपका नाम है। हम लोग तो बड़ी प्रसन्नतासे उस बुड्ढे सर्जन और उसके दोनों सहायकोंको आपसे बदल सकते हैं। लेकिन आप हेडक्वार्टर्स तक क्यों नहीं आया करते? आप तो यहाँ रोगीकी भाँति रहते हैं।'

"वह कहती जा रही थी--कहती जा रही थी। मुझे किसी भी किनारेसे बोलनेका अवसर नहीं मिल रहा था। यह तो स्पष्ट था कि उसकी यह वाचालता मानसिक उत्तेजनाके कारण थी, और मुझे भी उत्तेजित कर रही थी। आश्चर्य था कि वह इस प्रकार बकती ही क्यों चली जा रही थी? क्यों नहीं बताती कि वह है कौन? वह परदा क्यों नहीं हटाना चाहती? मैं अधिका-धिक चकित होता गया। लग रहा था कि मैं वहाँ मूर्खकी भाँति अवाक् खड़ा हूँ, जब कि वह अपनी अनवरत बकवाससे मुझे विक्षिप्त किये दे रही है। आखिर वाचालताका वह स्रोत सूख गया और मैंने उसे ऊपर चलनेका आमंत्रण दिया। चीनी लड़केको, जहाँ था वहीं ठहरनेका संकेत देकर वह मेरे आगे आगे सीढ़ियोंपर झपटती हुई चढ़ गई।

"'बड़ा सुन्दर निवास है' मेरी बैठकके चारों ओर दृष्टि दौड़ाती हुई वह बोली—'ओह, कितनी सुन्दर पुस्तकें हैं। किस खुशीसे मैं इन्हें पढ़ती!' वह किताबोंकी अल्मारीके पास तक गई और शीर्षकोंको पढ़ने लगी। वह पहली ही बार अबकी चुप हुई।

"मैंने पूछा—'क्या एक कप चाय आपको लाऊँ?'

"उसने बिना सिर घुमाए उत्तर दिया—'नहीं, धन्यवाद डाक्टर, कुछ थोड़े-से ही मिनट मेरे अधिकारमें हैं। ओह, वह फ़्लाबेअरकी पुस्तक है—'एजुकेशन सेण्टीमेण्टल'! क्या बढ़िया चीज़ है!—तो आप फ्रेंच भी

पढ़ते हैं ? आश्चर्यमय कौम है आप जर्मनोंकी !--स्कूलमें आपको इतनी भाषाएँ पढ़ाई जाती हैं ! आप लोगोंकी भाँति इतनी भाषाएँ बोलना गौरवका विषय है। वाइस रेज़ीडेण्ट तो सौगन्धसे कहते हैं कि आपको छोड़कर वे किसी दूसरेको अपने ऊपर चाकू नहीं चलाने देंगे। हमारे प्रधान सर्जन तो केवल ब्रिज खेलनेके योग्य हैं। किन्तु आप—मैं जब बस्तीसे होकर जा रही थी तो एकाएक सोचा कि अपने विषयमें आपसे परामर्श प्राप्त कर लेना चाहिए। मैंने सोचा--आजका-सा सुअवसर फिर नहीं मिलेगा।' किन्तु इतना सब-कुछ उसने बिना मेरी ओर देखे ही कहा क्यों कि वह लगातार पुस्तकोंकी ही ओर देख रही थी। 'मैं सोचती हूँ कि आप अत्यन्त व्यस्त हैं। शायद यह ठीक होगा कि मैं किसी दूसरे दिन आऊँ ?'

"मैं अनुमान लगा रहा था कि अब वह अपना रहस्य कहने जा रही है। किन्तु अपना आश्चर्य मैंने उसपर प्रकट होने नहीं दिया। उसे विश्वास दिलाया कि अभी, या और किसी समय, मैं सर्वदा उसकी सेवामें प्रस्तुत हूँ।

"'ओह, ठीक तो है !—चूँकि मैं यहाँ आ ही गई हूँ' वह आधी इस ओर घूमी, किन्तु आँखें नहीं उठाईं। उसने एक पुस्तक निकाल ली थी और लगातार उसीके पन्ने फड़फड़ाती जा रही थी। 'यह कोई गम्भीर बात नहीं है। स्त्रियोंको ऐसे कष्ट बहुधा हो ही जाया करते हैं—अर्द्धचेतनता, खुमारी, मितली। आज प्रातःकाल, मोटर जब मोड़ ले ही रही थी, मैं पूर्ण अचेतन हो गई। लड़का मुझे पकड़े रहा, अन्यथा मैं फर्शपर लुढ़क पड़ती। उसने मुझे पानी पिलाया, तब कहीं मैं ठीक हो पाई। सोचती हूँ शॉफर काफी तेज भगा रहा होगा। आप क्या सोचते हैं, डाक्टर साहब !'

"'मैं एकाएक उत्तर नहीं दे सकता। क्या आपको इसी प्रकार बेहोशीके दौरे आते रहे हैं ?'

"'नहीं--यानी, अभी तक नहीं। पिछले हफ्ते काफी आये थे। प्रातःकालके समय मैं बहुत बीमार रहा करती हूँ।' वह फिर अल्मारीके पास लौट गई थी। दूसरी पुस्तक निकाल कर पहलेकी भाँति पन्ने फड़फड़ाने लगी। उसका यह विचित्र आचरण क्यों ? उसने परदा क्यों नहीं उठाया और मेरी आँखोंसे आँखें क्यों नहीं मिलाईं ? कुछ सोच कर ही मैंने उत्तर नहीं दिया।

उसे प्रतीक्षा करते देखनेमें मुझे सुख मिल रहा था। यदि वह विचित्र व्यवहार कर सकती है तो मैं भी वही कर सकता हूँ। आखिर वह फिर बोलने लगी—उसी तटस्थ स्वरमें।

" 'आप यह तो मानेंगे, डाक्टर, कि यह कोई गम्भीर बात नहीं है। कहीं यह उन भीषण रोगोंमें तो नहीं है जो उष्ण-प्रधान देशोंमें हुआ करते हैं ?'

" 'आपकी नाड़ी देखूँ, बुखार तो नहीं है ?'

"मैं उसकी ओर बढ़ा, किन्तु वह दूर हट गई।

" 'नहीं, डाक्टर, विश्वास कीजिए, मुझे बुखार नहीं है। मैं उसी दिनसे अपना तापक्रम नापती रही हूँ जबसे...जबसे मुझे यह बेहोशीका कष्ट होने लगा है। नॉरमलसे कभी अधिक नहीं। मेरा हाजमा भी बिलकुल ठीक है।'

"मैं थोड़ा-सा अचंभेमें पड़ गया। आगन्तुकके विचित्र आचरणसे मेरे मनमें सन्देह जाग उठा था। स्पष्ट था कि वह मेरे मनका भेद जान लेना चाहता थी। दो सौ मीलसे मोटरद्वारा इस जंगलमें आकर केवल फ्लाबेअरपर तर्क करना ही उसका उद्देश नहीं था। मैंने कुछ देर प्रतीक्षा करने दिया, फिर पूछा—'क्षमा कीजिए, क्या मैं आपसे कुछ स्पष्ट प्रश्न करूँ ?'

" 'अवश्य,—अवश्य। डाक्टरके पास इसी लिए लोग आते भी हैं।' उसने धीमे स्वरमें कहा। किन्तु उसने पुनः अपनी पीठ मेरी ओर कर ली थी और पुस्तकें उलटने पुलटने लगी थी।

" 'कभी आपके बच्चे हुए थे ?'

" 'हाँ, एक लड़का।'

" 'तो उस समय क्या यही लक्षण आपने अनुभव किये थे, जब कि आप—?'

" 'हाँ।'

"यह उत्तर निर्णयात्मक और ठेठ था—बकवासके उसी स्वरमें नहीं जिसमें अब तक वह बोल रही थी।

" 'तो क्या यह सम्भव नहीं कि आपको जो कुछ हो रहा है यह उसी कारणसे है ?'

" 'हाँ।'

" यह उत्तर फिर वैसा ही तीक्ष्ण और निश्चयात्मक था।

" ' अच्छा हो यदि आप मेरे कन्सल्टिंग रूममें चली चलें। एक ही क्षणकी परीक्षासे यह सन्देश दूर हो जायेगा। '

" अन्तमें वह मेरे सामने आकर खड़ी हो गई। मुझे करीब-करीब यही अनुभव हो रहा था, मानो परदेके आरपार उसकी आँखें मुझे भेद रही हों।

" ' उसकी आवश्यकता नहीं है, डाक्टर। मुझे अपनी अवस्थाके बारेमें तनिक भी सन्देह नहीं है। ' "

एक विराम।

मुझे सुनाई पड़ा कि कहानी कहनेवालेने शराबकी एक घूँट और पी। तब वह फिरसे कहने लगा—

" आप इस विषयपर फिरसे विचार कीजिए। मैं वहाँ अपने एकाकीपनमें सड़ा जा रहा था, और तब वह स्त्री अकस्मात् आ पड़ी। पहली गौरांगी, जिसे वर्षोंके बाद मैंने देखा था—मुझे लगा मानो कोई पापमय, आशंकास्पद वस्तु मेरे कमरेमें घुस आई है। उसके विचारोंकी लौह-दृढता देखकर मुझे रोमांच हो आया। लगा था मानो गप्पें हाँकने आई है; और तब बिना चेतावनीके उसने ऐसी एक माँग मेरे समक्ष रक्खी कि मानो मुझे छुरा भोंक दिया गया हो। उसे मेरी क्या आवश्यकता है, यह तो स्पष्ट था। पहली ही बार एक स्त्री इस प्रकारकी प्रार्थना लेकर मेरे पास आई हो, यह बात नहीं है। पहले जो आई थीं वे दयाकी भीख माँगती हुई आई थीं; आँखोंमें आँसू भरकर उन्होंने अपने कष्टमें मेरी सहायता माँगी थी। किन्तु यह तो असाधारण दृढ़तावाली स्त्री थी। पहले ही क्षणसे मुझे लगा कि वह मुझसे अधिक शक्तिमती है और अपनी इच्छाके अनुसार मुझे ढाल सकती है। फिर भी, कमरेमें यदि कहीं कलुषता थी तो वह मुझमें—पुरुषमें—भी समानरूपसे वर्तमान थी। मुझमें एक कड़ुआहट आ गई थी—उसके विरुद्ध एक विद्रोह पनप उठा था। उसमें मुझे शत्रुका बोध हो चुका था।

" कुछ समय तक मैं उद्धत होकर चुप बना रहा। लगा कि पर्देके पीछेसे वह मुझे जाँच रही है—चुनौती दे रही है। चाहती है कि मैं विवश होकर कुछ बोलूँ। किन्तु मैं उसका आदेश पालन करनेको उद्यत नहीं था। जब मैं बोला तो उसीकी उपेक्षापूर्ण कठोर शैलीकी नकल-सी करता हुआ कहने लगा।

बहाना किया कि मैंने उसकी बात नहीं समझी है। प्रयत्न किया कि वह अधिक स्पष्ट रूपसे कहे। मैं नहीं चाहता था कि अधूरापन कहींपर हो। चाहता था कि दूसरी स्त्रियोंकी भाँति वह भी मेरे सम्मुख गिड़गिड़ाने लगे। यह इसलिए कि वह बड़ी शानके साथ मेरे पास आई थी; और भी सूक्ष्म कारण यह कि उसके औद्धत्यके सम्मुख मैं अपने आपको दुर्बल पा रहा था।

"अन्तमें, मुख्य विषयसे दूर हट-हटकर मैं बोलने लगा। कहा कि उसके लक्षण कोई महत्त्व नहीं रखते। बेहोशीके ऐसे दौरे गर्भावस्थाके प्रारम्भिक दिनोंमें हो ही जाते हैं। इनका बुरा परिणाम होनेके बजाय इनसे भला ही होता है। मैंने उन रोगियोंका विवरण दिया जिन्हें मैंने देखा अथवा पढ़ा था। मैंने समूचे विषयको बातोंमें ही उड़ा दिया। मैं बोलता जा रहा था, और चाहता था कि वह मुझे रोके।

"उसने उसी समय हाथका एक झटका देकर प्रतीतिके मेरे सारे शब्द शून्यमें बिखरा दिये।

"'यह बात नहीं है जिसके लिए मैं चिन्तित हूँ, डाक्टर साहब। मैं उतनी स्वस्थ नहीं हूँ, जितनी मैं पहली बार थी। मेरा हृदय मुझे कष्ट दे रहा है।'

"'क्या कहा आपने, हृदयरोग?' मैंने बनावटी चिन्ता दिखाते हुए कहा। 'अच्छी बात है, मैं अभी देखता हूँ।' मैं हिला, मानो स्टेथेस्कोप लेने जा रहा होऊँ।

"वह फिरसे एक बार चिहुँक पड़ी। ड्रिलके हवालदारकी भाँति कमान-सा देती हुई बोली—'आप मेरे शब्दोंपर विश्वास करें कि मुझे हृदयका कष्ट है। मैं अनावश्यक परीक्षाओंमें अपना और आपका समय नष्ट नहीं करना चाहती। इसके अतिरिक्त, जो कुछ मैं कहती हूँ, उसपर आपको कुछ अधिक विश्वास करना चाहिए। मैंने तो आपपर पूर्ण विश्वास किया है।'

"यह युद्धकी घोषणा थी। उसने चुनौती मेरे मुँहपर पटक दी थी। यह मेरा कर्त्तव्य था मैं उसे स्वीकार करता।

"'विश्वासमें स्पष्टता निहित होती है—पूर्ण स्पष्टता। कृपया सीधे-सीधे

अपनी बात कहिए। पुस्तकें रखिए एक ओर और अपना अभीष्ट कह डालिए। जब डाक्टरसे परामर्श करने जाना हो तो परदा किये रखना अभीष्ट नहीं।'

"अपनी ओरसे उसने मेरी चुनौती स्वीकार कर ली। मेरे सामने बैठकर उसने परदा हटा लिया। चेहरा वैसा ही था जैसा देखनेकी मुझे आकांक्षा थी— नियंत्रित और अगम्य। उन असाधारण अँग्रेज़ चेहरोंमेंसे एक, जिन्हें बुढ़ापा नहीं मुरझा सकता। किन्तु यह सुन्दर स्त्री अभी एकदम युवती थी— भूरी आँखें, जिनमें आत्मनिर्भर शान्ति झलक रही थी—किन्तु वासनाकी गहराइयाँ भी उनमें छिपी हुई थीं। होंठ दृढ़तासे बन्द थे और जिस भेदको वह प्रकट नहीं करना चाहती थी उसे वे प्रकट नहीं कर सकते थे। पूरे एक मिनट तक हम एक दूसरेको देखते रहे। वह दुर्द्धर्ष, किन्तु प्रश्नभरी दृष्टि और क्रूर आँखोंसे मुझे देख रही थी कि अन्तमें मुझे आँखें झुकानी पड़ीं।

"उसकी नटोरियाँ टेबिलपर खड़खड़ा उठीं। वह अपनी घबराहट दूर नहीं कर सकती थी। एकाएक वह बोली—'डाक्टर साहब, मैं आपसे क्या चाहती हूँ, यह आप जानते हैं या नहीं?'

"'मैंने मोटा-सा अनुमान लगा लिया है। आइए, हम लोग साफ-साफ बातें करें। आप अपनी इस अवस्थाको समाप्त कर देना चाहती हैं। आप मुझसे यह चाहती हैं कि मैं कारणको दूर करके आपको बेहोशीके दौरे और मितलीसे मुक्त कर दूँ। यही बात है न?'

"'हाँ।'

यह उत्तर गीलोटीन मशीनपर गिरते हुए छुरेकी आवाज-सा निश्चयात्मक था।

"'क्या आप जानती हैं कि ऐसी बातें खतरनाक होती हैं—दोनों व्यक्तियोंके लिए?'

"'हाँ।'

"'और यह कि ऐसा आपरेशन अन्याय्य है?'

"'मैं जानती हूँ कि कुछ दशाओंमें यह निषिद्ध नहीं है—बल्कि उनमें यह आवश्यक माना जाता है।'

"'हाँ, तब उसके लिए स्वास्थ्य-संबंधी खास कारण भी होते हैं।'

" 'आप उन कारणोंकी सृष्टि कर सकते हैं। आप डाक्टर हैं।'

" उसने अविचलित भावसे मेरी ओर देखा, मानो मुझे आज्ञा दे रही हो। और, दुर्बल मैं उसके निश्चयकी तात्त्विक शक्ति देखकर आश्चर्यसे काँप गया। फिर भी मैं डटा रहा। मैं उसे यह नहीं दिखाना चाहता था कि वह मुझसे अधिक शक्तिमान् है। 'इतनी शीघ्रता नहीं,' मैंने सोचा—'कठिनाइयाँ खड़ी करो। उस खुशामद करनेपर विवश करो।'

" 'डाक्टर हमेशा पर्य्याप्त कारण इकट्ठे नहीं कर सकता। फिर भी, अपने एकाध साथीसे परामर्श करना मैं बुरा नहीं समझता...'

" 'आपके किसी साथीको मैं नहीं चाहती। मैं तो आपसे परामर्श लेने आई हूँ।'

" 'मैं ही क्यों; क्या मैं पूछ सकता हूँ ?'

" 'वह मुझे अनुद्विग्न दृष्टिसे देखती रही; तब बोली—'आपसे कह ही दूँ ! मैं आपके पास इसलिए आई हूँ; आप आजसे पहले मुझसे नहीं मिले; आपकी योग्यता प्रख्यात है; और इसलिए....' वह पहली बार झिझकी, 'इसलिए आप कदाचित् जावामें अधिक रुकना नहीं चाहेंगे...विशेषकर यदि घर जानेके लिए आपकी मुट्ठीमें पर्य्याप्त धन हो।'

" मेरे शरीरमें फुरहरी व्याप्त हो गई। व्यापारियोंके-से इस हिसाबको सुनकर मुझे रोमांच हो आया। आँसू नहीं, गिड़गिड़ाहट नहीं। उसने मेरी माप ले ली थी—मेरा मूल्य आँक लिया था—और इस पूर्ण विश्वासके साथ उसने मुझे खोज निकाला था कि उसकी इच्छानुसार मैं ढल जाऊँगा। सच कहूँ, मैं तो पराजित हो चुका था; किन्तु अपने प्रति उसका रुख देखकर मैं क्रुद्ध गया।

" 'यह पर्य्याप्त धन आप मुझे क्यों देंगी ?'

" 'आपकी सहायताके निष्क्रयमें और इसलिए कि आप उसीके बाद डच इण्डीज़ छोड़कर चले जायेंगे।'

" 'किन्तु आप यह अवश्य ही जानती होंगी कि उसके एवज़में मेरी पेंशन मारी जायेगी !'

" 'मैं जो फीस देना चाहती हूँ, वह आपके हर्जानेसे अधिक है।'

मैं कभी वैसा नहीं रहा। फिर अपनी शक्तिके अनुसार मैंने लोगोंकी सहायता की। उस प्रकारके गन्दे जीवनमें भी मेरा एक मात्र सुख इसमें था कि जितना भी ज्ञान मुझे प्राप्त हो सका उससे गरीब रोगी व्यक्तियोंको स्वास्थ्यकी नई आशा दिला सका। यह क्रियात्मक सुख है, आप जानते हैं। एकाध बार मनुष्य यह भी सोच लेता है कि वह देवता है। एक बार एक भूरी चमड़ीका जावा-निवासी मेरे पास लाया गया। साँपके काटनेसे उसका पैर फूलकर सिरके आकारका हो गया था। मारे भयके चीख रहा था कि बिना पैर काटे उसका जीना असम्भव है। मैंने उसका जीवन और पैर दोनों बचा लिये तो मुझे शुद्ध आनन्द मिला। मैं ज्वरसे पीड़ित एक मलायन स्त्रीकी सहायता करनेके लिए घंटों जंगलमें घूमता रहा हूँ। लीपजीगके औषधालयमें इसी स्त्रीकी भाँति आपत्तिमें पड़ी हुई महिलाओंकी सहायताके लिए मैं सदा उद्यत रहता था। किन्तु उन मामलोंमें कम-से-कम यह तो अनुभव होता था कि रोगी मृत्यु अथवा निराशासे बचनेके लिए जरूरतमंद होकर आया है। दूसरेकी आवश्यकताका अनुभव ही मुझे सहायताके लिए प्रेरित करता था। किन्तु यह स्त्री!—मैं कैसे आपको समझाऊँ? उसने पहले ही क्षणसे, जब कि वह आकस्मिक मुलाकातका बहाना करके आई थी, मुझे चिढ़ा दिया था। उसके औद्धत्यको देखकर मैंने भी विरोधके लिए कमर कस ली। उसके आचरणने सुपुप्त दानवको—हममेंसे प्रत्येकमें छिपे हुए रावणको—जगा दिया। मैं क्रोधित था इस बातपर कि वह मेरे पास रानियोंकी-सी शानमें आई थी—जीवन और मरणके-से प्रश्नपर भी नितान्त निरपेक्षताका भाव लेकर। मैंने भयंकर स्पष्टताके उस समयका चित्र अपने मनःपटलपर खींचा जब कि यह उद्धत नारी, इतनी अभावुक, इतनी निरपेक्ष—जिसके लिए मैं एक निमित्तमात्र बना जा रहा था, और जिसकी दृष्टिमें मेरा मूल्य तलुओंमें लगी हुई धूलसे अधिक नहीं था।—यह स्त्री, आजसे दो या तीन महिने पहले एक पुरुषकी भुजाओंमें वासनासे भरी हुई लिपट पड़ी होगी—वह पुरुष इस अजात शिशुका पिता है, जिसे यह स्त्री मेरे द्वारा नष्ट कराने आई है। यही विचार मुझे आन्दोलित कर रहा था। वह मेरे पास नफरत लेकर आई थी। किन्तु मैं भी उस अज्ञात पुरुषकी भाँति इस स्त्रीको अपनी बना लूँगा। मैं चाहता हूँ कि इस बातको आप समझ लें। डाक्टर होनेका ऐसा लाभ उठाना मैंने पहले कभी नहीं चाहा। इस समय भी मैंने जो

कुछ किया वह कामुकतासे, यौन अधिकार प्राप्त करनेकी इच्छासे, नहीं किया। आपको विश्वास दिलाता हूँ कि ऐसी कोई बात नहीं थी। मैंने यह कर्म उसके दर्पपर हावी होनेके लिए किया। अपने आपको विजयी पुरुष सिद्ध करने और अपनी अहंताका गुरुत्व उसकी अहंतापर थोप देनेके लिए।

"मैं आपसे पहले ही कह चुका हूँ कि उद्धत और अभावुक स्त्रियाँ मुझपर एक विचित्र प्रभाव डालती रही हैं। इसके अतिरिक्त एक बात और भी थी कि पिछले सात वर्षोंसे मेरी भुजाओंमें कोई भी योरोपियन स्त्री नहीं आई थी, विरोधका सामना मुझे कभी नहीं करना पड़ा था। वहाँकी रहनेवाली लड़कियाँ भीरु होती हैं। वे 'सफेद मालिक'की इच्छाके प्रकट होते ही आदर और प्रसन्नतासे काँप उठती हैं। उनमें विनम्रता ठूँस-ठूँसकर भरी हुई रहती है, कहते ही अपने आपको समर्पित करनेको उद्यत—पर इस प्रकारकी दासतासे वासनाका वास्तविक स्वाद नष्ट हो जाता है। अरबी लड़कियाँ दूसरे प्रकारकी होती हैं और चीनी तथा मलायन लड़कियोंके विषयमें भी मैं यही सोचता हूँ। किन्तु मैं तो जावानियोंके बीच रह रहा था। तो, आप सोच सकते हैं कि जब यह स्त्री—इतनी उद्धत, भयंकर, प्रच्छन्न रहस्यसे इतनी आवृत, वासनाके परिणामसे गुरुभार, मेरे पास आई तो मैं किस प्रकार रोमांचित हो उठा था;—आप अनुमान लगा सकते हैं, जब ऐसी एक स्त्री ऐसे एक पुरुषके पींजरेमें चली आनेका साहस करे, जैसा कि मैं हूँ—वास्तविक पशु, एकाकी, भूखा, मनुष्य-संगसे विच्छिन्न। मैं यह सब आपसे इसलिए कह रहा हूँ कि बादमें जो कुछ हुआ उसे आप समझ सकें। ये विचार मेरे मस्तिष्कमें घूम रहे थे—ये भावनाएँ मुझे उद्वेजित कर रही थीं। और तब अनमनेपनका अभिनय करते हुए मैंने कहा—'एक लाख गल्डन?—मैं उतनेके लिए यह काम नहीं करूँगा।'

"वह कुछ हतप्रभ-सी होकर मेरी ओर देखने लगी। मन-ही-मन वह अवश्य जान गई थी कि रुपए-पैसेका यहाँ कोई व्याघात नहीं है। फिर भी वह बोली—'तो आप क्या फीस चाहते हैं?'

"मैंने उत्तर दिया, 'देखिए, हम लोगोंको एक दूसरेके प्रति स्पष्ट व्यवहार करना चाहिए। मैं कोई व्यापारी नहीं हूँ। शेक्सपियरके 'रोमियो जूलियट'

में वर्णित निर्धन दवाफरोशकी भाँति आप मुझे न समझें, जो विषका विक्रय और भी भीषण विष 'स्वर्ण'के एवजमें किया करता था। यदि आप मुझे केवल व्यापारी समझेंगी तो जो कुछ आप चाहती हैं पायेंगी नहीं।'

"'तो आप नहीं करेंगे?'

"'नहीं, पैसेके लिए नहीं।'

"एक क्षणके लिए चुप्पी छाई रही। कमरा इतना स्तब्ध था कि मैं उसका श्वास-प्रश्वास सुन सकता था।

"'आप और क्या चाहते हैं?'

"मैंने गरम होकर उत्तर दिया—'मैं पहले तो यह चाहता हूँ कि आप मेरे पास मुझे मनुष्य समझकर आयँ; व्यापारी समझकर नहीं। आपको यदि सहायताकी आवश्यकता है तो आप अपने स्वर्णकी चमक दिखाकर मत आइए। मुझ मनुष्यकी प्रार्थना कीजिए कि मैं आपकी—एक मनुष्यकी--सहायता करूँ। मैं केवल चिकित्सक ही नहीं हूँ। मेरा जीवन केवल चिकित्सा-विषयक परामर्शोंसे ही बना हुआ नहीं है। मेरे जीवनमें दूसरे क्षण भी हैं--और कदाचित् आप उन्हीं क्षणोंमें मेरे पास आई थीं—'

"थोड़ी देर शान्ति रही। फिर उसने अपने होंठ सिकोड़कर कहा।--

"'तो, यदि मैं आपकी खुशामद करूँ तो आप काम कर देंगे?'

"'मैंने यह नहीं कहा। आप फिर भी सौदा तय कर रही हैं। जब तक मैं दूसरे रूपमें प्रतिज्ञा न कर लूँ, तब तक आप जिरह करती ही जायेंगी। अच्छी बात है, आप ज़िरह कीजिए; मैं बादमे उत्तर दूँगा।'

"उसने बिगड़ैल घोड़ेकी भाँति अकड़कर अपना सिर हिलाया—

"'मैं सहायताके लिए गिड़गिड़ाऊँगी नहीं। इसके बजाय मै तो मर जाना चाहूँगी।'

"'मैं चिढ़ गया और मैंने क्रोधमें भरकर कहा--

"'आप नहीं करतीं प्रार्थना, तो मैं ही अपना अभीष्ट माँगता हूँ। सोचता हूँ कि शब्दोंकी यहाँ कोई आवश्यकता नहीं है। आप जान गई हैं कि मैं क्या चाहता हूँ। जब आप वह दे चुकेंगी, तो मैं आपकी सहायता करूँगा।'

"वह क्षणभर मुझे घूरती रही। तब (मैं कैसे उस क्षणका आतंक आपपर स्पष्ट करूँ!) उसकी आकृतिमें जो तनाव था वह ढीला हो गया और वह

फूटफूटकर हँसने लगी। वह ऐसी घृणासे हँसी कि जिसने मुझे तत्काल पीसकर धूल बना दिया और पागलपनका उन्माद मेरे मनपर छा गया। विद्रूपसे भरा वह अट्टहास्य भीषणताके अनिर्वचनीय विस्फोट-सा फूट पड़ा, और उसका प्रभाव मुझपर यह हुआ कि मैं उसके सामने विनीत होना, उसके पैरोंको चूम लेना चाहने लगा। उसकी घृणाकी शक्तिने बिजलीकी भाँति मुझे टूक टूक कर दिया।—उसी क्षण वह उठी और दरवाजेकी ओर जाने लगी।

" बिना सोचे-समझे मैं उससे क्षमा-याचना करने लगा—इतनी चूर-चूर हो चुकी थी मेरी आत्मा। किन्तु जानेसे पहले वह यह कहने—नहीं, आज्ञा देने—मेरे सम्मुख आई—

" ' मेरा पीछा करने अथवा यह जाननेका, कि मैं कौन हूँ, प्रयत्न मत करना। यदि तुमने ऐसा किया तो पछताओगे। '

" निमिष-भरमें वह चली गई। "

दूसरा विराम। फिरसे नीरवता छा गई। तब अन्धकारमेंसे वही स्वर एक बार और उठा—

" वह दरवाजेकी राह अन्तर्हित हो गई, और मैं उसी स्थानपर गड़ गया। ऐसा लगा मानो उसके निषेधका जादू मुझपर चल गया है। सीढ़ियोंसे होकर उसे नीचे जाते हुए मैंने सुना। मकानका दरवाजा बन्द होते हुए सुना। मैंने सब कुछ सुना। मैं उसका पीछा करना चाहता था। क्यों ?—मैं नहीं जानता कि उसे बुलाने या उसे मारने या उसका गला घोंट देनेके लिए। कुछ भी हो, मैं उसका पीछा करना चाहता था। मानो उसका भीषण उत्तर सुनकर मुझे लकवा मार गया हो। मैं जानता हूँ, यह बात विचित्र-सी लगेगी। किन्तु सत्य यही था। मिनट बीते—पाँच—दस—तब मैं हिला।

" किन्तु ज्यों ही हिला कि जादू टूट गया। मैं सीढ़ियोंसे नीचे झपटा। एक ही सड़क थी, जिससे वह गई होगी; पहले बस्तीकी ओर, फिर सभ्य संसारकी ओर। मैं जल्दीसे गैरेजकी ओर गया जहाँ मेरी साइकिल रक्खी हुई थी। किन्तु पता लगा कि चाबी ऊपर ही रह गई है। उसे लानेकी प्रतीक्षा किये बिना, मैंने बाँसके बने कमजोर फाटकको झकझोर डाला और साइकिल निकाल ली। दूसरे ही क्षण मैं पागलों-सा सड़कपर पैडिल मारता हुआ

पीछा करने लगा। इससे पहले कि वह अपनी कार तक पहुँचे, उसे अवश्य पकड़ लेना चाहिए।

"धूलभरी सड़क मेरे सामने खुलती जा रही थी। अंतमें वह दिखाई पड़ी—जहाँ जंगलको लपेटती हुई सड़क बस्तीकी ओर मुड़ती है। वह तेजीसे चल रही थी। चीनी लड़का उसके पीछे था। जब मैंने उसे देखा तभी मेरे द्वारा पीछा किये जानेका ज्ञान उसे हो गया होगा। क्यों कि वह खड़ी होकर लड़केसे कुछ कहने लगी और तब अकेली ही चल दी। वह प्रतीक्षा करता हुआ-सा खड़ा रहा। वह अकेली ही क्यों गई? क्या वह ऐसे स्थानपर मुझसे बोलना चाहती थी जहाँ कोई सुन न सके? मैंने जोरोंसे पैडिल चलाये। उसी समय वह लड़का, जब कि मैं बगलसे निकलकर जा रहा था, एकाएक उछलकर सामने आ गया। मैं उससे बचनेको मुड़ा, सड़कके किनारेपर चढ़ गया और गिर पड़ा।

"दूसरे ही क्षण मैं उठ खड़ा हुआ। लड़केको गालियाँ देते हुए मैंने उस-पर घूँसा ताना, किन्तु उसने बचा लिया। उसकी अधिक चिन्ता न करते हुए मैंने अपनी साइकिल उठाई और फिरसे सवार होनेको ही था कि कमबख्त उछलकर सामने आ गया। हैण्डिल पकड़कर टूटी-फूटी अँग्रेजीमें बोला—'मालिक, यहीं रुक जायँ।'

"आप उष्ण देशोंमें रहे नहीं। उस देशके निवासीके, और वह भी एक नौकरके, द्वारा किये गये ऐसे आचरणकी कल्पना भी आप नहीं कर सकते। वह पीला जानवर, एक चीनी लड़का, सचमुचमें मेरी साइकिल पकड़नेका साहस कर सका और मुझे, गौरांग प्रभुको, यह कह सका कि जहाँ हूँ वहीं खड़ा रहूँ! मेरा स्वाभाविक उत्तर यही था कि उसके कपारपर करारी चोट दूँ। वह लड़-खड़ाया, किन्तु साइकिलपर उसकी पकड़ वैसी ही बनी रही। सूराखों-सी उसकी आँखें डरसे भरी हुई थीं; फिर भी वह हृदयका पक्का था और मुझे छोड़ता न था।

"'मालिक यहीं ठहर जायँ' उसने दुहराया।।

"भाग्यकी बात थी कि मैं अपना पिस्तौल नहीं ले आया था। कहीं मेरे पास होता तो मैं उसे वहीं, उसी समय गोली मार देता।

" 'जाने दे रे, कुत्ते !'—मैं चिल्लाया।

" वह आतंकसे काँपता हुआ मुझे देखता रह गया। किन्तु फिर भी उसने मेरी आज्ञा न मानी। क्रोधके आवेशमें, और यह सोचकर कि अधिक बिलम्ब होनेसे वह मुझसे बचकर चली जायेगी, मैंने उसकी ठुड्डीपर अन्तिम प्रहार किया। वह सड़कपर ही ढेर हो गया।

" अब साइकिल स्वतंत्र थी। किन्तु ज्यों ही मैंने चढ़नेका प्रयत्न किया कि देखा अगला पहिया टेढ़ा हो गया है और घूमता नहीं है। पहिएको सीधा करनेके व्यर्थ प्रयत्नके बाद मैंने उसे वहीं चीनी लड़केके पास धूलमें फेंक दिया, और सड़कपरसे दौड़ता हुआ बस्तीमें घुस गया।

" हाँ, मैं दौड़ा। मैं फिर कहता हूँ कि आप उष्ण देशोंमें रहे नहीं, अतः समझ नहीं सकते कि इसके क्या मानी होते हैं। आँखें फाड़-फाड़कर देखते हुए आदिवासियोंके सामने एक योरोपियनके लिए अपनी मर्य्यादाको भूलकर दौड़ते हुए निकलना अत्यन्त उपहासास्पद होता है। किन्तु मुझे मर्य्यादाके सोचनेका अवसर कहाँ था ? मैं झोंपड़ियोंके सामनेसे पागलोंकी भाँति दौड़ता हुआ निकला। उनमें रहनेवाले लोग बस्तीके डाक्टर, गौरांग प्रभुको, रिकशा-कुलीकी भाँति भागते हुए देखकर आश्चर्यचकित हो गये।

" जब मैं बस्तीमें पहुँचा तो पसीनेमें डूब रहा था।

" 'कार कहाँ है'—मैंने हाँफते हुए चीखकर कहा।

" 'अभी गई है मालिक !'—उत्तर मिला। वे मेरी ओर आश्चर्यसे देखते रह गये। पसीनेमें भीगा हुआ और क्षुधार्त्त, जिस समय मैं निकट आकर चिल्लाया तब पागलों-सा अवश्य दीखता हूँगा। दूर सड़कपर मैंने देखा—कार वहाँपर नहीं थी, किन्तु उसके चले जानेके बाद उठी हुई धूल आकाशमें उड़ रही थी ; वह साफ निकल भागी। मुझे रोकनेके लिए उसने लड़केको जो पीछे छोड़ दिया, उसका यह उपाय सफल हुआ।

" फिर भी भागनेसे उसे कोई लाभ नहीं था। उष्णप्रधान देशोंमें मुट्ठीभर योरोपियन शासकोंके नाम और करतूतें सभीको ज्ञात रहती हैं। इस दृष्टिकोणसे जावा एक बड़ा-सा गाँव ही है, जहाँ किम्वदन्तियाँ खूब चला करती हैं। जब वह मुझसे वार्तालाप कर रही थी, उसका शॉफर बस्तीमें एक घण्टे निष्क्रिय

बैठा रहा था। कुछ ही मिनटोंमें मैंने सब कुछ ज्ञात कर लिया। उसका नाम, और यह कि वह एक सौ पचास मील दूर प्रान्तीय राजधानीमें रहती है। जैसा कि मैंने पहले ही अनुमान लगा लिया था, वह एक अँग्रेज महिला थी। उसका पति पाँच महिनोंसे बाहर था। व्यापारिक यात्रामें अमरीका गया हुआ था। कुछ ही दिनोंमें वह लौटने वाला था; और उसके बाद पति-पत्नी दोनों इँग्लैण्ड जानेवाले थे।

" यह मुझे स्पष्ट हो गया था कि उसका गर्भ तीन महिनेसे अधिकका न होगा।

" अब तक मेरा उद्देश्य मेरे लिए स्पष्ट था, इसलिए मैं आपको सभी बातें साफ-साफ समझाता जा रहा था। डाक्टर होनेके नाते मैं तत्काल अपने लक्षण पहिचान सकता था। किन्तु इस समय तो मैं सन्निपातग्रस्त था। मुझमें आत्म-नियंत्रण नहीं रह गया था। जानता था कि मेरे कार्य कितने उपहासास्पद हैं, फिर भी मैं उन्हें करता जा रहा था। क्या आपने सुना है कि 'विक्षिप्त होना' किसे कहते हैं?"

" हाँ, सुना है। मलायाके लोगोंमें अकस्मात् शराब-की-सी उन्मत्तता उत्पन्न हो जाती है। क्यों है न यही?"

" उन्मत्ततासे भी अधिक। पागलपनसे भी अधिक। यह ऐसी अवस्था है कि जिसमें मनुष्य पागल कुत्ते-सा आचरण करने लगता है। मनुष्योंकी हत्या करनेकी धुन उसपर सवार हो जाती है। यह एक विचित्र और भयंकर मानसिक विकृति है। जब तक पूरबमें रहा, मैंने ऐसे रोगियोंका सूक्ष्म अध्ययन किया था। किन्तु मैं उसकी वास्तविक प्रकृति कभी नहीं जान सका था। इसका कुछ कारण तो वहाँका जलवायु है—गरमी, नमी और दुःखप्रद वातावरण —उसका तनाव नाड़ियोंपर ऐसा पड़ता है कि अन्तमें वे जवाब दे जाती हैं। यह तो निश्चित है कि जो मलायन 'विक्षिप्त' हो जाता हैं, उसे किसी प्रकारका दुःख अवश्य होता है—जलन, जुएकी हार, या कुछ और। वह चुपचाप बैठा रहेगा, मानो कुछ हुआ न हो—ठीक मेरी ही भाँति, जब उस स्त्रीके आनेसे पूर्व मैं अपने कमरेमें बैठा हुआ था।

" तब, एकाएक वह उछलकर खड़ा हो जायेगा। अपनी छोटी-सी तलवार लेगा और सड़कपर भागने लगेगा। वह यह भी नहीं जानता कि वह कहाँ जा रहा है। उसके मार्गमें जो आता है उसके वह छुरा भोंक देता है। बढ़ते

हुए रक्तको देखकर उसका उन्माद अधिकाधिक बढ़ता जाता है। मुँहसे फेन निकलने लगता है। चीखता है; तलवार घुमाते हुए भागता चला जाता है। प्रत्येक व्यक्ति यह जानता है कि मृत्युके अतिरिक्त और कोई शक्ति उसे रोक नहीं सकती। वे उसके मार्गसे हट जाते हैं, और दूसरोंको चेतावनी देनेके लिए 'विक्षिप्त-विक्षिप्त' चिल्लाते जाते हैं। इस प्रकार वह दौड़ता चला जाता है—हत्या करता हुआ—अन्तमें पागल-कुत्तों-सा गोलीसे मार डाला जाता है।

"चूँकि मैंने मलायनोंको विक्षिप्त होते देखा है, इसलिए अच्छी तरह जानता हूँ कि मेरी दशा उन दिनों कैसी थी।—वे दिन जो कि अभी-अभी बीते हैं—वे दिन, जिनके विषयमें मैं आपसे कहने जा रहा हूँ। वैसे ही एक मलायनकी भाँति मैं भी अपने मार्गपर दौड़ता जा रहा था। न तो दाहिनी ओर देखता था, न बायीं ओर। केवल फिरसे उसे देखनेका एकमात्र विचार मुझे व्यथित कर रहा था। मैं ठीक-ठीक स्मरण भी नहीं कर सकता कि, उन संक्षिप्त क्षणोंमें, उसकी वास्तविक खोजपर चल पड़ने तक मैंने क्या-क्या किया। उसका नाम और निवासका पता लगा लेनेके कुछ ही मिनटोंके अन्दर मैंने किसीसे साइकिल माँगी और अपने घरकी ओर भागा। अटैचीमें एकाध सूट रक्खा, जेबमें नोटोंका बण्डल भरा और पासके रेलवे स्टेशनको चल दिया। मैंने जिलेके अफसरसे रिपोर्ट नहीं की। अपने स्थानपर काम करनेके लिए किसी डाक्टरको नहीं ढूँढ़ा। मकानको वैसा ही छोड़कर मैं चल दिया। नौकर लोग आदेशकी प्रतीक्षामें मेरे चारों ओर इकट्ठे हो गये। मैंने उनकी ओर भी कोई ध्यान नहीं दिया। जब वह स्त्री मुझसे भेंट करने आई, उस समयसे एक ही घंटेके अन्दर मैंने अतीतसे अपने सारे बन्धन तोड़ दिये और शून्यकी ओर विक्षिप्त होकर दौड़ पड़ा।

"सच पूछा जाय तो इस उतावलीसे मुझे कुछ भी लाभ नहीं हुआ। यदि सोच सकता तो यह बात मुझे पहले ही मालूम हो सकती थी। मैं दोपहरको काफी देरमें रेलवे-स्टेशन पहुँच सका। जावाके पहाड़ोंमें फिसलनेके डरसे गाड़ियाँ रातको नहीं चलतीं। डाक बंगलेमें निद्राहीन रात्रि बिताकर, दिनभर-की रेल-यात्राके उपरान्त, सायंकाल छह बजे, जहाँ वह रहती थी, उस शहरमें पहुँचा। यह निश्चय मुझे हो चुका था कि मुझसे काफी देर पहले वह कारमें आ चुकी होगी। दस मिनटोंके अन्दर मैं उसके द्वारपर जा पहुँचा। आप

कहेंगे—इससे अधिक निरर्थक कार्य और क्या हो सकता है ! मैं जानता हूँ—जानता हूँ। किन्तु जो विक्षिप्त होने जा रहा हो, वह नहीं देखता कि कहाँ जा रहा है।

" मैंने अपना कार्ड भेजा । नौकर यह कहनेके लिए लौटा कि मालकिन अस्वस्थ हैं और किसीसे मिलना नहीं चाहतीं।

" मैं लुढ़कता हुआ सड़कपर आया । एक घंटे या अधिक समयतक मैं उसी मकानके चारों ओर मँडराता रहा, इस अभागिन आशामें कि आखिर वह पछताएगी और मुझे बुला लेगी। तब मैंने पड़ोसके एक होटलमें कमरा किरायेपर लिया और दो बोतलें व्हिस्कीकी ऊपर भिजवा दीं। उन्हें पीकर और वीरोनलकी एक तेज खूराकसे मैंने किसी प्रकार अपने आपको अचेतन किया। —एक गहरी नींद—जीवनसे मृत्युकी ओर की इस दौड़में केवल वही एक विराम मिलना था। "

आठ घंटियाँ बजीं। प्रातःकालके चार बज रहे थे। आकस्मिक ध्वनि सुनकर कहनेवाला चौंक पड़ा। एकाएक रुक गया। थोड़ी देरमें किसी प्रकार अपने आपको बटोरकर अपना इतिहास पुनः कहने लगा।

" उसके बादके क्षणोंका वर्णन करना कठिन है। सोचता हूँ मुझे ज्वर अवश्य रहा होगा। कुछ भी हो, मेरी मानसिक दशा पागलपनकी सीमापर अवश्य थी। मैं विक्षिप्त हो रहा था। मंगलवारकी सन्ध्याको मैं उस शहरमें आया। दूसरे दिन पता लगा कि उसका पति शनिवारको आ रहा है। पूरे तीन दिन थे, इसी बीच मैं उसे आपत्तिके बाहर खींच सकता था। जानता था कि एक भी क्षण खोया नहीं जाना चाहिए—और, वह मुझसे मिलती नहीं थी ! सहायता देनेकी मेरी इच्छाने और इससे अधिक अपनी पागल माँगके लिए क्षमा-याचनाकी आकांक्षाने मेरी मानसिक उथल-पुथलको और भी तीव्र कर दिया। प्रत्येक क्षण मूल्यवान् था। सारी बात मकड़ीके तार-पर झूल रही थी, और मैंने इतना भीषण व्यवहार किया था कि वह मुझे अपने निकट नहीं आने देगी। कल्पना कीजिए कि हत्यारेसे सावधान करनेके लिए आप किसीके पीछे दौड़े चले जा रहे हैं, और वह आपको ही हत्यारा समझकर, आपसे दूर विनाशकी ओर भाग जाता।

है। वह तो मुझमें यही देखती थी कि मैं एक उन्मत्त पीछा करनेवाला हूँ, जिसने नीच प्रस्ताव रखकर उसका अपमान किया था, और अब फिरसे वही करने आया हूँ।

"बस, सारी कहानीका यही विद्रूप है। मेरी एक मात्र इच्छा उसकी सहायता करनेकी थी, और वह मुझे देखना भी नहीं चाहती थी। मैं उसकी सहायता करनेके लिए कोई भी पाप कर सकता था, किन्तु वह इसे नहीं जानती थी।

"दूसरे दिन गया तो वही चीनी लड़का दरवाजेपर खड़ा था। सोचता हूँ कि वह भी उसी गाड़ीसे लौटा होगा, जिससे मैं। वह मेरी ही खोजमें था, क्यों कि ज्यों हीं मैं दिखाई दिया कि वह आँखोंसे ओझल हो गया—किन्तु उससे पहले ही मैंने उसके चेहरेपर खरोंचें देख ली थीं। शायद वह मेरे आगमनकी सूचना देनेके लिए ही जल्दी जल्दी लौट गया था। यही एक बात थी, जो अब मुझे पागल बनाये दे रही है। यह सोचता हूँ कि तब तक उसने यह ज्ञात कर लिया था कि आखिर मैं सहायता ही करना चाहता हूँ, और कदाचित् वह मुझसे भेंट करनेको उद्यत हो गई थी। किन्तु, उस लड़केको देखते ही मुझे अपने लज्जास्पद कार्यका स्मरण हुआ और बिना नाम भिजवाये ही मैं दरवाजेसे लौट आया—चला आया—व्यथामें तड़पता हुआ; और, शायद वह भी मेरी प्रतीक्षामें उसी यंत्रणासे तड़पती रही होगी!

"मैं नहीं जानता था कि उस अपरिचित शहरमें किस प्रकार समय बिताऊँ। अन्तमें मुझे सूझा कि वाइस रेजीडेण्टसे भेंट करूँ। यह वही व्यक्ति था जिसका पैर मैंने मोटर दुर्घटनाके उपरान्त ठीक किया था। वह घरपर ही था और मुझे देखकर प्रसन्न हुआ। क्या मैंने आपको बतलाया है कि मैं डचोंकी ही भाँति उनकी भाषामें धारा-प्रवाह बोल सकता हूँ! मैंने दो वर्ष तक हालैण्डके एक स्कूलमें पढ़ा था। यही कारण था कि लीपज़ीगसे चले आने-पर मैंने डच औपनिवेशक सर्विस स्वीकार की थी।

"मेरे आचरणमें कुछ न कुछ विचित्रता अवश्य रही होगी। वाइस रेज़ीडेण्ट मेरा कृतज्ञ था और स्वभावसे विनयी होनेपर भी तिरछी आँखोंसे बार-बार मुझे देख रहा था, मानो सोचता हो कि मैं कहीं विक्षिप्त तो नहीं हो

रहा हूँ ! उससे कहा कि मैं उसके पास अपनी बदली कराने आया हूँ। उन जंगलोंमें मैं अब नहीं रह सकता। मैं तत्काल प्रान्तीय राजधानीमें चला आना चाहता हूँ। उसने मेरी ओर प्रश्नभरी दृष्टिसे देखा, मानो एक डाक्टर रोगीको परख रहा हो।

"'मानसिक उथल-पुथल है, क्यों डाक्टर ?'—उसने पूछा, 'मैं खूब समझता हूँ। हम आपका प्रबन्ध कर देंगे, किन्तु आपको कुछ समय प्रतीक्षा करनी होगी। यही, तीन या चार हफ्ते—इस बीच हम किसीको आपके स्थानपर काम करनेके लिए ढूँढ़ लेंगे।'

"'तीन या चार हफ्ते!' मैं चिल्लाया, मैं तो एक दिन भी नहीं रुक सकता।'

" फिर वही प्रश्नभरी दृष्टि।

"'डाक्टर साहब, मैं सोचता हूँ कि आपको किसी न किसी भाँति इन परिस्थितियोंमें रहना ही पड़ेगा। आपके स्थानको विना किसी डाक्टरके हम छोड़ नहीं सकते। फिर भी वचन देता हूँ कि मैं इस मामलेको आज ही चलता कर दूँगा।'

"मैं होंठ काटता हुआ खड़ा रहा। पहली बार समझा कि मैंने किस प्रकार अपने आपको दासताके हाथों बेच दिया है। सोचा कि उसका और उसके कायदे-कानूनोंका विरोध करूँ। किन्तु वह कार्यपटु था। मेरा उसपर आभार था इसलिए वह स्पष्ट रूपमें झगड़ा नहीं करना चाहता था। पहलेसे ही यह समझकर कि अब मैं रोषपूर्ण उत्तर दूँगा, वह बोला—'आप संन्यासी-की भाँति रहते आये हैं। इतना किसी भी व्यक्तिके अन्दर विक्षोभ उत्पन्न करनेको पर्याप्त है। हम लोग तो यही आश्चर्य करते रहते थे कि आपने अब तक छुट्टी क्यों नहीं ली और आप कभी हम लोगोंसे मिलने जुलने यहाँ क्यों नहीं आये। कभी-कभी हँसमुख व्यक्तियोंके साथ उठने-बैठनेसे आपको लाभ ही हुआ होता। हाँ, एक बात है—आज शामको गवर्नमेण्ट हाउसमें उत्सव है। क्या आप नहीं आएँगे ? समूचा उपनिवेश वहाँ एकत्रित होगा। उनमें बहुतसे व्यक्ति ऐसे भी हैं जो बहुधा आपके विषयमें पूछताछ करते रहते हैं। वे आपसे परिचित होना चाहते हैं।'

"इसपर मेरे कान खड़े हो गये। मेरे विषयमें पूछताछ करते थे ? मुझसे परिचित होना चाहते थे ? क्या वह भी उनमें थी ? यह विचार मेरे लिए शराबका काम कर गया। मुझे अपने आचरणका स्मरण हुआ। निमन्त्रणके लिए उसे धन्यवाद दिया, और जल्दी आनेका वचन देकर मैं लौट आया।

"मैं बहुत जल्दी दूसरोंसे पहले, वहाँ चला गया। अधीरतासे प्रेरित होकर, मैं ही पहला व्यक्ति था जो रेजीडेन्सीके बड़े भारी हॉलमें पहुँचा था। वहाँ बैठे-बैठे मेरी एड़ियाँ ठण्डी हो गईं। नंगे पाँव इधर-उधर चलते हुए नौकरोंकी पद-ध्वनियाँ मेरे कानोंमें पड़ती थीं। मेरी रुग्ण कल्पनाको लगता था कि वे लोग पीठ पीछे मुझपर खीसें काढ़ रहे हैं। वहाँ एक चौथाई घण्टे तक मैं अकेला अभ्यागत था। नौकरोंके चले जानेपर निःशब्दता इतनी गहरी हो गई कि जेबमें रक्खी घड़ीकी टिक-टिक मैं साफ सुन सकता था।

"तब दूसरे अभ्यागतोंका आना शुरू हुआ। कुछ सरकारी अधिकारी अपनी पत्नियोंके साथ थे। वाइस रेज़ीडेण्ट भी अन्दर आया। बड़े तपाकसे मेरी अभ्यर्थना की और लम्बी-चौड़ी गप्पें हाँकने लगा। मेरा अनुमान है कि मैं बराबर ठीक-ठीक बातें कर रहा था। अन्तमें, अकस्मात्, मेरी मानसिक विकृति फिरसे उमड़ पड़ी और मैं बोलनेमें लड़खड़ाने लगा।

"वह कमरेमें आ पहुँची थी। एक अच्छी बात यह हुई कि वाइस रेज़ीडेण्टने मुझसे बोलना बन्द कर दिया और वह दूसरेसे वार्तालाप करने लगा। नहीं तो, मैंने स्वयं उसकी ओर पीठ कर दी होती। उसने पीला रेशम पहिन रक्खा था। हाथीदाँत-से शुभ्र उसके कन्धे उस पीले रंगपर स्पष्ट उभरे हुए थे। समुदायके बीच वह प्रसन्न मुख बातें कर रही थी। मैं, उसके दुखको जानता था, मुझे उसकी मुसकानके नीचे दबी हुई चिन्ता स्पष्ट दिखाई दे रही थी। मैं निकट गया, किन्तु उसने मुझे देखा नहीं, या देखना नहीं चाहा। उसकी मुसकानने मुझे फिरसे पागल बना दिया। क्योंकि मैं जानता था कि वह आडम्बर है। सोचा, आज बुधवार है। शनिवारको उसका पति लौट आयेगा। वह कैसे हँस रही है इस प्रकार निरपेक्ष होकर ? किस प्रकार अपने पंखेसे खिलवाड़ कर रही है, बजाय इसके कि वह उसे तोड़ डाले !

"मैं, जो कि अपरिचित था, उसके भविष्यको सोच-सोचकर काँप रहा था। मैं, जो कि एक अपरिचित था, उसके दुखसे दुखी हो रहा था। उसकी यह मुसकान अन्दर उठनेवाले झंझावातको छिपानेके केवल आवरणके अतिरिक्त और क्या हो सकती है ?

"पासके कमरेसे संगीतकी ध्वनि उठी। नाच प्रारम्भ होनेवाला था। एक अधेड़ अफसरने उसे अपनी संगिनीके रूपमें चुना। जिनसे बातें कर रही थी उनसे क्षमा-याचना माँगकर, अपने साथीका हाथ पकड़कर वह नाच-घरकी ओर चल दी। अबकी वह मेरे अत्यन्त निकटसे होकर गुज़री और मेरी ओर उसे देखना ही पड़ा। एक क्षणके लिए वह चौंकी, और तब (इससे पहले कि मैं परिचयकी चेष्टा करूँ) उसने मैत्रीपूर्ण ढंगसे सिर हिलाया और कहा 'नमस्कार, डाक्टर साहब,' और वह चली गई।

"उस आकस्मिक दृष्टिपातके नीचे क्या छिपा था, इसका कोई अनुमान नहीं लगा सका होगा। और मैं भी सचमुच चकरा उठा था। उसने सरे आम मुझे क्यों पहिचाना ? क्या यह मैत्रीकी चेष्टा है या समझौतेकी ? क्या वह अब भी बचाव करना चाहती है ? वह अकस्मात् मेरे सम्मुख आ पड़ी थी, क्या इसीलिए वह मुस्कराई थी ? मैं कैसे कह सकता हूँ ? मैं तो इतना ही जानता था कि इस सारे समय वह, नाचके विषयमें तो नहीं, केवल उसी भीषण रहस्यके बारेमें सोच रही होगी, जिसे मैं और वह, केवल दोनों जानते थे। इस विचारसे मेरी आशंका, मेरी कामना और चकराहट और भी तीव्र हो गई। मैं नहीं जानता कि कोई दूसरा मेरी गति-विधिको ध्यानसे देख रहा था, या नहीं। किन्तु मुझे यह निश्चय है कि उसके प्रति मेरी उत्कण्ठ जिज्ञासा और उसका स्पष्ट निरपेक्ष भाव, एक दूसरेसे विभिन्न अवश्य लगते होंगे। मैं तो उसे छोड़ किसी दूसरी तरफ देख ही नहीं सकता था। मुझे प्रारम्भसे अन्त तक यही देखनेकी उत्कण्ठा थी कि वह अपने चेहरेपरसे एक ही क्षणके लिए आडम्बर-का छद्म दूर फेंकती है या नहीं। मेरी दृष्टिकी स्थिरता उसे अवांछनीय लगी होगी। जब वह अपने साथीकी भुजाओंपर टिकी हुई लौटकर आई तो उसने रोषभरी आँखोंसे मेरी ओर देखा। उसकी दृष्टिमें कुछ क्रोध और कुछ आज्ञा-की-सी भावना थी; मानो वह आदेश देती हो कि मुझे अपनी चेष्टाओंपर नियंत्रण रखना चाहिए।

"किन्तु, जैसा मैंने आपसे कहा है, मैं तो विक्षिप्त हुआ जा रहा था। भली भाँति जानता था कि उसकी दृष्टिका क्या अर्थ होता है। 'मेरी ओर इस प्रकार दूसरोंका ध्यान आकर्षित मत करो, अपने आपको नियंत्रित करो।' इस सार्वजनिक सभाके बीच वह चाहती थी कि मैं भद्र आचरण करूँ। अब मुझे विश्वास था कि यदि मैं चुपचाप घर चला गया होता और प्रातःकाल उसके घर जाता तो वह मुझे ऊपर बुला लेती। वह केवल यही चाहती थी कि मेरा व्यवहार उचित हो। उसे डर था कि मैं कोई अनुचित दृश्य उपस्थित न कर दूँ। हाँ, हाँ, मैं समझ गया था कि वह क्या चाहती है। किन्तु मैं तो विक्षिप्त होने जा रहा था, इसलिए मैंने उससे वहीं और उसी समय बोलना चाहा। मैं उस समुदायकी ओर बढ़ा जिसके बीच खड़ी होकर वह बातें कर रही थी। वे सबके सब मेरे लिए अपरिचित थे। फिर भी जंगलियों-की भाँति उन्हें कन्धेसे धकेलता हुआ मैं आगे बढ़ा। वहाँ उसकी बातें सुनता हुआ मैं खड़ा रहा। यद्यपि, जब कभी उसकी आँखें मुझपर पड़ती थीं तो मैं कोड़े खाये हुए कुत्तेकी भाँति काँप उठता था। मैं स्पष्टरूपमें अवांछनीय था। एक भी शब्द किसीने नहीं कहा, फिर भी यह साफ दीख रहा था कि मेरी अनधिकार चेष्टासे वह रुष्ट हो गई थी।

"नहीं कह सकता कि वहाँ खड़े-खड़े मुझे कितना समय हो गया। कदाचित् कल्पान्त! मैं शापग्रस्त था। उसको शायद यह तनाव असह्य हो उठा। एकाएक उसने वार्तालाप बन्द कर दिया और एक निरपेक्ष भावसे कहा—'अच्छा भई, मैं तो थक गई हूँ, इसलिए जल्दी सो जाऊँगी। मैं आपसे क्षमाकी प्रार्थना करती हूँ। नमस्कार।'

"उसने मैत्रीपूर्ण भावसे सिर हिलाया। उसकी यह चेष्टा सबके साथ मेरे प्रति भी थी। वह चल दी। पीले रेशमपर उसकी कोमल, सफेद, सुडौल पीठ मैं देखता रहा। मैंने यह नहीं सोचा कि उस रात मैं अब उसे नहीं देख सकूँगा; और जिसे मैं अपनी मुक्तिकी रात्रि समझे हुए था उस रात्रिको भी मैं उसे नहीं देख सकूँगा। मैं खूँटेकी भाँति खड़ा रहा। और जब मैं यह समझ पाया ....तब..........तब !......

"यदि मैं आपको यह समझाना चाहूँ कि मैंने जान बूझकर अपने आपको कितना बड़ा मूर्ख बनने दिया, तो मुझे समूची तसवीर आपके सम्मुख रखनी

होगी। रेजीडेन्सीका बड़ा ड्राइंगरूम, यद्यपि रोशनीसे जगमगा रहा था, अब करीब-करीब खाली हो गया। अधिकतर मेहमान लोग बॉलरूममें नाच रहे थे। बुड्ढे लोग, जिन्हें इस प्रकारके नाचमें कोई रस नहीं मिलता था, कहीं और जाकर ताश खेलने लगे थे। इस बड़े भारी हॉलसे होकर वह जाने लगी—उसी शान और सौन्दर्यके साथ। वह कभी एक कभी दूसरेकी ओर सिर हिलाती हुई चली जा रही थी। जब तक कि मैं पूरी परिस्थितिसे अवगत हो सकूँ, वह कमरेके दूसरे छोर तक पहुँच चुकी थी, और बाहर जानेको ही थी। उसी क्षण, यह जानकर कि वह मुझसे निकल भागेगी, मैं उसके पीछे दौड़ने लगा।—हाँ,—दौड़ने लगा। मैं जब पालिश किये हुए फर्शपर दौड़ा तो मेरे जूते खड़खड़ा उठे। अवश्य ही सब लोग मेरी ओर आँख उठा उठाकर देखने लगे थे और मैं लज्जामें डूब-डूब गया था—फिर भी मैं रुक नहीं सका। ज्यों ही वह दरवाजेपर पहुँची कि मैंने उसे पकड़ लिया। उसने मुड़कर मुझे देखा। उसकी आँखें धधक रही थीं, और नथुने घृणासे फड़क रहे थे।

"किन्तु उसमें वह आत्म-नियंत्रण बदस्तूर बना हुआ था, जो मुझमेंसे बुरी तरह नष्ट हो चुका था। एक ही क्षणमें उसने क्रोधका संवरण कर लिया और वह खिलखिलाकर हँस पड़ी। प्रत्युत्पन्न मतिके साथ, इतने जोरसे कि सब लोग सुन सकें, उसने कहा—'आह डाक्टर साहब, आखिर आपको मेरे बच्चेके पुर्जेका स्मरण हो ही गया। आप वैज्ञानिक लोग बहुधा भूल जाया करते हैं। क्यों, है न यही बात?'

"पास खड़े हुए दो व्यक्ति भलमनसाहतसे मुसकरा उठे। मैं समझ गया। मन-ही-मन उसकी कुशलताकी प्रशंसा की कि उसने मेरा नालायकपन छिपा लिया। मुझमें इतना होश था कि उसका संकेत समझ सकूँ। मैंने अपनी डायरी निकाली, जिसमें नुस्खा लिखनेके कोरे कागज रहते थे। क्षमा-याचना बड़बड़ाते हुए मैंने एक कागज फाड़कर उसे दे दिया। मुस्कराकर उसने कागज लिया, और 'नमस्कार' कहकर वह चल दी।

"उसने परिस्थिति सँभाल ली थी। किन्तु जहाँतक उसके साथ मेरी स्थितिका सम्बन्ध है, सब कुछ निराशामें डूब गया था। मेरी उन्मत्त मूर्खतापर वह मुझे कोस रही होगी। मृत्युसे भी अधिक मुझसे घृणा करने लगी होगी।

अब चाहे कितनी ही बार मैं जाऊँ, वह बारबार...बारबार...बारबार कुत्ते-की भाँति मुझे दरवाजेसे दुतकार देगी।

"मैं कमरेसे लड़खड़ाता हुआ बाहर निकला। लोग घूर-घूरकर मुझे देख रहे थे। मेरी दिखाई-लिखाईमें कुछ ऐसी ही विचित्रता थी। दुकानपर जाकर मैंने लगातार चार गिलास ब्राण्डीके पिये। मानसिक शक्तियाँ थककर चूर-चूर हो गई थीं। शराबकी उस तेज खूराकके अतिरिक्त और कोई वस्तु नहीं थी जो मुझे चलते रहने देती। मैं बगलके दरवाजेसे निकल भागा, मानो कोई चोर होऊँ। तीनों लोकोंका साम्राज्य मुझे मिलता, तो भी मैं उस बड़े भारी हॉलसे होकर दुबारा नहीं जाता। अपने आपको लोगोंकी हँसती हुई आँखोंके सामने नहीं आने देता। मैंने उसके बाद क्या किया—स्मरण नहीं है। मैं एक होटलसे दूसरे होटलमें घूमता-भटकता हुआ, शराब पी-पीकर बेहोश होनेका प्रयत्न करता रहा। किन्तु कोई भी वस्तु मेरी चेतनाको बुझा न सकी। मैं फिर भी उसी हँसीको सुनता रहा जिसने सर्वप्रथम मुझे पागल किया था—वह हँसी, जिसके द्वारा आज सायंकाल उसने मेरे जंगलीपनपर आवरण डाल दिया था। तालाबके किनारे बने हुए रास्तोंपर टहलते हुए मैं पानीकी ओर देखता और पछताने लगता कि अपने साथ पिस्तौल क्यों नहीं लेता आया, कि मैं अपना ब्रह्माण्ड फोड़कर उसी शान्त सरोवरमें गिर पड़ता। मेरा मन पिस्तौलपर जाकर जम गया और अपने आपको समाप्त कर देनेका निश्चय मैंने कर लिया। थका माँदा होटलमें लौट आया।

"प्रातःकालके समय मैंने अपने आपको जो गोली नहीं मार ली, आप विश्वास कीजिए, वह कायरपनके कारण नहीं। लबलबी दबा देनेके अतिरिक्त और किसी कार्यको करना मैं पसन्द न करता। मेरा यह विश्वास था कि इस प्रकार मैं अपनी विचार-यंत्रणाको समाप्त तो कर सकूँगा। किन्तु मैं कर्त्तव्यके विचारसे सन्तप्त था। यही बात सोच-सोचकर मैं पागल हुआ जा रहा था कि अब भी उसे मेरी आवश्यकता हो और मैं जानना चाहता था कि उसे मेरी आवश्यकता होती है। आज गुरुवारका प्रातःकाल था। दो दिनमें उसका पति लौट आयेगा। मुझे विश्वास था कि वह दर्पिता रहस्योद्घाटनकी लज्जाका सामना करने तक जीवित नहीं रहेगी। मैं घंटों कमरेमें इधर-उधर

टहलता रहा। ये ही विचार बारम्बार मस्तिष्कमें चक्कर लगा रहे थे। मैं अपनी अधीरता और गलतियोंपर खीझ उठता था, जिसके कारण मेरे लिए असम्भव हो गया था कि उसकी सहायता करूँ। अब कैसे उसके पास जाऊँ? किस प्रकार उसे यह प्रतीति दिलाऊँ कि मैं केवल यही चाहता हूँ कि उसकी सहायताकी अनुमति मुझे दे दी जाय। वह मुझे नहीं देखेगी— वह मुझे नहीं देखेगी। कल्पनामें मैंने उसका भीषण हास्य सुना और उसके नथुने घृणासे फड़कते हुए देखे—दस फीटके उस कमरेमें इधर उधर— इधर-उधर घूमता रहा। अन्तमें अरुणोदय हुआ और कुछ ही समयके उपरान्त मेरे बराण्डेमें प्रातःकालीन धूप चमकने लगी। आप जानते हैं कि उष्ण-प्रधान देशोंमें सब कोई करीब छह बजे जाग जाते हैं।

"कुर्सीपर बैठकर मैंने एक चिट्ठीका कागज लिया और उसे पत्र लिखने लगा—कुछ भी—सब कुछ—एक दयनीय पत्र, जिसमें मैंने उससे क्षमाकी प्रार्थना की, अपने आपको पागल और अत्याचारी घोषित किया; मुझपर अब विश्वास करने और मेरे हाथोंमें अपने आपको सौंप देनेकी प्रार्थना की। मैंने सौगन्ध ली कि मैं उसके बाद तिरोहित हो जाऊँगा।—उस शहरसे, उस उपनिवेशसे, और यदि वह कहे तो संसारसे भी। केवल वह मुझे क्षमा कर दे, मुझपर विश्वास करे और उस अवसरपर मुझे सहायता करने दे।

"मैंने बीस पेज लिख डाले। वह अवश्य ही प्रलापमय पत्र रहा होगा, मानो पागलखानेमें अथवा ज्वरके सन्निपातमें किसीने लिखा हो। पत्र समाप्त किया तो मैं पसीनेमें तर हो रहा था। पैरोंपर खड़ा हुआ तो कमरा मेरे चारों ओर घूम गया। एक गिलास पानी गलेसे नीचे उँड़ेलकर, मैंने जो कुछ लिखा था उसे आद्यन्त पढ़ना चाहा। किन्तु आँखोंके सामनेसे अक्षर तैर गये। एक लिफाफा निकाला और तब एक विचार मुझे सूझा कि कुछ और लिख दूँ जिसका प्रभाव अवश्य ही उसपर पड़े। फिरसे कलम उठाकर अन्तिम पृष्ठके पीछे मैंने लिखा—'यहीं होटलमें क्षमाके एक ही शब्दकी प्रतीक्षामें रहूँगा। सायंकालसे पहले आपका उत्तर न मिला तो मैं अपने आपको गोली मार लूँगा।'

"पत्र बन्द करके मैंने चिल्लाकर एक नौकरको बुलाया और तत्काल उसे दे आनेको कहा। मेरे लिए उत्तरकी प्रतीक्षा करनेके अतिरिक्त और कोई काम बचा न था।"

मानो उस विरामका प्रदर्शन करनेके लिए वह कई मिनटोंके उपरान्त फिर बोलने लगा। जब वह बोला तो शब्दोंमें एक नया वेग आ गया था—

"मेरे लिए ईसाइयतका भी कोई अर्थ नहीं रह गया है। स्वर्ग और नरकके पुरातन विश्वास भी मुझे अब प्रभावित नहीं करते। यदि नरक है भी, तो मैं उससे डरता नहीं क्योंकि होटलमें बीते हुए उन थोड़े-से घंटोंसे अधिक भीषण नरक दूसरा हो ही नहीं सकता। दोपहरकी धूपमें पकता हुआ एक छोटा-सा कमरा। उधरके होटलोंके इन कमरोंको आप जानते ही हैं। एक पलंग—और एक टेबिल—और एक कुर्सी। टेबिलके सामने कुर्सीपर बैठा हुआ एक पुरुष, जो कि घड़ी और पिस्तौलपर टकटकी बाँधे हुए है—एक पुरुष, जिसने न कुछ खाया, न कुछ पिया; यहाँ तक कि उसने धूम्रपान भी नहीं किया—किन्तु जो अपनी घड़ीके डायल और अनन्त चक्कर लगाती हुई सेकिण्डकी सुईको ही अविचल होकर देखता रहा है। उस प्रकार मैंने वह दिन बिताया। प्रतीक्षा... प्रतीक्षा...प्रतीक्षा...। और, यद्यपि मैं अचल बैठा हुआ था, फिर भी मला-यनोंकी भाँति विक्षिप्त होकर अथवा पागल कुत्तेकी भाँति मैं विनाशके मार्गपर भागा जा रहा था।

"अच्छी बात है; उन क्षणोंके वर्णनका मैं अधिक प्रयत्न नहीं करूँगा। इतना ही कहना पर्य्याप्त है कि, मैं नहीं समझता किस प्रकार कोई भी व्यक्ति ऐसे समयमें जीवित रहकर पागल होनेसे बच सकता है।

"तीन बजकर बाईसवें मिनटपर (मेरी आँखें अभी भी घड़ीपर लगी हुई थीं) दरवाजेपर खटखटानेकी आवाज आई। एक जापानी लड़का हाथमें मुड़ा हुआ कागज लिये हुए—लिफाफा तक नहीं। मैंने झपटकर उससे ले लिया, और इससे पहले कि मैं उसे पढ़ूँ, वह चला गया था। तब, पहले तो मैं वह संक्षिप्त संकेत पढ़ नहीं सका। आखिर उसका उत्तर तो आया!— किन्तु मेरी आँखोंके आगे वे अक्षर लिपपुतकर एकाकार हो गये। मेरे लिए उनका कोई अर्थ नहीं था। मुझे अपना सिर पानीमें डुबाना पड़ा और

उत्तेजना शान्त करनी पड़ी। तब कहीं चेतना स्पष्ट हुई और मैं पेंसिलसे लिखी हुई अंग्रेजी पढ़ सका—

'बहुत देरसे! फिर भी, आप होटलमें ही रहें तो अच्छा। कदाचित् अन्तिम समय मुझे आपको बुलाना पड़े।'

मुड़े हुए पृष्ठपर हस्ताक्षर भी नहीं थे। एक खाली कागज़, जो किसी नियमावली या ऐसी ही किसी पुस्तकसे फाड़ा गया था। लिखावट अव्यवस्थित थी, कदाचित् उत्तेजनासे; अथवा, वह चलती हुई गाड़ीमें लिखी गई थी मैं कैसे बता सकता हूँ? मैं तो इतना ही जानता हूँ कि उस पत्रमें चिन्ता, शीघ्रता और भय सभी मिश्रित थे। उसका मुझपर गहरा प्रभाव पड़ा। फिर भी मैं प्रसन्न था कि आखिर उसने मुझे लिखा तो। मुझे जीवित रहना है। क्योंकि उसे मेरी आवश्यकता होगी; क्योंकि, अन्तमें वह मुझे सहायता करने देगी। मैंने अपने आपको पागल कल्पनाओं और आशाओंमें खो दिया। उन संक्षिप्त शब्दोंको मैंने बार-बार पढ़ा। बारम्बार उन्हें चूमा। मैं शान्त होता गया, और निद्रा तथा जागृतिकी सम्मिलित अवस्थामें पहुँच गया। समयका कोई अर्थ नहीं रह गया था। यह ऐसी दशा थी जिसे डाक्टर लोग अचेतन जागृति कहते हैं।

"यही दशा घंटों रही होगी। गोधूलि आ रही थी। मैं झटकेके साथ होशमें आ गया। सचमुच ही उस समय छह बजे होंगे। फिर कोई खटका हुआ। मैंने ध्यानसे सुना। तब असंदिग्ध रूपसे सुनाई दिया—एक हल्का-सा स्पष्ट धमाका! लड़खड़ाता हुआ (क्योंकि मैं पीकर अचेतन हो रहा था) मैं झपटकर दरवाजे तक गया। रास्तेमें चीनी लड़का खड़ा था। प्रकाश काफी था कि दिखाई दे। मेरे बर्बर आचरणके ही चिह्न नहीं, काली-काली आँखें और खरोंचें ही नहीं, किन्तु उसका पीला चेहरा भी रक्तहीन दिखाई दिया।

"'मालिक जल्दी आइए!'—केवल इतना ही।

"मैं दौड़कर नीचे भागा। लड़का मेरे पीछे। एक गाड़ी प्रतीक्षा कर रही थी। हम कूदकर चढ़ गये। 'क्या हो गया?'—ज्यों ही कोचवानने गाड़ी हाँकी तो मैंने पूछा।

"लड़केने मेरी ओर देखा। उसके होंठ काँपे, किन्तु वह एक भी शब्द नहीं बोला। मैंने अपना प्रश्न दुहराया। फिर भी वह चुप रहा। मुझे इतना

क्रोध आया कि इच्छा हुई उसे फिरसे मारूँ। किन्तु मालकिनके प्रति उसकी भक्तिसे मैं द्रवित हो गया; इसीलिए मैंने अपने आपको रोक लिया। नहीं बोलता, तो न बोले—बस।

" गाड़ीवान घोड़ोंको चाबुक मार-मारकर इस बुरी तरहसे भगा रहा था कि लोगोंको कुचले जानेके डरसे इधर-उधर कूदना पड़ता था। सड़कोंपर भीड़ थी। क्यों कि हम लोग योरोपियन बस्तीसे बाहर हो गये थे, और जावानी तथा मलायन बस्तीसे होकर चीनियोंकी ओर जा रहे थे। वहाँ एक सकरी गलीमें एक टूटे फूटे मकानके आगे जाकर गाड़ी खड़ी हो गई। वह एक अंधेरा स्थान था। आगेकी ओर दूकान थी, जिसमें रुईकी बत्ती जलाकर उजेला किया गया था। साथमें लगा हुआ निवासस्थान एक गन्दा होटल था—अफीमके अड्डों, चकलों, चोरघरों या चोर बाजारोंमेंसे एक, जैसा कि बुरे आचरणके चीनी लोग पूरबके प्रत्येक शहरमें खोले रहते हैं।

" लड़केने दरवाजा खटखटाया। द्वार एक या दो इंच खुला और उसके बाद एक नीरस प्रतीक्षा प्रारम्भ हुई। अधीर होकर मैं गाड़ीसे कूद पड़ा। कन्धा लगाकर मैंने दरवाजा धकेल दिया। एक अधेड़ चीनी स्त्री मेरे सामनेसे चीखती हुई भागी। मैं उस गलियारेमें झपटा। लड़का मेरे पीछे था। दूसरे दरवाजेको खोलकर मैंने अन्दर प्रवेश किया तो वहाँका वातावरण ब्राण्डी और खूनकी गन्धसे भरा हुआ था। कोई कराह रहा था। अँधेरेमें कुछ भी समझमें नहीं आया। किन्तु मैं उस शब्दकी ओर टटोल-टटोलकर आगे बढ़ा। "

और एक विराम। अबकी जब वह बोला तो शब्दोंके साथ-ही-साथ सिसकियाँ भी सुनाई दीं।

" मैं उस आवाजकी ओर बढ़ा—और वह थी वहाँ!—एक मैली चटाईके टुकड़ेपर पड़ी हुई—पीड़ासे ऐंठती, आहें भरती और कराहती हुई। कमरेमें इतना अन्धकार था कि मैं उसका चेहरा नहीं देख सका। हाथ फैलाकर मैंने उसका हाथ ढूँढ़ा। अंगारे-सा जल रहा था। वह ऊँचे बुखारमें थी। जब मैं समझा कि क्या हुआ है, तो काँप गया। जिस कामको करना मैंने अस्वीकार कर दिया था, उसीकी खोजमें वह इस गन्दी गुफामें आई थी।

चीनी दाईको उसने ढूँढ़ निकाला; इस प्रकार उसे आशा थी कि जिस गोपनीयता-का वह मुझपर विश्वास नहीं कर सकती थी, वह उसे यहाँ मिलेगी । इसके बजाय कि वह अपने आपको मेरी चिन्तापर छोड़ देती, वह इस चुड़ैलके पास आई, जो मार्गमें मिली थी। उसने अपने आपको एक पाखण्डीके द्वारा नष्ट होने दिया। क्यों कि मैंने पागलोंका-सा व्यवहार किया था इसलिए उसने मेरी सहायता न लेकर इस खतरेमें पड़ना ठीक समझा। मैं उसे सहायता देना चाहता था, किन्तु दानवी शर्तोंपर।

"मैं रोशनीके लिए चिल्लाया और वह घृणित बुढ़िया एक दुर्गंधिपूर्ण, धुएँदार दीपक ले आई। इच्छा हुई कि उसका गला घोंट दूँ—पर उससे क्या भला हो सकता था। उसने लेम्प टेबिलपर रख दिया। तब उसके पीले प्रकाशमें मैं उस दयनीय, आहत शरीरको देख सका।

"और तब अकस्मात् मेरे मस्तिष्कपरसे बेहोशीके बादल हट गये। अब मैं अर्द्ध विक्षिप्त नहीं था। मैं अपना क्रोध भूल गया और कुछ समयके लिए उस कुत्सित भावनाको भी भूल गया, जिसके कारण हम लोग इस अवस्था तक पहुँच गये थे। मैं फिरसे एक डाक्टर बन गया—कौशल और ज्ञानका भाण्डार। मुझे इन दोनों शक्तियोंका प्रयोग एक पीड़ित मनुष्यपर करने-का आह्वान मिल रहा था। मैं अपने अभागे अस्तित्वको भूल गया, और पुनर्जाग्रत प्रतिभासे नाशकी शक्तियोंके साथ जूझनेको उद्यत हो गया।

"जिसपर मैं अभी-अभी तक लुब्ध था, उसी नग्न शरीरपर मैं हाथ फेरने लगा। अब वह मेरे लिए रोगीका शरीर था, इससे अधिक कुछ नहीं। मैंने उसमें जीवनकी शक्तिको मृत्युसे जूझते हुए पाया—केवल एक आकार जो यंत्रणामें ऐंठ रहा था। हाथमें लगा हुआ उसका रक्त मेरे लिए भयानक नहीं था। मैं अब वही विशेषज्ञ हो गया था, जिसकी मनःस्थिरतापर सब कुछ निर्भर था। एक विशेषज्ञकी आँखोंसे मैंने खतरेका महत्त्व देख लिया

"मैंने देखा—यदि कोई दैवी घटना हो जाय तो दूसरी बात है नहीं, तो सब कुछ नष्ट हो चुका है। जीवन-रक्त बहा जा रहा था। उस गन्दे कूड़ाघरमें रक्खा ही क्या था कि जिसके द्वारा मैं प्रवाहको रोकनेकी आशा करता? जो भी वस्तु मैं देखता या छूता वही गन्दी थी। साफ बर्तन और साफ पानी तक नहीं।

" ' आपको इसी समय अस्पतालमें ले चलना चाहिए'—मैंने कहा। यह सुनकर उसकी मानसिक यंत्रणा बढ़ गई। वह तड़प उठी।

" ' नहीं ' उसने फुसफुसाकर कहा, ' नहीं...नहीं...इसके बजाय मैं मर जाना चाहूँगी। किसीको मालूम नहीं होना चाहिए—किसीको मालूम नहीं होना चाहिए। मुझे घर ले चलो--घर। '

" मैं समझ गया। उसकी कीर्ति जीवनसे अधिक मूल्यवान् थी। मैं समझ गया और मान गया। लड़का एक पालकी ले आया। हमने उसे उठाकर उसमें रक्खा और रात्रिमें ही हम उसे अर्द्धमृत अवस्थामें घर ले आये। नौकरोंके भया-न्वित प्रश्नों और चीख-चिल्लाहटकी उपेक्षा करते हुए हम उसे उसीके कमरेमें ले चले। तब संघर्ष प्रारम्भ हुआ—मृत्युके साथ दीर्घ और असफल संघर्ष।"

उसने मेरी बाँह दबोच ली—इस बुरी तरह कि आश्चर्य और पीड़ासे चीख न उठना कठिन था। उसका चेहरा इतने निकट था कि ताराओंके प्रकाशमें दाँतोंकी सफेद चमक और चश्मोंकी धीमी झलक साफ दिखाई दे सकती थी। वह इस वेगसे, इस भयंकर रोषसे बोल रहा था कि उसका स्वर, जो फुसकार और चीखका सम्मिश्रण था मुझपर हावी होने लगा।

" आप, एक अपरिचित, जिन्हें मैंने दिनके प्रकाशमें देखा तक नहीं, आप, जो कि (मैं समझता हूँ) आरामसे विश्व-पर्य्यटन कर रहे हैं—क्या आप जानते हैं कि किसीको मरते देखना कैसा होता है ? क्या कभी आप ऐसे व्यक्तिके पास बैठें हैं, जो मृत्युकी यंत्रणा पा रहा है ? क्या आपने शरीरको अन्तिम जूझमें ऐंठते हुए और अंगुलियोंके नीले नाखूनोंको शून्यमें मुट्ठी बाँधते हुए; और मरते हुए व्यक्तिकी आँखोंमें वह अनिर्वचनीय आतंक उमड़ते देखा है ? क्या कभी आपको वह भीषण अनुभव हुआ है ?--आप, एक अवकाशप्राप्त व्यक्ति, एक विश्वपर्य्यटक, आप--जो किसीके कर्त्तव्यके विषयमें इतनी स्वतंत्रतासे बोल सकते हैं ?

" डाक्टर होनेके नाते मैंने इस घटनाको कई बार देखा है। एक शारीरिक घटना होनेके कारण मृत्युका अध्ययन भी किया है। किन्तु ' मृत्यु' शब्दके समूचे अर्थमें केवल एक ही बार मैं एकके साथ जिया, और दूसरेके साथ मरा।—केवल एक ही बार !--जब कि कुछ ही रात पहले, उस भयंकर जागरणमें, मैं

अपने मस्तिष्कको खरोंच-खरोंचकर सोच रहा था कि किस प्रकार रुधिरका स्राव रोका जाय; उस ज्वरको कैसे ठंडा किया जाय, जो मेरी आँखोंके सामने ही सामने उसे खाये जा रहा था; अवश्यंभावी मृत्युको किस ढंगसे न होने दिया जाय !

" क्या आप समझते हैं कि डाक्टर होनेका, विज्ञान और चिकित्सा-प्रयोगमें पूर्ण अभ्यस्त होनेका क्या अर्थ है ?—और ऐसा व्यक्ति होनेका कि जिसका प्रथम कर्त्तव्य सहायता देना है--जो एक मरणासन्नके बिस्तरपर निष्क्रिय होकर बैठा है; अपने सम्पूर्ण ज्ञानके द्वारा जो केवल यही जान सकता है कि अब सहायता नहीं दी जा सकती—जो नाड़ी देख रहा है कि कभी तेजीसे चलती है और कभी लुप्त हो जाती है ? मेरे हाथ बँधे हुए थे। उसे अस्पताल नहीं ले जाया जा सकता था कि जहाँ कुछ-न-कुछ किया जाता। दूसरेकी सहायता भी नहीं माँग सकता था । जो कुछ मैं कर सकता था वह था उसे मरते देखना—गिरजेमें बैठी हुई बुड्ढी औरतकी भाँति निरर्थक गुनगुनाहट करते हुए और कभी अस्तित्वहीन ईश्वरके प्रति अशक्त क्रोधमें मुट्ठियाँ बाँधते हुए।

" क्या आप समझ सकते हैं ?—क्या आप समझ सकते हैं ? मैं जो नहीं समझ पाता वह यह कि ऐसे क्षणोंके उपरान्त कैसे कोई व्यक्ति जीवित रह सकता है ? मरनेवालेके साथ लोग मर क्यों नहीं जाते ? किस प्रकार कोई भी व्यक्ति दूसरे दिन प्रातःकाल उठकर मजेमें दाँत साफ कर सकता और गलेमें टाई बाँध सकता है ? किस प्रकार कोई व्यक्ति, वह अनुभव करनेके बाद साधारणतया जीवित रह सकता है, जो अनुभव मैं कर रहा था कि जिसे बचानेके लिए मैं सब कुछ दे सकता था, वह मेरे हाथोंसे किसी कल्पनातीत लोककी ओर भागी जा रही थी ?

" और भी एक यातना भोगनी थी। मैं पलंगके पास बैठा हुआ था। पीड़ा कम करनेके लिए मैंने उसे मारफियाकी सुई दे रक्खी थी। वह चुपचाप पड़ी हुई थी और उसके कपोल राखकी भाँति सफेद हो रहे थे। मुझे लगा, मेरी पीठपर किसीकी अनिमेष दृष्टि गड़ी जा रही है। चीनी लड़का फर्शपर पालथी मारे बैठा हुआ था और अपनी भाषामें प्रार्थनाएँ बड़बड़ा रहा था। मैं उसकी ओर देखता तो वह दयनीय आँखें मेरी ओर उठाता मानो कोई कुत्ता सहायताकी

प्रार्थना करता हो। उसने अपने हाथ उठाए, मानो ईश्वरसे विनय कर रहा हो—मेरी ओर उठाए, मैं, जो कि अशक्त था, जानता था कि सब कुछ व्यर्थ है; मैं, जो कि फर्शपर रेंगनेवाले कीड़ेसे अधिक उपयोगी नहीं था।

" उसकी इस प्रार्थनासे और इस अन्ध विश्वाससे कि मेरी निपुणता उस स्त्रीको बचा लेगी, जिसका जीवन मेरे देखते-देखते, उसके प्रार्थना करते-करते ही बहा जा रहा था। मैं उसपर चीख पड़ता; उसे पैरोंतले रौंद डालता—उसकी उत्सुक उत्कण्ठा मुझे इतना पीड़ित कर रही थी; और तो भी मुझे लगा कि उस मरती हुई स्त्रीके प्रति हमारे स्नेहके कारण और जिसे हम दोनों ही जानते थे उस भीषण रहस्यके कारण, मेरे और इस लड़केके बीच एक अटूट बंधन बँध गया है।

" शिकारी जानवरकी भाँति वह मेरे पीछे गठरी बना हुआ बैठा रहा। किन्तु ज्यों ही मैं कोई वस्तु माँगता कि वह चैतन्य हो जाता और उत्सुकतासे उसे ले आता, इस आशासे कि मैंने कुछ सोचा है जिससे अब भी कुछ हो सके। अपनी मालकिनका जीवन बचानेके लिए उसने अपना रक्त भी दे दिया होता, मुझे विश्वास है इसका। यही मैंने भी किया होता। किन्तु रक्त-दानके विषयमें सोचनेसे लाभ ही क्या था? (यदि मेरे पास यंत्र होता भी) क्यों कि रक्तस्राव रोकनेके लिए कोई उपाय भी तो नहीं था। इससे उसकी यंत्रणा और भी समय तक चलती। यह चीनी लड़का उसके लिए मर सकता था—उसी भाँति मैं भी। ऐसी शक्ति थी उस स्त्रीमें और मुझमें यह सामर्थ्य भी नहीं था कि उस मरनेसे बचा सकूँ।

" प्रातःकालके समय उसे होश आया। वह मारफियाकी नींदसे जगी। उसने आँखें खोलीं। उनमें अब वह दर्प और उपेक्षा नहीं रह गई थी। उसने कमरेके चारों ओर देखा तो उसकी आँखें ज्वरकी उष्णतासे जलने लगीं। मुझे देखकर वह क्षणभरके लिए चकराई। उसे प्रयत्न करना पड़ा यह जाननेको कि यह अपरिचित आखिर है कौन। तब उसे स्मरण हुआ। पहल शत्रुताके भावसे मेरी ओर देखा दुर्बलताके साथ अपने हाथ हिलाए मानो धक्का देकर मुझे निकाल देना चाहती हो। उसकी चेष्टाओंसे लगता था कि यदि उसमें शक्ति होती तो भागकर मुझसे दूर निकल जाती। तब, अपने विचारोंको बटोरकर, उसने शान्तिसे मेरी ओर

देखा। उसकी साँस कठिनतासे चल रही थी। उसने बोलना चाहा। उसने बैठना चाहा, किन्तु इतनी दुर्बल थी कि ऐसा नहीं कर सकी। उसे मना करते हुए मैं निकट जाकर झुक गया कि धीमी फुसफुसाहटको भी सुन सकूँ। उसने दयनीय दृष्टिसे मुझे देखा। उसके होंठ हिले और उनसे बाहर निकलनेवाला स्वर अत्यन्त धीमा था—

‘ किसीको मालूम नहीं होगा ? किसीको नहीं ? ’

‘ किसीको नहीं। ’ मैंने हार्दिक प्रतीतिसे उत्तर दिया ‘ किसीको, कभी नहीं मालूम होगा। ’

“ उसकी आँखें अब भी बेचैन थीं। बड़े प्रयत्नके बाद वह इन शब्दोंको कह सकी—‘ सौगन्ध लो कि कोई नहीं जानेगा। सौगन्ध लो। ’

“ मैंने गम्भीरतासे अपना हाथ उठाया और कहा—‘ मैं आपको बचन देता हूँ।’

“ यद्यपि वह दुर्बल थी फिर भी उसने मेरी ओर नम्रता और कृतज्ञतासे देखा। हाँ, बावजूद उस सारी हानिके जो कि मैंने उसे पहुँचाई, अन्तमें वह मेरे प्रति कृतज्ञ हुई और उसने मुस्कराकर मुझे धन्यवाद-सा दिया। थोड़ी देर बाद उसने फिरसे बोलना चाहा किन्तु इतना परिश्रम करनेका सामर्थ्य उसमें नहीं था। दिनका प्रकाश पूर्णरूपसे कमरेमें आनेके पूर्व ही, सब कुछ समाप्त हो गया। ”

एक दीर्घ नीरवता। उसमें अब वह जोश नहीं रह गया था जिसमें आकर उसने मेरी बाँह पकड़ ली थी। वह परिश्रान्त होकर पीछेको बैठ गया। सितारे निष्प्रभ हो रहे थे। उसी समय तीन घण्टियाँ बजीं। ताजी और मन्द वायु चल रही थी, जो बताती थी कि अरुणोदय शीघ्र होनेवाला है। थोड़ी ही देर बाद मैं उसे साफ-साफ देख सका। उसने टोपी उतार ली थी और उसका चेहरा खुला हुआ था। दुःखके कारण वह सिकुड़ गया था। उसने किसी खास विचारसे चश्मेके अन्दरसे मुझे देखा, मानो यह जानना चाहता हो कि जिस अपरिचितसे वह अपना रहस्य कहता जा रहा था, वह है किस प्रकारका मनुष्य। तब वह अपनी कहानी कहने लगा। उसके स्वरमें घृणाकी ध्वनि मिली थी।

“ उसके लिए तो सभी कुछ समाप्त हो चुका था—किन्तु मेरे लिए नहीं।

मैं एक ऐसे शहरमें, जहाँ किम्वदन्तियाँ आगकी भाँति फैलती हैं, एक ऐसे अपरिचित घरमें मुर्देको लिए बैठा हुआ था; और मैंने वचन दे रक्खा था कि उसका भेद सुरक्षित रहेगा। इस दशापर विचार कीजिए। वह एक ऐसी स्त्री थी जो उपनिवेशके सर्वोच्च समाजमें मिला जुला करती थी, और लोग उसे पूर्ण स्वस्थ समझते थे। परसों रातको वह गवर्नमेण्ट हाउसमें नाची थी। अब वह मर गई थी, और एकमात्र डाक्टर जो कि उस विषयमें थोड़ा बहुत जानता था, वह ऐसा मनुष्य था जो मरते समय उसके पास बैठा रहा, किन्तु जो उस शहरमें अकस्मात् आया और रोगशय्यापर उसके नौकरके द्वारा बुलाया गया था। यह डाक्टर और यह नौकर उसे अन्धकारके आवरणमें पालकीपर रखकर लाये और किसीको अपने मार्गमें नहीं आने दिया। प्रातःकाल होने तक उन्होंने दूसरे नौकरोंको यह सूचित कर नहीं बुलाया कि उनकी मालकिन मर गई। एक या दो घण्टोंमें ही यह समाचार तमाम शहरमें फैल जायेगा; और ऊपरी प्रदेशसे आया हुआ डाक्टर 'मैं' किस प्रकार मृत्युकी सफाई दे सकूँगा? मैं कैसे कहूँगा, मैंने क्या किया, और किस कार्यमें मैं असफल रहा? मैंने किसी दूसरे डाक्टरको उत्तरदायित्वका भार बाँटने क्यों नहीं बुलाया? क्यों?... क्यों?...क्यों?—

"मैं जानता था कि मेरे सामने क्या समस्या है। मेरा एकमात्र सहायक चीनी लड़का था। किन्तु वह तो एक विश्वस्त अनुचर था, जो इसी विश्वासमें था कि अभी भी संघर्ष करना बाकी है।

"मैंने उससे कहा, 'क्या तुम समझते हो तुम्हारी मालकिनकी अन्तिम इच्छा थी कि यहाँ जो कुछ हुआ वह कोई जानने न पाये?'

"'समझ गया, मालिक' उसने सीधा-सादा उत्तर दिया; और मैं जान गया कि उसपर विश्वास किया जा सकता है।

"उस दिनसे पहले मुझमें कभी इतनी एकत्रित शक्ति नहीं आई, न कभी अब आयेगी। जब कोई व्यक्ति एकमात्र अन्तिम अवशेषके अतिरिक्त सब कुछ खो बैठता है, तो वह उस अन्तिम अवशेषके लिए भीषण साहस और निश्चयके साथ जूझ पड़ता है। मैं जिस अवशेषके लिए अन्त समय तक लड़ने जा रहा था वह उसकी धरोहर थी—उसका रहस्य। जो कोई मिलने

आता, मैं शान्ति और आत्मनिर्भरताके साथ उससे मिलता और मृत्युके कारण बतानेके लिए मैंने जो कहानी गढ़ रक्खी थी उसे कह सुनाता था। कुछ भी हो, उष्णप्रधान देशोंमें इस प्रकारके अकस्मिक प्राणहारी रोगोंसे लोग परिचित होते हैं, और एक डॉक्टरके अधिकारपूर्ण विवरणपर सामान्य जनता प्रश्न खड़े नहीं कर सकती। मैंने समझाया कि जब वह बीमार पड़ी तो डाक्टर बुलानेको उसका भेजा हुआ लड़का संयोगवश मुझे मिल गया। किन्तु जब मैं दिखावटी शान्तिके साथ लोगोंसे इस प्रकार बातें कर रहा था, तब मन ही मन एक ऐसे व्यक्तिकी प्रतीक्षा भी कर रहा था, जिसका आगमन इस मामलेमें विशेष महत्त्वपूर्ण था। वह था सीनियर सर्जन, जो गाड़नेसे पहले शरीरकी जाँच करता। वह बृहस्पतिवारका प्रातःकाल था और शनिवारको उसका पति लौट रहा था। इन देशोंमें मरनेके बाद शीघ्र ही गाड़ दिया जाता है। किन्तु आवश्यक प्रमाणपत्रोंपर सीनियर सर्जनके ही हस्ताक्षर होने थे—मेरे नहीं।

"नौ बजे उसके आनेकी सूचना मिली। यह ठीक है कि उसे मैंने ही बुलाया था। पदमें वह मुझसे ऊँचा था। वाइस रेज़ीडेन्टकी टाँग टूटनेपर मुझे जो स्थानीय यश प्राप्त हुआ था, उसके कारण वह मुझसे जलता रहता था। यही वह डाक्टर था जिसके विषयमें वह घृणासे बोली थी कि वह ब्रिज खेलनेके अतिरिक्त किसी कामका नहीं है। जाब्तेकी कार्रवाही होनेपर बदलीका मेरा आवेदन-पत्र उसीके हाथोंसे होकर गुज़रता। सन्देह नहीं कि वाइस रेज़ीडेण्टने उससे बात कर ली हो।

"उस दिन प्रातःकाल भेंट होते ही मैंने उसकी शत्रुताका अनुभव कर लिया। किन्तु इससे मैं अपने कर्त्तव्यके प्रति और भी लौह-कठोर हो गया।

"ज्यों ही मैं पासके कमरेमें गया, जहाँ वह प्रतीक्षा कर रहा था, कि उसने आक्रमण प्रारम्भ कर दिया—

'मादाम ब्लांक कब मरीं?'

'आज प्रातः छह बजे।'

'उन्होंने आपको कब बुलाया था?'

'कल सायंकालको।'

'क्या आप यह जानते थे कि मैं उनका नित्यप्रतिका चिकित्सक हूँ?'

'जी हाँ।'

' तो आपने मुझे क्यों नहीं बुला भेजा ? '

' समय नहीं था—और, इसके अतिरिक्त, मदाम ब्लांकने सम्पूर्णतया अपने आपको मेरे हाथोंमें सौंप दिया था। सच मानिए, उन्होंने मुझे दूसरा डाक्टर बुलानेको स्पष्ट रूपसे मना कर दिया था। '

" उसने आँखें फाड़कर मेरी ओर देखा। उसका चेहरा तमतमा गया। क्रोधको पीकर उसने दिखावटी उपेक्षासे उत्तर दिया—

' अच्छी बात है, फिर भी जब वे जीवित थीं तब तक यद्यपि आप काम चला भी सकते थे, तो भी अब आपने मुझे बुलाकर अपना कर्त्तव्य पूरा कर लिया है। अब मृत्युकी और कारणकी छान-बीन करके मैं भी अपना कर्त्तव्य पूरा करूँगा। '

" मैंने कोई उत्तर न देकर उसे मृत्युगृहके अन्दर चले जाने दिया। ज्यों ही हम वहाँ पहुँचे, और इससे पूर्व कि वह शरीरको छुए, मैंने कहा—' कारण खोज निकलनेका यहाँ प्रश्न नहीं है, बल्कि कारण बना लेनेका है। एक चीनी दाईके द्वारा किये गये गर्भपातके परिणामसे बचा लेनेके लिए मादाम ब्लांकने मुझे बुलाया था; उसका जीवन बचाना तो असम्भव था; किन्तु मैंने वचन दिया है कि उनकी कीर्ति सुरक्षित रक्खी जायेगी। मैं चाहता हूँ कि आप मेरी सहायता करें। '

" उसने आश्चर्यसे देखा—' क्या आप सचमुच ही मुझसे—प्रान्तके सीनियर सर्जनसे—यह चाहते हैं कि मैं अपराध छिपानेमें सहायता करूँ ? '

' जी हाँ, यहीं मैं आपसे चाहता हूँ। '

" उसने खीझ कर कहा—' हाँ जी; आपके किये हुए अपराधको दबानेमें मैं सहायता करूँगा ! '

' मैंने आपको समझा दिया है कि जहाँ तक मदाम ब्लांकका सम्बन्ध है, मैंने जो कुछ किया है, वह उन्हें उनकी बुद्धिहीनता और दूसरोंके अपराधके (यदि आप इसी शब्दपर तुले हुए हैं तो) परिणामसे बचानेकी कोशिशमें किया है। यदि मैं अपराधी होता तो अब तक जीवित नहीं रहने पाता। उन्हें तो अन्तिम दण्ड भुगतना ही पड़ा; और कमबख्त दाईके विषयमें, जिसने गर्भपात कराया था, कुछ भी किया जाय, महत्त्व नहीं रखता। आप मृत महि-

लाकी कीर्तिको कलंकित किये विना अपराधीको दण्ड नहीं दे सकते । और, यह मैं नहीं होने दूँगा ।'

'आप नहीं होने देंगे ? आप तो ऐसे बोलते हैं मानो मेरे अफसर हों !—बजाय इसके कि मैं आपका हूँ। आप मुझे आज्ञा देनेका साहस करते हैं ! मैंने पहले ही अनुमान लगा लिया था कि आपको जंगलके उस कोनेसे बुलानेमें कुछ-न-कुछ विचित्रता अवश्य है। आपने यहाँ दखल देकर अच्छा प्रारम्भ किया है ! अच्छी बात है; मेरे अधिकारमें जो कुछ है, वह यही कि मैं अपनी छान-बीन करूँ और जो कुछ पाऊँ उसकी ठीक-ठीक रिपोर्ट कर दूँ। मैं एक झूठा प्रमाणपत्र लिखने नहीं जा रहा—आपको ऐसा समझनेकी आवश्यकता नहीं है।'

"मैं अडिग रहा।—

'आपको करना पड़ेगा—अभी ! नहीं तो आप इस कमरेसे जीवित बाहर नहीं जा सकेंगे !'

"मैंने जेबमें हाथ डाला। पिस्तौल नहीं था, पर भभकी काम कर गई। वह चौंककर पीछे हटा। मैं एक कदम आगे बढ़ा और नपेतुले, धमकी और समझौतेके मिश्रित स्वरमें मैंने कहा—'देखिए ! मुझे खेद है कि मैं अतिवाद कर रहा हूँ। किन्तु यह आपको समझ लेना चाहिए कि इस विषयमें मैं अपने और आपके जीवनका कोई मूल्य नहीं करूँगा। मैं इतना आगे बढ़ चुका हूँ कि संसारमें केवल एक ही वस्तु रह गई है, जिसकी मुझे चिन्ता है—वह है मेरी प्रतिज्ञा, जो मैंने इस स्त्रीको दी है कि उसकी मृत्युका कारण गुप्त रहेगा। मैं आपको भी वचन देता हूँ कि यदि आप ऐसे प्रमाणपत्रपर हस्ताक्षर कर दें कि वह—क्या कहें ?—भीषण ज्वरके कारण हृदयकी गति बन्द होनेसे—मर गई—यह लोगोंकी समझमें भी आ जायेगा—; यदि आप इतना कर दें तो मैं एक हफ्तेमें ईस्ट इण्डीज छोड़कर चला जाऊँगा। आप चाहें तो ज्यों ही वे कब्रमें गाड़ी जाती हैं (और मुझे यह प्रतीति हो जाय कि और जाँच-पड़ताल कोई नहीं करेगा—समझे आप ?—को-ई—न-हीं—क-रे-गा !) त्यों ही मैं अपने कपालपर गोली मार लूँगा। इतनेसे आपको सन्तोष हो जाना चाहिए। और, सचमुच, इतनेसे आपको सन्तुष्ट हो जाना चाहिए।'

" मेरा स्वर, मेरा समूचा स्वरूप, अत्यन्त भयास्पद होगा, क्यों कि वह डरसे भीगी बिल्ली बन गया था। मैं ज़रा-सा भी आगे बढ़ता कि वह पीछे हटता था। उसके चेहरेपर वैसा ही दुर्निवार आतंक दिखाई दिया, जैसा रक्तभरी तलवार लेकर दौड़ते हुए विक्षिप्तको देखकर लोगोंके चेहरोंपर दीखता है। वह प्रत्यक्ष रूपसे घबरा गया था। अब उसका स्वर बदला। वह दुर्दान्त अफसर नहीं रहा जो अजेय बनकर कठोर कर्त्तव्यका पालन करने जा रहा हो।

" फिर भी विरोधका अन्तिम प्रदर्शन करता हुआ, वह बड़बड़ाया—

' जीवनमें कभी भी मैंने झूठे प्रमाणपत्रपर हस्ताक्षर नहीं किये। कदाचित् जैसा आप कहते हैं वैसे ही शब्दोंको लिखनेमें कोई प्रश्न नहीं उठेगा। किन्तु यह तो मुझे स्पष्ट जान पड़ता है कि मुझे ऐसी कोई बात करनी नहीं चाहिए।'

' जी हाँ,—करनी नहीं चाहिए—यदि हम परम्परागत मापसे देखें' मैंने उत्तर दिया। मैं अब उसे सहायता देना चाहता था—' किन्तु यह असाधारण विषय है। जब आप जानते हैं कि सत्यके प्रकट होनेसे एक जीवित व्यक्तिको दुःखका अनुभव करना पड़ेगा और एक मृत स्त्रीकी कीर्ति नष्ट हो जायगी, तो आप ऐसा करनेमें हिचकते क्यों हैं?'

" उसने सिर हिलाया। हम दोनों टेबिलपर साथसाथ बैठ गये। बड़े ही मैत्रीपूर्ण पाखंडसे हम दोनोंने वह झूठा प्रमाणपत्र गढ़ा, जिसके आधारपर दूसरे दिन समाचार-पत्रोंमें सूचना छपी थी। तब वह उठा और उसने तीक्ष्ण दृष्टिसे मेरी ओर देखा।

' आप अगले जहाजसे योरोप चले जायेंगे, क्यों?'

' अवश्य; मैंने आपको बचन जो दिया है।'

" वह मुझे घूर-घूर कर देखता ही रहा। मैंने देखा वह कठोर और व्यवहारवादी बनना चाहता है। किन्तु यह उसे कठिन लग रहा था। उसने जो कुछ कहा वह अपनी हड़बड़ाहट छिपानेके लिए, अथवा मुझे कुछ सूचना देनेके विचारसे कहा—

' ब्लांक याकोहामासे आते ही अपनी पत्नीको लेकर घर जानेवाला था। अब बेचारा पत्नीकी लाश अपने बन्धु-बान्धवोंके पास इँगलैण्ड ले जाना चाहेगा। आप जानते हैं वह धनवान् है। धनी लोग ही इस प्रकारकी इच्छाओंकी पूर्ति

कर सकते हैं। मैं अर्थीका सन्दूक अभी मँगवा दूँगा। उसमें सीसेका अस्तर चढ़ जायेगा और मुहर लग जायेगी। इससे आरम्भिक कठिनाइयाँ दूर हो जाएँगी और वह भी समझ जायेगा कि इस सड़ी गर्मीमें अन्त्येष्टिके समय उसकी प्रतीक्षाकी आवश्यकता थी भी नहीं। यदि वह यह समझे कि हम लोगोंने शीघ्रता की तो भी वह ऐसा कहनेका साहस नहीं करेगा। हम अधिकारी लोग हैं और वह आखिर एक सौदागर ही है; यद्यपि वह हम दोनोंको खरीद सकता है। इसके अतिरिक्त हम लोग उसे दुःखसे बचानेके लिए ही यह सब कर रहे हैं।'

" अभी कुछ ही मिनट पूर्वका मेरा शत्रु अब मेरा विश्वस्त सहकारी बन गया था। हाँ—वह जानता था कि मुझसे शीघ्र ही उसका पल्ला छूट जायेगा। उसे केवल अपने आपसे ही समझौता करना बाकी था। उसके बाद उसने अप्रत्याशित काम किया। उसने बड़ी तपाकसे मेरा हाथ पकड़कर हिला दिया!—

' मुझे आशा है आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएँगे '—उसने कहा।

" आखिर क्या अर्थ था उसके कहनेका? क्या मैं बीमार लग रहा था? क्या मैं पागल-सा दिखाई दे रहा था? मैंने आदरसे उसके लिए दरवाजा खोल दिया और उससे विदा ली। उसी समय मेरी शक्तियाँ बुझ गईं। कमरा मेरी आँखोंके आगे नाच गया और मैं उसकी मृत्युशय्याके पास ही लुढ़क पड़ा।—जिस प्रकार विक्षिप्त मलायन अपनी खूनी दौड़ समाप्त होनेपर गोली खाकर ढेर हो जाता है।

" नहीं जानता कि मैं कितनी देर फर्शपर पड़ा रहा। कमरेमें सरसराहट और चलने फिरनेकी आवाज सुनाई दी। उठकर देखा। चीनी लड़का घबराया हुआ-सा मुझे देख रहा था।

' कोई आये हैं। मालकिनको देखना चाहते हैं। '—उसने कहा।

' तुम किसीको अन्दर मत आने दो। '

' लेकिन मालिक,...'

" वह हिचकिचाया। मेरी ओर डरा हुआ-सा देखने लगा और बोलनेका प्रयत्न करने लगा। बेचारा सचमुच दुःखी था।

' कौन है वह?'

"वह चोटसे डरते हुए कुत्तेकी भाँति काँपने लगा। उसने किसीका नाम नहीं लिया। उधरके नौकरोंमें औचित्यकी जिस भावनाको देखा नहीं जाता, वही उसमें दिखाई दी। उसने सीधे-सादे शब्दोंमें कह दिया—'वही जो आदमी है।'

"उसे अधिक स्पष्टतासे कहनेकी आवश्यकता नहीं थी। मैं तत्काल समझ गया कि उसका तात्पर्य किससे था। सुनते ही मैं उस व्यक्तिको देखनेकी आकुलतासे तड़प उठा, जिसके अस्तित्वको ही मैं भूल चुका था। क्यों कि, यह आपको विचित्र लगेगा कि पहली बार जब उस स्त्रीने अपना भेद मुझपर प्रकट किया और मेरा कुत्सित प्रस्ताव ठुकराया, उसी समयसे यह व्यक्ति मेरे मस्तिष्कके बाहर चला गया था। तबसे आजतक जो कुछ हुआ उसकी उतावली और चिन्ता और बोझसे यह विचार ही मेरे मनसे निकल गया कि इस समूची दास्तानमें एक और पुरुष भी है—जिसे इस स्त्रीने प्यार किया था—जिसे इस स्त्रीने अत्यन्त वासनासे वही वस्तु दी थी जिसे मुझे देनेसे अस्वीकार कर दिया। एक ही दिन पूर्व मैंने उससे घृणा की होती, उसकी बोटी-बोटी नोंच डाली होती। अब मैं उसे देखनेको आतुर था, क्यों कि मैं उसे प्यार करने लगा था--हाँ, प्यार करने लगा था--उस पुरुषको, जिसे 'वह' प्यार करती थी।

"एक ही झपटमें मैं पासके कमरेमें चला गया। एक नवयुवक—सुन्दर बालोंवाला आफीसर--घबराया हुआ, झेंपता हुआ वहाँ खड़ा था—निष्प्रभ और सुकुमार--करीब-करीब लड़कों-सा, किन्तु वयस्कोंकी भाँति अपने आपको दिखानेके लिए आतुर--शान्त और धीर। नमस्कार करनेको उसका जो हाथ उठा वह काँप रहा था। मैंने उसे अपनी भुजाओंमें बाँधकर आलिंगन कर लिया होता। उस स्त्रीका प्रेमी होनेके योग्य मेरे आदर्श तक वह इतना अधिक पहुँचता था। वह एक आत्मनिर्भर व्यभिचारी नहीं था, किन्तु एक सुकुमार जीव, जिसे आत्मसमर्पण कर देना उस स्त्रीने ठीक समझा।

"वह मेरे सम्मुख शरमाया हुआ खड़ा रहा। मेरे आकस्मिक प्रवेश और मेरी अनुत्कण्ठित दृष्टिसे उसकी सकपकाहट बढ़ गई। उसका चेहरा किंचित् काँपा और यह स्पष्ट था कि वह रोनेको है।

'मैं हठात् अन्दर आना नहीं चाहता' आखिर वह बोला--'किन्तु मदाम ब्लांकको एक बार और देखनेकी मेरी उत्कट लालसा है।'

"यह न जानते हुए कि मैं क्या कर रहा हूँ, मैंने उस नवयुवकके कन्धों-पर एक हाथ रक्खा और उसे दरवाजेकी ओर ले चला। वह मेरी ओर आश्चर्यसे, साथ-ही-साथ कृतज्ञतासे देखने लगा। उस एक क्षणमें हम दोनोंके बीच अभिन्न मैत्रीकी भावना आ गई। हम दोनों साथ-साथ मृत्युशय्या तक गये। वह पड़ी हुई थी। उसका समूचा शरीर सफेद मलमलसे ढका हुआ था, केवल सिर, कंध और भुजाएँ अनावृत थीं। यह सोचकर कि मेरा सान्निध्य उसे अवाछनीय लगेगा, मैं कुछ दूर तक हटकर चला गया। एकाएक वह मेरी ही भाँति गिर पड़ा। घुटनोंके बलपर बैठ गया। अपने मनोवेगोंको छिपानेमें अब उसे लज्जा नहीं थी। वह आँसू बहाने लगा।

"मैं क्या कह सकता था?—कुछ नहीं।

"मैं क्या कर सकता था? मैंने उसे पैरोंपर खड़ा किया और सोफे तक ले गया। वहाँ हम लोग एक दूसरेकी बगलमें जाकर बैठ गये। उसे सान्त्वना देनेको मैंने उसके कोमल भूरे बालोंको सहलाया। उसने मेरा हाथ अपने हाथोंमें लेकर प्यारसे दबोच लिया। तब उसने कहा—

'डाक्टर मुझसे सब कुछ सच सच कह दो। उसने अपने आपको मार तो नहीं डाला?'

'नहीं'—मैंने उत्तर दिया।

'तो—कोई व्यक्ति उसकी मृत्युके लिए उत्तरदायी है?'

'नहीं,' मैंने एक बार फिरसे कहा। यद्यपि मेरे अन्दरसे यही उत्तर उमड़ रहा था—'मैं, मैं, मैं—और, तुम!—हम दोनों। हमपर सारा दोष है। हम दोनों और उसका दुःखित दर्प।' किन्तु मैंने ये शब्द नहीं कहे और दुबारा भी यही कह सन्तोष किया—'नहीं, दोष किसीके मत्थे नहीं है। उन्हींका दुर्भाग्य था जो यह हुआ।'

'मैं नहीं समझ पाता'—उसने कराह कर कहा, 'यह अविश्वनीय-सा लगता है। परसों रातको वह नाचमें थी। उसने मेरी ओर सिर हिलाया था।

वह मुसकराई थी। यह हो कैसे सका? वह इतनी अप्रत्याशित, इतनी शीघ्र कैसे मर सकी?'

"मैंने उसे कई झूठी बातें गढ़ कर सुनाईं। उसके प्रेमी तकसे मुझे भेद छिपाना चाहिए। हम लोगोंने वह दिन, अगला दिन और अगला दिन भाई-पनकी बातोंमें गुज़ार दिया। दोनों जानते थे (यद्यपि हमने अपनी जानकारीको शब्दोंमें व्यक्त नहीं किया) कि मृत स्त्रीसे सम्बन्ध होनेके कारण हम दोनोंके जीवन एक दूसरेसे गुँथ गये हैं। बारबार मुझे यह कठिन-सा लगता कि अपना भेद छिपा रक्खूँ। किन्तु मैंने छिपा रक्खा। वह यह नहीं जान सका कि उस स्त्रीके गर्भमें उसीका शिशु था; और वह मेरे पास उन दोनोंके प्रेमके फलको नष्ट करने आई थी। और यह कि मेरी अस्वीकृतिके पश्चात्, उसने वह कार्य किया जिससे उसका जीवनतक समाप्त हो गया। फिर भी जब तक मैं उसके घरमें छिपा रहा, हम दोनों केवल उसी स्त्रीके विषयमें बातें करते रहे। मैं आपसे यह कहना भूल गया। वे लोग मुझे ढूँढ़ रहे थे। शवाधार बन्द हो जानेके उपरान्त उसका पति आ पहुँचा था। उसे सन्देह था—कई प्रकारकी किम्वदन्तियाँ फैल पड़ी थीं—और वह सबसे पहले मेरा विवरण सुनना चाहता था। मैं केवल यही सोचकर उससे भेंट नहीं कर सकता था कि केवल उसी व्यक्तिके कारण यह सारा काण्ड हुआ था। इसीलिए मैं छिप गया और चार दिनतक घरसे बाहर नहीं निकला। उसके प्रेमीने झूठे नामसे मेरे लिए टिकट ला दिया, और आधी रातको जहाज-पर बैठकर मैं सिंगापुरके लिए रवाना हो गया। मैंने सब कुछ पीछे छोड़ दिया था।—मेरी सम्पत्ति—सात वर्षका मेरा कार्य। मेरा मकान, जो प्रविष्ट होना चाहे, उसीके लिए खुला था। इसमें सन्देह नहीं कि विना आज्ञा अनुपस्थित रहनेके कारण अधिकारियोंने मेरा नाम पहले ही काट दिया होगा। किन्तु मैं उस संसारमें नहीं रह सकता था, जहाँकी प्रत्येक वस्तु मुझे उसी स्त्रीका स्मरण दिलाती थी। यदि मैं चोरकी भाँति रातको भागा, तो उससे बचनेके लिए—उसे भूल जानेके लिए।

"व्यर्थ था वह प्रयत्न। जब मैं मध्य रात्रिको जहाजपर सवार हुआ और मेरा मित्र मुझे पहुँचाने आया, तो उसी समय क्रेनके द्वारा एक बड़ा भारी, अण्डाकार, पीतलसे मढ़ा हुआ सन्दूक जहाजपर चढ़ाया जा रहा था। यह उसका शवाधार था—उसका शवाधार! वह मेरा

पीछा करता हुआ यहाँ तक आ पहुँचा था; ठीक जिस प्रकार पहाड़ोंपरसे पीछा करता हुआ मैं उस स्त्रीके पास आ पहुँचा था। मैं कोई चेष्टा नहीं कर सकता था। मुझे निरपेक्ष सा बनकर देखते रहना पड़ा क्यों कि उसका पति वहींपर था। वह इँगलैण्ड जा रहा था। शायद वहाँ पहुँच कर शवाधार खुलवानेका उसका विचार हो—पोस्ट मार्टम करानेका—रहस्य मालूम करनेका—। कुछ भी हो। उसने उस स्त्रीको अपने पास ले लिया है—हमसे छीन लिया है। वह अब उसीकी है--हम लोगोंकी नहीं। सिंगापुरमें मैंने यह जरमन जहाज बदला तो वह शवाधार भी इसीमें आ गया और उसका पति भी यहीं है। किन्तु मैं अब भी उस स्त्रीपर निगरानी रख रहा हूँ और अन्त तक निगरानी रखता रहूँगा। उसे कभी यह रहस्य नहीं ज्ञात होगा। मैं अन्त तक उस मनुष्यसे बचाता रहूँगा जिससे बचनेके लिए उसने मृत्युका वरण किया। वह कभी नहीं जान सकेगा--कभी नहीं। उसका रहस्य मेरा है, और संसारभरमें किसी दूसरेका नहीं!

"क्या आप समझते हैं? क्या आप समझते हैं कि मैं दूसरे यात्रियोंसे दूर क्यों भागता फिरता हूँ? मैं उन्हें हँसते, बातें करते क्यों नहीं सुन सकता; उनकी मूर्खताभरी ठठोलियाँ क्यों नहीं देख सकता!--जब कि मैं जानता हूँ कि जहाजकी बहुत गहराईमें चायकी पेटियों और ब्राजीलके अखरोटोंके बीच उसकी देह विश्राम कर रही है। मैं उसके निकट नहीं पहुँच सकता, क्यों कि फाटक बन्द रहते हैं; परन्तु दिन और रात मैं उसका सान्निध्य अनुभव करता रहता हूँ, जब कि यात्री लोग ऊपरी डेक या सैलूनमें हँसते-नाचते रहते हैं। जानता हूँ यह मेरी मूर्खता है। यह महासमुद्र लाखों-करोड़ों लाशोंपरसे उमड़ता चला जाता है; पृथ्वीपर जहाँ कहीं हमारे पैर पड़ते हैं वहीं मृत प्राणियोंके शरीर सड़ते रहते हैं। इतना सब जाननेपर भी मैं यह सहन नहीं कर सकता। मैं नहीं सहन कर सकता कि इसी जहाजमें, जहाँ उसका शरीर घर जा रहा है, वहीं वे लोग लोग नाचें और हँसें। मैं जानता हूँ वह मुझसे क्या चाहती है। अभी मेरे लिए और भी कुछ करना बाकी है। उसका रहस्य अभी सुरक्षित नहीं है। और जब तक वह सुरक्षित नहीं तब तक उसे दिये हुए मेरे शब्द पूरे नहीं होंगे।"

जहाजकी ओरसे खलबलाहट और रगड़ने-पोंछनेकी आवाज आई। मल्लाह

लोग डेकोंको धो रहे थे। वह आवाज सुनकर चौंका और उछल कर खड़ा हो गया।

"मुझे चला जाना चाहिए" वह बड़बड़ाया। वह मूर्तिमान नैराश्य-सा दीख रहा था। चेहरा चिन्तासे मुरझाया हुआ, और आँखें रोनेसे और शराबसे लाल। एकाएक वह अपने व्यवहारमें स्वप्नस्थ-सा लगने लगा। यह स्पष्ट था कि वह अपनी वाचालतापर पछता रहा था। उस प्रकार मेरे सम्मुख अपने मनका रहस्य खोल देनेके लिए लज्जित था। फिर भी मैत्रीका प्रदर्शन करनेकी इच्छासे मैंने कहा—

"क्या आप मुझे आज दोपहरको अपने केबिनमें भेंट नहीं करने देंगे?"

एक व्यंग्यपूर्ण, कठोर, घृणाभरी मुसकानसे उसके होंठ कुंचित हो उठे। एक क्षणकी हिचकके बाद जब वह बोला तो उसके स्वरमें एक दृढ़ता थी।

"ओह, जी हाँ। 'प्रत्येक व्यक्तिका कर्त्तव्य सहायता करना है'। यह आपका प्रिय सिद्धान्त है, क्यों न? अभी कुछ ही घण्टे पूर्व मुझे मेरे दुर्बल क्षणमें पाकर आपने इसका प्रयोग किया और मजेमें मेरी जुबान खोल दी! आपके सुन्दर विचारके लिए धन्यवाद। किन्तु अधिक अच्छा होगा कि मैं अकेला ही रहने दिया जाऊँ। आप यह भी न सोचें कि अपने अन्तरालको खोलकर बाहर निकाल देनेसे और आपके सम्मुख अपनी आँतें तक खोल कर रख देनेसे, मुझे कुछ स्वस्थता लग रही है। मेरी जिन्दगी फाड़कर चींथड़े कर दी गई है, और कोई व्यक्ति अब उसे जोड़ नहीं सकता। डच औपनिवेशिक सर्विसमें काम करनेसे मुझे कुछ भी अर्थ प्राप्ति नहीं हुई है। मेरी पेंशन स्वाहा है और मैं जर्मनीको कंगाल बनकर लौट रहा हूँ—एक कुत्तेकी भाँति जो अर्थीके पीछे पीछे दुम दबाकर चला करता है। विना फल पाये कोई भी 'विक्षिप्त' नहीं हो सकता। अन्तमें उसे गोली मार दी जाती है; और मुझे आशा है कि मेरा भी अन्त शीघ्र होगा। मैं कृतज्ञ हूँ आपका कि आपने भेंट करनेकी बात की; किन्तु अकेला न लगनेके लिए मेरे पास केबिनमें सर्वोत्तम साथी हैं—बढ़िया ह्विस्कीकी कई बोतलें। वे बड़ी तसल्लीकी वस्तुएँ हैं। इसके अतिरिक्त एक पुराना मित्र भी है और मैं पछता रहा हूँ कि मैंने उसका प्रयोग इतनी देरमें न करके जल्दी क्यों न कर लिया! अपने पिस्तौलसे मेरा तात्पर्य है, जो अन्तमें मेरी आत्माके लिए पाप-स्वीकृतिसे भी अधिक कल्याणकारी सिद्ध होगा। इस लिए, आप

बुरा न मानें तो, मैं आपको भेंट करनेका कष्ट नहीं देना चाहता। मनुष्योंके अधिकारोंमें एक अधिकार और भी है, जिसे कोई नहीं छीन सकता—कहीं भी, किसी भी समय, और जिस प्रकार भी जी चाहे, विना किसी सहायकके 'टें' बोल देनेका!"

उसने मेरी ओर घृणा और चुनौतीभरी दृष्टिसे देखा। किन्तु मैं जानता था कि उसकी भावनाकी गहराईमें लज्जा, अगाध लज्जा, छिपी हुई थी। विदाका एक भी शब्द न कह कर वह मुड़ा और लचकता हुआ केबिनोंकी ओर चल दिया। मैंने उसे फिर कभी नहीं देखा, यद्यपि अलग डेकपर मैं मध्य रात्रिके बाद कई बार गया। वह इस पूरी तरहसे तिरोहित हो गया था कि कदाचित् मैं सोचता कि मैंने एक दुःस्वप्न देखा है। किन्तु दूसरे यात्रियोंमें मैंने एक व्यक्तिको देखा जो अपनी बाँहपर काली पट्टी लगाये हुए था। मुझसे कहा गया कि वह एक डच है जिसकी पत्नी अभी-अभी ज्वरसे मरी है। वह सबसे अलग रहता है और किसीसे वार्तालाप नहीं करता। उसे देख देख कर मुझे यही धारणा पीड़ित किया करती थी कि मैं उसकी मूक वेदनाको जानता हूँ। जब कभी मेरी उससे मुठभेड़ हो पड़ती मैं मुँह फेर लेता, इस डरसे कि मेरी चेष्टाओंसे वह अनुमान न लगा ले कि उसकी नियतिके विषयमें मैं उससे अधिक जानता हूँ।

नेपल्सके बन्दरगाहमें वह घटना हुई जो उस अपरिचितकी कथाके कारण मेरे लिए सुबोध्य थी। जैसा मैं कहानीके प्रारम्भमें कह चुका हूँ, उस समय यात्रियोंमें-से अधिकतर लोग किनारेपर गये हुए थे। मैं ओपेरा देखने गया हुआ था। वायारोमाके जगमगाते हुए एक काफेमें मैंने भोजन किया था। जब नावपर चढ़ कर स्टीमरकी ओर जा रहा था तो ऊपर चढ़नेकी सीढ़ियोंपर चहल-पहल हो रही थी। नावें इधर-उधर चल रही थीं और उनपर बैठे हुए मनुष्य टॉर्च और गैसकी बत्तियोंसे पानीमें कुछ खोज रहे थे। डेकपर कई बन्दूकची थे जो धीमे स्वरमें कुछ बोल रहे थे। मैंने डेकके एक कर्मचारीसे पूछा कि बात क्या है। उसने गोल-मोल उत्तर दिया। इससे स्पष्ट था कि उनसे सावधान रहनेको कहा गया है। दूसरे दिन भी, जब कि हम लोग जेनेवाकी ओर जा रहे थे, मुझे कुछ भी सूचना प्राप्त करना असम्भव-सा लगा। किन्तु जेनेवाके एक इटालियन

समाचार-पत्रमें मैंने उस घटनाका जोरदार वर्णन देखा जो उस रात नेपल्समें घटी थी।

ऐसा मालूम हुआ कि अंधकारके आवरणमें, यात्रियोंको उद्वेजित होनेसे बचानेके लिए, डच इण्डीज़से आया हुआ एक शवाधार नावपर उतारा जा रहा था। उसमें एक महिलाका शव था, और उसका पति (जो कि उसे घर ले जा रहा था) नीचे बोटमें प्रतीक्षा कर रहा था। शवाधार जब जहाजकी बगलमें आधे रास्तेपर था तो ऊपरसे कोई भारी वस्तु उसपर गिर पड़ी। शवाधार उसी समय झटकेके साथ नावपर गिर पड़ा। नाव उसी समय उलट गई। शवाधार अन्दरकी ओरसे सीसेस मढ़ा गया था, इसलिए डूब गया। भाग्यसे प्राणोंकी क्षति एक भी नहीं हुई, क्यों कि गिरते हुए शवाधारसे किसीको चोट नहीं आई। वह विधुर व्यक्ति दूसरोंके साथ कठिनतासे बचा लिया गया।

यह दुर्घटना किस कारणसे हुई? रिपोर्टरने कहानी गढ़ी कि एक पागल मनुष्य जहाजसे कूदा और गिरते समय उसके झटकेसे शवाधारकी डोरियाँ टूट गईं। कदाचित् इस किम्बदन्तीका आविष्कार उन लोगोंकी असावधानताको ढकनेके लिए किया गया था जो शवाधारको नीचे उतारनेमें जिम्मेवर थे और जिन्होंने इतनी कमज़ोर रस्सी बाँधी थी कि वज़नी सन्दूक अपने आप टूट गया। कुछ भी हो, अधिकारी लोग चुप ही रहना चाहते थे।

समाचारपत्रके दूसरे भागमें एक संक्षिप्त सूचना थी जिसका आशय यह था कि एक मनुष्यका शव, जिसकी अवस्था पैंतीस वर्षकी लगती थी, नेपल्सके बन्दरगाहमें पाया गया है। उसके सिरमें गोलीका घाव था। किसीने भी इस समाचारका सम्बन्ध उस दुर्घटनासे नहीं लगाया जो शवाधार नीचे उतारते समय घटी थी।

फिर भी ज्यों ही मैंने वे संक्षिप्त समाचार पढ़े, त्यों ही मेरी आँखोंके आगे, छपे हुए पृष्ठपरसे उठकर, उस दुःखी मनुष्यका भूतोंका-सा चेहरा झूम गया, जिसकी कहानी मैंने यहाँ लिखी है।

एकलव्य

(रेखाचित्र और कहानियाँ)

लेखक—**शोभाचन्द्र जोशी, बी, ए.**

कुछ सम्मतियाँ—

"..........एक कहानीके बल पर ही मैं कह सकता हूँ कि आपके अन्दर प्रतिभाके शक्तिशाली बीज हैं। मेरी हार्दिक शुभ कामना है कि आप दिन-दिन उन्नति करते जायँ और हिन्दी साहित्यको नाना-भावसे समृद्ध करते रहें।"

—हजारीप्रसाद द्विवेदी

"'एकलव्य' के प्रायः सभी रेखाचित्र अत्यन्त मार्मिक और सजीव हैं। उनमें विपन्न मानवताकी बाह्य परिस्थितियों तथा उसकी अन्तर स्थितियोंका जैसा स्पष्ट एवं जीता-जागता चित्रण मिलता है, वैसा अन्यत्र उपलब्ध नहीं।

विद्रोहीकी ललकारके साथ रचनात्मकताकी विवश चीत्कारका यह गंगाजमुनी संगम अपने ढंगका अनूठा है......"

—गंगाप्रसाद पाण्डेय

"......हिन्दी-जगत्‌में वे (जोशीजी) अपना एक स्वतंत्र स्थान बना रहे हैं, यह जान कर मैं एक मीठे गर्वका अनुभव करता हूँ।

—काशिनाथ त्रिवेदी

(शिक्षामंत्री, मध्यभारत संयुक्त-राज्य)

"......निःसन्देह आप हिन्दीमें यथार्थमें **खरी** चीजें दे रहे हैं। काश, मैं कोई **प्रोपेगेंडिस्ट संपादक** होता, और इन स्केचोंपर एक अच्छा सा लेख लिखता।..."

मोहनसिंह सेंगर

(भू० पू० संपादक 'विशाल भारत')

"श्री शोभाशन्द्र जोशीकी लेखनी हृदयग्राहिणी, बल्कि मर्मग्राहिणी है। वह हृदयके साथ-साथ मस्तिष्कको भी उसी प्रकार उद्वेलित करती है, और वर्ण्य विषयके मर्मको तो भली भाँति पकड़ लेती है।

—स्वतंत्र

उच्चश्रेणीका कथा-साहित्य

उपन्यास

आँखकी किरकिरी	(रवीन्द्रनाथ)	३)
नष्टनीड़	,,	१।)
अन्नपूर्णाका मन्दिर	(निरुपमादेवी)	१॥)
त्याग-पत्र	(जैनेन्द्रकुमार)	१।)
कल्याणी	,,	२)
सुनीता	,,	१॥)
परख-स्पर्द्धा	,,	१॥)
पाटनका प्रभुत्व	(क० मा० मुंशी)	३)

कहानियाँ

वातायन	(जैनेन्द्रकुमार)	२॥)
चार कहानियाँ	(सुदर्शन)	३।)
शतरंजका खेल	(शोभाचन्द्र जोशी)	२)
एकलव्य	,,	१॥)
रवीन्द्र-कथा-कुंज	(रवीन्द्र)	१॥।)
नवनिधि	(प्रेमचन्द्र)	१॥)
जीवटकी कहानियाँ	(श्याम नारायण कपूर)	१॥)
वीरोंकी कहानियाँ	(कुँवर कन्हैया)	॥।)

नाटक

कुलीनता	(सेठ गोविन्ददास)	१॥।)
मेवाड़-पतन	(द्विजेन्द्रलाल राय)	१।)
दुर्गादास	,,	१॥)
चन्द्रगुप्त	,,	१।)
शाहजहाँ	,,	१॥)
नूरजहाँ	,,	१॥।)
भारत-रमणी	,,	१॥।)
सीता	,,	१।)
सूमके घर धूम (प्रहसन)	,,	।=)

मैनेजर—हिन्दी-ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय हीराबाग, बम्बई ४